दक्खिनी का पद्य और गद्य

श्रीराम शर्मा

भूमिका लेखक

डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी

अध्यक्ष तुलनात्मक भाषा-विज्ञान विभाग,

कलकत्ता विश्वविद्यालय

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

प्रथमावृत्ति
२५ जून, १९५४

मुद्रक :
हिन्दी प्रेस,
हिन्दी भवन, हिन्दी मार्ग,
नामपल्ली रोड, हैदराबाद-द.

मूल्य : १०-८-०

प्रकाशक :
प्रियबन्धु,
व्यवस्थापक : प्रकाशन विभाग,
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

श्री वंशीधर विद्यालङ्कार

को—

● सम्मति

डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

......'गद्य सोपान' के आरंभ में आपने दक्खिनी गद्य के जो नमूने छापे थे उनसे मेरी उत्सुकता इस नई साहित्य-सामग्री को देखने के लिए बढ़ गई थी। आपकी नई पुस्तक 'दक्खिनी का पद्य और गद्य' मिली। आपने उसमें दक्खिनी की इतनी अधिक नई सामग्री से हिन्दी-जगत् को परिचित करा कर बड़ा उपकार किया है। उर्दू वालों को इस साहित्य में रुचि हो या न हो किन्तु हिन्दी के लिए तो यह साहित्य का नया कोश ही प्राप्त हो गया है। जिस प्रकार अपभ्रंश साहित्य के प्रकाश में आने से हिन्दी की ऐतिहासिक परम्परा कई शताब्दी पीछे हट गई थी, उसी प्रकार दक्खिनी के गद्य-पद्य की यह नई सामग्री देश और काल में हिन्दी की गम्भीरता का विस्तार करती है। चौदहवीं शती के बन्दानवाज़ का गद्य स्वागत के योग्य है। इसी प्रकार गोदा की कविता, अमानुल्ला के दोहे-चौपाई और वजही की कविता भी रुचिपूर्वक पढ़ी जाएगी। 'मसनवी किस्सा मैना सतवन्ती' के रूप में उत्तर भारत में प्रसिद्ध लोरा-चन्दा की कहानी तुलनात्मक दृष्टि से पूरी छपनी चाहिए। यहाँ भी लोरा चन्दा लोकगीत के रूप में प्रचलित है। मुझे ज्ञात हुआ कि 'लोरा-चन्दायन' नाम से अवधी भाषा का एक प्राचीन प्रेमाख्यान काव्य भी है जो अप्रकाशित है।

दक्खिनी हिन्दी के साहित्य को प्रकाश में लाने का आपका यह उपक्रम भविष्य में और विस्तार को प्राप्त होने योग्य है। आवश्यकता यह है कि दक्खिनी के व्याकरण का वैज्ञानिक अध्ययन यथाशीघ्र प्रकाशित हो जिससे हिन्दी की शैली विशेष के रूप में उसके निजी स्थान का मूल्य आँका जा सके।

डाक्टर बाबूराम सक्सेना, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

......मैंने संकलित अंशों को उलट पुलट कर देखा। संकलन अच्छा है। यह जान कर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद दक्खिनी की रचनाओं को देवनागरी में प्रकाशित करने जा रही है।

श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त, शिक्षा सचिव हैदराबाद राज्य

उर्दू-विद्वानों की दृष्टि बहुत समय से दक्खिनी साहित्य की ओर लगी हुई है। श्री राहुल सांकृत्यायन तथा हिन्दी के कुछ विद्वान् दक्खिनी की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के अध्ययन में रुचि लेने लगे हैं। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी ने हिन्दी तथा उर्दू के विद्वानों का ध्यान दक्खिनी साहित्य के गम्भीर अध्ययन की ओर आकर्षित किया है जिससे हिन्दी और उर्दू के विकास में सहायता मिल सके।

हैदराबाद में पुरानी, अलभ्य तथा महत्वपूर्ण हस्तलिखित पुस्तकें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यह उचित ही था कि राज्य के प्रमुख हिन्दी-सेवी श्री श्रीराम शर्मा का ध्यान इस ओर जाता। शर्माजी ने दक्खिनी की महत्व पूर्ण रचनाओं के अध्ययन के बाद यह संकलन तैयार किया है। इस संकलन को देखने के बाद पता चलता है कि इस कार्य के पीछे काफ़ी परिश्रम और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा है। मुझे विश्वास है इस संकलन के कारण हिन्दी-विद्वानों को सहायता मिलेगी और दक्खिनी साहित्य के सम्बन्ध में रुचि रखने वाले साहित्य-सेवियों तथा दक्खिनी की हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन में इस संकलन से लाभ उठाया जाएगा।

यह एक उत्साहजनक बात है कि हैदराबाद में डाक्टर बी. रामकृष्णराव, मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य की अध्यक्षता में एक 'दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति' बनी है जो दक्खिनी की अलभ्य तथा महत्वपूर्ण रचनाओं को नागरी और उर्दू में प्रकाशित करेगी। हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद की ओर से

प्रकाशित इस संकलन से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की ओर हिन्दी विद्वानों का ध्यान आकर्षित होगा। मैं हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद को बधाई देता हूँ जिसने इस महत्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन किया। मुझे आशा है इस पुस्तक के कारण हिन्दी भाषा तथा उसके साहित्य के विकास के अध्ययन में सहायता मिलेगी।

डाक्टर रामविलास शर्मा, आगरा

इस पुस्तक में दक्खिनी हिन्दी गद्य और पद्य के नमूने बहुत ही परिश्रम से इकट्ठे किये गये हैं। पुराने लेखकों के अलावा इस संकलन से आज की दक्खिनी का भी परिचय मिलेगा। लोकगीतों, कहावतों और मुहावरों से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। साहित्य और भाषा के इतिहास से दिलचस्पी रखने वाले हर पाठक के लिए यह संग्रह अमूल्य है। आशा है, विश्वविद्यालयों के अध्यापक इस प्रकाशन पर विशेष ध्यान देंगे और लाभ उठाएँगे।

अवतरणिका

प्रस्तुत पुस्तक नए तौर पर एक अनोखी वस्तु हिन्दी संसार के सामने ला रही है—यह है हिन्दी-साहित्य का एक अवलुप्त अध्याय, दक्खिनी साहित्य के कुछ निदर्शन। पूर्वी पंजाब तथा पश्चिमी संयुक्त प्रदेश—आर्यावर्त्त के जिस भाग का पुराना नाम मध्यदेश था तथा आजकल जिसे पछाँह कहते हैं—से तुर्कों द्वारा उत्तर भारत की विजय कर लेने के बाद ईसा की चौदहवीं शती से भाग्यान्वेषी सेनानी तथा वणिग्जन दक्खिन (महाराष्ट्र, तेलंगाना और कर्णाटक) में अपना आसन जमाने लगे। इन लोगों में यद्यपि दिल्ली के तुर्क सुलतानों से प्रेरित या पृष्ठ पोषित पंजाबी और पछाँही भारतीय मुसलमान ही नेतृस्थानीय थे फिर भी राजपूत, जाट, बनिया, कायस्थ आदि जातियों के हिन्दुओं की संख्या भी कम नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इन लोगों में पूर्वी पंजाब और पछाँह के गूजरों की संख्या अधिक थी; क्योंकि दक्खिनी को उसके कवि लोग 'भाका' या 'भाखा' बोलते थे और 'गूजरी' नाम भी देते थे। उत्तर भारत में उन दिनों हिन्दू मुस्लिम या भारतीय-ईरानी एक नवीन मिली-जुली सभ्यता की नींव डाली गई थी। दक्खिन में बसे हुए उत्तर भारतीय पंजाबी और पछाँही मुसलमान, जो अपनी क्षात्र-शक्ति, प्रसार शक्ति तथा अधिकार-शक्ति के कारण वहाँ के एक नवीन अभिजात समाज के लोग बने, उत्तर भारत से जिस लोक-साहित्य को अपने साथ ले गये थे, उसी के आधार पर, इस्लामी सूफ़ी दर्शन और रहस्यवाद का रंग उस पर चढ़ा कर, एक अभिनव साहित्य-शैली का प्रवर्त्तन करने लगे। मुसलमान धर्म-गुरुओं के अत्यधिक प्रभाव के कारण यह भाषा अरबी लिपि में लिखी जाने लगी। उस समय तक दिल्ली की खड़ी बोली को साहित्यिक मर्यादा उत्तर भारत में नहीं मिली थी पर अमीर खुसरो खड़ी बोली के शब्दों और क्रिया-रूपों के साहित्यिक प्रयोग की ओर झुके थे और कबीर ने एक मिश्रित भाषा-शैली का प्रयोग किया

था, जिसमें व्रज और अवधी के साथ ही साथ खड़ी बोली का अस्तित्व भी मिलता है। पछाँही बोलियों का प्रधान लक्षण है आकारान्त पुल्लिंग शब्दों का अवस्थान। इसी प्रकार की बोली में दक्खिन के मुसलमानों की साहित्य-सर्जना शुरू से चालू रही।

इस साहित्य-शैली का शाब्दिक, तात्विक और तथ्य विषयक ढाँचा उत्तर भारत के सन्त-साहित्य जैसा ही था। इसके शब्द, अधिकतया शुद्ध हिन्दी या संस्कृत तत्सम अथवा अर्द्धतत्सम ही होते थे, मामूली तौर पर विदेशी अरबी फ़ारसी शब्द अधिक नहीं आते थे। बाद में, केवल मुसलमान लेखकों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण, इन विदेशी शब्दों की संख्या बढ़ती गई, किन्तु उसका अनुपात इतना नहीं था जितना दिल्ली और लखनऊ की उर्दू में हम देखते हैं। भाषा के हिन्दीपन को कोई हानि नहीं पहुँची। इसलिए दक्खिनी साहित्य को हम असन्दिग्ध रूप में शुद्ध हिन्दी-साहित्य का ही अंश समझ सकते हैं।

दक्खिनी में जो हिन्दू कवि हुए, उनमें अवश्य उत्तर भारतीय हिन्दू साहित्य-शैली तथा भाषा का प्रभाव कुछ विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है।

ईसा की अठारहवीं शती में दक्खिनी साहित्य की प्रेरणा और उसके दृष्टान्त से दिल्ली की खड़ी बोली वाला उर्दू साहित्य और बाद में खड़ी बोली वाले हिन्दी साहित्य का शिलान्यास हुआ। इस लिए हम दक्खिनी साहित्य को उर्दू तथा हिन्दी के खड़ी बोली से सम्बन्धित साहित्य का आदि रूप कह सकते हैं। यह साहित्य-धारा वर्त्तमान हिन्दी और उर्दू-साहित्य का उत्पत्ति स्थान है। उत्तर भारत से दक्खिनी में जा कर यह प्रौढ़ बना: फिर समग्र उत्तर भारत पर, दिल्ली की भाषा के सहारे, इसका प्रभाव फैला।

दक्खिनी के सम्बन्ध में, इसके प्रारंभिक इतिहास के विषय में उत्तर भारत के हिन्दी तथा उर्दू प्रेमियों को कोई जानकारी नहीं थी। दिल्ली में उर्दू की जो शैली दक्खिनी ही के प्रभाव में बनी, उसकी प्रतिक्रिया दक्खिनी पर भी हुई। दिल्ली से आये हुए आसफ़जाही राजवंश की प्रतिष्ठा के कारण, हैदराबाद राज्य में विशेष रूप से और दक्खिन में साधारणतया शुमाली या

उत्तरी उर्दू का बोलबाला हुआ, दक्खिनी की साहित्यिक मर्यादा धीरे-धीरे नष्ट हो गई।

इधर दक्खिनी साहित्य के पुनरुद्धार के लिए कुछ प्रयत्न किये गए हैं। दक्खिन के कुछ मुसलमान साहित्यिकों और साहित्य-प्रेमी सज्जनों का ध्यान इस ओर गया है। इन साहित्य-सेवियों में नासिरुद्दीन हाशमी, डाक्टर सैयद मुहीउद्दीन क़ादरी 'ज़ोर' और अध्यापक श्री अब्दुल क़ादिर सर्वरी प्रभृति के नाम चिरस्मरणीय रहेंगे। कुछ वर्ष हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में श्री ब्रजरत्नदास ने दक्खिनी साहित्य के अनमोल रत्नों से हिन्दी पाठकों का प्रथम परिचय कराया था। इंग्लैण्ड में स्वर्गीय डाक्टर टी. ग्रहेम बेली ने भी दक्खिनी साहित्य पर काफ़ी प्रकाश डाला था। इस विषय पर डाक्टर बाबूराम सक्सेना की एक उपयोगी पुस्तक भी हमारे सामने मौजूद है।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियात उर्दू हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से एक दक्खिनी प्रकाशन समिति बनी है। इस समिति की ओर से दक्खिनी की कुछ श्रेष्ठतम रचनाएँ नागरी में प्रकाशित की जाएँगी।

हिन्दी संसार के लिए तथा उर्दू के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यिकों के लिए, दक्खिनी साहित्य के पुनरुद्धार के सिलसिले में श्री श्रीराम शर्मा की यह पुस्तक विशेष लाभदायक सिद्ध होगी। जब तक दक्खिनी प्रकाशन समिति के द्वारा आरब्ध बृहत्तर आयोजन पूरा न होगा, तब तक ऐसी एक पुस्तक की विशेष आवश्यकता थी। आनन्द और सन्तोष की बात यह है कि श्री श्रीराम शर्मा ने इस अभाव की पूर्त्ति के लिए इस पुस्तक का संकलन और प्रकाशन किया है। हम लोग इसके लिए श्री शर्मा और हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के आभारी हैं।

पुस्तक अच्छी रीति से तैयार की गई है, किन्तु मैं संकलनकार से सभी बातों में सहमत नहीं हूँ। जैसे कान्हपा (कण्हप्पा लिख कर इन्हें एक दक्खिनी द्राविडी नाम दिया गया है) के सम्बन्ध में। कान्हपा ने दो प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया था—एक पुरानी बँगला (जिसे उड़िया तथा असमिया लोग पुरानी उड़िया और पुरानी असमिया भी कहेंगे और जिसे मैथिलों ने भी

मैथिली कहा है—और आश्चर्य की बात यह है कि इसे कुछ पण्डित 'पुरानी हिन्दी' भी कहते हैं।) और दूसरी अपभ्रंश। दक्खिनी के आदि कवियों में इन्हें कैसे स्थान मिल सकता है, इसका कोई सन्तोषदायक प्रमाण हमारे समक्ष अब तक नहीं है।

इस पुस्तक में दक्खिनी के प्रमुख कवियों और गद्य-लेखकों की रचनाओं से अच्छे उदाहरण दिये गये हैं। पुस्तक से यह बोध होता है कि पुराने हिन्दी साहित्य के एक महत्वपूर्ण अंश की किस प्रकार खोज हुई है। अब पुराने हिन्दी-साहित्य के अध्ययन में दक्खिनी का अध्ययन किये बिना काम नहीं चलेगा।

इस साहित्य-प्रकाश को हिन्दी-प्रेमी जनता के सामने श्री श्रीराम शर्मा ने सुन्दर रीति से रख दिया है। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। हम लोग प्रीति-विस्मय के साथ इस प्रशंसनीय पुस्तक से लाभ उठा सकेंगे। इति।
हैदराबाद (दक्षिण) २५ अप्रैल, १९५४ संवत् २०११।

पश्चिम बंग विधान परिषत्,
कलकत्ता

सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

अनुक्रम

कराहप्पा (सन् ८०६, ४९)

लोअह गव्व समुव्वहइ, हँउ परमत्थ पवीण ।
कोडिअ-मज्झे एक्कु जइ, होइ णिरंजण-लीण ॥

आगम-वेअ-पुराणेँ पण्डिअ माण वहन्ति ।
पक्क-सिरिफले अलिअ जिम, बाहेरीअ भमन्ति ॥

खिति-जल-जलण-पवण-गअण वि माणह ।
मण्डल-चक्क विसअ-बुद्धि लइ परिमाणह ॥

णित्तरंग-सम सहज-रूअ सअल-कलुस-विरहिए ।
पाप-पुण्ण-रहिए कुच्छ णाहि काण्ह फुट कहिए ॥

बहिणिक्कालिआ सुण्णासुण्ण पइट्ठ ।
सुण्णासुण्ण-वेणि मज्झे रे बढ़ ! किम्पि ण दिट्ठ ॥

सहज एक्कु पर अत्थि तहि फुड़ काण्ह परिजाणइ ।
सत्थागम बहु पढ़इ सुणइ बढ़ ! किम्पि ण जाणइ ॥

अह ण गमइ ऊह ण जाइ । वेणिण-रहिअ तसु णिच्चल ठाइ ।
भणइ काण्ह मण कहवि ण फुट्टइ । णिचल पवण घरिणि-घर वट्टइ ॥

लोअह-लोभ गव्व-गर्व समुव्वहइ-रखते हे हउ-मैं परमत्थ-परमार्थ पवीण-प्रवीण कोडिअ-करोड़ो मज्झे-में एक्कु-एक जइ-यदि लीण-लीन वेअ-वेद माण-मान सिरीफल-नारियल खिति-पृथ्वी जलण-अग्नि गअण-आकाश माणह-मानो चक्क-चक्र णित्तरग-तरग रहित रूअ-रूप सअल-सकल कलुस-पाप रहिए-रहित फुट-स्फुट बहिणिक्कालिआ-बाहर निकाला सुण्णासुण्ण-शून्याशून्य पइट्ठ-घुसकर वेणि-दो बढ़-मूढ किम्पि-कुछ भी, किमपि दिट्ठ-देखा अत्थि-है फुड-स्पष्ट परिजाणइ-जानता है सत्थागम-शास्त्रागम अह-नीचे गमइ-जाता है ऊह-ऊपर वेणिण-दुविधा, द्वैत मण-मन कहवि-कहने में घरिणि-गृहणी

वर गिरिकन्दर गुहिरे जगु तहिं सअल बि तुट्टइ ।
विमल सलिल सोस जाइ, कालग्गि पइट्ठइ ॥
पह वहन्ते णिअ-मण, बन्धण किअऊ जेण ।
तिहुअण सअल' बि फारिआ, पुणु सांरिअ तेण ॥
सहजे णिच्चल जेण किअ, समरसे णिअ-मण-राअ ।
सिद्धो सो पुण तक्खणे, णउ जरामरणह भाअ ॥
णिचल णिव्विअप्प णिव्विआर । उअअ अत्थमण-रहिअ सुसार ।
अ[illegible] सो णि[illegible]ण भणिज्जइ । जहिं मण माणस कम्पि ण किज्जइ ॥
जइ पवण-गमण-दुआरे, दिढ तालाबि दिज्जइ ।
जइ तसु घोरान्धकारें, मण दिवहो किज्जइ ॥
जिण-रअण उअरें जइ, सो वरु अम्बरु छुप्पइ ।
भणइ काण्ह भव भुञ्जन्ते, णिव्बाणो'बि सिज्झइ ॥
वर-गिरि-सिहर उतुंग मुणि, सबरें जहिं किअ वास ।
णउ सो लघिअ पंचाणणेहि, करि-वर दुरिआ आस ॥
एहु सो गिरिवर कहिअ मइ, एहु सो महसुह टाव ।
एक्कु रअणी सहज खण, लब्भइ महसुह जाव ॥

गुहिरे-गह्वर, गुफा तुट्टइ-टूटता है कालग्गि-कालाग्नि पइट्ठइ-प्रविष्ट हो ।
पह-प्रकाश णिअ-निज तिहुअण-त्रिभुवन पुणु-फिर तेण-उसे णिच्चल-निश्चल
जेण-जिसे राअ-राग पुण-फिर तक्खणे-उस समय णउ-नहीं भाअ-भाग
णिव्विअप्प-निर्विकल्प णिव्विआर-निर्विकार उअअ-उदय अत्थमण-डूबना रहिअ-रहित
सुसार-अच्छीतरह णिव्बाण-निर्वाण भणिज्जइ-कहे जहिं-जहाँ जइ-यदि दिढ-दृढ
तालाबि-ताला भी घोरान्धकारें-घोर अन्धकार मे दिवहो-दीपक रअण-रतन
णिव्बाणो' बि-निर्वाण भी सिज्झइ-सिद्ध होता है सिहर-शिखर मुणि-मुनि
सबरें-शवर पंचाणणेहि-पंचानन मइ-मैने महसुह-महासुख रअणी-रजनी

सव जगु काअ-वाअ-मरण मिलि विफुरइ तहि सो दूरे ।
सो एहु भंगे महासुह णिव्वाण एक्कु रे ॥
एक्कु ण किज्जइ मन्त ण तन्त । णिअ-घरणी लइ केलि करन्त ॥
णिअ-घरे घरणी जाव ण मज्जइ । . . . . ॥
एसो जप-होमे मण्डल कम्मे । अणुदिण अच्छसि काहिउ धम्मे ॥
तो विणु तरुणि णिरन्तर णेहें । बोहि कि लब्भइ एण'बि देहें ॥
जें किअ णिच्चल मण-रअण, णिअ-घरणी लइ एत्थ ।
सोह वाजिरणाहु रे, मर्यि वुत्तो परमत्थ ॥
जिमि लोण विलिज्जइ पाणिएहि, तिम घरिणी लइ चित्त ।
समरस जाइ तक्खणे, जइ पुणु ते सम णित्त ॥

—दोहाकोष

एवंकार दिढ़ वाखोड़ मोड्डिउ । विविह विआपक बाँधन तोड़िउ ॥
कारह विलसिआ आसव-माता । सहज-नलिनि-वन पइसि निवाता ॥
जिम जिम करिणा करिणिरें रीभअ । तिम तिम तथता-मअगल वरिसअ ॥
छड़ गइ सअल सहावे सुद्ध । भावाभाव वलाग न छुद्ध ॥
दशबल रअण हरिअ दशदीसें । अविद्य करि कूँ दम अकिलेसें ॥

वाअ-वाक् विफुरइ-फुरता है, सूझता है मन्त-मन्त्र तन्त-तन्त्र वण्ण-वर्ण कम्मे-कर्म में . . . . अच्छसि-रहते हो धम्मे-धर्म में विणु-बिना णेहें-स्नेह में बोहि-समझकर एण'बि-दूसरे भी जे-जो णिच्चल-निश्चल रअण-रतन णिअ-निज एत्थ-यहाँ सोह-वही वाजिरणाहु-वज्रनाथ मर्यि-मैं वुत्तो-बोला विलिज्जइ-विलीन होता है तक्खणें-उसी समय जइ-यदि पुणु-फिर णित्त-नित्य एवंकार-इस तरह दिढ-दृढ वाखोड़ मोड्डिउ- [?] विविह-विविध विआपक-व्यापक करिणा-हाथी करिणिरें-हथिनी को मअगल-मदजल छड़-छः गइ-गति सहावे-स्वभावे वलाग- [?] छुद्ध-शुद्ध दीसें-दिशा करिकूं-हाथी को ।

नगर बाहिरे डोम्बि तोहोरि कुडिआ । छाइ छोइ जाइ सो ब्राह्मण नाडिया ॥
आलो डोम्बि तोए सम करिब म सग । निघिण काण्ह कपालि जोइ लाँग ॥
एक सो पदुम चौषटि पाखुड़ी । तहिं चडि णाचअ डोम्बि बापुड़ी ॥
हालो डोम्बि तो पूछमि सद्भावे । आइससि जासि डोम्बि काहरि नावें ॥
ताँति विकणअ डोम्बि अवर न चगेडा । तोहोर अन्तरे छड़ि नड़ मेड़ा ॥
तूँ लो डोम्बि हाउ कपाली । तोहोर अन्तरे मोए घेणिलि हाडेरि माली ॥
सरवर भाँजिअ डोम्बी खाअ मोलाण । मारमि डोम्बी लेमि पराण ॥

नाडि शक्ति दिट धरिया खाटे । अनहा डमरु बजइ विरनाटे ॥
काण्ह कपाली जोइ पइट अचारे । देह नअरि विहरइ एककारें ॥
अलि-कलि घंटा नेउर चरणे । रवि-शशि कुंडल किउ आभरणे ॥
राग-दोष मोहे लाइअ छार । परम मोख लवए मुत्ताहार ॥
मारिअ सासु नणद घरे शाली । मा मरिअ काण्ह भइल कपाली ॥

तीन-भुअण मइँ बाहिअ हेलें । हउ सूतेलि महासुह लीलें ॥
कइसनि डोम्बि तोहोरि भाभरि आली । अन्ते कुलिण जण माझें कबाली ॥

डोम्बि-डोमन तोहोरि-तेरी [illegible] छाइ छोइ-छूछूकर ब्राह्मण-ब्राह्मण आलो-अरे म-नहीं निघिण-घृणारहित कपालि-कापालिक जोइ-जोगी लाग-नगा बापुडा-बेचारी पूछमि-पूछता हूँ आइससि-आता है जासि-जाता है काहरि-किसके ताँति-तंत्री अवर-और चगेडा-चगेडा नड़ मेड़ा [?] लो-रे हाउ-हौ, मैं कपाली-कापालिक तोहोर अन्तरे-तेरे कारण घेणिलि-ग्रहण की हाडेरि-हड्डी की माली-माला [illegible] लेमि-लेता है पराण-प्राण नाडि-नारी अनहा-अनहद विरनाटे-वीरनाद मे अचारे-आचार में नअरि-नगरी विहरइ-विहार करता है नेउर-नूपुर किउ-किया छार-क्षार मोख-मोक्ष [illegible] शाली-साली भइल-हुआ बाहिअ- [?] हेले-देखें सूतेलि-सोई थी महासुह-महासुख कइसनि-कैसे कबाली-कपाली ।

तइ लो डोम्बी सअल बिटालिउ । काज ण कारण ससहर टालिउ ॥
केहो केहो तोहोरे विरुआ बोलइ । विदु जन लोअ तोरे कण्ट न मेलइ ॥
काण्हे गाइ तू कामचण्डाली । डोम्बि तआगलि नाहि छिनाली ॥

भव-णिब्बाणे पडह मांदला । मण-पवण-वेणिण करड कशाला ॥
जअ जअ दुन्दुहि सद्द उछलिला । काण्हे डोम्बि-विवाहे चलिला ॥
डोम्बि विवाहिअ अहारिउ जाम । जउतके किअ आणूतू धाम ॥
अहणिसि सुरअ पसंगे जाअ । जोइणि जाले रअणि पोहाअ ॥
डोंबिए संगे जोइ रत्ता । खणह ण छाड़अ सहज उमत्ता ॥

सुण्ण वाह तथता पहारी । मोह भंडार लइ सअल अहारी ॥
घुमइ न चेवइ स-पर-विभागा । सहज-निदालु काण्हिला लागा ॥
चेअण ण वेअण भर निद गेला । सअल मुकल करि सुहे सुतेला ॥
सुअने मइ देखिल तिहुअण सुण्ण । घोलिअ अवनागवण विहूण ॥
साखि करिब जालंधरि-पाए । पाखि न चहइ मोरि पंडिआचाए ॥

समहर-शिव केहो-किस ने विरुआ-यश विदु-विद्वान् लोअ-लोग गाइ-गाता है
तआगलि-उस से आगे णिब्बाणे-निर्वाण में पडइ-पटह जअ-जय दुन्दुहि-दुन्दुभि
सद्द-शब्द जउतके-यौतुक आणूतू-अनुत्तर धाम-धर्म अहणिसि-रातदिन सुरअ-सुरत
जोइणि-जोगिनी रअणि-रात पोहाय-खल करके रत्तो-रक्त खणह-क्षण भी
उमत्तो उन्मत्त सुण्ण-शून्य पहारी-प्रहार घुमइ- [?] चेवई-सोचता है
सपर-स्वपर चेअण-चेतन वेअण-वेदना निद-नींद सुअने स्वप्न में
तिहुअण-त्रिभुवन अवनागवण-आवागमन साखि-साक्षी जालंधरि पाए-जालंधर के चरण
पंडि आचाए-पंडिताचार ।

चिअ सहजे सुण्ण सँपुण्णा। काँध वियोएँ मा होहि विसन्ना ॥
भण कइसे काण्हा नाहि। फरइ अणुदिण तिलोएँ समाइ ॥
मूढा दिट नाट देखि काअर। भाँग तरंग कि सोषइ सागर ॥
मूढ! अछन्ते लोअण पेक्खइ। दूध माँझेलउ अच्छन्ते ण देक्खइ ॥
भव जाई ण आवई ण एथु कोई। अइस भावे विलसइ काण्हिल जोई ॥

—चर्यापद

चिअ-चित्त सँपुण्णा-सम्पूर्ण काँधवियोएँ-स्कन्धावियोग में मा-नहीं विसन्ना-दुखी [illegible] तिलोए-तीन लोक में दिठ-दृष्टि नाठ-नष्ट काअर-कातर सोषइ-सुखाना है साअर-सागर लोअण-लोगों को पेक्खइ-देखता है एथु-यहाँ।

पुष्फयंत (सन् ९५९-७२)

उब्बद्ध-जूडु भू-भंग-भीसु । तोडेप्पिणु चोडहोतणउ सीमु ।
भुवणेक्कराम रायाहिराउ । जहिं अच्छहि तुडिगु महाणुभाव ।
तं दीण दिण्ण-धण-कणय-पयरु । महि परिभमंतु मेपाडि-णयरु ।
अवहेरिय-खल-यणु गुण-महंतु । दियहेहिं पराइयु पुप्फयंतु ।
दुग्गम दीहर-पंथेण रीणु । णव-यंदु जेम देहेण खीणु ।
तरु कुसुम-रेणु-रंजिय-समीरि । मायंद [illegible] [illegible] [illegible] ।
णंदन-वणि किर वीसमइ जाम । तहिं विण्णि पुरिस संपत्त ताम ।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एँव । "भो खंड-गलिय-पावावलेव ।
परिभमिर-भमर-रव-गुमगुमंति । किकर णिवसहि णिज्जण वणंति ।
करि सर वहिरिय दिन्-चक्कवाल । पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि?"
तं सुणिवि भणइ अहिमाण-मेरु । "वरि खज्जइ गिरि-कंदरि-कसेरु ।

उब्बद्ध-उद्बद्ध जूडु-जूट भू-भंग-भ्रू भंग भीसु-भीषण [illegible] चोड-चोल युवराज राजादित्य (मृत्यु ९४९ ई०) सीमु-सिर भुवणेक्कराम-पृथ्वीलोक में एकमात्र रायाहिराउ-राजाधिराज अच्छहि-रहता है तुडिगु-राष्ट्रकूट नरेश-कृष्ण तृतीय दीण-दीन दिण्ण-दत्त कणय-कनक मेपाडि-मेलपाटी (उत्तरी अर्काट), णयरु-नगर अवहेरिय-देखने के लिए यणु-गुण दियहेहिं-दिनो में दीहर-बडे यंदु-चन्द्रमा गोछ गुच्छ गोंदलिय-कुचलते है कीरि-तोता णंदण-वणि=नंदन वन विसमइ-विश्राम करता है जाम-प्रहर तहिं-वहा विण्णि-दो संपत्त-प्राप्त हुए ताम-तब पणवेप्पिणु-प्रणाम किया पवुत्तु-कहा [?] गलिय-गलित पावावलेव-पापावलेव परिभमिर-घूमते है किंकर-दास णिज्जण-निर्जन वणंति=वन-प्रदेश सर-तालाब बहिरिय-बाहर दिक्-दिशा पइसरहि-प्रवेश करें पुरवरि-श्रेष्ठ नगर भणइ-कहता है [illegible] (पुप्फदंत का उपनाम ?) खज्जइ-खाये

णउ दुज्जण-भउंहा-वंकियाइँ । दीसंतु कलुस-भावंकियाइँ ।
वर णरवरु धवलच्छिहे होउ, मा कुच्छिहे मरउ णोणि मुहणिग्गमे ।
खल-कुच्छिय-पहु वयणाइ भिउडिय णयणाइँ म णिहालउ सूरुग्गमे ।
चमराणिल उड्डाविय गुणाइ । अहिसेय-धोय-सुयणत्तणाइ ।
अविवेयइ दप्पुत्तालियाइ । मोहंधइ मारण सीलियाइ ।
विससह जम्मइ जड रत्तियाइ । किलच्छिइ विउस-विरत्तियाइ ।
संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु । गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसु ।
तहिं अम्हइ काणणु जि सरणु । अहिमाणे सहुँ वरि होउ मरणु ।"
........................पडिवयणु दिण्णु णायर-णरेहिं ।
घत्ता । "जण-मण तिमिरोसारण मय तरु वारण, णिअ-कुल गअण दिवायर ।
भो भो केसव-तणुरुह ! णव-सररुहु-मुह कव्व-रयण-रयणायर ! ।
बंभंड-मंडवारूढ-कित्ति । अणवरय रइय-जिणणाह-भत्ति ।
सुहतुंग-देव-कम कमल-भसलु । णीसेस-सकल-विण्णाण-कुसलु ॥

णउ-नहीं भउंहा-भौंहें भावंकियाइ-भाव समझना धवलच्छिहे-विष्णु मुहणिग्गमे मुह मे निकले पहु-प्रभु वयन-वचन भिउडिय-भृकुटित णयणाइ-नयनो को म-न णिहालउ-देखूं सूरुग्गमे-सूर का उद्गम चमराणिल-चामर से की गई हवा अहिसेय-अभिषेक सुयणत्तणाइ-सज्जनता अविवेयइ-अविवेक दप्पुत्तालियाइ-घमण्ड मोहंधइ-मोहांधता सीलियाइ-शीलता विससह-विष के साथ जम्मइ-उत्पन्न होती है रत्तियाइ-लालिमा लच्छिइ-लक्ष्मी बिउस-विद्वान् विरत्तियाइ-विरक्त होती है संपइ-इस समय णिव्विसेसु-निर्विशेष वि-भी वेसु-वेष काणणु-कानन अहिमाणे-अभिमान मे पडिवयणु-प्रत्युत्तर दिण्णु-दिया णायर-नागर णरेहिं-नर को मय-मद णिय-अपना गअण-कमल मुह-मुख कव्व-काव्य बंभंड-ब्रह्माण्ड मंडवारूढ-मंडपारूढ कित्ति-कीर्ति अणवरय-अनवरत रइय-रचित जिणणाह-जिननाथ (महावीर) भत्ति-भक्ति सुहतुंग-शुभतुंग भसलु-भ्रमर विण्णाण-विज्ञान

पायय-कइ-कव्व-रसावउद्धु । संपीय सरासइ सुरहि दुद्धु ।
कमलच्छु अमच्छरु सच्च-संधु । रण भर-धुर धरणुग्घुट्ठ-खंधु ॥
सविलास-विलासिणि-हियय-थेणु । सुपसिद्ध-महाकइ कामधेणु ।
काणीण [illegible] परिपूरियासु । जस-पसर पसाहिय-दस-दिसासु ॥
पर-रमणि-परं-मुहु सुद्ध-सीलु । उण्णय मइ सुयणुद्धरण-लीलु ।
[illegible] उत्तमंगु । सिरिदेवि-यंव-गब्भुब्भवंगु ॥
अण्णइय-तणय-तणुरुह पसत्थु । हत्थि'व दाणोल्लिय-दीह हत्थु ।
दुव्वसण-सीह-संघाय-सरहु । ण वियाणहि किं णामेण **भरहु** ॥

आवंतु दिट्ठ भरहेण केम । वाई सरि-सरि कल्लोल जेम ।
पुणु तासु तेण विरइउ पहाणु । घर आयहो अब्भागय विहाणु ।
संभासणु पिय-वयणेहिं रम्मु । णिम्मुक्क-डंभु णं परमधम्मु ।
"तुहुं आयउ णं गुण-मणि णिहाणु । तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु।"

पायय-प्राकृत कइ-कवि कव्व-काव्य उद्धु-लुब्ध सरासइ-सरस्वती सुरहि-सुरभि दुद्धु-दुग्ध कमलच्छ-कमलाक्ष अमच्छरु-अमत्सर सच्च-संध=सत्य सन्ध उग्घुट्ठ-उद्घुष्ट हियय-हृदय थेणु-स्तेन काणीण-कानीन पसाहिय-प्रसाधित परं-मुहु=पराङ्मुख उण्णय-उन्नत मइ-मति सुयणुद्धरण-सुजनोद्धरण यण-जन पय-पद पणविय-प्रणमित उत्तमंगु-मस्तक सिरिदेव-श्रीदेव यव-अम्ब गब्भुब्भवंगु-गर्भोद्भवांग अण्णइय-अन्ना या माई (?) तणय-पुत्र पसत्थु प्रशस्त हत्थि-हाथी दाणोल्लिय-दानोल्लित दीह-दीर्घ हत्थु-हस्त दुव्वसण-दुर्व्यसन सीह-सिंह संघाय-संघात सरहु-शरभ वियाणहि-जानता है णामेह-नाम भरहु-भरत (राष्ट्रकूटों का मन्त्री भरत और पुष्फयंत का आश्रयदाता) आवंतु-आता हुआ भरहेण-भरत के द्वारा वाई-बावडी विरइउ-विरचा पहाणु-प्रधान अब्भागय अभ्यागत विहाणु विधान [illegible] पिय-प्रिय रम्मु-रम्य णिम्मुक्क-निमुक्त डंभु-दंभ णं-मानो णिहाणु निधान पंकयहो-कमल ।

पुण एव भणेप्पिणु मणहराइँ । पहरीण झीण-तणु सुहयराइँ ।
वर-एहाण-विलेवण-भूसणाइँ । दिण्णाइँ देवंगइँ णिवसणाइँ ।
अच्चंत-रसालइँ भोयणाइँ । गलियाइँ जाम कइवय-दिणाइँ ।
देवी सुण्ण कइ भणिउ ताम । "भो पुप्फयंत ! ससिलिहिय-णाम !
णिय सिरि-विसेस-णिज्जिय सुरिंदु । गिरि धीरु वीरु भइरव-णरिंदु ।
पइं मण्णिउ वण्णिउ वीर-राउ । उप्पण्णउ जो मिच्छत्त-राउ ।
पच्छित्त तासु जइ करहि अज्जु । ता घडइ तुज्झु परलोय-कज्जु ॥"........
.... । ता जंपइ वर-वाया-विलासु ।
"भो देवी-णंदण जयसिरीह ! किं किज्जइ कव्वु सुपुरुस-सीह ।
घत्ता । "णउ महु बुद्धि परिग्गहु णउ सय संगहु णउ कामुवि करेउ बलु ।
भणु किह कर्मि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुण-सय-संकुलु ।"
—आदिपुराण (महापुराण)

कोंडिण्ण-गोत्त-णह दिणयरासु । **वल्लह**-णरिंद घर-महयरासु ।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु । अहिमाण मेरु कइ पुप्फ-यंतु ।
— जसहर-चरिउ

भणेप्पिणु-कहा मणहराइ-मनोहर सुहयराइ-सुखकर ण्हाण-स्नान विलेवण-विलेपन दिण्णाइ-दिये देवंगइ-देवांगों को अच्चंत-अत्यन्त रसालइ-मधुर भोयणाइ-भोजन गलियाइ-बीते जाम-यो कइवय-कतिपय दिणाइ-दिन सुण्ण-पुत्र ताम-तब ससिलिहिय-शशिलिखित सिरि-श्री णिज्जिय-निर्जित सुरिन्दु-सुरेन्द्र भइरव-भैरव पइ-तुमने मण्णिव-माना वण्णिव-वर्णन किया राउ-राजा उप्पण्णउ-उत्पन्न किया मिच्छत्त-मिथ्या राउ-राग पच्छित्त-प्रायश्चित्त अज्जु-आज ता-तो घडइ-घटित होगा परलोय-परलोक कज्ज-कार्य जंपइ-बोलता है वाया-वाचा णंदण-नन्दन सीह-सिंह महु-मेरा परिग्गहु-परिग्रह सय-सत संगहु-संग्रह णउ-नहीं [illegible] किसी का [illegible] से लहमि-पाता हू कित्तणु-कीर्तन [illegible] सय-शत कोंडिण्ण-कौंडिन्य गोत्त-गोत्र णह-नभ वल्लह-वल्लभ णरिन्द-नरेन्द्र महयरासु (?) णण्णहो-किसी दूसरे मे ।

भणु भणु सिरिपंचमि-फलु गहीरु । आयण्णहिं णायकुमार-वीरु ।
ता **वल्लह**-राय-महंतएण । कलि-विलरिय-दुरिय कयंतएण ।
कोंडिण्ण-गोत्त-णह-ससहरेण । दालिद्द कंद-कंदल-हरेण ।
वर-कव्व-रयण-रयणायरेण । लच्छी-पोमिणि-माणस-सरेण ।
कुंदव्व भरह-दिय-तणुरुहेण ।........................
णण्णेण पवुत्तु महाणुभाव ।........................

— **णायकुमार-चरिउ**

अत्थमिइ दिणेसरि जिह सउणा । तिह पंथिय थिय माणिय सउणा ।
जिह फुरियउ दीवय-दित्तियउ । तिह कंताहरणह-दित्तियउ ।
जिह संझा-राएं रंजियउ । तिह वेसा-राएं रंजियउ ।
जिह भुवणुल्लउ संताबियउ । तिह चक्कुल्लुवि संताबियउ ।
जिह दिसि-दिसि तिमिरइँ मिलियाइं । तिह दिसि-दिसि जारइं मिलियाइं ।
जिह रयणिहि कमलइं मउलियाइं । तिह विरहिणि-वयणइँ मउलियाइँ ।
जिह घरहँ कवाडइँ दिण्णाइँ । तिह वल्लह-संवइं दिण्णाइँ ।
जिह चंदे णिय-कर पसरु किउ । तिह पिय-केसहिं कर-पसरु किउ ।

भणु-कहो सिरिपंचमि-श्रीपंचमी. गहीरु-गंभीर आयण्णहिं-आकर्ण णायकुमार-नागकुमार वल्लह-वल्लभ दुरिय-दुरित कयंतएण-कृतांत को णह-नभ ससहरेण-शशधर से (चन्द्रमा से) दालिद्द-दारिद्र्य रयणायरेण-रत्नाकर को लच्छी-लक्ष्मी पोमिणि-पद्मिनी माणस-सरेण-मानसरोवर कुंदव्व-कुंद की तरह भरह भरत दिय-द्विज पवुत्तु-प्रवृत्त अत्थमिइ-छिपने पर दिणेसरि-सूर्य जिह-जैसे सउणा-शकुन पंथिय-राहगीर दीवय दीपक दित्तियउ-दीप्तिमान कंताहरणह-कांत आभरण भी राएं-राग में वेसा-वेश संताबियउ-सन्तप्त किया चक्कुल्लुवि-चकवा-चकई रयणिहि-रात को कमलइं-कमलिनी ... होती है वयणइं-बदन भी जिह-जिस तरह कवाडइ-किवाड़ दिण्णाइ- (?) संवइ-सम्पत्ति पसरु-प्रसार किउ-किया तिह-उसी तरह ।

जिह कुवलय कुमुयइँ वियसियइँ । तिह कीलय-मिहुणइ वियसियइँ ।
जिह पीयइँ पाणइँ महुराइं । तिह अहरहँ महु-रस-महुराइँ ।
जिह जिह गलंति जामिणि पहर । तिह तिह विइण्ण मउरइ पहर ।
जिह गणि मुक्कुग्गम दरिसियउ । तिह चिडि मुक्कुग्गमु दरिसियउ ।
घत्ता । ता चक्क-उलह पंकयहँ तव-किरण-पूरिय भुवणोयरु ।
विरयह णर-णारी-यणह जीविउ देंतु समुग्गउ दिणयरु ॥

—आदिपुराण

विस-कालिंदि-काल णव जलहर पिहिय णहंतरालओ ।
धुय गय गंड-मंडलुड्डाविय-चल-मत्तालि-मेलओ ।
[illegible] धारा वरिस-भरंत भूयलो ।
हय रवियर-पयाव-पसरुग्गय-तरु तण-णील सद्दलो ।
पडु-तडि-वडण-पडिय-वियडायल-रुंजिय-सीह-दारुणो ।
णच्चिय-मत्त-मोर-गलकल-रव-पूरिय सयल-काणणो ।
गिरि-सरि-दरि-सरंत-सरसर-भय- [illegible] ।
[illegible] दुंदुह-सयवय सालूर णीसणो ।

वियसियइं-विकसित होते हैं कीलय- [?] मिहुणइं-मिथुन, जोड़ा महुराइ-मधुरता अहरह-ओठ गलंति-बीतता है जामिणि-रात विइण्ण-विकीर्ण मउरइ-मृदुरति [illegible] दरिसियउ-दिखाई देता है चक्क-उलह [?] पंकयहं-कमल को तंव-ताम्र [illegible] विरयह-विरही जीविउ-जीवन समुग्गउ-साथ उगा दिणयरु-सूर्य विस- [?] णव-नव जलहर-बादल पिहिय-ढका णहंतरालओ-आकाश का अन्तराल धुय-धुला गय-हाथी मत्तालि-मस्त भौंरा वरिस-बरस कर भूयलो-भूतल रवियर-रविकर पयाव-प्रताप सद्दलो-शाद्वल पडु-पटु तडि-बिजली वडण- [?] वियडायल-विकटाचल सीह-सिंह गलकल-कल सयल-सकल काणणो-कानन वाणर-वानर मुक्क-छूटा णीसणो-निःस्वन दुंदुह-दुंदुभि सयवय-शतपत्र सालूर-शालूर (एककंद) ।

घण-चिक्खल्ल-खोल्ल-खणि-खेइय-हरिण-सिलिंब-कय-वहो ।
विर्यासय-णव-कलंब-कुसुमुग्गय रय-पिंजरिय-दिसिवहो ।
सुर-वइ-चाव-तोरणालंकिय-घण करि-भरिय-णहरुहो ।
विवर-मुहोयरंत-जल प[illegible] ॥
"पिय-पिय-पिय" [illegible]-तोय-विंदुओ ।
सर-तीरुल्ललंत-हंसावलि-भुणि-हल-बोल-संजुओ ॥
चंपय-चूय-चार-चव-चंदण-चिंचिणि-पीणियाउसो
वुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जए सुहयारि पाउसो ॥
मुग्ग-कुलत्त-कंगु-जव-कलव-तिलेसी-वीहि-मासया ।
फलभर-णविय कणिस-कण-लंपड-णि[illegible] ॥
ववगय-भोय-भूमि-भव-भूरुह-सिरि-णरवइ-रमा-सही ।
जाया विविह-धएण-दुम-[illegible] मही ।
खंधावारहु उप्परि अहणिसु । ता णायहिं वेढविउ पाउसु ।
मय-उलु तसइ रसइ वरिसइ घणु । पीयलु सामलु विरसइ सुरधणु ।

—आदिपुराण

घण-घन चिक्खल-कीचड खेइय-खेदित सिलिंब-शिलिंब कय- [?]
विकसिय-विकसित कलंब-कदंब [illegible] वइ-पति चाव-चाप
तोरणालंकिय-तोरणालंकृत भरिय-भरित णहरुहो-नभ मुहोयरंत मुखोदरांत
पवह-प्रवाह विसहरो-विषधर लवंत-बोलता है बप्पीहय पपीहा संजुओ-संयुक्त
चय-आम पीणियाउसो-पालित वुट्ठो-उठा झत्ति-झट कालम्मि-काल में
सुहयारि-सुखकारी पाउसो-पावस मुग्ग-मूग कुलत्थ-कुलथी कंगु-कांगनी
जव-जौ कलव-तिल तिलसी-तीसी वीहि-चावल मासया-उड़द णविय झुकती है
सुय-तोता सहासया-हजारों ववगय-व्ययगत भोय-भोग णरवइ-नरपति
सही-सखी धएण-धान्य दुम-द्रुम गुम्म-गुल्म पसाहणा-प्रसाधना
खंधावारहु-स्कंधावार अहणिसु-रातदिन णायहिं-नाद करते है सामलु-श्यामल
सुरधणु-इन्द्रचाप ।

नामदेव (सन् १२८०)

उत्तम नर तनु पाया रे भाई
गाफल क्यौं हुवा दिवाने जू
सावध सावध भज ले रे राजा,
नहिं आवे ऐशी घड़ी जू

जिन्ने जन्म डारा है तुज कू
बिसर गया उनका ध्यान जू १

फिर पस्तावेगा दगा पायेगा
निकल जायगा अवसान जू २

क्या करना सो आजि कर ले
फिर नहिं ऐशी जोड़ी जू ३

हंस जायगा पिंजरा पड़ेगा
तुज कैसी भूल पड़ी जू ४

सुन्ने का मन्दिर-महल बनाया
धन सम्पत नहिं तेरी जू ५

गाफल-गाफ़िल जू-जी सावध-सावधान, धारे-धारे ऐशी-ऐसी जिन्ने-जिसने पस्तावेगा-पछतावेगा अवसान-धैर्य आजि-आज तुज-तुझ सुन्ने-शून्य ।

मा भैन औंर जोरू लड़के
सुख के खातर सारे जू ६

अकेले आना अकेले जाना
सब झूठी माया पसरी जू ७

लख चौर्यासी का फेरा आवेगा
तब चुप बैठे बन्दे जू ८

फिरता फिरता जीव दमता है बाबा
कौन रखे तेरे तन कू जू ९

जिस माय उदरीं जन्म लीयगा
तेरे संगत दुःख उन कू जू १०

गरभी की यातना सुन ले रे भाई
नव मास बन्धन डारे जू ११

नहिं जगा हलने-चलने कू बाबा
छुड़ाने कू कोई नहिं आवे जू १२

मा-माता भैन-बहन जोरू-पत्नी खातर-खातिर पसरी-फैली लखचौरासी-चौरासी लाख
दमता-थकना माय-माता उदरी-पेट में लीयगा-लेगा गरभी-गर्भस्थ प्राणी

आग लगी क्या देखत अंधे
कायके खातर सोया जू १३

ऐसी बात सुनके 'नामा' सावध हुवा
गुरु के पाव मिठी डारी जू १४

मैं अनाथ शरण भये तुज कू
आप जो मेरी लाज राखी जू १५

२

जो कोई वसुधा दान दे आवे
पूर्ण जज्ञ करे करावे
तीरथ बरथ करे असनान
नहि नहिं हरि-नाम समान १

जो कोई जावे हिमालय गले
काशी करवत ले कर मरे
दसवे द्वारे काढे प्राण
नहि नहिं हरि-नाम समान २

काय-कष्ट दे कलेवर जीवे
ना कुच्च खावे ना कुच्च पीवे

कायके-किसके मिठी-गोद में जकड कर पकडना जज्ञ-यज्ञ बरथ-व्रत काय शरीर कुच्च-कुछ ।

गगन मंडळ मों जोग ध्यान
नहिं नहिं हरि नाम समान ३

अगली-पिछली बात बनावे
नेम-धरम में मन छुपावे
चारों बेद पढे पुराण
नहिं नहिं हरि-नाम समान ४

सद्गुरु की जद कृपा भई
प्रेम भगद हरदे धर लई
कहे 'नामदेव' भज भगवान
नहिं नहिं हरि-नाम समान ५

२

जहाँ तुम गिरीवर तहाँ हम मोरा
जहाँ तुम चन्दा तहाँ मैं चकोरा
जहाँ तुम तरुवर तहाँ मैं पंछी
जहाँ तुम सरवर तहाँ मैं मच्छी

जहाँ तुम दीवा तहाँ मैं बत्ती
जहाँ तुम पंथी तहाँ मैं साथी १

मंडळ-मंडल मों-मे नेम-नियम जद-जब भगद-भक्ति हरदे-हृदय पंथी-पथिक।

बेल के पाती शंकर पूजा
'नामदेव' कहे भाव नहिं दूजा २

४

हीन दीन जात मोरी **पंढरी** के राया
ऐसा तुमने नामा दरजी कायकु बनाया १

टाळ बिना लेके नामा देउल में गया
पूजा करते ब्रह्मन उन्ने बाहर ढकाया २

देउल के पीछे नामा अल्लख पुकारे
जिदर जिदर नामा उदर देउल ही फीरे ३

नाना वर्ण गवा उनका एक वर्ण दूध
तुम कहाँ के ब्रह्मन हम कहाँ के सूद ४

मन मेरो सुई तन मेरो धागा
खेचरजी के चरन पर नामा सिंपी लागा ५

बेल-बिल्व पाती-पत्ता राया-राजा टाळ-झाँझ बिना-वीणा देउल-देवालय ब्रह्मन-ब्राह्मण उन्ने-उसने अल्लख-अलख जिदर-जिधर उदर-उधर गवा-गाय सूद-शूद्र सिंपी-छीपी, दर्जी ।

५

दूध पियो गोविन्द लाला
काला बछरा कपिला गाई दूध दुहावत नामा जाई १

सोने का गडवा दूध से भरिया
पिवे नरायण आगे धरिया २

प्रभुवन की मूरत दूध ना पीवत
सीर पछार नामा रोवत ३

ऐसा भगत मैं कबू न पाया
नामदेव नें देव हसाया ४

सुलतान पूछे सुन रे नामा
देखो राम तुमारे कामा।
नामा सुलतानें बाँधा

देखो तेरा हर बिठा
बिस्मिल गौ देव जिवाय
नहिं तो गर्दन मारूँ ठाय १

बादशाह ऐसी क्यौं होय!
बिस्मिल कीय न जीवे कोय!

प्रभुवन की-भगवान की सीर-सिर कबू-कभी

मेरा कीया कछू न होय
कर है राम होय है सोय २

बादशाह चढ्यो हंकार
गज हस्ती दियो चमकार
रुदन करे नामे की माय
छोड राम किन भजे खुदाय ? ३

ना हूँ तेरा पुंगळा ना तूँ मेरी माय
पिंड पडे तो हर गुन गाय
करे गजेन्द्र सोंड की चोट
नामा उभरे हर की ओट ४

काजी मुल्ला करे सलाम
ईन हिन्दू मेरा मल्या मान
बादशाह बिनती सुनये हो
नामे शेर भर सोना लेव
माल लेवूँ तो दोजक परूँ
दीन छोड दुनिया को भरूँ ५

पावो बेडी हाथो ताल
नामा गावे गुण गोपाल
गंगा जमना जब उल्टी बहे

किन-क्यों नही खुदाय-खुदा हूँ-मै पुंगळा पुत्र, एक कीडा सोंड-सूंड
मल्या-मर्दन किया शेर-सेर दोजक-दोज़ख (नरक) ताल-ताला ।

तो नामा हर करता रहे
सात घरी जब बीती सुनी
अबहू न आयो त्रिभुवन धनी
पाँखतन बाज बजाईला
गरुड चढ़ गोविन्द आईला ६

कहत मुई गौ देहु जिवाय
सब कोई देखे पतिआय
नामा परवरो सेलम सेल
गौ दुहाई बछुरा मेल
दूध दोह जब मटकी भरी
ले बादशाह के आगे धरी ७

बादशाह महल में जाय
और घट की घट लागी आय
काजी मुल्ला बिनती फर्माय
बत्तीस हिन्दू मैं तेरी गाय ८

नामा कहे सुनो बादशाह
यह कुछ पतिया मुझे दिखाय
इस पतिया का यह परमाण
साच सील चालो सुलतान ९

घरी-घड़ी पाँखतन-पंख बाज-बाजा बजाईला बजाया आईला-आया मुई मरी
परवरो-पडा, पसरा सेलम सेल-भाले की तरह, दण्डवत मेल जोड़ कर घट-हृदय
बत्तीस-बख्शी, छोड़ी पतिया-विश्वास साच-सत्य सील-शील।

नामदेव सब रह्यो समाय
मिल हिन्दू सब नामे पद जाय
जो अब की बार न जीवे गाय
नामदेव का पतिया जाय १०

नामे की कीरत रही संसार
भक्त 'जना' ले उतरा पार
सकल क्लेश निन्दक भया खेद
'नामे' नारायण नहीं भेद ११

७

हम तो भले ठाकुर जाने
तुम क्यौं भाई भूट दिवाने १

नाला अपआप सागर हुवा
काहे के कारण रोता है कुवा २

चन्दन के साती लिंब हुवा चन्दन
क्यौं कर रोवे देखो ए हिंगन ३

गुरु के मेहेर से नामा भये साधू
देखत रोने लगे जन, हे भोदू ४

अपआप-अपने आप साती-साथ लिंब-नीम हिंगन-इगुदी मेहेर-दया

८

तू अगाध बैकुंठनाथ,
तेरे चरण मेरा माथ १

जब भुले नामा पेषू
जब जाऊं तब तू ही जु पेषू २

जलथल महीथल काष्ठ पाषाण
आगम निगम चार वेद पुराण ३

मैंने देखा जन बन्धन ज्वाला
नामा काटा बन्धन दीन दयाला ४

९

राम आपणा पयाणा राम आपणा पयाणा
नामदेव मूरख लोग सयाना १

जब हम हिरदे प्रीत बिचारी
रजबल छाडी के भये भिखारी २

पेषू-देखू जंत्र-यत्र, जहां मंत्र-वहां पयाणा ? प्रयाण (?) आपणा अपना
रजबल-रजोगुण ।

जब हरि कृपा करी हम जाणा
तब था चेरा अब भये राणा ३

नामदेव कहे मैं नरहरी गायो
पद खोवत परमारथ पायो ४

१०

राम नाम वै श्रवण सुनीवो
सलील मोह्य मैं वही नहीं जाईवो १

अकथ कथ्यो न जाई कागदी लिख्यो न भाई
सकळ भुवनपति मिल्यो सहज भाई २

राम माता राम पिता राम सब ही जीवदाता
म्हणत नामा यो छीपी कहे रे पुकार गीता ३

११

धिग् तो वक्ता धिग् तो सुरता
प्राणनाथ को नाम नहिं लेता १

सलील-लीला के साथ सकळ-सकल म्हणत-कहता है सुरता-श्रोता।

नाद बेद सब गनीक पुराण
राम नाम को मरम न जान २

पंडित होई सो बेद बखाणे
मूरख नामदेव राम हि जाणे ३

१२

जा नामदेव पायो नाऊ हरी
जम आई का करी है बौरी, इब मोरी छूटि परी १

भाव भगत नाना बिधि किन्ही पळका कौन करी
केवळ ब्रह्म निकटी लौ लागी मुक्ति कहब परी २

नाम लेत सनकादिक तारे पार न पायो न पायो तासू हरी
नामदेव कहे सुनो रे संतो, इब मोही समझी परी ३

१३

राम-समाना नाम ही रामा
तू साहेब मैं सेवक स्वामी १

गनीक-सोचना, गुनना बौरी-पगली पळका-चंचल, पलायन होना।

हरी सरवर जग तरंग कहावे
सेवक हरी तज कहुँ कत जावे २

हरी तरवर जग पंखी छाया
सेवक हरी तज आयु गवाया ३

नामा कहे मैं नरहरी पाया
राम रमे मैं रमी राम समाया ४

१४

राम बोले राम बोले
राम बिना कोऊ न बोले रे भाई ! १

एकल मिट्टी कुंजर चींटी
भाजन हैं बहु नाना
स्थावर जंगम कीट पतंगा
सब घट राम समाना २

एकट चीता रहीले लीता और लुटीले सब आसा
भगावत नामा भये निहकामा तुम ठाकुर मैं दासा ३

कल्ल-एक हा   चींता-सोचा हुआ   लींता-ग्रहण किया हुआ   निहकामा-निष्काम ।

१५

राम रमी राम सभोर
मै कभी ताहा छीन न बिसारे १

सरीर सभागा सो मोही भावे
पारब्रह्म का जे गुन गावे २

सरीर धरे की इहे बड़ाई
नामदेव नाऊ न बिसरी जाई ३

१६

गरुड मण्डल आव
पृथ्वीपती गरुड मण्डल आव १

तूँ पृथ्वीपति जागृत केला
मैं गरुड गुन नागर चेला २

नामदेव कहे बालक तेरा
भक्ति दान दे साहब मेरा ३

सभोर-सामने छीन-क्षण सभागा-भाग्यशाली केला-किया ।

१७

राम-सो धन ताके कहा बयोरो
अष्ट सिद्धि नवनिधि करत निहोरो १

हरणाकसीप वध कर अधपती देही
इन्द्र को वीभो प्रहलाद न लेही २

देव-दानव जाही संपदा करी मानो
गोष्पद सेवक ताही आपदा करी जानो ३

अर्थ धर्म काम की कदा मोपी मागो
दास नामदेव प्रेम भगती अन्तरी जो जागो ४

१८

राम नाम खेती राम नाम बारी
हमारे धन बाबा बनवारी १

या धन की है बहुत अधिकाई
तस्कर हरे न लगे काई २

दह दिसां राम रह्या भरपूरी
सन्तत नियरे झाकत दूरी ३

बयोरो- ? (घाटा ?) अधपती-नीचे गिरी हुई वीभो-वैभव गोष्पद-गोपद मोपी-मोक्ष ।

१९

ऐसा राम राम राय अन्तर जानी
जैसे दरपन माह बदन परछाँयी १

बसे घटाघट लिपे न छिपे
बन्धन मुक्त जात न दिसे २

पानी माहे देख मुख जैसा
नामे को स्वामी बिट्ठल ऐसा ३

२०

सिवियले गोपालराय अलक निरंजन
भक्ति दान दिये जाके सन्तजन
जाके घर दिग्गज दिसे सरायचा!
वैकुण्ठ भवन चित्रशाला।
सतलोक समान पूरिय ले जाके घर लक्ष्मी
कुआरी चन्द्र सूरज दीवड़े।
कौतुक काल खडा कोटपाल कोतवाल सो
ऐसा राजा श्री नरहरी।
जाके घर कुलाल ब्रह्मा चतुरमुख दावडा,
द्वारे चित्रगुप्त लिखिया

राय-राजा सिविय़ले सेवा की अलक-अलख सरायचा-चतुर दीवड़े-दीपक
काल-यमराज कुलाल-कुम्हार दावडा-रहट का लोह चक्र।

धर्मराय परली पर प्रतिहार
तूँ ऐसा राजा श्री गोपाल।
जाके घर गण गन्धर्व ऋषि बापडे डाडिया
गांवत आछे सर्वशास्त्र बहुरूप मंडलीक आछे।
चौर ढुले है ज्याचे पवन चेरी।

अठ टूक जाके सम्पति सौ ऐसा राजा त्रिभुवनपति।
जाके घरीं कूर्मपाल सहस्र फणी बासुकि
अठोर धार बनस्पति मालनी
छिनमे करोडी मेघमाला पानी हारिया –
नख प्रवेश ज्याचे सुरसरी।
सप्त समुद्र जाके घड थली
एते जीव ज्याचे वतनीं
सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनीं।
जाके घर निकटवर्ती अर्जुन ध्रुव प्रह्लाद
अम्बरीप, नारद, सिद्ध, बुद्ध गण गन्धर्व
एते जीव ज्याके है घरीं सर्व व्यापक अन्तर हरी।

प्रणवे नामदेव त्याची आन
सकल भक्त जाके निशान

परली- ? (देहली ?) बापडे बेचारे आछे-है चौर चमर ज्याचे-जिसके
अठोर- ? बहु-धडा वतनी-निवासी।

२१

मन पंछी या मत पड पिंजरे
असार माया जाळ रे! १

तन जोबन रूप कारण
न कर गर्व गँवार रे २

एक दिन तो तुझको मरना
सदा झमकत काल रे ३
कुम्भ काच्या नीर भरिया
बिन सत नहिं बार रे ४
कहत नामदेव सुन भई साधू
साधू संगत करना रे ५

२२

कहा करूँ जाती कहा करूँ पाती
राजा राम सेऊँ दिन राती १

मन मेरो गंगा मन मेरो कासी
राम रम काटूँ जम की फाँसी २

काच्या-कच्चा वार उद्धार पाती-पंक्ति।

सिवण सीवणा मीत्र सीव जीणा
राम विना हूं कैसे जीऊँ ३

अनन्त मार्ग का सिऊं वागा
जो सीवत जेम का डर भागा ४

सुरत की सुई प्रेम का धागा
नामे का मन हरि सो लागा ५

२३

ऐसें मन नामे वेधिला
जैसे कनक तुला चित्त राखीला १

आणीले कागद साजीले गुडी
आकाश मण्डळ छोडी ।
पाँच जना सो बाह बा तउवो
चित्त सो डोरी राखिला २

आणिले कुम्भ भरा ले उदक
राजा कुँआरी पुलन्द रीये ।

सिवण-सीना। सीव-सी कर वागा-कृति, कपड़ा (?) सुरत-ज्ञान वेधिला-विद्ध किया आणीले-लाया गया साजीले-सजाया गया गुडी पतंग बाह-पुकारना (?) बा-वाना (?) वाहवा-वाहवा तउवो-तब भी पुलन्द-वन्य जाति रीये- (?) ।

हस्त विनोद देत करताली
चित मो घागरी राखिला ३

मन्दीर एक द्वार दस जाके गऊ
चरावण चालीला
पाँच कोपर चरावे ?
चित सों वाछा राखीला ४

भणत नामदेव सुनो त्रिलोचन
बाळी पालणी पौटिला
आपण मन्दिर काजई करती
चित्त मो बालिका राखिला ५

२४

जौं लग राम नामे हेत न यो
तैं लग मेरी करत जनम गयो १

लागी पंक पगले धोवो
नृमल होवे जबमयी गोवो २

घागरी-घड़ा कोपर-भुजा और हाथ की मध्य संधि वाछा-वत्स भणत-कहता है
बाळी-बालक पालणी-पालना पौटिला-(पोशिला ?-पालन किया) तै लग-तबतक
पगले-पांव नृमल-निर्मल जबमयी-(जपमई ?) गोवो-तल्लीन ।

मीतरा मैला बाहेरा चोख्वा
पाणी प्यएड पखाले धोवा ३

नामदेव कहे सुरही पर हरांये
भेड पुल्केस भवजल तीरांये ४

२५

काना चिता का गाइला
का घमी घमी चन्दन लाविला १

अपापर नाहीं चिन्हीला
तो चित्त चितारे डहकीला २

कीरतन आगे नाचे लाई
स्यभ देव चिन्हें नहीं कोई ३

स्यभ देव की सेवा जाजे
तो देव दृष्टि हैं सफल पछाने ४

नामदेव भणे मेरे यहां पूजा
अतमराम नहीं दूजा ५

प्यएड-छोड़ कर पखाल-चमड़े की बड़ी मसक सुरही-गाय कम-कैसे चिता-चित्त
लाविला-लगाया अपापर-अपने को और दूसरे को चिन्हीला-पहचाना।
डहकीला-बहका अतमराम आत्माराम।

२६

रामची भगती दुहेली रे बापा
सकळ निरन्तर चीन्हले आपा १

बाहेरा उजेला भीतरीं मैला
पाणी पड पखाल न गहिला २

पुतली देवकी पाती देवा
दुही विध नाम न जानई सेवा ३

पाखण्ड भक्ति राम नहीं रीझै
बाहरी अन्धा लोग पतीजे ४

नामदेव भणे मोरा नेत्र पलटा
राम चरणा चित्त बहु पैठा ५

२७

काहे कू कीजे ध्यान जपना
जो मन नाहे सुध अपना १

साप काचली छाडे बीस ही न छाडे
उदक में बक ध्यान मांडे २

रामची-राम की दुहेली-दुही गई आपा-अपनापन गहिला-ग्रहण किया
पाती-(पालयिता ?) बीस-विष मांडे-लगाना, करना ।

स्यभ के भोजन कहा लुकाता
तैसे बछ्टे देव पुजाना ३

तेरी पूजा सेवा ये रे
प्रोजी पराई काठी दे रे ४

नामदेव का स्वामी भानी लई न्हागरा
राम भाई न परा भगरा ५

२८

साई मेरी रीभई माची
दडे कपटी न जाई राची १

कोई बहु गावे कोई बहु नाचे
जब लग नहीं हीरदे माचे २

अनेक सिंगारे बहु कामनी
नहा न पीव, मनीं भावे भामिनी ३

पती बरता पती ही कू जाने
नामदेव कहे हरि नहा को माने ४

बछ्टे- ? प्रोजी- ? भानी-ध्यान मे न्हागरा- ? भगरा- ? साई-स्वामी
दडे- ? राची-प्रसन्न होना ।

२९

रतन परखु नीरा रे
मुलमा मही हीरा रे ॥

खंच परखुं नीरखी जोई
वैरागर क्या खोटा होई १

कालकुट - बीख बाधो गाठी
कहा भयो नहीं खायो बाटी २

खायो बिख कीन्हो बिस्तार
नामदेव भयो हरि गरुड सवार ३

३०

कलंक रहो राम नाम लेत ही
पतित पावन भये राम कहेत ही १

राम संगीना नामदेव जिन कू प्रतीति आई
एकादशी व्रत करे काहे कू तीर जाई २

नीरा-निरा, विशुद्ध मुलमा-मुलमां मही-पृथ्वी वैरागर-? कालकुट-कालकूट बीख-विष बाटी-रास्ता संगीना-दृढ़ ।

भपत नामदेव सुमती मुकुत आई
राम कहत जन कौन वैकुण्ठ जाई ३

३१

रामनाम नरहरि श्री बनवारी
सेइये निरन्तर चरण मुरारी १

गुरु को सबुद वैकुण्ठनी सरणी
हिरदे प्रीयाग प्रेम रस वहनी २

ज्या कारणें त्रिभुवन फीर आए
सो निधान घट भीतरी पाय ३

नामदेव कहे कहु आय न जाय
आपनो राम घरीं बैठे गाय ४

३२

भले विराजे लखचकन ब

धरणी पाय स्वर्ग लोक माथ
योजन भर के हाथ १

भपत-बोलता है सेइये सेवा करें सरणी-मार्ग, मांढी प्रीयाग-प्रयाग पाय-पाव

शिव सनकादिक पार न पावै
अनंग सखा बिराजत साथ २

नामदेव के आपही स्वामी
कीजे बाहि सनाथ ३

३३

राम बिठला देव बिठला
हम तुम्हारे सेवक १

बालक बेला माई बिठल बाप बिठल
जाती पाती गुरु गीत बिठल २

ग्यान बिठल ध्यान बिठल
नामा का स्वामी प्राण बिठल ४

३४

राम नाम बिन और नहीं दूजा
कृष्णदेव की करो हू पूजा १

राम ही माई, राम ही बाप
राम बिना दूर नहीं पाप २

बेला-समय, अवस्था ।

सम्पत विपत राम ही होई
राम विना कुण तारीहे मोही ३

भरणत नामा अमृत सार
सुमरी सुमरी उतरे पार ४

३५

सन्त सू लेना सन्त सू देना
सन्त संगती दुस्तर तरना १

सन्त की छाया सन्त की माया
सन्त संगतीं वैकुण्ठ पाया २

कहा करूँ जग देख अन्धा
तैंजी आनन्द बिचारे धन्दा ३

असन्त संगती नामा कबहु न जाई
संगती में रह्या समाई ४

३६

साँप कुच छोडे बिख नहीं छोडे
उदक माँहिं जैसें बक ध्यान माँडे १

कुच-कुछ, केंचुली ।

काहे को कीजे ध्यान जपना
जब ते सुध नहीं मन अपना २

नामे के स्वामी लाह के झगड़ा
राम रसायन पिवो दे रगड़ा ३

३७

मन मेरो गज जिह्वा मेरी काती
माप माप काटो जम की फासी १

कहा करूँ जाती कहा करूँ पाती
राम को नाम जपों दिन राती २

राग बिन रागो सिव बिन सीवो
राम नाम बिन कहीं न जीवो ३

सोने की सुई रूपे का धागा
नामा का चित्त हर सूँ लागा ४

३८

एक अनेक व्यापक, पूरक जद देखो तद सोई
माया चित्र, विचित्र विमोहित बिरला बूझे कोई १

लाह-लाभ काती-कैंची जद-जब तद-तब सोई-वहाँ।

सब गोविन्द है सब गोविन्द है गोविन्द बिन नहीं कोई
सूत एक मन सत सहस है जैसे ओत प्रोत प्रभु मोई २

जल तरंग और फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न कोई
यह प्रपंच परब्रह्म की लीला और बिचारत भिन्न न होई ३

मिथ्या परम अर सुपन मनोरथ सत्त पदारथ जान्या
सुकीरत मनसा गुरूपदेशी जागत ही मन मान्या ४

कहत नामदेव हरी की रचना देखो हृदय विचारी
घट घट अन्तर सर्व निरन्तर केवल एक मुरारी ५

३६

जा दिन भगता आईला
म्हारु मुकति पाईला १

दरसन धोखा भागीला
कोई अहू सुकृत जाणीला २

सनमुख दरसन देखीला
तब जनम सुफल करी लेखीला ३

महस-सहस्र सुपन-स्वप्न आईला-आयेंगे ।

वैष्णव हिरदे रेखीला
जन नामदेव आनन्दे गाईला ४

४०

देवा, मेरो हीन जाती हो
काहू पे सहीयन जाती हो १

मैं नहीं, 'मैं नहीं, तूँ है,' मैं नहीं हो
तू एक अनेक हो विस्तारो मेरी चरम न साई हो २

जैसे नदिया समुद समावे धरणी बहती हो
तुम्हरी कृपा थे नीच उंच भये तूँ काल की काती हो ३

४१

इतनो कहत तोही कहा लागत
राम रट सोवत जागत १

ध्रुव प्रह्लाद इही गुन तारे
राम नाम अक्षर दो उच्चारे २

राम नाम सनकादिक राता
राम नाम निर्भय पद दाता ३

चरम-अन्तिम, अन्त   साई-साँई ।

भणत नामदेव बीसो बिसा
जैसी मनसा तैसी दसा ४

४२

जैसे भूखे प्रीत अनाज
तृखावन्त जल सेती काज १

जैसे मूढ़ कुटुम्ब परायण
तैसे नामें प्रीत नरायण २

जैसे पर पुरखा पर नारी
लोभी नर धन का हितकारी ३

कामी पुरखा कामिनी प्यारी
ऐसे नामा प्रीत मुरारी ४

सोई प्रीत जे अभिलाये
गुरु प्रसादा दूधा जाये ५

जैसी प्रीत बालक अर माता
तैसा हर सेती मन राता ६

प्रणवे नामदेव लागी प्रीत
गोविन्द बसे हमारे चीत ७

बीसो-बिसा बीस बिस्वा, सोलह आने तृखावन्त-प्यासा आदमी पुरखा-पुरुष अभिलाये-प्राप्त करने पर दूधा-दुबिधा।

*

गोंदा (लगभग १३०० से १३५१)

गजानन गौरी सूत लाल अंग पर बभूत
तेरे मुख वचनामृत उसे जमदूत भागत है
विद्याभरी दन्दुल पेट उस पर साप की लपेट
विघन करत है चपेट पकड़ फेट काल की
नामा दर्जी जालम बिठू राजा का गुलाम
हुआ दुनिया में बदनाम उने नाम डुबाया
नामा प्यारा है भगत उसे जानत है जगत
बम्मन आया धूंडत धूंडत लगत लगत गांव मां
बम्मन कहे नामदेव मुजे पूजना भूदेव
इती बात मुजे देव बहा देव गंगा मां
मानो बिनन्ती महाराज चलो पतितन के काज
नामा कहे बम्मन राज न बाजे इन बातन सों
नामा नहिं माने बात बम्मन बैठा दिन रात
हुकुम दिया दीनानाथ तब संग चल दिया
चले मजल दर मजल आया बेदर के मिसल
वहाँ हुई सो नक्कल वो सकल तुम सुनो

कोस आदे कोस पर नामदेव का लश्कर
बादशहा बैठा निकल कर नज़र कर देखते

उसे-उससे दंदुल-मोटा, थलथला बिठू-विठ्ठल बम्मन-ब्राह्मण मुजे-मुझे बहा देव-बहा दो बेदर-बिदर (इस समय हैदराबाद राज्य का एक नगर, पहले बरीदशाही वंश की राजधानी) मिसल-निकट नक्कल-कहानी, घटना कासी-काशी

कहे काशी पण्डत लाल झेंडे बहुत
पायदल जावे तहत क्या सरयत खबर लाव
करी कुरान सो सलाम भेजो फौज वो तमाम
कौन क्या करेगा काम तुम बेकाम मत रहो
आई फौज किया कोट जैसा खेत का सगोट
कहे कहाँ के तुम भट थाट वाग्र जाहो
नामा कहे सुनो भाई ये तो बम्मन गदाई
नामदेव कौन है **बेदरशाही** जानते ?
उसे कहे नामदेव राहा छोड़ो जाने देव
कहे हुकुम आने देव फेर देव जाने कू
अर्जी लिखी फौजदार ले पोंचे **जिलिबदार**
जाके देव दरबार चोपदार के कहिने
कासी पण्डत के पास आन पोहोंची इत्तलास
नज़र गुज़राई खास करे ख़्यास पूछ के

पंडत करे जिकीर सुनो हिन्दू फकीर
हम लोकन के पीर पण्ढरपुर में रहते हैं
बादशाह करे गलत होते पीर आजमत
बुला लाव इस वक्त करामात देखणें

झेंडे-झण्डा पायदल-पैदल तहत-आधीन, तक सरयत-शर्त्त सगोट-गोट सहित, वस्त्र के चारो ओर सीई गई किनारी थाठ-ठाट गदाई-फ़कीरी राहा-राह फेर-फिर पोचे-पहुंचे जिलिबदार-प्रतिहारी (जिलोदार ?) चोपदार-चोबदार, द्वारपाल इत्तिलास-इत्तिला ख्यास-विचार जिकीर-जिक्र लोकन के-लोगों के पीर-पूज्य आजमत-श्रेष्ठ, आदरणीय देखणें (म.)-देखने के लिए।

पंडत करे तसलीमात हजरत भली नहीं बात
नामदेव कहे मात किसन, नाथ, कन्हैया

उसका नाम मत लेव उसकी रहा मत जाव
मेरा कहना खातर लाव नहीं तो नाव डुबेगी
उसे करोगे बदफ़ैल बुरी होयगी नक्कल
अब जावेगी अक्कल सकल राज डूबेगा
हत्ती, घोड़े, दौलत, दक्कन मुलूख, बाछायत
बेदर सरीखा तखत इस वक्त जायगा
बादशहा करे गल्लत सरक चल मादरबखत
पंडत कहे आयी मौत गई कुव्वत अकल की
कुटल सामने से टल जा दूर हो निकल
भेजो दस-बीस मोंगल बम्मन सकल पकड़ लाव
नामा लाया दरबार सात बम्मन दो सौ चार
सारे दरबार मों पुकार मार मार बम्मन कूँ

अर्जी पोंचावे हुजूर नामदेव लाया नज़र
इसके बावे क्या मजकूर करो अर्जी अर्ज बेगी
बादशहा कहे जलदी जाव गाई कसाई कू बुलाव
नामदेव कूँ बिठलाव नियत पोंचावे गॉव कू
उसके आगे काटी गाय बम्मन करे हाय हाय
नामा कहे **प्रभुराय !** ये बुलाय, तुम सुनो

तसलीमात-प्रणाम, तस्लीम का ब. व. मात-पराजय किसन-कृष्ण मुलूख मुल्क
बाछायत-बादशाहात मादरबखत-जिस की माँ पर कलंक हो (मादर बख़ता) कुटल-कुटिल
मोंगल मुगल मात-साथ बाबे-बाबत ।

बादशहा कहे लो जान नहीं तो कहूँ मुसलमान
झुटा करता है तुफान फिर फकीर कहलावते
किदर रह्या पंढरपुर मेरा वसीला है दूर
कौन कहेगा हुजूर ये जरूर हकीकत
ये तो पापी चंडाल इन्नें बुरा किया हाल
मेरे अब्रू का काल गोपाललाल जल्दी आव
नामा रोवे झुरझूर बहे अश्रन का पूर
बिठू पसीने में चूर बिठू पंढरपुर में हुवे हैं
रुक्मिणी चुरती पद्मपाव घबर गये बिठूराव
रुक्मिणी कहे प्रभूराव क्या बलाय मुजे कहो
देव करे.........करे घबरे घबरे बात
नामदेव की कहत हकीकत बुरी है
रुक्मिणी कहे जल्दी जाव नामदेव कू मनाव
उस पापी कू जलाव जाव जाव सितावी
नामा लड़का अजान बहुत हुआ हयरान
अबी छोडेगा जान मुसलमान बेकदर
अकस्मात हुई बात उठ कर बैठे दीनानाथ
चल दीया उसी वक्त मैं दीनानाथ आया हूँ
बिठू कहे नामदेव उस गाय कू हात लगाव
जान उसकी खुजाव जल्दी जाव गाय उठेगी
उठ कर खडी रहे गाय हर हर बोले बम्मन राय
नामदेव कू लगाय बिठूराय गले से

किदर-किधर इन्नें-इन्होंने अब्रू-आबरू, प्रतिष्ठा झुरझूर-झर झर, जोर जोर से
चुरती-दबाती घबेरे घबरे-घबराये घबराये सितावी (सिताबी)-जल्दी हयरान-हैरान
अबी-अभी जान-जाँघ ।

नामा रोवे आलफ उसे समजावे मा बाप
उसके हवेली में साप हाका हाका पडी है
हत्ती घोडे कू काट लिया आदमी की पीठ
जिधर उधर न हाट नाट खट ऊपर काटा रे
बेदरशहा हुआ दंग कासी पंडत करे जंग
अब कैसा हुआ रंग बुरे ढंग क्या हुए
बादशहा कहे जल्दी आव कासी पंडत कू बुलाव
मेरे जान कू बचाव सच्चा देव उनो का
कासी पंडत प्यारेलाल मेरे जान कू सँबाल
पीर फकीर हक्लाल बालोबाल गुन्हेगार हूँ
कासी पंडत धरो पाव बहोत तर्हे से मनाव
नामदेव भगतराव ये बला दूर करा
पडत तुम बड़ा सुजान तुम जानो उसका ज्ञान
हमने किया है तुफान अब जान बचाव
कासी पंडत बहुत भला कदम कदम जा मिला
नामदेव आ मिला लगाया गले सो
बादशहा के आडे जिदर ऊदर खडे
उने हात पाव जोडे पकडे पाँव तुमारे
मानो बिनंती महाराज चलो पर्तीतन के काज
नामा कहे पंडतराज मत बाजो इस बात सो
नामदेव बडे दयाल हासो किया जवाब सवाल
पंडत जा रहो खुशाल फिर व्हाँ सो चल दिया

आलफ (?) हाका-शोर, पुकार पीठ-पीछा हटा नाट-हिलना डुलना हक्लाल-घबरागये
घरो पाव-पाँव पकड़े भगतराव-भक्तों में श्रेष्ठ, भक्तराज बाजो-घबराओ (?) ।

मेहेरबान नामदेव बिठूराय जान देव
उसका राज उमकू देव बुला लेव साप कू
इतनी बात बोल कर चला उनका लश्कर
पंडत आये फिर कर साप नजर न आवे
उसकू कर कर सनाथ नामदेव दीनानाथ
ओ गाई लियी सात उस वक्त चल दिये

बादशहा करे जिकीर सच्च हिन्दू फकीर
ब्रह्मज्ञान में तीर रणधीर आये हैं
'गांदा' लडका अजान करे रात दिन ध्यान
हुए वो मेहरबान दिया ज्ञान बालक कू

जान देव-जाने दीजिये ओ-वह तीर-पारंगत।

शाहमीराँजी शमसुल शाख (?—१४९७)

सिफ़त करूँ मैं अल्ला कूँ बड़ा जो पूरन पूर
क़ादिर कुदरत अज्ञात कार नेरे न दूर
ना उस रूप ना उस देह ना उस थान मकान
निरगुण गुणवन्ता किस मुख करूँ बखान
बाली भोली ज्यूँ जो होती मुहब्बत केरा नूर
परम पियारी साथ सखाती तुलना होवे दूर
जब वह आई इत संसार खुशी से हुई तमाम
पगी तब गुरू की लागी लाहिया खुश कर नाम
हँसा बदनी शुभ नैनी गौर बरन की
भौत सतियापन यह सत अजब माने सखी
'शाह' बोली गुणों की सब पर लगावे यह मन मोही
कौन बखाने लक्खन इसके न पाया जाने सोई
पीर वही जो परम लगावे नूर निशानी ऐन
मंजा की सब सुध लगावे जहाँ दिन न रैन
कभी न रंगी मेंहदी रंग म्याने......आया
रंग न रंगिया.........इसके हल्दी काया
कहे मंजे सहर सुहाग अल्ला का छोड़ रह्या सहारा
अब क्यों कर सुहावे दूजा तुमको नहिं टारा
उसके रँग म्याने रँगी साड़ी दूजा रंग न पानी
इसके पास हमको बासा फल फोकट के आनी

क़ादिर-कुदरतवाला, सर्वशक्तिमान कार-काम नेरे-निकट थान-स्थान बाली-बालिका केरा-का पगी-ओतप्रोत भौत-बहुत सतियापन-सतीत्व म्याने-में मंजे-में, मध्य में सहर-सूर्योदय के पहले का समय, भोर फोकट-बिना मूल्य।

ऐसी बात करे गुणवन्ती मूरख बूझे सिद्ध
यही मन अपने आवे छन्द सोही सिखावे बुद्ध
मुझ न लोभे अलवान नियामत भूर परिमल पान
रूखी-सूखी ऊपर खुशी काह बड़ाई मान
न मुझ लोभे पाट-पितम्बर यह ज़र ज़मी शृङ्गार
फाटी फूटी कंबली नीकी फटा लिहाफ़ हमार

— खुशनामा

हमी बोल अरबी करे और फ़ारसी बहुतेरे
यों हिन्दवी बोली तब इस अर्थ भावे सब
यह भाखा भले सो बोले पुन इसका भाव खोले
वे अरबी बोल न जाने न फ़ारसी पछाने
ये देखत हिन्दी बोल पुन माइने में........
करे पान सो रस फल पाके ज्यों फनस
दे जोड़े ऐसा चित्त दोज़ख हौर बहिश्त
जीता हलाल-हराम परहेज़ करना तमाम
न माने प्यास हौर भूख नाले के सुख दुःख
किब्र हौर कीना कर पाक इसते सीना
यह सब ते हाल तू करना सफ़र संभाल
हज का सबाब लीजे नबी की **ज़ियारत** कीजे
तू करना सफ़र दूजा ज़िकरे नेकी व पूजा
'बिसमिल्ला उल रहमान उल रहीम' तूँ सुजान
यह सब आलम तेरा तूँ रज़्ज़ाक़ सभों केरा

अलवान-एक तरह का ऊनी शाल किब्र-गर्व कीना-कपट सीना-छाती रज़्ज़ाक़-अन्न-दाता, (रिज़्क-रज़्ज़ाक़)।

शाह मीरॉजी शमसुल शाख

तुझ बिन और न कोई ना ख़ालिक़ दूजा कोई
जै तेरा होवे करम तो टूटे सभी भरम
इस कारन तुझ कू ध्याऊँ हौर तेरा लेऊँ नाऊँ
है तेरा अन्त न पार किस मुख सूँ करूं उच्चार

—शहादतुल हक़ीक़त

ख़ालिक़-विधाता करम-कृपा ।

शाह बुरहानुद्दीन जानम (१५४४-१५८३)

सकता **क़ादिर** कुदरत सूँ समजे तुज कोई क्या
जिसकू पूरी देवे राह कह्या 'यहदी मनयशा'
बहुरूप परगट आप छिपाया कोइ न पाया अन्त
माया मोह में सब जग बाध्या क्यों कर सूझे पन्थ
किया मुहम्मद जग में प्यारा जिसते समझे राह
शैतान मुद्दई पकड्या क्यों कर सके जाह
मुहम्मद जिसका पीट पठिगा उसकूँ क्या है डर
नित उठ सुमरन दिल में उसकू **कल्मा** जपने कर

आओ, तूँ **सालिक** राह दिवाने चलते न लाये बार
मुक़ाम राह मंज़िल बूझैं उलजाहे किस ठार ?
दुई मुकाम राह चार समज कर मंजिल बी है चार
फुरसत देना जब लग तुज कूँ जागा हो हुशियार

दर बयान मुक़ामे शैतानी

फैल्या मुक़ाम शैतानी कहना मंजिल नासूत केरी
शरिअत की जब बाट लगे ना क्यों कर उतरे घेरी

में में सब हिर्स हुई, मैं ख्वाली लेता धाऊँ
कूड कपट मद मछ्छर मस्ती शैतानी उसका नाऊँ

यह दी मन यशा-जो उपदेश ईश्वर की ओर से दिया गया है पाटपठंगा-आश्रय, सहायक जपनेकर-जप कर सालिक-उपदेश देनेवाला, (सलूक-सालिक) उलजाहे-उलझता है, भटकता है ठार-जगह जागा-जागक नासूत-संसार, भौतिक उपासना घेरी-चक्र, भ्रम हिर्स-लालसा कूड-कचरा, मल मछ्छर-मत्सर ।

उसकूँ छोड़ राह बिचार **शरियत** जिसकूँ कहना
इन्साफ़ उपर सभी काम फ़रमूद के सूँ रहना
अम्र खुदा का लिया बजा तूँ नहीं ते मुनकिर होना
मुक़ाम शैतानी जिसको कह्या दिलते सारा धोना
नईं तूँ............................दीन गँवाया सारा
ऐसी धुंदी सब जग अंधी फिर बस्ती उसे ठारा
चलते का तो नेम न होवे यूँ तो शह फुकट ग्वाया
इस धात उम्र खरच कीता आखिर फिर पछताया
तूँ तो नफ़स सूँ तक़वा राखे **शरअ** मुहम्मदी आवे
हो नित मशगूल ज़िक्र जली सूँ मंज़िल नासूत पावे
ज़िक्रे जली नित ऐसा याद हर दम अल्ला नाँव
यूँ हर आज़ा बरतन पूरे नासूत पावे ठाव
मंजिल नासूत जिसकूँ कहना उसकी बूज निशानी
बालपने की रूत पहले या ज्यूँ देख हैवानी
रोज़ा नमाज़ सते गुज़र्या मजज़ूब केरा हाल
ज़िक्र शग़ल का यो ले डूब्या करे न आप सँभाल
यूँ ले निद्रा सुख सपने का जागा कन बैठे
राह **तरीक़त** मारग उनके मुस्तैद होकर उठे

तन नफ़स ते गुजर्या दिल कूँ आपन या तूज **तरीक़त** राह
ज़ाहिर तो उस कोई ना जाने बातिन केरा गवाह

फ़रमूद-कहा हुआ, आदिष्ट अम्र-आदेश मुनकिर-इन्कार करना ठारा-स्थान फुकट-मुफ़्त धात-तरह नफ़स-वासना तक़वा-शुद्धता के लिए बहुत सावधानी-बरतना जली-प्रकाशमान आज़ा-अंग बूज-बूझ रूत-ऋतु हैवानी-पाशविकता मजज़ूब-आत्मार्पित (जज़्ब-मजज़ूब) शग़ल-चस्का जागा कन-जागे हुए के पास तूज़-तुझे।

जग में वो तो दिसे दिवाना सियाने उसकी गत
ज़ाहिर तो उस तक़सीरे लागे पन बातिन दिलका सत
ना वह किसकी संगत के में रहे यकेला पर
मुराद उसका एक धनी सूँ तल-तल उसका दर
ना वह किससूँ बोल्या बोली ना कुछ सुन्या सो बानी
परगट दाना रिन्द दिसे ना किसका बिकार.........
ऐसे फुरसत जी वो देवे तूज **तरीक़त** नाम
तन **नूरानी** सूँ उसके रह्या............चाम
बाद अज़ ज़िक्रे क़ल्बी लेवे दिल में मख़फ़ी बूझ
जिन ताकू नादार झंकारे तो मंजिल मलकूत तूज
मलकूत याँ का ऐसा हाल मंजिल मलायकान
करे इबादत ज्यों फ़रमाया साबित रख ईमान
हुक्मे **शरियत** भी उस लाज़िम ज्यों फ़रमाया हद
जुहद तक़वा कारे सलाहत **नफ़्स** कूँ कीता रद

ज कोई इसकूँ कर डिगावें या सीस लेवे काट
भला बुरा तूँ समज्या जाने तसलीमी की बात
राह हक़ीक़त रूह सूँ ताल्लुक दिल ते कीता कूच
आशिक़ पराये हाल सज़ावार कहने न आवे तूज

—वसीयतुल हादी

बातिन-अदृश्य (बत्न-बातिन) मुराद-आकांक्षा तल-तल-स्थल-स्थल दाना-चतुर रिन्द-स्वतन्त्र दिसे-दिखाई देता है तूज-तुझे बाद अज़ ज़िक्र-वर्णन के बाद कुल्बी-हार्दिक (क़ल्ब-हृदय) मख़फ़ी-अदृश्य (ख़फ़ा-मख़फ़ी) नादार-अकिंचन (दार=रखना) मलकूत-पवित्र, फ़रिश्तों से सम्बन्धित (मलक-मलकूत) मलायकों-फ़रिश्ते (मलायक ब. व.) जुहद-परहेज़ तक़वा-शुद्धता के लिए बहुत सावधानी बरतना कारे-काम के लिए, कार्य में, लिए, वास्ते सलाहत-अच्छा काम ज कोई-जो कोई कीता-किया तसलीमी-स्वीकृति, आत्मार्पण कूच-प्रस्थान ।

एकनाथ (१५४८-१५९९ ई.)

१

अव्वल याद करो वस्ताद की ।
गुरु, पीर, पैगम्बर की
और याद किये करतार की ।
जिन्नै ब्रह्माण्ड पैदा किया है ।
अव्वल देखो ये कथा—
उसे नाम न था
नाम दरम्याने पैदा हुआ चल, चल, चल ।
अव्वल तो एक । एक सो दोन ।
दो सो तीन । तीन सो चार ।
चार सो पाँच ।
पांच सो पच्चीस, पच्चीस सो छब्बीस बनाया है ।
छब्बीस का भी एक रड्या है,
सो गुर गारुडी कू याद है ।
और देखो कैसा खेल बनाया है ।
चल, चल, चल । क्रोध का बिच्छू बाहर काटा
उसका बीख शिर कू चढ़ा ।
जपी, तपी सन्यासी की खोड तोडा
समज के देखो भाई,
बिच्छू ने नांगी मारा रे मारा

जिन्नै-जिसने रड्या-मिला गारुड़ी-जादूगर, साँप पकड़नेवाला बीख-विष शिर-सि
खोड़-योनि ।

छु न न न न कहने लगा । चल, चल, चल
ये देखो बाहेर निकला, काम-विषय का साप
तमाशा देखो मेरे बाप, बिन दाँतों से काटे, आये आप
अरे रे रे । काटा रे काटा, नजर ध्यान करो रे ।
नजर ध्यान करो । सो साप दूर करे ।
चल, चल, चल ।
ये देखो ममता नागन आई रे भाई, आई ।
तिनें तो डंख मारा रे मारा ।
ठन न न न ।
भगो रे भाई भगो । दवडो रे दवडो ।
गुरु के चरन पर दवडो ।
तो ऐसा करु की गुरु के —
पाँव कबी ना छोडो ।
व्हाँ कोई का ना चले ।
ममता नागन का जहर बुरा है ।
वो कैसी चलती है ?
सो बडे बडे से लडते हैं ।
वो ना लढे ऐसी हिकमत —
बताऊं तुम कू ।
सुनो रे भाई सुनो ।
गुरु-पीर के हात का मोहरा—
तुम्हारे हात चढे दुनेदारा
तो नागन का तुटे थारा ।

साप-साँप तिने-उसने दवड़ो-दौड़ो कबी ना-कभी नही कोई का-किसी का लढे-लडे मोहरा-विष उतारने की वस्तु दुनेदारा-बादशाह तुटे-टूटे थारा-निवासस्थान, आधार ।

सो कबी आवने न पावे ।
मना मनशा साप करो ।
शांती पेटारे में वुसकू डारो रे भाई डारो ।
बाहेर तो विवेक शिक्का मारे ।
जीव और तन ।
ईस दोनो कूँ—
ऐसा कस के गुरु के चरन पर ।
रात और दिन खेलो । जनार्दन गुरु गारुडी के पास ।
रात और दिन खेलो । जनार्दन गुरु गारुडी के पास ।
व्हाँ तुम करो खेल ।
खेलते खेलते हो ज्यायगा आलच्च ।
'एका' हाँडीबाग कूँ दिया खेल ।
सो हो गया अलच्च खेल ।

२

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर
मेरे गुरु परवरदिगार की याद कर ।
जिने माया अजब बनाई ।
उस वस्ताद की याद कर ।
गैबी खजान हमने दिया ।
उस साहब की याद कर ।
सन्त महन्त की याद कर ।

मना-मन मनशा-इच्छा साप-साफ़ पेटारे-पिटारे वुसकू-उसकू शिक्का-सिक्का, मुहर आलच्च-अलच्य, ईश्वर जिने-जिसने वस्ताद-उस्ताद, गुरु हाँडीबाग-गारुडी, मदारी, चतुर लड़का गैबी-गुप्त, छिपा हुआ ।

गुणी गुणवन्त की याद् कर ।
श्री भगवन्त की याद् कर ।
जोग-जुगत का बाँधा तोडा ।
शम-दम का सीर पर समला छोडा ।
समता सो ही सुहावे तुरा ।
गुरु गारुडी बीर पुरा ।
नैन चीर के पैहीं मुद्रा ।
कान फार के खाये निद्रा ।
अनुहद् ध्वनी धुमक बाजे ।
नाग-सुर धुनुक गर्जे ।
चल चल चल ।
निरंजन जंगल के जिवडे ।
खेलना होय तो उलट दृष्टि से खेल ।
आबी करूंगा तेरा तमाशा ।
पैल तेरी मुंडी काटूँगा ।
साप सब भुले बिचु, किडे ।
प्रपंच कोटरी में आके द्डे ।
बडे बडे जनावर पाले ।
हरे, लाल, सफेत ।
उजले, काले, पिले, भले, बेभले ।
हाँडीबाग अभिमान जिवडे झुटमुट चिपीच लढे ।
नहिं कहूँ तो ब्रह्माण्ड काटने दौरे ।
देखो मिया हाय हाय हाय ।

चिपीच-झूठ मूठ, चुप ही ।

डंख मारा बे डंख मारा ।
सो बडे बडे कू नहीं उतारा ।
जब गुरु ग्यान का लगाया मोहरा ।
जहर उतारा ।
देखो मिया बाजेगिरी विद्या खेल ।
हाँडीबाग बडा अलबेला ।
हात हालावे के पाव हालावे ।
भोले भोले लोक भुलावे ।
आ वे **हाँडीबाग** ।
बाप बडा क्या बेटा बडा ?
बेटे आगे बाप खडा ।
गुरु बडा क्या चेला बडा ?
चेले आगे गुरु खडा ।
चेला तो प्रेम महेल पर चढा
धनी बडा क्या चाकर बडा ?
चाकर आगे धनी खडा ।
सास बडी क्या बहू बडी ?
बहू आगे सास खडी ।
बीबी बडी क्या बाँदी बडी ?
बाँदी आगे बीबी खडी ।
निराधार की ले कर छडी ।
बीबी खसम की छाती पर चढी ।
तैं बडा क्या मैं बडा ?
मेरे आगे तैं खडा ।

बाजेगिरी-बाजीगरी बीबी-पत्नी तैं-तू ।

मैं नहीं मैं नहीं ।
आलम छाया मेरे गुरु ।
ग्यानी कू ग्यान लगाऊँ ।
लोभे आंधे कू उडाऊँ ।
फुक मारू तो जा जा जा ।
बोध के पहाड पर जा ।
बच्या जाहाँ आना नहीं, ताहाँ ज्या ।
मेरे सद्गुरु दाता कू शरन ज्या ।
मेरे सद्गुरु दाता की इतनी-सी लकरी ।
मूल मंतर हात मो पकरी ।
जीदर दौरा उदर दौरी ।
फेर देखे तो मेरी मेरे सात ।
देख अबी करूँगा खबूतर का तमाशा ।
बिन पर से उडता है कैसा !
खेल खेलते अविवेके खलिते में घुसा ।
बाहेर कैसा आवेगा ?
आव वे, आव बाहर आव ।
जिसे नहीं हात ना पाव ।
जिसे नहीं गाँव ना ठाँव ।
जिसे नहीं रूप रेखा नाँव ।
भाव ना अभाव कुछ नहीं ।
धीरे धीरे तेरा बी मंतर बोलूँ ।
लिंगदेह की गाँट खोलूँ ।

फुक-फूँक बच्या-बच कर जाहाँ-जहाँ ताहाँ-वहाँ लकरी-लकड़ी जीदर-जिधर उदर-उधर सात-साथ खबूतर-कबूतर खलिता-छोटी थैली ।

एक बार ऐसा खेल खेलूँ।
कि मेरे बडे बडे खेल थे।
हा तो एक। एक के दो।
दो के तीन। तीन के चार।
चार के पाँच। पाँच के पच्चीस।
पच्चीस के छब्बीस। छब्बीस का एक।
एक बी नहीं। तो **जनार्दन** देख!

३

भला संतन का संग
खावे निज बोधन की भंग
सदा आनंद मो दंग।
ऐसा **मलंग** फकीर।
ग्यान के मैदान खडे
शम-दम से आन लढे।
बहोताँ के तखत चढे।
ऐसा मलंग फकीर
किया सन्तन का दुमाल
मेरा तुटा बहु जंजाल
ऐसा एकनाथ कंगाल
ऐसा मलंग फकीर

हा तो-था तो बी-भी बहोतों-बहुत (बहुत का दक्कनी में ब. व.) दुमाल-ऐसी भूमि या गाँव जिस पर सरकार और किसी व्यक्ति का द्वैध शासन हो, माफ़ी की ज़मीन तुटा-टूटा।

४

दिल मो याद करो रे
जनम का सारथक करो रे
सारे दीन करत पेट खातर धंदा
बिटल नाम लेवत नहीं केंव रे तूँ गधा
जम का सोटा बाजे पिट पर कोई आवे नहीं सात
'एका' **जनार्दन** नाम पुकारे करो हरिनाम बात ३

५

दिलकी गाठ खोलो, यारो नाम बोलो १
कोई नई आवे सात, मुंडे काय कू करे बात २
जोरू लरके मा-बाप सब पसारे हात ३
हत्ती, घोडे, पालख, मैना नहीं आवे सात ४
दो दिन का बजार यारो, कायकू करता बात ? ५
झूटी काया झूटी माया, झूटा सब दिन रात ६
जनार्दन बोले भाई, कोई नहीं आवे सात ७

६

अल्ला रखेगा वैसा भी रहना।
मौला रखेगा वैसा भी रहना॥

कोई दिन सिर पर छतर उडावे,
कोई दिन सिर पर घडा चढावे

दीन-दिन केंव-क्यों पिठ-पीठ नई-नहीं मुंडा-लड़का जोरू-पत्नी पालख-पालकी उडावे-उढ़ावे।

कोई दिन तुरुंग ऊपर चढावे
कोई दिन पाव से खासा चलावे १
कोई दिन शक्कर दूध मलीदा,
कोई दिन अल्ला मागत गदा,
कोई दिन सेवक हात जोड खडे,
कोई दिन नजीक न आवे धेडे २
कोई दिन राजा बडा अधिकारी,
कोई दिन होये कंगाल भिकारी
'एका' जनार्दनीं करत करतारी
गाफल केंव करता मगरूरी ३

७

तप साधन सुखें करना
दो मिल के गीत गाना २
बहुत मिल के विद्या शिकना
भावबन्द में बरकस रहेना १
दुश्मन देख के तवाई धरना
खुदा मिल के बाद खाना
पाँच मिल कर इन्साफ करना
इन्साफ की तो बात बोलना २

तुरुंग-घोडा खासा-खूब गदा-फकीर नजीक-निकट धेडे-धेड़, एक अन्त्यज जाति केंव-क्यो शिकना-सीखना भावबन्द-भाई बन्धु बरकस-स्पर्द्धा, (फारसी मे बरअकिस) तवाई-हानि, विपत्ति, तबाही।

८

नाहं जोगी नाहं भोगी नाहं जोशी सन्यासी
नाहं कर्मी नाहं धर्मी उदासीना घरबासी १
बाबा अचिन्त्य रे बाबा अचिन्त्य रे ब्रह्मीं स्फुर सो माया
नाम नहीं ना रूप रेखा सो मै आम्हारी काया ॥
नाहं सिद्धा नाहं भेदा नाहं पंडित ज्ञानी
नाहं जपी, नाहं तपी, नाहं ध्येय ध्यानीं २
नाहं पिंडा ना ब्रह्मांडा नाहं जीव शिव कोई
नाहं पुरुषा नाहं नारी नाहं देव बिदेहीं ३

नाहं-मैं नहीं (अहं न) आम्हारी-हमारी ।

शाहअली मुहम्मद माशूक़अल्ला (—१५६६)

आपीं खेलूँ आप खिलाऊँ
आपीं आपस ले, कल लाऊँ
मेरा नावँ मुझे अत भावे
मेरा जीव मुँझी पर जावे
मेरी निया मुँझी सूँ माती
रह री, अपनई रूप लुभाती
ला का निया सो मुँज सूँ मिथ्या
जद का सो धन आपस दीथा
जी को अपनई रूप लुभावे
भई सो क्यों न आप सुहरावे
मैं मुँज रह्या, ना तूँ सँघाती
'शाहअली' जिव ही मुज साथी
मुँझ बिन कोइ नहीं जग माहीं
चेरी सुहागिन हूँ तिस नान्हा
आपिन खेले आप खिलावे
आपिन आपस ले कल लावे

हासिल सब कुरान का है इतना जानों
वहम दुई का दूर करो होर मुँझे पछानों
ढूँढन निकली पीव कूँ अपस गई सो खोय
जिधर देखूँ एक हूँ मुँज बिन और न कोय

निया-(?) माती-समाती है, मस्त होती है अपनई-अपने ही ला-नहीं दीथा-दीखा सुहरावे-प्रसन्न करे नान्हा-छोटा, लघु कल-चैन।

मै आपकू भाय कह्या मा-आप अपस्कूँ कह्या
तिस आप पद आवे दया, रे भाइयों हौं सू (?) करूँ
जब प्रेम अपने चित धरूँ अपस दिखाऊँ मन हरूँ
या आपके घूंघट करूँ रे भाइयो, हौं सू (?) करूँ

× × ×

सारी पिरथी ऊपर पिव हूँ
जे हूँ गुरूँ नबी हूँ
शाहशाहाँ हैं जे जगमाँ निहाँ
सो मुँझ चेरी हूँ तिस नान्हा
बोल हमारे तुम्हें न बूझो
जी रे न बूझो तो ले लूझो
जे हू जानू तुम्हें न जानूँ
जे जानू तो मुझे बखानूँ

× × ×

है सो हो हो होय रही है
जिधर देखूँ एक वही है

मै तो बहुत छिपाया पन काहू कीजे
आप माता जब जन दिसूँ कहा थे कल दीजे
दीठा पर्या जग सूँ सब रहे सो जोय
हुब जे भोत छिपाये सूँ कित माने कोय
जैसा कोइ होय से सब कोइ कहती
आवत जन दिसे ओ (?) क्या क्यों छिप्या रही

सूँ-(संभवत: गुजराती का प्रश्नवाचक शूं का रूप ?) निहाँ-छिपा हुआ लूझो-(?) माना-मदमस्त दिसूँ-देखूँ हुब-प्रेम ।

आपें बरकत होय, करे भेस मेरा लेता
मुँज कूँ आके 'शाहअली' तई दिखला देता
किन्हें केरे दीठतें जे तिल भी टलता
कुछ भी छिपाता आपकूँ तो मेरा चलता

अभरन मेरा सही सो पिव है, पिव का जिव सो मेरा जिव है
हार हमेलॉ मुंज शह बाहॉ, मोतीहार सो तुम गल मॉहे
मुझ शह अन्तर कछू न भावे प्यारो चोला चीरा उतरावे
एकामेक जो राख्या लोरी सो बुज अभरन क्यों कुछ छोड़े

× × ×

जब ज्यों राखे तब त्यों रहिये
लटका पिव का किसे न कहिये
जे कहना होय सो कहिये
मन माही, ले न रहिये
कभें सो **मजनू** होय बिरलावे
कभें **लैला** होय दिखलावे
कभे सो **खुसरो** शाह कहावे
कभें सो **शीरीं** हो कर आवे

कभें सो साथी कहें **अली** जियो **अली मुहम्मद** कहीं कहावे
कभें सो **शाह हुसेनी** राजा ऐवें तिल तिल भेस भरावे

अहरपनवाली जग रतनाली बेनी बासक हरतिल काली
ई जो बाँकी भौं दो माली

किन्हें केरे-किसका अभरन-आभरण हमेलॉ-सोने-चाँदी के सिक्कों की माला हमेल (ब. व.) कभें-कभी सो-वह बिरलावे-पृथक करता है अहरपनवाली—? बेनी-वेणी बासक-वासुकि, नाग हरतिल-प्रत्येक स्थान पर।

रे जीव सब सुन एवें कीजे, यह जीव 'शाहअली' जिउ दीजे
दोनों जगमाँ तू राज करीजे

आज प्रेम तो तुज सूँ खेलूँ जो ये बाचा देवे
जे तू जीते मुज कूँ लीजे होर धन जीते तूँ लेवे
एक सो बात प्रेम की भारी दूजा तुज सूँ खेल चढाई
तिस पर तैं मतवाली केती भर भर प्याली प्रेम पिलाई

× × ×

जिसें तिर (?) नयन हाते...सो तो नहीं साथी
तुज बिन कुछ भी ना जोऊँ क्या करूँ सँघाती
ये यारी होर दोस्ती मेरी
यह सब यारी दोस्ती तेरी
हब क्या कीजे बात घनेरी

× × ×

क्या कुछ रूप है मुँझ माँ सहेली
जे हूँ किसमें देख करे हो जाऊँ खेली
रूप लुभाने आपके धन आप दिखावे
आगें अपने रूप के सो दास कहावे
जग में मुँझ बिन कोइ नहीं हौं अपने दासा

ए जी, महके फूलरी सब मेरा बासा
ये जग मेरी आरसी कर अपस देखूँ
अपना रूप बखेर करि मुँझ जन धन पेखूँ

दोनां-दोनो बाचा-वचन केता-किया जोऊँ-देखूं हब-अब पेखूं-देखूं।

सूरज-तारां चाँद-माँहीं में ग्वाल अछाय
की उजाली माँझ जगें होर दिया बिदाय

इन सब कलियों माँ महीन रंग आप दिखाऊँ
राती माती होय सही मुंझ वारी जाऊँ
अली मुहम्मद नाम मँझे बन दास कहाऊँ

—**जवाहर उल इसरारे अल्ला**

माँहीं में-अन्दर अछाय-रख कर, बिछा कर ।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८१-१६११)

१

दो जग मने मुँज कूँ अहे करतार मआज़
बन्दा हूँ उसी का वही ठार मआज़
उम्मत हूँ मुहम्मद का करूँ शुक्र खुदा
तू है मुँजे जिस्म अहमदे मुख़्तार मआज़
पाया हूँ मुल्क-कोट उनन प्यार थे मैं
मुँज कूँ है सदा हैदरे कर्रार मआज़
पंजतन का मुँजे दास किया प्यार थे हक़
पंजतन हैं अज़ल थे मुँजे हर बार मआज़
अल्ला मुहम्मद अली होर बारा इमाम
यो सब अहैं 'कुतुबा' के सो ऊपर मआज़

२

खुदा करम सेती **शबरात** आया
खुशियाँ का उजाला जगत में दिखाया
बराताँ लेकर आया सार्यां में खुश हो
खुशियाँ इशरताँ सो के जुग जुग जगाया
इमामां माया है 'मुहम्मद कुतुब' पर
नबी होर अली के दया सूँ सुहाया

मआज-शरण, आश्रय उम्मत-अनुचर अहमदे मुख्तार-मुहम्मद की उपाधि उनन-उनके थे-से हैदरे कर्रार-हज़रत अली की उपाधि हक़-परमेश्वर बारा इमाम-अली के बारह बेटे कुतुबा-कुली कुतुबशाह सार्यां-सब में इशरतां-(इशरत का ब. व.) माया-प्रेम ।

खुशियाँ इशरतां ज़ौक़ दायम सो नित-नित
शहा के मन्दिर टिमटिम्याँ बजाया
खुदा 'कुतुबशाह' कूँ शहंशाह कर कर
सो सारे जगत में दुराही फिराया
'मुहम्मद कुतुबशाह' के सारे दन्द्याँ कूँ
सो नाबूद कर कर जगत थे गँवाया
नवी सदक अमृत सरा 'कुतुबशाह' कूँ
सो साक़ी **कौसर** पियाले पिलाया

३

चन्दा ऐन ईदी बशारत दिखाया
भँवां सेती साक़ी इशारत दिखाया
अधर की मद की घर कूँ कुलफ़ था सो मुखड़ा
सो, गई कीली खुल दिल इमारत दिखाया
छिपी थी सो एक माह मद की छबीली
मशाता हो ईदी निगारत दिखाया
सुराही सरो—सानी छन्दाँ सूँ
प्याले-रतन मौज आरत दिखाया

ज़ौक-रुझान, चस्का दायम-स्थायी टिमटिम्यां-एक ढोल की तरह का बाजा दुराही-दुहाई दन्द-शत्रु (द्वन्दी ? दन्द का ब. व.) नाबूद-नाश नवी-नई सदक-ताजा सरा-शराब, (सुरा-सरा ?) चन्दा-चाँद ऐन-उचित, यथासमय ईदी-ईद सम्बन्धी बशारत-शुभ समाचार भँवाँ-भौंह (भौं का ब. व.) इशारत-इशारे माह-चाँद मशाता-सन्देशवाहिका, नाइन निगारत-सुन्दरता छन्दाँ-बहाना, छल (छन्द का ब. व.) मौज-आनन्द, लहर आरत-आर्त्त को ।

करूँ सेव एक चित सूँ मद पीर का मैं
के मैखाने का मुँज इजारत दिखाया
मुहम्मद नबी फ़ैज़ थे ईद आ कर
"मुहम्मद कुतुब" कूँ सदारत दिखाया

४

प्यारी के मुख थाने खेल्या बसन्त
फूलों हौज़ थे चरके छिड़क्या बसन्त
बसन्त बास चुन-चुन के चुनरी बँधे
जो उभर के लहरों सो आया बसन्त
जोबन हौज़ में नौरतन रंग भरे
बसन्त राग गावो सुहाया बसन्त
रँगा नीद (?) थानक बँधे-गलसरी
गले गुल लड़ों सो दिखाया बसन्त
नवी बाली कूँ नली (?) क़दम में भेजे
प्रीत प्याले भर कर पिलाया बसन्त
बसन्त की खुमारी नयन में भरी
हिंडोले नैन दिल डुलाया बसन्त
नबी, सदके मैं हूँ 'मुहम्मद' गुलाम
नबी रुत मेरी रुत मिलाया बसन्त

सेव-सेवा मैखाना-मधुशाला। सदारत-अध्यक्षता, मुखियापन नीद- ? (नेवद-संदेसा) गुल-फूल लड़ा-लड़ (ब. व.) नवी-नई बाली-बाला, युवती नली-(?) सदके-बलिहारी मेरी-मे ।

५

परम प्यारी का जल्वा गावो सारे
उसे चन्द-सूर सूँ परियाँ सिंगारे
सुहागाँ भाग फूल मस्तक खिले हैं
सहेल्याँ आरती तारे निवारे
रचा दो तख्त जल्वे का खुशी सूँ
के चौधर चौक मोतियाँ सूँ सँवारे
चड़ावो तेल अब सातो सुहागाँ
मशाता होके ज़हरा हुस्न निगारे
पिला शर्बत, देव हातों में बीड़े
बँदावो सार्याँ मोतियाँ किनारे
'मुहम्मद कुतुबशाह' होर उस परी के
खुदा या, रख जदा लग हैं तारे

६

अमृत घड़ी में खुशियाँ तबल बजाये
कुतुब जमाँ के ताईं बहुगुन मस्ती पिलाये
देते हैं बारगाह वो जिस रग है सुहाता
उहाँ नाव ले नबी का सूरज शमे लगाये

जल्वा-वर वधू को पास पास बैठाना, पहली बार देखना   सुहागाँ-सुहाग का ब. व   सहेल्याँ-सहेली का ब. व.   निवारे-न्यौछावर किये   चौधर-चारों तरफ   चड़ावो-चढ़ाओ   सुहागाँ-सौभाग्यवती स्त्रियाँ   मशाता-नाइन   ज़हरा-फ़ातिमा, कली, एक तारा   बँदावो-बँधाओ   सार्याँ-सभी (सारी का ब. व.)   जदा लग-जब तक   जमाँ जमाना   बारगाह-निवासस्थान   उहाँ वहाँ   शमे-शमा (दीपक की लौ)।

सदरॉं हैं ज़र निगारे तारे जुड़े कुन्दन उस
मुन्ने के सरो झाड़ाँ जेबाई सूँ सुहावे
ज़हरा नमन महाफ़े (?) रोशन है इस अगन में
या सूर की है किरनाँ जोतॉं स सर उचाये
सुरंग रँगीली मेंहदी बहुरंग से कला कर
केतक चावा सेती शह पाव कूँ लगाये
सब प्यारे मिलके प्यारों सूँ जाये शाह पे बलि बलि
सब सुन्दर्यां सूँ लखियां रंग-रस सूँ रचाये
सदक़े नबी 'कुतुबशाह' ताईं सोहे है ख़ुशियाँ
जो इस ख़ुशी अनन्द थे सब जग के तईं रिझाये

७

पिया बाज प्याला पिया जाये ना
पिया बाज इक तिल जिया जाये ना
कही थे पिया बिन सबूरी करू
कह्या जाये अम्मा किया जाये ना
नहीं इश्क़ जिस वह बड़ा कूढ़ है
कधीं उससे मिल बैसिया जाये ना
'कुतुबशाह' न दे मुंझ दिवाने कूँ पन्द
दिवाने कूँ कुच्छ पन्द दिया जाये ना

कुल्लियाते मुहम्मद कुली कुतुबशाह

सदरॉं सदरी, वास्कट या सदर का ब. व. मुन्ने-स्वर्ण सरो-एक वृक्ष झाडॉं झाडा का ब. व. जेबाई-उचित, ख़ूबसूरत महाफे समान (?) उचाये-ऊँचा किये कलाना-मिलाना (दक्खिनी क्रियापद) केतक-कितने ही चावा-चाव का ब. व. प्यारों सू-प्यार से सुन्दर्यां-सुन्दरियाँ लखियां-देखा ताईं-लिए बाज-बिना कहीथे कैसे, कहाँ से कूढ-अकिञ्चन (कूढ़ा) कधी-कभी बैसिया-बैठा पन्द-शिक्षा।

ग़वासी (—१६५०)

चुन उस गोहराँ के समन्द का गम्भीर
है ग़वास इस दौर में बेनज़ीर
सो यूं जोहराँ काड़ ल्याता है बहार
जो मुल्क हिन्दुस्ताँ में एक ठार
कहते हैं जो था कोई सौदागर एक
वजाहत मने पाक सीरत मे नेक
उत्तम भाग का भोगनी बख़्तवार
घर उसका भी था बन्दर के सार
जेते उस ज़माने के सौदागराँ
उते उसके आगे थे ज्यूं चाकराँ
किया था ख़ुदा यूँ उसे सरफ़राज़
जो थे सातो दरिया उपर उसके भाज़
शहाँ पास नईं कुच सो उस पास था
.........नौरतन गंज नव रास था
सदा ताज़ा था ज़ौक़ का बाग़ उसे
वले फर्ज़न्दाँ नईं सो था दाग़ उसे
केतक दिवस पीछे सो वो दाग़ ज्यों
ख़ुदा के करम ते हुआ बाग़ ज्यों
हुआ घर मने एक फर्ज़न्द उसे
सो वैसा हुआ आज लग नईं किसे

गोहर-मोती (गोहर ब. व. गोहराँ) समन्द-समुद्र गवास-गोताखोर जोहर-रत्न (ब. व. जोहराँ) वजाहत-देखने में सीरत-स्वभाव बख़्तवार-सौभाग्यशाली, सार-समान (फारसी का प्रत्यय) सरफ़राज-सौभाग्यशाली, प्रतिष्ठित भाज-जहाज गंज-खज़ाना रास-राशि वले-लेकिन ।

निशान्याँ सआदत के ले ठार ठार
हुआ जग में इज़हार **यूसुफ़** के सार
घर उसका झमकने लग्या नूर ते
सितारा चल आया मगर दूर ते
केतक दिवस कूँ जू हुआ वो जवाँ
सो वई बाप हंगाम उसका पछा
नन्ही एक महबूब महताब से
लताफ़त में निर्मल निछल आब से
धुँड़ा तुरत पैदा किया, कर ना देर
किया लाख खुशियाँ सेती कारे खैर
केतक दिन कूँ घर में ते जूँ वो जवाँ
निकल भार आया न रुक परा
सो बाज़ार धोरे सैर करता चला
नज़र हर तरफ़ साफ़ धरता चला
सुआ...देखा एकस के हात में
जो मरग़ोलता है वो हर बात में
ज़बाँ पर उसे याद है सब कुरान
फ़साहत पर उसके हुआ शादमान
हवस दिल में अपने धरा बेशुमार
लिया मोल सूआ दिये **हुन** हज़ार
खुशी सूँ जो आया अपने मन्दिर

सआदत-सौभाग्य इज़हार-प्रकट होना, ज़ाहिर इज़हार हंगाम-समय पछाँ-पहचान
महताब-चाँद की तरह शोभायुक्त निर्मल-छल रहित आब-पानी कारेखैर-परमार्थ
धोरे-निकट मरग़ोलना-पक्षी का मधुर स्वर में बोलना फ़साहत-प्राञ्जलता
शादमान-प्रसन्न हवस-इच्छा ।

उठा बोल सूत्रा के ऐ दस्तगीर,
नुमाइश में गरचे मूठी भर हूँ मैं
वले इल्म के फ़न में बेहतर हूँ मैं
जहाँ लग जहाँ में हैं अहले कलाम
हैं हैराँ मेरे बचन ते तमाम
...हुनर कुच जो है मुज मे एक
कहूँगा तिसूँ खोल अजमा के देक
के जैसा अँगे होनेहारा है काम
सकत है जो अब खोल बोलूँ तमाम
के दो तीन दिन के पीछे देखियाँ
के आता है एक कई सेती कारवाँ
जिनन पास अम्बर है इस शहर बीच
खरीद करनहार है सब वही च
वो ना आय लग हो खबरदार तूँ
वो अम्बर सो ले मोल एक बार तूँ
मेरी बात सुन होवेगा कामयाब
है इसमें तुझे फ़ायदा बेहिसाब
हो खुशहाल इस बात ते वो जवाँ
जिनन पास अम्बर अथा पा निशाँ
लिया मोल एक घर सते बेशुमार
लेजा अपने घर में भराया अम्बार
एकाएक ऐसे में वो कारवाँ

दस्तगीर-सहायक अहलेकलाम-विद्वान कुच-कुछ तिसूँ-उसे देक-देख
सकत-शक्ति अम्बर-मछली से प्राप्त होनेवाला एक बहुमूल्य पदार्थ अथा-था
एकघर-एक साथ सते-से अम्बार-भंडार ।

सो आया वो सूआ कहे तेऊं च वॉ
तलब था सो अम्बर लगे धूँडने
नईं पाये कईं शहर में किस कने
वो अम्बर बज़ा चौंगुने मोल सूँ
दिया उनकूँ सोने केरे तोल सूँ
चढ़ा हात उस वक्त लिये माल उसे
नज़र सो भरी फिर गया ख़्याल उसे
जोहर एक दिन मने शौक़ आ
चला फेर बाज़ार कूँ नौजवॉ
देखा एक मैना कूँ मिठबोल खूब
उसे बी लिया होर दिया मोल खूब
मुरस्सा के खुश एक पिंजरे में छोड़
रख्या ल्याके सूआ के नज़दीक जोड़
वले अवल सूआ में कुछ होर था
हुनर के बलाग़त मे वरज़ोर था
के हर बात में बाइबारत नवी
कहे हर घड़ी वो हिकायत नवी
जो नागाह बातॉ में उस जवॉं सात
कह्या जो दरिया की तिजारत की बात
सो भोती च आया उमस उसके तईं

तेऊं च वॉ-वहॉ इस तरह हीं मुरस्सा-रत्नजटित बलागत-कठिन शब्दों से युक्त वाक्य नागाह-अकस्मात् अज़्म-विचार दिरंग-देर चन्दा-थोड़ा खन्दा-खिलना बर्जा-प्रकट रूप से केरे-का मुरस्सा-सुसज्जित बलागत-ऐसी भाषा जिसमें शब्दों का उचित उपयोग हो (बालिग़ बलाग़त) वरज़ोर-अधिक बाइबारत-कठिन नवी-नई नागाह-भविष्य भौती च-बहुत ही उमस- ? ।

दरिया के सफ़र का मो कर अज़्म वई
लिया बोल दिल मे जो बहतर है जाँऊ
तमाशा देखूँ माल ले कुछ मैं आऊ
ग़नीमत है फ़ुरसत करूँ क्या दिरंग
के दुनिया किसी सू नहीं एक रंग
वफ़ा उम्र के तईं तो चन्दा नईं
सदा बन मने फूल खन्दा नईं
अपस मे अपै फ़िक्र कर इस वज़ा
तवक्कुल सते दिल सो रख बर क़ज़ा
ले तोते को मैना को वई हात मे
सो औरत कन आया उसी मात मे
गले ला मुहब्बत सूँ गुज़रान बात
वो दोनो पंखिया कूँ सो दे उसके हात
हो मुस्तैद घर में ते बाहर हुआ
सो बेगी मते वई मुसाफ़िर हुआ

सफ़र में लग्या मर्द के जो दिरंग
सो औरत कै तईं घर लग्या सख़्त तंग
ना गमता देखत वक्त हैराँ हुई
मुसल्लम अपस में परेशाँ हुई
जो थी घर में झाड़ी सो जा वाँ चढ़ी

अज़्म- ? दिरग-देर चन्दा-कुछ भी खन्दा- ? अपस मे-अपने आप में, आत्मा मे वज़ा-तरह तवक्कुल-भरोसा करना (वकील तवक्कुल) बर-ऊपर सफलता कज़ा-मौत कन-पास पंखियाँ-पन्छी (पंखी ब. ब. पखिया) मुसल्लम-पूरी तरह

हलू खोल खिड़की निझाती खड़ी
सो ऐसे मने एक छबीला जवान
परी उसको देखे तो देवे परान
बड़े दबदबे सात आता देखी
सो अपने तरफ़ कुछ निझाता देखी
जो था मर्द का इश्क़ मन में अव्वल
सो देखी उसे सो गया वो निकल
निझाया रुख उसका वो चंचल जवान
सो मार्या वहीं इश्क़ का तेज बान
जो उस बान की घावकारी लगी
अन्तर तई न्त्र दोनों में यारी लगी
भीतर ते सो इन जिवड़ा वारती
उमंग सात उन....................
यकायक न उस धन को बहार आया जाये
न उस जवाँ को पैस कर जाया जाये
बहर हाल उस इश्क़ फाँदे में मेल
चला अपना मन्दिर ताज़ी को ठेल
बोला एक बुड्ढी मकरज़न को शिताब
दिया उस टके खुश किया बेहिसाब
कहा खोल राज़ आपना उसके घेर
सो मिन्नत पै मिन्नत किया फेर फेर
जो वो मकरज़न उस सुधन के घर आई
वो महताब सा मुख जो उसका निझाई

निझाती-झाँकती धन-स्त्री पैस कर-बैठ कर फाँदे-फंदे ताजी-घोड़ा
मकरजन-छल करने वाली स्त्री, कुटनी घेर-निकट (घेर घेर)।

दिवानी हो उसकी वजाहत उपर
बली जाये कर उसके क़ामत उपर
बला ले हलूँ वई रिझाने लगी
बचन करके सो चिल्लाने लगी
बिछड़ मर्द सूँ रही सो वो हाल देक
खुशामद सते खाई हैफ़े टुक एक
बहर हाल बातों सो उस नर्म की
मुहब्बत मने जवाँ के गर्म की
सो ज़ू मोम उसके पिघल ध्यान में
कही उस बुड्ढी कूँ हलू कान में
के दिन आशिक़ाँ का सो है पर्दा दर
रैन हुए तो आऊँगी उसके घर
ग़वासी उत्तम रैन काली दराज़
यक़ीं जान है ऐन आशिक़ नवाज़
रैन ते तो है दिवस रोशन सही
वले काल सो आशिक़ाँ का यही

× × ×

जगा जोत सूरज उत्तम ज़ात का
जो कर सैर सब दिन समावात का
डूब्या जा के मग़रिब के ज़ुल्मात में
लगे दीपने ज्यों दिवे रात में
सो वो बेबदन नार चन्दर बदन

क़ामत-क़द (कामत) हैफ़-अफ़सोस हलू-धीरे (हौले) यकी-यकीन
आशिक नवाज-प्रेमियों पर दयालू समावात-आसमान ? ममावात ब. व.
मग़रिब-पश्चिम ज़ुल्मात-अन्धकार दीपने-प्रकाशित होने ।

हलू लाजती आई मैना किधन
कही यूँ जो ऐ तू है शीरीं ज़बाँ
नहीं कोई तुज बाज महरम यहाँ
नन्हीं अक्ल में एक गई हूँ न जान
बहर हाल कर मुज तूँ खातिर निशान
लग्या दिल मेरा एक नवे यार सूँ
भूले हैं नैन उसके दीदार सूँ
कहाँ ते मैडी पौ मैं जा चढ़ी
जो आ मुज उपर ऐसी बाज़ी खड़ी
दरीचा तूँ इस बाब का मुज पो खोल
मिल उस यार सूँ क्यूँ गहूँ मुज कूँ बोल
सुनी वो जो मैना न सुनने की बात
बजाँ यूँ उठी बोल कर उसके सात
के ऐ मोहिनी तू हैं नारी अशील
सटाय नक्श तूं अपने सीने से छील
तेरा मर्द होवे त्यों तुजे कोई न होय
के तुज नार कूँ ना सजे मर्द दोय
के है पाक दामन तू नारियाँ में आज
बड़ाई बड़ी तुज है सारियाँ में आज
वो शारूं के मूँ ते सुने यो बैन
नसीहत पर उसकी ग़ज़ब में हो ऐन

किधन-तरफ़ शारीज़बाँ-मधुरभाषी बाज-बिना महरम-जो स्त्री किसी पर अनुचित रूप से मुग्ध हुई है, हरम-महरम) मौड़ी-ऊपरी मंज़िल दरीचा-द्वार बाब-अध्याय गहूं-ग्रहण करूं अशील-शील रहित सटाय-अंकित सारियां-सब (सारी का ब. व.) शारूं-मैना ? पौ-पर ।

सटे भुईं पै वई पंख उसके मरोड़
सो मैना दई थरथरा जिव कूँ छोड़
के वॉ ते बजां आई तूती के पास
मगर आवे उसके किधन ते विरास
सच्चा प्रीत का जो तपना उसे
कही खोल सब हाल अपना उसे
वो तोता पछान उसके मन का खयाल
न होगा बुरा अक्ल अपना सँभाल
कहा गर उसे मना करता हूँ मैं
तो मैंने के नमन मरता हूँ मैं
भला है जो अब क़ाल से पेश आऊँ
उसीकी च वई ख़याल में मेल जाऊँ
वफ़ा ज़ाहर न उसको दिखलाऊँ कुच
रखूं शर्म साहिब की उस ठाँव कुच
तअक्कुल कर उस धात उस नार सूँ
हुआ बाद अज़ाँ पेश गुफ्तार सूँ
कहा यूँ के ऐ शहपरी नेक नाम
तूं आक़िल होके यों ग़लत की तमाम
वो सार बस्तू गर चे हमजिन्स थी
व लेकिन कहाँ अक्ल उसको यती
जो अपड़ा दे तुज बेग मक़सूद कूँ
लेवे बाँट तेरे जियाँसूत कूँ

सटे-डाले तूती-तोता विरास- ? मैने के-मैना के नमन-तरह काल-बोलना (ढाग) [illegible], अक्ल तआक्कुल धात-तरह बादअजाँ-इसके बाद शहपरी-सुन्दरतम सार-मैना हमजिन्स-एक जाति यती-इतनी अपड़ाना-शोध लगाना, प्राप्त कराना मकसूद-मक़सद-मकसूद ।

के थी सख़्त कोहन व तूँ उसके सात
ना कहना अथा अपने दिल की बात
छुपा राख तूँ आज ते राज़ यो
मबादा सुने कोई आवाज़ यो
के हर क्यों करूँगा तेरा काम मैं
न कर बातिन अपना परेशान यों
ना कई तू मुजे छोड़ कुछ बुधकची
करन जायगी तू ना होसे सची
बजाँ होवेगा क़ज़िया तेरा बुरा
हुआ था जो उस एक रानी केरा
कहता हूँ सुन वो क़ज़िया ऐ धन, तुजे
के खातिर मने याद है वो मुजे

× × ×

सुन्या था जो सौदागर एक बेनज़ीर
अथा उसकने एक तोता गँभीर
वफ़ादार, खुशफ़ाम, शीरीं कलाम
हुनर गैब के था समज में तमाम
करे घर की सब दीदबानी वही
देवे नेको बद की निशानी वही
जो एक दिन वो सौदागर नामदार
चल्या करने सौदागरी एक ठार

जियोंमृत-हानिलाभ कोदन-बच्चा मबादा-हर्गिज़ बातिन-दिल, रहस्य कची-कच्ची होसे-होगी कजिया-कथा बजाँ-उचित रूप से बेनज़ीर-अनुपम गंभीर-गंभीर खुशफाम-सुन्दर वेशधारी गैब-अदृश्य दीदबानी-निगरानी ।

लगे दिवस कई बेग पाया न आन
थी जान उसकी औरत लगी तलमान
जवाँ उसके बाड़े में था एक खूब
लगाई छुपा इश्क़ उसे देख खूब
मँगे जीव तो घर बुला भेज उसूँ
करे ज़ोक फूलाँ सूँ, भर सेज कूँ
वो तोता जो कुच उन करे सो न जाय
वले मुँह पै औरत के हरगिज़ न लाय
मुंडी शहपराँ में वो गिर्दान कर
निजा नींच त्यों चुप रहे जान कर
जो आया वो सौदागरे नेक नाम
खबर घर की सुआ से पूछा तमाम
कने काज कुच था कह्या उसके सात
वले नईं किया फ़ाश औरत की बात
केतक दिन कू वो राज़ ज्यों भार थे
हुआ मर्द पर ज़ाहिर एक ठार थे
दिल उसते वहीं तोड़ लेने लग्या
हलू उसकूँ आज़ार देने लग्या
वो नादान नाजान दो दिला लाई
के तोता ई च थे यो बला मुज पो आई
कह्या है यही राज़ सब खोल उसे
किया घात मुझ पर यही खोल उसे

जान-जवान उसूं-उसे ज़ोक-शौक़ शहपराँ-बड़े पर गिर्दान-डालता निजा-झुका
कने-पास भार थे-बाहर से आज़ार-दुःख पहुंचाता तोता ई च थे-तोते ही से

जो पकड़ी वहीं...तोता उपर
सो पिंजरे में ते काड़ उपाड़ उसके पर
छुजे तल दिये मेल ज़ायाँ उसे
हुआ उस बड़ा दुख ना पाया उसे
जो पूछ्या उसे मर्द तोता कहाँ
वो मिटबोल ज्ञानी फिरावाँ कहाँ
हुआ क्या वो कह खोल हाली मुजे
के दिसता है पिंजरा सो खाली मुजे
ज़बाँ मकर सूं वई वो औरत फिराई
बिल्ली खाई कर ल्याको वो पर दिखाई
वो पर देक खा लाक अफ़सोस मर्द
गुस्सा दिल में उबल्या सुन्या सूर मर्द
क़बाहत सूँ आज़ार दिये बेशुमार
वही घर ते औरत कूं भाया बहार
जो वो भार कध घर ते निकली न थी
गली होर बाज़ार निकली न थी
भूकी होर प्यासी नंगे पाँव सात
यकेली निराधार न कोई संगात
निकल शहर ते जो यकट भार आई
अथा एक रोज़ा सो उस ठार आई
कही याँ तो नई आदमी का निशान
बग़ैर अज़ ज़मीं होर बग़ैर आसमान
यो रोज़ा सो है मठ किसी ख़ास का

फिरावाँ-अधिकता हाली-हाल पर-पराया लाक-लाख कबाहत-निर्मल
आज़ार-दुःख पहुँचाना भाया-बहाया कध-कभी यकट-अकेला।

के दिसता है यो ठार इखलास का
भला है जो मैं उस वली खास सूँ
लगा दिल करूँ खिदमत इखलास सूँ
के शायद मुज उपर मेहरबाँ होवे
अजब क्या जो यूँ मुश्किल आसाँ होवे
छिनक नीर अंजवांस सफ़ावार ठाँव
रही दुःख सो गदाँ ले हाथ पाँव
वो तोता जो पिंजर मे ते भार काड़
निकाली जो थी उसके शाहपर वो पाड़
ना ज़ाया हो कई सब बलायाँ थे बाँच
रह्या था वतन करके अव्वल ते बाँच
देखा जो उसे झाड़ ऊपरोल थे
उतर आया वई हरी डाल थे
छुप्या जाके रोज़े केरा एक टार
हलू आसरे थे उठ्या यां पुकार
के ए मोहिनी याँ जो तू आई है
जो अखलास हमना सते लाई है
तेरे सीस पर है सो सब केस काड़
भवाँ होर पलकाँ के ले बाल उपाड़
मुजावर हो याँ बैस चालीस दिन
किसी बाब दिल कूँ ना करले संगन
तेरा मर्द तुज सूँ मिलनहार है

अंजवांस-आंसुओं को। गदाँ-परेशान पाड़-उखाड़ कर बलायाँ थे बाँच-विपत्तियों मे बचकर वाँ च-वही ऊपरोल-ऊपर थे-से काड़-निकाल (काढ) बैस-बैठ संगन- (?)।

तुझे फ़तहयाबी इसी सार है
सुनी यों जो आवाज़ दर हाल वो
सटी काड़ सब तन पो के बाल वो
हुआ बेवजा रूप जाँ का तहाँ
न पलकां, न सरको कल्या, ना भवाँ
रही झीज सब तन सो भालू के सार
निकल आया मूँ तंबालू के सार
बड़ी सख़्त दिसने लगी ऐब ते
हुई मस्खरागी बड़ी ग़ैब ते
वो तोता बज़ाँ आसरे ते निकल
निझा उसकूँ यों वाँ ऊपर होर तल
अधिक तेज़ काँटे ते बी सख़्त बोल
लग्या बोलने ताईं मिनकार खोल
के ऐ बेकटर धन वो तोता हूँ मैं
निकाली जो थी बेगुनाह मेरे तैं
मेरे हक़ पो तूँ कुच बी नेकी न की
खुदा का हुआ खेल कैसा देखी
वो खाने मँजे आर तुजको न आई
पूछ्या मर्द तो कई बिल्ली उसको खाई
फली वो बदी याँ वो तेरी अथी
हुआ वोई च हासिल जो पेरी अथी
पुकार्या सो था मैं ई च तुज कू यहाँ

सार-तरह बेवज़ा-भद्दा जाँ-जहाँ झीझ- (?) तंबालू-एक पौधा मस्खरागी-दिल्लगी। निझा-झाँका मिनकार-चोंच बेकटर-सख्त आर-लज्जा अथी-थी वो ई च-वही पेरी-बोई (पेरना, बोना) मैं ई च-मै ही ।

सकत नईं तो मुर्दे को है यूँ कहाँ
रंजानी तो तू क्या हुआ मुंज कूँ
अभूँ बी वफ़ादार हूँ तुज सँ
नमक लई है तेरा मेरी ज़ात में
अधिक शर्मिन्दा हूँ मैं इस बात में
यक़ीन जप मैं वई बन्दा हूँ क़दीम
करनहार हूँ काम फिर मुस्तक़ीम
सकत है जो अब मर्द सूँ तुज मिलाऊँ
तुजे होर उसे एक दिल कर दिखाऊँ
किये हैं जो कई ला को चाड़े यो काम (?)
करूं शर्मिन्दे उनको सिर ते तमाम
दिये धीरक उसे इस वज़ा बेहिसाब
उड्या वाते दरहाल तोता शिताब
मो उतर्या क़दीम अपने घर में जा
वली नेमत अपने कूँ देखा निभा
किया बेनिहायत हुआ उसके तईं
कहा यों ऐ साहब, वो तोता हूँ मैं
जो पिंजर में ते खींच कर भार काड़
बिल्ली खाई थी मुज कूँ फाड़ फाड़
सुन्या ज्यों वली नेमत इसते यो बात
अजायब लग्या उसके तईं धातधात
सो बोल्या अभों तो क़यामत है दूर

रंजानी-दुखी　अभूँ-अब भी　मुस्तक़ीम-सीधा　सिर-बिल्कुल　दरहाल-तत्काल
शिताब-शीघ्र　भार काड़-बाहर निकाल कर　धात-तरह, प्रकार　अभों-अभी तो

हुआ क्यों कना फिर तेरा ज़हूर
कह्या तब के ऐ बहुगुनी नामदार
तेरा नांव रोशन अछो ठार ठार
जो अपनी प्यारी सुन्दर नार कूँ
ग़ज़ब वेसबब कर सट्या भार कूँ
रही है पकड़ गोशा भी, कई ना जा
मेहरबा हो वो वली उस उपर
मुँज अपनी दुआ सात फिर ज़िन्दा कर
दिये भेज तुज कन देव कर गवाह
के है पाक तोहमत तो वो बेगुनाह
उठे हैं दन्दे उसपो तूफ़ान ले
वो सब झूठ है याँ ते तू जान ले
जधां लग तेरे घर मने मैं अथा
न देख्या कधीं कुच उसते खता
चल उस पाकदामन तेरे ठार कूँ
वफ़ादार हो वफ़ादार सूँ
लगी सच उसे सू दिल को सूआ की बात
उसी तिल चल्या वई शिताबी संगात
देखत अपनी औरत कूँ लाया गले
सो बाहाँ केरा हाँस भाया गले
कते वज़ा सूँ उज्रखाई किया
लेजा घर उसे बादशाही दिया

ज़हूर-प्रकटीकरण (ज़ाहिर ज़हूर) अछो-रहो भार-बाहर फ़ला'ने अनु'॥
देव कर--देकर तोहमत-अपराध, आक्षेप जधाँ लग-जब तक मने-अन्दर, में
उसी तिल-उसीक्षण हॉस-हॅसली (गले का गहना) दन्द-दुश्मन उज्रखाई-क्षमायाचना

ओर तोता उसे काम आया है ज्यों
तुजे काम मैं आनहारा हूँ यों
गर ऐ मोहिनी इश्क़ सूँ तुझ है काम
अंदेशा न कर काम कर ले तमाम
शिताबी भली तुज नको कर दिरंग
हो उस नूर के शमा का तू पतंग
परेशा हो फेर चित ग़म सो लाई
निकल दिवस आया सो जाने न पाई

'ग़वासी' उत्तम रैन काली दराज़
यक़ीन जान है ऐन आशिक़ नवाज़
रैन थे तो है दिवस रोशन सही
वले काल सो आशिक़ का यही

मुहब्बत लगाने जो लगती है साफ़
न कर यार का वादा हर्गिज़ ख़िलाफ़
जो इसी बात पर वो चंचल छन्द भरी
जो रुख़ यार के घर को जाने करी
यकायक सबा का उजाला हुआ
उसे वो उजाला सो जाला हुआ

—तूतीनामा (१६४० ई०)

शमा-दीपक की लौ छन्द-कपट सबा-सुबह ।

तूँ मुझ दार पर खोल दर फ़ैज़ का
मेरे मन मने बहर असर फ़ैज़ का
जला दे मेरे जिउ की आग कूँ
दे रंग-बास मुझ दिल की फल भाग कूँ
जगा जोत तुझ ध्यान केरा रतन
मेरे मन के सन्दूक़ में रख जतन

बचन गैब के हैं अज़ब जवाहरा
बचन के सों हैं जौहरी शायरां
बचन के समन्दर का हूं ग़वास मैं
ढूंढनहार हू मोतिया ख़ास मैं

इलाही जो साहब है संसार का
जो देता है मग्या मंगनहार का
जो बेटा दिया शाह कू बेबदल
चन्द्र-सूरत खूब निर्मल निछल
इकायक सो दिल कूं लग्या ज्यूं तलाश
देख्या खोल कर सरबसर ज्यूँ उने
सो तस्वीर पाया अजब इस मने
वह तसवीर देख वई वो अना हुआ
वही इश्क़ का उसकू बहाना हुआ

दर-द्वार फैज-लाभ, कल्याण जवाहराँ-जवाहर का ब. व. इलाही-भगवान
बेबदल-बिना बदले के सरबसर-प्रकट इस मने-इसमें अना-अहम्, ममत्व ।

जो साहब हुआ नींद से होशियार
लग्या देखने ताईं अँखिया पसार
नज़र नईं पड़ा शहज़ादा कहीं
लग्या ढूँढने हैरान हो बहर कहीं
सो पाया अन्ध्यारे मने एक ठार
पड़्या था अकेला दुख से बेक़रार

करनहार सैर इस प्रीत घाट का
देवे काढ़ मारग यूँ उस बाट का
जो साअद व सैफ़-उल-मुल्क जहाज़ चढ़
चले ग़लगले सात दरिया में पड़
सो देख-जोख पानी मने घात घात
चलाने लग्या जहाज़ दिन हौर रात

सो नजदीक यूँ चीन के आये
सो जासूस वाँ के ख़बर पाये
उठा अपने प्यार के हाथ सूँ
बचाया है आफ़त तें हर घात सूँ
जो निकाल्या वहाँ तें सो सैफ़-उल-मुल्क
पड़्या जाके हार एक जंगल में चक
अकेला जा आगे हो जाने लग्या
कठिन बाट कूँ चल घटाने लग्या

ताईं-उसे ही साअद-आरोहक सैफ़-उल-मुल्क-वीर (मुल्क की तलवार)।

निछल गुन भरी शहपरी बेमिसाल
सो लिखन चतुर धन बदर-उल-जमाल
अदब के रोश सूँ सरा बेहिसाब
लिखी अपने हाताँ सूँ दादी कू जवाब
बुलाकर कही एक अफ़रीत (?) कूँ
मेरा मीत है एक इस मीत कूँ
ले जा काढ़ सभी पटन लग शताब
मिला मेरी दादी सूँ ले आ जवाब

—सैफुलमुल व बदरुलजमाल

धन-स्त्री बदर-उल-जमाल-पूर्णचन्द्र की तरह सुन्दर स्त्री। (बदर पूनों का चाँद, अरबी भाषा में तेरह दिन के बाद चौदहवीं रात का शुक्लपक्षी चाँद, जो सुन्दरता में-जमाल में पूर्णचन्द्र की तरह हो, अफ़रीत-(?) (अधीन रहने वाले) पटन-शहर।

तुकाराम (१६०८—१६४९)

१

क्या गाऊँ कोई सुनने वाला
देखें तो सब जग ही भूला
खेलों अपने राम ही सात
जैसी वसी कर हो, मात!
कहाँ से लाऊँ मधुर बानी
रीझे ऐसी लोक-बिरानी
गिरिधर लाल तो भाव का भूका
राग कला नहिं जानत 'तुका'

२

छोड़े धन-मन्दिर बन बसाया
माँगत टूका घर-घर खाया
तिनसों हम करवो सलाम
म्याँ मुख बैठा राजा राम
तुलसी माला बहुत चढ़ावे
हरजी के गुण-निर्गुण गावे
कहे 'तुका' जो साई हमारा
हिरनकश्यप जिन्हें मारहि डारा

मात-माता लाक बिरानी-अलौकिक म्याँ मुख-मुख में, (म्याँ-म्याने) चढ़ावे-चढावे साई-साँई, स्वामी।

३

मंत्र तंत्र नहिं मानत साखी
प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी
राम कहे त्याके पग हौं लागूँ
देखत कपट अभिमान दूर भागूँ
अधिक-जाति कुल-हीन नहिं जानूँ
जाने नारायन सो प्रानी मानूँ
कहे 'तुका' जीव तन डारू वारी
राम उपासिहू बलियारी

४

चुरा चुरा कर माखन खाया
गौलनी का नन्द कुमर कन्हया
करे बराई दिखावत मोहि
जानत हूं प्रभुपना तेरा सब हि
और बात सुन ऊखल सूँ गला
बाँध लिया आपना तू गोपाला
फेरत बन बन गाऊँ धरावत
कहे 'तुकाया' बन्धु लकरी ले ले हत

१-बड़ाई गाऊँ-गायें हत-हाथ।

५

हरि सूँ मिलन दे एक हि बेर
पाछे तू फिर नावे घेर
मात सुनों दुति आवे मनावन
जाया करति भर जोबन
हरि मुख मोहि कहिया न जाये
तब तूँ बूझे आगो पाये
देख हि भाव कछु पकरि हात
मिलाई 'तुका' प्रभु सात

६

क्या कहू नहिं बुझत लोका
ले जावे जम मारत धक्का
क्या जिवने की पकड़ी आस
हातों लिया नहिं तेरा श्वाँस
किसे दिवाने कहता मेरा
जावे तन तूँ सब त्यान्यारा
कहे 'तुका' तूँ भया दिवाना
आपना विचार कर ले जना

सबत्या-सब से ।

७

कब मरूँ पाऊँ चरन तुम्हारे
ठाकुर मेरे जीवन प्यारे
जग डरे ज्याकू सो मोहि मीठा
मीठा दर आनन्द सोहि पैठा
भला पाऊ जनम, इन्हें बेर
ब्रम माया के असंग फेर
कहे 'तुका' धन मान हि दारा
वो हि लिये गुंडलिया पसारा

८

दासो पाछें दौरे राम
सोवें, खड़ा आपें मुकाम
प्रेम रसड़ी बाँधी गले
खैंच चले उधर चले
आप ने **जनसूँ** भूल न देवें
कर हि धर आधे वाट बतावें
'तुका' प्रभु दीन दयाला
वारी रे तुज पर हौं गोपाला

इन्हे बेर-(इस बार ?) असंग-संग धर-पकड कर ।

९

ऐसा कर घर आवे राम
और धन्दा सब छोर हि काम
इतने गोते काहे खाता
जब तूँ आपना भूल न होता
अन्तर्जामी जानत साचा
मन का एक ऊपर बाचा
'तुका' प्रभु देश-बिदेस भरिया
खाली नहिं लेस इहा

१०

राम को नाम जो लेब बारों बार
त्याके पाऊँ मेरे तन की पैजार
हाँसत खेलत चालत बाँट
खाना खाते सोते खाट
जा तन सूं मुजे कछु नहिं प्यार
असते के नहिं हिंदु धेड चँभार
ज्या का चित लगा मेरे राम को नाम
कहे 'तुका' मेरा चित्त लगा त्याके पाव

इहाँ-यहाँ बारोंबार-बारंबार पाऊँ-पाँव पैजार-जूता असते के नहिं-रहने क्यों नहीं देते धेड-महाराष्ट्र की एक अन्त्यज जाति चँभार-चमार ज्या का-जिसका।

११

आपें तरे त्याकी कोण बराई
औरत कूं भलो नाम धराई
काहे भूमि इतना भार राखे
दुभत धेनु नहिं दुध चाखे
बरसते मेघ भलते हि बिरखा
कोन काम आपनी उन्होंत रखा
काहे चंदा सुरज खावे फेरा
खिन एक बैठण पावत घेरा
काहे परसि कंचन करे धातु
नहिं मोल तुटत पावत धातु
कहें 'तुका' उपकार हि काज
सब कर, कर रहिया रघुराज

१२

जग चले उस घाट कोन जाय
नहिं समजत फिर फिर गोते खाय
नहिं एक दो सकल संसार
जो बुझे सो आगला स्वार
उपर स्वार बैठे तृष्णा पीठ

आपें-स्वयं ही कोण-कौन बराई-बडाई दुभत-दुहते हुए भलते हि-व्यर्थ ही बिरखा-वर्षा कोन-कौन उन्होंने-उनमें खिन-क्षण सब कर-सब का स्वार-सवार।

नहिं बाचे कोइ जावे लूट
देख हि डर फेर बैठा 'तुका'
जोवत मारग राम हि एका

१३

भले रे भाई जिन्हें किया चीज
आछा नहिं मिलत बीज
फीरत फीरत पाया सारा
मीटत लोले धन किनारा
तीरथ बरत फिर पाया जोग
नहि तलमल तुटत भव रोग
कहे 'तुका' मैं ताका दास
नहिं सिर भार चलावे पास

१४

लाल कंमली वोढ़े पेनाये
बेसु हरि थे कैसे बनाये
कहे सखि तुम्हें करति सोर
हिरदा हरि का कठिन कठोर
नहिं क्रिया सरम कछु लाज
और सुनाऊं बहुत है, भाज

लोले-चंचल वोढे पेनाये-पहर ओढ़ कर बेसु-वेश सोर-शोर ।

और नाम रूप नहिं गोवलिया
'तुका' प्रभु माखन खाया

१५

राम कहो जीवना फल सोही
हरि भजन सूँ बिलंब न पाई
कवन का मंदर कवन की झोपरी
एक राम बिन सब हि फुकरी
कवन की काया कवन की माया
एक राम बिन सब ही जाया
कहे 'तुका' सब हि चलनार
एक राम बिन नहिं बा सार

१६

काहे भूला धन-सपती घोर
राम नाम सुन गाउ हो बाप रे
राजे लोक सब कहे तू आपना
जब काल नहिं पाया ठाना
माया मिथ्या मन का सब धंदा
तजो अभिमान भजो गोविन्दा

गोवलिया-ग्वाला कवन का-किस का मंदर-महल जाया-व्यर्थ बा-बाब। सपती-सम्पत्ति ठाना-स्थान ।

राना रंक डोंगर की राई
कहे 'तुका' करे इलाही

१७

कहे मेरे राम कवन सुख सारा
कह कर पूछे दास तुम्हारा
तन जोबन की कोन बराई
व्याध पीड़ा दिस काटहि खाई
कीर्त वधाऊँ तो नाम न मेरा
काहे झुटा पछताऊँ घेरा
कहे 'तुका' नाम समजत, मात !
तुम्हारे शरन है जोड़त हात

१८

राम भजन सब सार मिठाई
हरि सन्ताप जनम दुख राई
दूध भात घृत सकर पारे
हरते भूक नहिं अंततारे
खावते जुग सब चलि जावे
खटा मिठा फिर पचतावे
कहे 'तुका' राम रस जो पीवे
बहुरि ही फेरा वो कबहु न खावे

कीर्त-कीर्ति वधाऊँ-बँधाऊँ अंततारे-(आन्तरिक ?)।

१६

बार बार काहे मरत अभागी
बहुरि मरन से क्या तोरे भागी
ये हि तन करते क्या ना होय
भजन भगति करे बैकुंटे जाय
राम नाम मोल नहिं बेचे कब री ?
वो हि सब माया छुरावत सगरी
कहे 'तुका' मन सूँ मिल राखो
रामरस जिह्वा नित चाखो

२०

हम दास तीन्ह के सुना हो लोकॉ !
रावण मार विभीषण दिई लंका
गोवरधन नख पर गोकुल राखा
बर्सन लागा जब मेहूँ पत्थर का
वैकुंठ नायक काल कौंसासुर का
दैत डुबाय सब मँगाय गोपिका
स्तंभ फोड़ पेट चिरीया कश्यप का
प्रह्लाद के लिये कहे भाई 'तुका' याका

भागी-सौभाग्य तन्हिके-उनके लोकॉ-लोगो दिई-दी बर्सन-बरसने मेहूँ-मेह
कौंसासुर-असुर कंस याका-इसका ।

दोहरे

राम राम कह रे मन और सूँ नहिं काज
बहुत उतारे पार आगे राखे 'तुका' की लाज

लोभी कें चित धन बैठे कामिनी चित काम
माता के चित पूत बैठे 'तुका' के मन राम

'तुका' राम बहुत मीठा रे! भर राखो शरीर
तन की करूँ नावरी उतारूं पैले तीर

सन्त जन पन्हियाँ ले खडा राहू ठाकुर-द्वार
चलत पाछे हू फिरों रज उड़त लेऊँ सीर

'तुका' बड़ो मैं ना मनूँ जिस पास बहु दाम
बळिहारी उस मुख की जिस्ते निकसे राम

राम कहे सो मुख भला रे खाये खीर खाँड
हरि बिन मुख पो धूल परी रे क्या जनी उस राँड?

राम कहे सो मुख भला रे बिना राम सें बीख
अब न जानूँ राम ते जब काल लगावे सीख

कहे 'तुका' मैं सवदा बेचूँ लेवे केतन हार
मिठा साधु संत जन रे मूरख के सिर मार

नावरी-नौका पन्हियाँ-जूते सीर-सिर बळिहारी-बलिहारी बीख-विष
सवदा-सौदा केतन-कितने।

'तुका' दास तिनका रे राम भजन निरास
क्या बिचारे पण्डित करो रे हात पसारे आस

'तुका' प्रीत राम सूँ तैसी मीठा राख
पतंग जाय दीप परे करे तन की खाक

कहे 'तुका' जग भूला रे कह्या न मानत कोय
हात परे जब काल के मारत-फोरत दोय

'तुका' सूरा बहुत कहावे लड़त बिरला कोय
एक पावे उंच पदवी एक खौसाँ जोय

'तुका' मार्या पेट का और न जाने कोय
जपता कछु राम नाम हरि भगतन का सोय

'तुका' सज्जन तिन सूँ कहिये जिथनी प्रेम दुनाय
दुर्जन तेरा मुख काला थोता प्रेम घटाय

काफर सो ही आपण बूझे अल्ला दुनिया भर
कहे 'तुका' तुम सुनो रे भाई हिरदा जिन्ह का कठोर

'तुका' दास राम का मन में एक हि भाव
तो न पालट आब ये ही तन जाय

खौसॉ-थाप, धौका जिथनी-(जिससे ?) दुनाय-दुगना हो पालट आब-पलट कर आयेगा ।

'तुका' राम सूँ चित बाँधा राखो तैसा आप ही हात
धेनु बछरा छोर जावे प्रेम न छूटे सात

चित सूँ शित जब मिले तब तनु थंडा होय
'तुका' मिलना जिन्हा सूँ ऐसा बिरला कोय

चित्त मिले तो सब मिले नहिं तो फुकट संग
पानी पाथर येक ठोर कोरा न भीजे अंग

'तुका' मिलना तो भला मन सूँ मन मिल जाय
ऊपर ऊपर माटी घसनि उनकी कोन बराय

ब्रीद मेरे साइयाँ को 'तुका' चलावे पास
सूरा सो हम सें लरे छोरे तन की आस

कहे 'तुका' भला भया हम हुवा संत का दास
क्या जानूँ केते मरते न मिटती मन की आस

'तुका' और मिठाई क्या करूँ पाले विकार पिंड
राम कहावे सो भली सखी माखन खीर खाँड

शित-शीत जिन्ह सूँ-जिनसे फुकट-व्यर्थ बराय-बड़ाई ब्रीद-विरद ।

*

सैयद मीराँ हुसेनी (१६२३)

जिव का बी ओ जिवाला रूपों में रूप आला
सब के ऊपर है बाला नित हसत रह तू 'मीराँ'

अकुलाय रूप सब सूँ ओ रूप देक जब तू
बेरूप के तूँ तब सूँ नित हसत रह तू 'मीराँ'

बच्चा बगल में हो कर ढुंढते नगर में रो कर
सारी उमर यों खो कर नित हसत रह तू 'मीराँ'

कोई नाक के ऊपर, ज्यो नित बांदते नज़र क्यां
दिसते ही जोत कर यो नित हँसत रह तूँ मीराँ

सो नूर आवे जावे एक सात फिर न पावे
कै रूप उत दिखावे नित हसत रह तू 'मीराँ'

उस नूर कूँ फ़ना है सूरत जिसम बना है
नूर ऐन कूँ मना है नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

सो नूर ख़ास होर रंग रूप कुछ न होवे
कर साफ़ दिल कूँ धोवे नित हसत रह तू 'मीराँ'

जो कोइ वो नूर पाया फिर बोलने न आया
सूरत-शकल न माया नित हसत रह तूँ 'मीरा'

बी-भी जिवाला-जीवन आला-श्रेष्ठ बाला-ऊँचा ओ-वह देक-देख तब सूँ-तब से बाँदते-बाँधते कै-कई फ़ना-नाश।

ओ नूर खास आला सब सूँ ऊपर है बाला
काला न लाल-पीला नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

जिसमें नूराँ यो सारे जैसे है चाद-तारे
कुन्दन सू ज्यों चितारे (?) नित हसत रह तू 'मीराँ'

सब गंज का धनी है धरता वो सब धनी है
क़ादर उसे मने है नित हसत रह तू 'मीराँ'

ए नूर खास तू हैं दिसने में आवे सो है
पैदा हुआ सो वो है नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

पैदा वो नूर नईं है सब नूर उसके तईं है
कीं ठाँव नाँव नईं है नित हसत रह तू 'मीराँ'

कोई देखते हवा में दिखते ज़र्रा सफ़ा में
कहते हैं ज़ात उसमें नित हसत रह तू 'मीराँ'

सूरत दिसते हवा में साया किते खुदा में
फिर ग़ैब हुए सफ़ा में नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

दिसते कूँ क्या तू देखे दिसने कूँ देख देखे
फिर देक अपकूँ लेखे नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

चितारे-चित्रित हुआ (?) गंज-खजाना कादिर-कुदरत वाला मने-में नई-नहीं
साया-छाया किते-कहाँ दिसते कूँ-दिखते हुए को ।

पैदा ज को हुआ है वो सब उनों किया है
ना के अपै हुआ है नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

कोई जोत देक सारे उस देक अपको हारे
रह-रास्त फिर निहारे नित हसत रह तू 'मीराँ'

वो जोत जीव कहते उस देक अमन सूँ रहते
कई लोग यों ई च बैठे नित हसत रह तू 'मीराँ'

मुर्शद बग़ैर कामिल कर खूब रह सूँ शामिल
तब होएगा तूँ आमिल नित हसत रह तू 'मीराँ'

जब रूह को तूँ पाया है नूर का वो माया
वो नूर ज़ात पाया नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

नई उसको आना जाना अला न कमाकान
उस नूर का निशाना नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

है ज़ात वो इलाही उसकूँ है बादशाही
सब चीज़ पर गवाही नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

तुज......देक ओ देखे दिसता सो तूँ न लेखे
बेजान हो तूँ देखे नित हसत रह तूँ मीराँ

ज को-जो कोई ना के-नहीं कि अपै-स्वयं यों ई च-यों ही अला न कमाकान-जो कुछ है ईश्वर ही है।

सैयद मीराँ हुसेनी

जैसे दरिया व मौजाँ झलते हैं लाख तूफाँ
वो ही समन्द के सूराँ नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

मौजाँ कूँ अन्त नईं है रहने के तन्त नईं है
दिसने कूँ कन्त नईं है नित हसत रह तूँ 'मीराँ'

—मसनवी बशारतुलअनवर

मौजाँ-(मौज) लहर (मौज का ब. व.) सूराँ-(सूर) बहादुर, (सूर का ब. व.)

हुसेनी (लगभग १६४१)

मोहिउद्दीन है पीर मुकम्मिल अव्वल
वल्याँ म्याँ अहैं सरदार अफ़ज़ल
मुबारक क़दम कूँ सब ले वलियाँ मल
लिये खादे ऊपर अज़ जान होर दिल
मुअज्जम इसम अँगाली हमेशा
वलिया सब मिल किये हैं दर वज़ीफ़ा
करम उनका मदद जब तें न होवे
वली हरगिज़ विलायत कूँ न पावे
सखावत में जो कोई मुनकिर हुआ है
सज़ा पाकर कुफ्र में ओ मुआ है
अव्वल ओ मारफ़त हासिल न पावे
दोयम तार के दिल गुमराह होवे
सोयम जब मौत आवेगा उसे पेश
होवे सूरत में ओ तब्दील सरकश
चहारम उस कतें सकरात जब होय
ज़बान बन्द होयगा सब ओ अकल खोय

मोहिउद्दीन-शेख अब्दुल क़ादर, जीलान निवासी, बगदाद में क़ब्र वल्यॉं-(वली) सिद्ध (वली का ब. व.) अहै-हैं अफ़ज़ल-श्रेष्ठतर खाँदे-कंधा मुअज्जम-श्रेष्ठ, महान इसम-व्यक्ति अँगाली-प्रथम वज़ीफ़ा-सम्पर्क रखना करम-दया विलायत-विदेश, परलोक सख़ावत-उदारता मुनकिर-अस्वीकार करनेवाला (इन्कार-मुनकिर) सोयम-तीसरे सरकश-ढीठ चहारम-चौथे सकरात-मृत्यु से पहले का कष्ट।

मोहिउद्दीन साहब के अहैं पीर
दोनों जगह अथै वली ओ गंभीर
मुबारक शहर मग़रिब थे मसकन
वलियाँ में सब अथै अफ़ज़ल हर यक मन
जो पड़ते दर्स जब थे खुर्द साल
मस्जिद के दरमियान तख़्ती कतें ले

हुए पैदा जो कोई यक पीरी नूरानी
न था दुनियाँ में उनका कोई सानी
खड़े ओ धूप में मस्जिद के उनकी
देखे मीरां अथे तख़्ती कतें ले
खड़े रहे ले वक्त हरगिज़ निराले
मेहरबान हो के तब पीरी नूर अपनी
कहे आये तिफ़्ल मेरे नूर ऐनी
जो यक सोज़न कूँ लाओ होर तागा
सिओ मेरे जुब्बे में यक-दो टाँका
करामत कश्फ़ हक़ तुमना देवेगा
भोत कुछ न्यामताँ दर रोज़े उक़बा
दुआ हो तुज भी हक़ पास उनके ले
मरातब देके सब इर्शाद कीते

अथै-थे मग़रिब-पश्चिम मसकन-निवास स्थान दर्स-शिक्षा खुर्द-छोटा कत-कहते हैं सानी-समान तिफ़्ल-बच्चा ऐनी-नेत्र का (ऐन ऐनी) सोजन-सुई जुब्बा-झुब्बा (ऊपर से अचकन की तरह पहनने का वस्त्र) कश्फ़-खुलना तुमना-तुम को भोत-बहुत उक़बा-प्रलय के दिन मरातब-प्रतिष्ठाएँ (मर्तबा-मरातब ब. व.) इर्शाद-कथन ।

देखे सब मेहरबानी हो शिगुफ्ता
कहे मीराँ तुमें हैं कौन ऐ शाह
तुमरे नाम बुजुर्गवार क्या है
खुदा के वास्ते मुज से गिना है
नबी, अल्ला, खिज़र हूँ मैं कहे तब
बहुक्मे हक़ सो लाया हूँ मरातब
तुमें प्यारे हैं हक़ चहता है तुम कूँ
मरातब देखने भेज्या है हम कूँ
मीराँ अबू सईद मग़रबी तब
कहे तौहीद क्या है मुंज कहो अब
रहो मरयाद बोले तुम हमेशा
करेगा फ़ज़्ल सूँ ई बात आगाह
होकर ग़ायब किये उस बात कूँ बोल
मोअम्मा नहीं कहे इस बात कूँ खोल
हुआ उस रोज़ से दिल जानिबे अल्ला
लिया जागा मोहब्बत इश्के अल्ला

—मोहिउद्दीन दर मनाक़ब हज़रत अब्दुल क़ादर

शिगुफ्ता-खिला हुआ खिज़र-मार्गदर्शक, एक पैगम्बर तौहीद-एकेश्वरवाद
फ़ज्ल-दया आगाह-परिचित जागा-जगह।

मुहम्मद अमीन अयागी (१६४१ के पूर्व)

अव्वल कुच न था वो निरंकार था
दोनों जग कूँ पैदा करनहार था
के कुदरत ते पैदा किया यक रतन
के जिसने लिया रूप ओ त्रिभुवन
किया उस उपर यक जलाली नज़र
जो हैबत सूँ पानी हुआ सर बसर
जमीन डलमलाने लगी नीर पर
दिया डोंगरां ले ग्वड़े सीर पर
सितार्यां के कुन्दन गगन के उपर
जड्या देक ऐनक है शम्सो क़मर

किया नीर कूँ चश्म ए ज़िन्दगी
पवन कूँ दिया उम्र पायन्दगी
अगन कूँ दिया सोज़ सो रोशनी
ज़मीन कूँ दिया ख़िलअत गुलशनी
न उसकूँ वज़ीर है न उसकूँ नज़ीर
न हाजत उसे है न ताज-ओ सरीर
न उसकूँ है औरत न फ़रज़न्द है
के ओ एक बेमिसल मानिन्द है

कुच-कुछ ते-से जलाली-क्रुद्ध, (जलाल जलाली) हैबत-भय सरबसर-एकसिरे से, बिल्कुल डोंगराँ-पर्वत (डोंगर का ब. व.) सीर-सिर सितार्यां-नक्षत्र (सितारा ब. व.) शम्स-सूरज क़मर-चांद चश्म ए ज़िन्दगी-जीवन का स्रोत पायन्दगी-स्थायित्व सोज़-ज्वाल ख़िलअत-उपहार ताज-मुकुट समीर-तख्त, गद्दी फ़रजन्द-बेटा बेमिसाल-अनुपम।

पसाराँ के होर देख कुदरत तमाम
हर एक ठाट कुदरत की क्या क्या है काम
खुदा कूं समज दिल में एक तूँ
जबाँ थे बी इक़रार कर देक तूँ

तेरे थे मने जोहर सब ठार है
हर एक ठार इल्म जहाँ दार है
मुजे कौन हूं मैं सो मालूम नईं
अपस कूँ सिखूँ समजने बोल तईं
समजने कूँ या रब मुजे क्या दिये
शब व रोज़ दिल में तेरा ध्यान दिये
समज क्यों सकूँ क़ादिरे-ज़ुल जलाल
मेरा जिव समजने मुँजे नईं मजाल

—नजातनामा

कार-काम ठार-स्थान शब-रात कादिरे-ज़ुल जलाल-समादृत ।

केशव स्वामी (—१६५१)

१

मन में गंगा मन में काशी
मन में सदाशिव गुरु अविनाशी
मन को मरम न जाने कोय
मन समजे सो बिरला होय
मन में जमना मन में द्वारका
मन में वृन्दावन हरी सरीखा
पिंड-ब्रह्मांड की मन में रचना
कहत 'केशव' मन ब्रह्म समजना

२

राम सुमिरन करना हो रे बाबा,
काम क्रोध मद-मत्सर छाँड के
यो भव-सागर तरना रे बाबा

खिन-खिन पाव आयुष खरचत
साधु समागम धरना रे बाबा!
गमनागमन निवारण हरिगुण
गावत वैकुंठ-चरणा रे बाबा।
ग्यान ध्यान सूँ अंग मिल रहणा
मन में दयानिधि भरणा रे बाबा।

खिन खिन-क्षण क्षण।

कहत 'केशव' अब आवेगो मरणा
बिसरूँ नको रघुनाथ के चरणा।

३

आज राम मेरो मन में भरो रे
देह-विदेह की सुद बिसरो रे
लोक लाज को काम सरो रे।

शाम सुंदर कीरत कूँ लागी
और कछू समजत नहीं रे।
आसन-बासन सब ही भूल गई
रूप निरखत थकित रही रे।
प्रेम नीर अखियाँ झरत
रोम फरकते बूंद ढरे रे।
मैं तो पिया के दरस मगन भई
मन माने कोउ कैसे कहो रे।
अष्ट भाव सूँ गात्र गळित मेरो
नाथजी ने चित हर लीनो रे।
'केशव' प्रभु सूँ निकट मिल रही
जल माही जैसे लवन गिरो रे।

४

महाराज कोण लीला धरे हो
अनन्त ब्रह्माण्ड जाके उदर मों

नको-नाही सुद-सुधि गळित-गलित लवन-लवण कोण-कान।

सो सुख के कोण माहे परे हो।

शेष विरंची भजत है ज्याको
ज्या कारण मुनि नज्ञ (?) फिरे हो।
सो ठाकुर को मंतर छाक रे
देखि सदाशिव प्रेम भरे हो।
ज्याकी माया जगत भुलाया
सो हरि आये आप भुले हो।
'केशव' प्रभु की गत कौन जाने
अपने ख्याल में आप खेले हो।

५

आज मिलो पीतांबर पीर
तुम ज्यात शरीर विकल मेरो
चित रहत नहीं क्षण थीर।

तन मेरो जनमो **भीमा** तीर
हृदय मो धरियो विठल पीर
'केशव' को प्रभु शामसुन्दर धीर
नावे तो बाउगी करवत सीर (?)

नज्ञ-नग्न (?) छाक-छक, तुष्ट हो थीर-स्थिर।

६

तुम मेरे जिया के प्यारे
तुज बिण भव दुःख कोण निवारे
तेरो नाम सुमिरण जो करो रे
तिनको ही जम काल डरो रे।
कहत 'केशव' हम दास तिहारे
दरशन को हम प्यास पियो रे।

७

जीने धनि का हुकुम किया
जीने बोध का प्याला पिया
जीने भेद कू गोश ताल दिया
वो आपे ही वासुदेव भया बे।

यँऊ आये फिर वासुदेव बोले
ज्यों आनन्द मद सूँ झूले।
ज्यो ख्याल में मिल कर खेले
वो जीवते मुज सूँ मिले बे।
मा बाप बेटे ज्योरू लड़के
सब देखत लोकन सरीखे
गुण गावत गुरु 'नरहर' के
हम सेवक हैं उस घर के बे।

जीने-जिसने धनि का-मालिक का गोश-कान यँऊ-इस तरह ज्योरु-जोरु (पत्नी)

८

ज्यार्की ममता नास कर गई
ज्यार्की माया सो मर कर रही
ज्यो अपस्कू समज्या सही
दास 'केशव' को साहब वही वे।

९

धमक म्याने गमक मुंढे गमक में चमक
चमक म्याने ज्योति मुंढे ज्योति में झमक
हारे मुंढे हुशार मुंढे देख मुंढे भाई
डोंगी नजर देखत बाबा नजीकई लाई
चद-सूरज मंद जहाँ खिन्न भये तारे
सो ही असल रूप बाबा देखनारे न्यारे
तेज बिना ज्योति मुंढे ज्योति प्रकाश
रंग बिना रूप मुंढे रूप बिना बास
आगे भरपूर पाछे भरपूर भरपूर सब ले ठार
पूरा गुरु पाइय तो हर वख्त खुदीदार
वस्ताद की सौगंद मुझे हम तो बाबा हारे
कहत 'केशव' गगन मगन सोई अल्ला के प्यारे

१०

चेटकनी बाला लटकती आवे

ज्यार्की-जिसकी नास-नाश म्याने-में मुंढे (?) डोंगी-गहरी नजीकई-पास ही खिन्न-क्षीण।

बोध का प्याला लेकर रही, बेशक होकर गावे
दुनियाँ धंदा सारा छोड़ दिया भाई
यख्त्यार सूँ नज़र बड़े साहब सूँ लाई
निजानन्द मद सूँ भूली बिस चेली काया
दिल्ल ज्याँहाँ सूँ धनी कूँ मिलाई
अब कहाँ की माया माया
बिना ख्याल करे हाल में मस्त माई
'शंकर गंज' आज 'केशव' राज प्रभु पाई

पर पुरुष की **चेटकी** नारी नाचती निज्यानन्द
बोध प्याला भर भर पीवे डुलती ब्रह्मानंद
नाचती दरबार चेटकी कूयाडी सब काम
बार बार बोले राम-रहीम यही नाम
साहेब मेहर धरे तब चेटकी ख्याल करे
मुसलं देह भाव बिसरी उसी ख्याल में भरे
सद्गुरु पाया **चेटका** लाया **चेटकी** भई मस्त
कहत 'केशव' उस मस्ती में साहेब किया दस्त

११

घर घर अमल सब जने खावे
सोखीन माही उतर ज्यावे
बाजीगिरी रंग दिखावे

यख्त्यार-अख्तियार, अधिकार   दिल्ल-दिल   निज्यानन्द-आत्मानन्द   मेहर-कृपा
मुसलं-सम्पूर्ण (मुसल्लम)   सोखीन-शौखीन ।

ऐसा अम्मल मुझे नहिं भावे
तो गुरु का अमल खावो भाई
इस अमल की बहुत मिठाई
गुरु कृपे 'केशव' लज्जत पाई
तो अपनी सुद आप गमाई

१२

सद्गुरु नाथ अमल मस्त
उस अमल में साहेब दस्त
सिद्ध साधु खाते समस्त
तो घर बैठे पावे भिस्त
गुरु कृपें 'केशव' अमलदार
अमल खाते अपना दीदार

१३

तुम लीज्यो भाई एक हीं बार
इस अमल कू चढ़ना उतार
तो सुन हो पंडता मेरी बात
आत्मतत्व की केउ बखानू ज्यात
निर्गुण ब्रह्म हम पढ़त है शास्त्र
तो फिर फिर कैसे गफलत खात
तो निर्गुण ब्रह्म कू तुम नहीं ज्याने
तो काहे बखाने शास्त्र के माने

दस्त-हाथ भिस्त-स्वर्ग (बहिश्त) केऊ-किस तरह ज्यात-जाता है।

आपस्कों बिसरे आपस म्याने
देखत पंडत कैसे दीवाने
तो तत्व की बात करे सब कोय
तत्व जाने सो बिरला होय
आपस म्याने आप समावे
काहे 'केशव' तत्व कूँ पावे

१४

राम सूँ राजी वो मेरा मन राम सूं राजी वो
गरीब नवाज की चाकरी लागी जम कू दीया बाजी वो।
रघुपति सू नेह लागा। दिल का धोका सकल भागा
निरंजन के चरण-कमल। अचल किया ज्यागा
गुरुमुख सुराम दीठा। ससार जंजाल तूटा
कहत 'केशव' राजकवि। लागिया रघुनाथ मीठा

१५

बलाय ज्याऊँ मै तो चरण ऊपर सूँ।
महबुब साहेब तू ही पिरतम तुम बाज नहीं
हीरद-कमल मॉहीं तेरा ध्यान करती हूँ।
आनन्द घन मदन तात कमलापति भुवन नाथ
देखत सब गलित गात बात केऊे कहूँ।
कहत 'केशव' राजकवी तें ही धनी तू ही नबी
भेद बीसरी तेरी छबि मन में धरती हूँ।

ज्यागा-जगह बलाय ज्याऊँ-बलि जाऊँ महबुब-प्रिय पिरतम-प्रियतम बाज-बिना।

१६

सर्व गता प्रति मति देई निर्मन चिन्मन सुख घेई
सुख रूप भी विसरून हें ही हे परमदशा निज निर्वाहीं
मेरा मेरा दिल में धरते हैं विषय विष खा मरते हैं
हरिचरण अंतरते हैं वे जम के फाँसे परते हैं

१७

देखो री माई नंद किशोर
श्याम सुन्दर चित नवनीत चोर।

दीन दया कर त्रिभुवन नाथ
खेलत गोविन्द गोपी संगात
सुख घन निर्गुण हरि अविकार
भगत काज भयो सगुण मुरार
आदि मध्य अन्त रहित गोपाळ
'केशवराज' प्रभु परम कृपाळ

१८

लागी हो गोविन्दा से पिरती।
हृदय कमल में जब तब देखू
परम सुन्दर भरी श्याम की मुरती।

घेई-लीं (म.) मी-मैं (म.)।

धन सुत संपति कछु नहिं भावत
निशि दिन सुख रूप हरि गुण गावत ।
आदि पुरुष हरि नन्द का सुत
निरखत नयनो डरे जमदूत
आनन्दघन मनमोहन श्याम
कहत 'केशव' मोकूं मिल्या राम

१९

आज मेरे घर आयो गोविन्द राजा ।
शाम सुन्दर कमलापति गिरिधर
बाजत धिम धिम नाम को बाजा ।

चंदन बिलेपति आँग सुहावत
भाल कसुरीमा मुकुट बिराजत
पीत पट धारी गोकुल बिहारी
मदन मुरती प्राणनाथ मुरारी
भव दुख वारण कंस विदारण
पतित तारण 'केशव' नारायण

२०

राम सुमिरण करिय अभागी ।
त्रिभुवन नाथ सीतापति राघव
हृदय कमल में धरिय अभागी ।

कसुरिमा (?)

नव विध भजन गुरु मुख करिके
त्रिविध ताप दुख हरिय अभागी।
निशिदिन सुख घन राम चिंतन सूं
अचल मोक्ष पद चढिअ अभागी।
काहे कू उपजिय काहे कू मरिय
काहे कू काल कुंडरिय अभागी।
कहत 'केशव' राम पूर्ण मंगल धाम
समज भवार्णव तरिय अभागी।

२१

ज्याहाँ ज्याय तहाँ माधो हय रे।
ज्यो सुरत सुमरत बाँकी
सब घट भरिया सोही रे बाबा!

धरित्री आकाश सप्त ही पाताल
आप ही भरपूर रहियो रे बाबा।
खाली कटोर कहा कब हुँ न देखो
देखत सब ज्यागा वोह रे बाबा।
कसे करीय अब कहा ज्याइय
अंतर्बाह्य महाराज रे बाबा।
'केशो' प्रभु बिन पदारथ नहिं रे
सब ही भेष आये धरियो रे बाबा!

ज्याहाँ-जहाँ कसे-कैसे (म.)।

२२

ताली बजाऊँ गाऊ राम को नाम
और देवन से नहीं मेरो काम

गले में तुलशी मन में राम
जित देखो तित राम ही राम
अन्दर राम बाहिर राम
राम बिना नहिं खाली ठाम
'केशव' को प्रभु देखी विश्राम
भक्त वत्सल श्री मेघ श्याम

२३

राम ही माता राम ही पिता
राम भगिनि राम भ्राता रे !

धन-सुत-संपति राम रमापति
और नहीं मैं धाता रे।
राम सगा मेरो राम सगा रे
राम बिना नहीं कोऊ रे।
राम हि जीवन राम परम धन
राम सकळ सुख दाता रे।
राम दयानिधि दिनकर कुल-दीपक
राम चरण चित राता रे।

केवल मुरती राम सदा फल
राम निरंजन साँई रे।
राम रसामृत 'केशव' लेकर
रमत निजानंद माही रे।

२४

क्या कहूँ भाई अब हरि सुख पाई
सकल ही गति मेरी हरि ने चुराई।

हरिगुण माला पेनी हूँ मन में
हरि के चरण थिर रहूँ मधुबन में
निशि दिन मन में हरि सूँ लगाई
हरि के भजन सूँ प्राण जगाई
हरि सूँ निबरी जन सूँ बिगरी
'केशव' साही के संग सब बिसरी

२५

हरि रस प्याला लेउँगी मैं
ज्यो मागे उसे भर देऊँगी, निज मतवालिन होउँगी मैं
मदन गोपाल के गुण गाउँगी, कर बिन तालि बजाउँगी मैं
ब्रिंदावन कू चल जाऊँगी भक्त वछल कू रिझाउँगी मैं
बनमाली सूँ मन लाऊँगी गले बनमाला बाउँगी मैं
'केशव' साँई की गति पाउँगी, पाउँगी फिर ना आउँगी मैं

पेनी-पहनी साही-शाही।

२६

मैं राम जपति हू माई री !
आसन मुद्रा बहुत चेर्हाई के, चरण सूँ प्रीत लगाई री
पति सुत मित गृह सब तज के सन्तन के घर आई री
तन धन ज्योबन कछु नहिं भावत, भावत हरि सुखदाई री
कहत 'केशव' कवि श्याम सुन्दर, मति गति तहा मैं छिपाई री

२७

मोहन के गुण गावति हूँ मैं
अति सुख सागर नागर मूरति, निरख निरख सुख पावत हूं मैं
सुमिरण कीर्तन करती हूँ धनी को, मन में ध्यान लगावति हूँ मैं
केवल निरमल निरंजन के संग, अंतरंग जो गावति हूं मैं
श्रवण मनन **निजध्यास** करि करि ज्योति सूं ज्योति मिलावति हूं मैं
नाम रूप मन रंग 'केशव' प्रभु, निपट तहा ही समावति हूं मैं

२८

लालन सूं मेरी प्रीत जुरी हो
ज्यागति सोवति राम की मूरति, देखत हूं, ज्याहा तहा खरी हो
साट घरी मो साई की बीसर, पर नहीं मोकू येक घरी हो
प्रेम नीर नयन बरसन लगे लोकन सूं सब लाज उरी हो
कहा कहूँ कछु कहन न आवे, शाम बदन देख भूल लही हो
'केशव' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल वाके बिलगि परी हो

चेर्हाई-चढाई ज्याहाँ तहाँ-जहाँ तहाँ साट-साठ ।

२६

लालच्च देखो मेरे लोचन की हो
जब तब लाल की मुरली देखत, अजू नहिं पूरत धन इनकी हो
शाम बदन सूँ निशिदिन लग रही लाज बिसर गई लोकन की हो
'केशव' साँई के चरण सूँ लीन भई याद नहीं कछु तन-धन की हो

३०

नौबत बाजत है हरि नाम की
गलित भई गति सकल काम की
मन में पैठी मुरत शाम की
फिरत दुहाई राजा राम की
ध्यान से नेह किये अष्ट जाम की
मंगल चाकरी 'केशव' गुलाम की

३१

हम तो ब्रह्म भुवन के राजे, बोध दमामा जब तब बाजे
सत्य छतर शिर उपर विराजे, आत्म-ज्ञान सूं भक्त न बाजे
कहत 'केशव' रहे सुख रूप केवल, मार चलाया सकल **त्रिगुण** दल

३२

बोध बिराज्या रे, घर कूँ बुलावूँ
काम क्रोध कूँ जहर पिलावूँ

शिर-सिर बाजे-कहलाये ।

तो ही सखी मैं संत की चेरी
बहुत क्या बोलूँ बात घनेरी
चिंता वारूँ ममता ज्यारूँ
समता माई के पद रज झारूँ
प्रेम भुवन में आसन बाऊँ
हृदय निवासी के दरसन पाऊँ
सहज समाधि के **सेज** बिछाऊँ
'केशव' साँई सूँ मिल ज्याऊँ

३३

संतन की भई बेटी हौ बाबा
भजन दाल ज्ञान घृत सूँ, खावत आनंद रोटी हो बाबा
प्रेम निजामृत पीवत पीवत बहुत पड़ी हय लाठी हो बाबा
ब्रह्म जोग से अचल सबल भरिय, काल की गति सब लोटी हो बाबा
अन्दर की गति मेरी मैं समज्यूँ, समजत नहिं मेरी कोहु कसोटी हो बाबा
'केशव' साँई के पद रंगमाती, पिंड ब्रह्मांड के मुज में समेटी हो बाबा

३४

संत की चाकरी कर रे बाबा
इस तन का क्या भरोसा अब ज्यावेगा मर
निरंजन का सरूप समज, छोड दे कर कर कर
कहत 'केशव' राम कू पाया वो नर अमर अमर
मेरे हात में दिया राम, मेरा भार चलाया काम

लीजे उस धनी का नाम कीजे बार बार सलाम
दिखला कर वस्त, मेरे अन्द किया स्वस्थ
चित्पद ईनाम दिया, 'केशव' कूँ निहाल किया

३५

सौंसार मंडल सारा मार चलाया
गरीबनिवाज रघुराज मैं पाया
डर चुका बे, मेरा डर चुका बे
देवन का देव राजाराम देखा बे
काम का मा बाप भेद काफर मुवा
कहत 'केशव राज' बड़ा आनन्द हुआ

वस्त-विस्तार (असअत) सौंसार-संसार।

नुसरती (— १६७५)

अजब हक़ की तक़दीर का काम है
न किस पर अयाँ तिस के अंजाम है
भला है उसे निज सहना बला
ख़ुशी दे पछैं कू अव्वल मुब्तिला

कहनार यो क़िस्सा दिल-पज़ीर
कहे खोल को बात यों बेनज़ीर
के यक रोज़ वो ख़ुसरूए नेक फ़न
सख़ावत ते फिरा के दायम नमन
सो मुख हात धोने ते फारिग़ हो सब
किया अपनी रानी ते पूछन तलब
व तब नार कूँ दिन झोंके यह लाल
धरे जशरत का आन भोजन का थाल
शबिया ? हात ज्यों शाह न्यामत की धर
पुकार्या जमीं तल तलक एक फ़कीर
लग्या शाह कूँ आवाज़ सुन यो अजब
के बाक़ी है सायली अझूँ क्या सबब ?

उतर वई झट उन करने सवाल
चल्या सामने उस वही लेके थाल

अयाँ-प्रकट, स्पष्ट दिल पज़ीर-मनोरंजक बेनज़ीर-अनुपम सख़ावत-उदारता ख़ुसरू-बादशाह दायम-शाश्वत नमन-तरह जशरत- (?) शबिया- (?) सायली-भिक्षा माँगना ।

किया ज्यों जो सन्मुख हो जगचार अमीर
न ले कुच बी जब फिर चल्या वह फ़क़ीर
रह्या शाह अपस दिल में हो यों थक्या
के ना ले चल्या कुच सो है भेद क्या ?
वहीं दोज़ धर उसके सर सूँ जू
कह्या यूँ के कह मुज सो ए शाहे मन
यो शाह के वचन सुन ग़ज़ब सूँ शिताब
दिया जो मुट्ठी लब सूँ करवा जवाब

× × ×

अव्वल दौर में एक बुलन्द बख़्त था
जिसे मुल्क शाही केरा तख़्त था
अथा नाम बिक्रम जग-आधार तिस
कनकेर सो तख़्त का ठार तिस

....

डूब्या था कनक में कनकेर (?)......जम
जवाँ वक्त होर ओ जवाँ मर्द अछे
परउपकारी परकाज परदर्द अछे
पत्थर होय सोना जिस पारस छाँव ते
ज़मीन का बी उबले धन इस नाव ते
दिसा जिसके घर दास के दास जम
हो इक़बाल अछे बँध दर पास जम
देखा अपनी ताल-ए की कुदरत बुलन्द
किया थाल का जुहल को पसन्द

जगचार-नेग दोज़-सटा हुआ (फारसी का प्रत्यय) शिताब-शीघ्र बुलन्द बख़्त-सौभाग्य शाली ।

सआदत की गोहर फरा मुश्तरी
अधिक बद थे बाज़ार के जोहरी
शुजाअत पर उसके हो बहराम राम
सदा सुर्ख़ रूई मन की उसते दाम
सूरज तिस जलालत के जहल सूँ जले
चन्द्र मेहराँ के तिसके शरम सूँ गले
जब इस बज़्म छब की उरूसी दिखाय
तो ज़ोहर हो ज्यों दिप मने जल्वा गाय
हो ग़वास अछे बहर गुन ज्ञान का
शहन्शा दिसे शहर **इरफ़ान** का
इनायत जिसे हक़ ते लारेब अछे
के इस धात गंजीने ग़ैब अछे
जो ख़ाली करें बहरो बर के घन (धन ?)
परे तिसके कोने में जा यक रखन
धरे बेगिनत लश्करो पायगाह
चुन्या सो जिता पायदल होर सिपाह
मिटे हस्त ख़ल्की के तह बेशुमार
शबीनी (?) में भुल्ते सो नित के हज़ार
हो प्रथम में एक छत्र का राज अपै
कहावे सो राज्याँ का सरताज अपै
जिते राज भारी बदल भार से

सआदत-नेकबख्ती (सौभाग्य) गोहर-मोती मुश्तरी-एक नक्षत्र बद-बुद्धि
शुजाअत-बहादुरी जलालत-बुजुर्गी जहल-जहालत मेहर-सूरज बज़्म-महफ़िल
[illegible] जल्वागाय-दर्शन करना इरफ़ान-ईश्वर को प्राप्त करने का ज्ञान
लारेब-बेशक बहर-समुद्र ।

लगैं फ़ौज में उसके सरदार से
सिपाह हर सबा छिप करे दाब सूँ
जिते छत्र सब आदाब सूँ
कमर बाँद ख़िदमत में तिस सफ़ बसफ़
लगा लग खड़े होर हैं हर तरफ़
धरनहार था सो रसायक (?) नज़र
जनम यक रविश ख़ास होर आम पर
दवा बख़्श हर दिल के था, रीश का
निगहबाँ बेगाना होर ख़ीश का
नगर में नवा काज नित आये दिस
घरी घर बजें तब्ले दौलत ते निस

दिया था खुदा उसकूँ सब कुछ मगर
वले सख़्त मुहताज था बिन पिसर
दिल उसका अछे कू च सब सुख सूँ बाग़
धरे पन नित उस ग़म ते जीवन लाल दाग़
अपस उम्र का जब ढले आफ़ताब
ख़लफ़ चाँद सा.. ......नायब मनाब
गगन बादशाही केरा ख़ार हुई
यो तार्यां से आलम पै अँध्यार हुई
जफ़ा इस अँदेशे का नासोस कर
कहे मन में यूँ आह अफ़सोस कर

बर-ज़मीन सबा-प्रातःकाल की हवा रसायक-रुगृक़ का बहुवचन रीश-दाढी पिसर-बेटा ख़लफ़-बेटा मनाब- (?) ख़ार-खराब होना तार्यां-तारे (तारे का ब. व.) जफा-बेवफाई सोस-चिन्त ।

इसे जर जमीं जल जनम का चितार
भसम होवे एक दिन में धर दुख की नार
ना देखे पन उस दुख का दरबाज कोई
खुदा बिन न था उसको हमराज़ कोई
खुदा के करे बाट में खैर नित
बेनेकी धरे बैर सू बैर नित
सजें उसकी बख़्शीश अछे अनगिनत
करम का मगर बहर था बाज अनत
के जब खाज़ने शब छिपावे दिरम
करे तब लग खोर का दिन का हुकम
तब उस शह के खाज़न अमोलक अपार
रचैं आन कर नौरतन के ढिगार
सदा हर नगर के जिते खासो आम
मिलें शह के सब दान कारन तमाम
दोनों हस्त सूँ..... तख़्त हर सुबह यूँ
करे दुरफ़िशा, सुबह शबनम के ज्यूं

उतर तख़्त ज्यों शह घरी च आय
तो मुख धोवे काच पानी मँगाय
जो रानी अछे शाह के तख़्त की
शरीक उसके इकबाल होर बख़्त की

नार-आग हमराज़-रहस्य जानने वाला बेनेकी-नेकी के बिना बहर-समुद्र
शब-रात दिरम-चाँदी का छोटा सिक्का खोर-? दुरफ़िशा-मोती छिड़कनेवाला
इकबाल-ऐश्वर्य बख़्त-भाग्य ।

अदब के अधिक शर्त सूँ धन सजात
अपे तश्त ले होर आफ़ताब ले हात
सहलियाँ ते हो ज्यों उनके मुख धुलाय
वही आन अलवान, नेमत खिलाय
पिछें क़िस्वते खास, अधिक मान दिये
बना कर खाना करे, पान दिये
तो उस वक्त वो शाह आली मुक़ाम
तख़्त बैस आ सब का लेवे सलाम
निबेड़े अपस मुख ते हर तन के न्याव
बंदे खुल्क़ मरहम सूँ हर दिल के घाव
सर्व बादशाही की लेवे खबर
धरे प्यार अदिक नित रैयत उपर
जिते भई .... करे सरफ़राज़
निवाजे जिसे पाये साहब नियाज़
सिपाह पर सबा हो अपे बेगुमाँ
करे खुल्क़ की बात सूँ खुशखाँ
सकल बाग़ शाही जो खिल फूल हुई
ओ तब ऐश में अपे मशगूल हुई
देखे जान अछे जग पै तिस यूँ करम
तो क्यों तिस पै क़ायम रहवे कोई ग़म

सजात-सजाता है तश्त-बड़ा थाल आफ़ताब-हाथ धुलाने का लोटा अलवान-ऊनी शाल क़िस्वत-लिबास बैस-बैठ कर हरतन-प्रत्येक न्याव-न्याय बँदे-बँधता है खुल्क-अखलाक युक्त अदिक-अधिक सरफ़राज-प्रतिष्ठित निवाजना-कृपालू होना नियाज़-प्रसाद सबा-प्रभाती पवन बेगुमाँ-निरभिमान मशगूल-व्यस्त करम-कृपा, अनुग्रह रहवे-रहेगा

न देखे थे कोई इस ज़माने में काज
किया था जो उन हक़ के कुत्र अम्र बाज
जियें जग में रास्त बाज़ रखे
ख़ुदा तिसके त्यौं सरफ़राज़ रखे

....

के देता है दाता धनी एक कूं दस
तवक्कुल पै तिस जस है साबित मुकीं
न रहे तिसके मक़सूद दुनिया वो दीं
अजब है हमारा च दिल ना सबूर
जो पड़ता है उम्मीद सूं हक़ के दूर
जे हाजत जो मौकूफ़ अछै वक़्त पर
ओ बर आये जब उसकी होवे नज़र

[सबब फ़रज़न्द होने का जो एक दरवेश आने पर इसकूँ शह..... मुसाफ़िर हो बियाबानी।]

अजब हक़ की तक़दीर के काम हैं
ना किसपे अयाँ उसके अंजाम हैं
भला है अपस तैं च सहना बला
ख़ुशी दे पछैं कर अव्वल मुब्तिला
कहनहार यो किस्स-ए दिल पज़ीर
कहे खोल कर बात यूँ बेनज़ीर

अम्र बाज-बिना आज्ञा तवक्कुल-ईश्वर विश्वास साबित मुकी-स्थिर मकसूद-उद्दिष्ट दी-दीन सबूर-सन्तोष हाजत-इच्छा, आवश्यकता बर आना-सफल होना अयाँ-प्रकट आपस तैं च-अपने आप ही दिल पजीर-मन को अच्छा लगने वाला बेनजीर-अनुपम।

के एक रोज वह खुसरू-ए नेकफ़न
सख़ावत सूँ फिरआके (?) दायम नमन
सो मुख हाथ धोने ते फ़ारग़ हो तब
किया अपनी रानी ते भोजन तलब
ओ तब नार को...... चौकी पै बैठाल
धरे ....का आन भोजन का थाल
सट्या हात ज्यों शाह नेमत के धीर
यकायक जधीं तल पुकार्या फ़क़ीर
लग्या शाह कूँ आवाज़ सुन ओ अजब
के बाकी है सायल अभूँ क्या सबब

....

चल्या सामने उसके वो ले के थाल
किया ज्यों जो सनमुक हो चल वो अमीर
न ली कुच बी जब फिर चल्या वो फ़क़ीर
कह्या शह अपस दिल में हो यो ठग्या
के ना ले चल्या कुच सो है भेद क्या ?

वहीं धोक दे धर उस सर सूँ चरन
कह्या यूँ के कह मुंज सूँ ऐ शाहे मन !
करम सूँ टुक आको यहां लग अवल
मुंजे देखते फिर चले क्या बदल !

खुसरू-बादशाह नेकफन-सुकृती दायम-शाश्वत सट्या-गिरना, पड़ना धीर-निकट जधी-उसी समय सायल-भिक्षुक (सवाल करने वाला) अभूँ-अभी सनमुक-सम्मुख कुच बी-कुछ भी धोक दे-साष्टांग प्रणाम कर करम-दया आको-आकर ।

यो शह के बचन ग़ज़ब तें शिताब
दिया यूँ मिठे लब ते कड़वा जवाब
के चल बेग उचा मुँज चरन ते सरीर
रवा नईं जो लेऊ बांज के घर का नीर
बचन सुन यो शह ने चल्या फेर कर
ख़िजल हो चल्या जिव कू दिलगीर कर
गया था खुशी सू ज्यों लाल उजार
फिर्या रुख़ हो सब ज़ाफ़रानी निज़ार
चिन्ता ग़म का बरसन सू वाज़े करे
कुहन ज़ख़्म कू फोड़' ताज़े करे
मिल अंजुआ के तूफा में सर शोर से
उसासाँ का बारा छिट्या जोर सू
फूट्या तिस तबाही ते बुद का जहाज़
डूब्या सबो ताक़त का सामाँ वो साज़
पड्या फ़िक्र के बहर के मौज में
हुआ दंग हर मौज की फ़ौज में
भुजंग तन में बेताक़ती का लड्या
गले दात छेड वा दिल बिस चड्या
गया होश बिस तिस करे ताब में
डुब्या ज्यों पड़ ग़म के गिरदाब में

शिताब-शीघ्र लब-ओठ उचा-उठा बाँज-वन्ध्या ख़िजल-लज्जित दिलगीर-उदास निज़ार-दुर्बल वाज़े-स्पष्ट कुहन-पुराना अंजुआ-आँसू (ब.व. अंजुआँ) सरशोर-ओतप्रोत (सरशार) उसासाँ-श्वास (उसास का ब. व.) बारा-हवा बुद-बुद्धि बहर-समुद्र मौज-तरंग गिरदाब-भँवर ।

देखत शह का यो हाल गनी हो दंग
सो हमदर्द होवे धर के तिस दुक में अंग
कर अमृत बचन सूँ दिलासा अवल
समज के यों किस्सा हुआ सो सकल
देखा नई उसे दुक ते सुक का किनार
नसीहत का तख़्ता सटे बुद-बिचार
कहे सुनके ऐ जगपती, नेकफ़न,
रख्या के तूं चुप यूं हलाकी में मन
नको कुच अँदेशे के पड़ अब खयाल
कमर बंद के हिम्मत सूं अपै सँभाल
ओ दरवेश कूं वेग ढुंढने कूं जा
ज कुच मन के मक़सूद सो उसते पा
समज फ़ैज़बख़्श उस हुमा का निशा
सआदत का जिस औज है आशियाँ
निभा देख अंधारा-उजाला तमाम
तरद्दुद का सट जग पै जाला तमाम
जो होवे ओ हुमा क़ैद तुज दाम में
करे शह तूं मात उस दिलाराम में
तूं आये तलग अकल ते कर इलाज
चलाऊँगी मैं सब तेरा मुल्को राज

नई-नहीं सटे-पडे हलाकी-बर्बादी नको-मत ज कुछ-जो कुछ मकसूद-अभीष्ट फ़ैजबख्श-शान्तिदायक निशा-पता औज-ऊँचाई सआदत-सौभाग्य आशियाँ-घोंसला निभा-अस्त तरद्दुद-चिन्ता दाम-जाला दिलाराम-प्रिय तलग-तक ।

जध जी पर टँगाती हूँ मैं एक जरस
फिर आवे सफ़र कर तूँ जब हो सरस
निशानी सूँ आको अधरात कूँ
बजा भार तब तीर अपस हात सूँ
सुनूँ ओ घंटी ते आवाज़ जब
बुला लेऊँ कोहत (?) सू दरबाज़ तब

बचन नार जब अक्ल सूँ की सवार
वहीं नक्श कर शाह दिल के मंझार
.... तुज
वहीं जाओ दरवेश धर के रज
फिरा कर ओ शाही करे भेस कूँ
चल्या यूँ ओ जो के हो परदेस कूँ
कंटा सख़्त मेहनत का आपका (?) किया
सो कच्चकोल साबित तवक्कुल किया
चड़ाया सो तन पर क़िनाअत की राक
सुन के कर लिया आह के दम की हाक
सबूरी के मुद्रे दिया गोश कूँ
किया हुक्मे जंबील अदिक होश कूँ
यो राहत कूँ दुनिया के मरकान कर
ल्या राखे पग तलैं आन कर
लिया हिर्स के फावड़े कूँ बग़ल
जलाने हवस के दहे नित सकल

जध-जब जरस-घण्टी कोहत-? मंझार-में कच्चकोल-फ़कीरों का भिक्षा पात्र तवक्कुल-ईश्वर विश्वास किनाअत-सन्तोष राक-राख गोश-कान जंबील-चमड़े की थैली आदिक-अधिक मरकाना-दबाकर तोड़ना (मड़काना)।

धर्या ख़ूब हथियार कर हात के
घनेरी जिकर तें दावात के
कमरबस्ता हिम्मत का भारी किया
अटल क़स्द की हत मतारी किया

धरन जल्द हर काम में तेज धात
लिया ख़ुश ख़यालों के चेले सँगात
मगर पाक नेमत के उस खान कूँ
हो खादिम मँगन पूत के दान कूँ
कर इस धात अपस तन के तईं मुस्तैद
रज़ा चला काम पर हो बजिद
रख्या सर्व आज़ाद हो बन में पग
लटकें लग्या चर्ख़ के बाव लग (?)
रहें ताज़ा सब.......... ... .धीर ते
भिगाने लग्या नैन के नीर ते
धरे नर्म पग यूँ चले दुक के सोस
पड़े फूल नाज़ुक पै ज्यों शब ते ओस
किया कूत कूँ भूक प्यास का
नित अपना अपै पी रगत मास का
करन तल-उपर ख़ार होर ख़स के बन
सुबुक सैर अपस से करें ज्यों पवन
सदा भूक होर प्यास का सो दुक
दिसे शेर-सा जल्दतर हो सुबुक

क़स्द-इरादा मतारी-? (मतारी—महतारी, माँ ?) धात-तरह, भाँति बजिद-हठ के साथ कूत-भोजन ख़ार होर ख़ास-कूड़ा करकट सुबुक-हल्का दुख-दुःख।

घटावे घट हो कठिन दिन कू बाट
हरियाली पै सोवे सटे निस कूँ काट

—मसनवी गुलशने इश्क़

सटना-गिरना ।

मीराँ हाशमी बीजापुरी (—१७०५)

यो ओ है सौदागर ने आ यूसुफ़ कूँ काड़ी बाँय सूँ
भायाँ बन्दा कर बेच किये कर काम दावा—सूँ
हो लिया राहगर क्यों कना उस किसे
जो यूसुफ़-सा होय रहनुमा यों जिसे
के यो राह ..दिस्या ओ हिसाब
भूले बाट जो किये होये दूना लाब
यकायक सो यक कारवाँ नेकज़ात
संगीनी काफ़िला ले अपस के सँगात
मर्दाने तरफ़ सूँ तो ओ खुश लच्छन
मुता ले चल्या था मिश्र के कुधन

बिसर राज मारग उतर बाट पर
रह्या काफ़िला सब ओ पानी सूँ अड़
अकड़ जीब लब सुक सु किया था जुल्लाब
हर यक तन के मूँ में बहे था आब आब
जो इस धात जंग सुक्या ओ सब
नई देखे तो देखो बिरहनी के लब
लगे ढूँढने पानी कतें ठार ठार
यकायक दिस्या ओ कुवा चक तिलार (?)

बाँय-बावडी (?) बन्दाकर-बाँध कर कना-एक नगर का नाम रहनुमा-पथ प्रदर्शक लाब-लाभ संगीनी-भारी मुता-मालमत्ता कुधन-तरफ़ अकड-अकड़ कर जुल्लाब-खीचना, रेचक औषध आब-पानी ठार-स्थान चक तिलार

जो बादल की नर्मीं ने पिलाई सब कूँ आब
उने डोल लेकर सो दौड्या शिताब
लगाया अपस अज़म का याने सोल (?)
सट्या उस कुएँ में तलब का सो डोल
तो जिब्रेल यूसुफ़ का वई हात धर
तो बस लाये उस डोल के ले भीतर
कहे तूँ के है हुस्न का आफ़ताब
अता कर तूँ परगट यो आलम पो ताब
के डोने में जूँ है ओ फूलों की फाल
यो कॉसे में जो है आबे जुलाल
के दर चक में ज्यूँ अमोलक रतन
सदफ़ में के ज्यूँ है ओ दुर्रे अदन
के जूँ दिलां के ब्रज में हैं चन्दर
सो यूसुफ़ दिसे डोल के त्यों भितर
यकायक आया निकल कर ओ सूर
हुआ चक के चक्का अँधेरा सो दूर
उनें देक यूसुफ़ कूँ कर शाह मन
ले जा अपने डेरे में राखा जतन
जो यूसुफ़ के भायाँ इधर होर उधर
आये फिर के बी उस कुएँ के उपर
पुकारें ओ सब मिल कुएँ में शिताब
न थे उसमें यूसुफ़ न आया ज़वाब

सोल-(?) (शोल-रस्सी (?) आफताब-सूर्य फाल-गुलदस्ता जुलाल-मीठा पानी
दर चक- ? सदफ़-सीप अदन-एक नगर सूर-सूर्य बी-भी।

जो उतर्या था ओ काफ़िला चारों धीर
तो ढूँडने लगे जा बजा फिर फिर
पकड कर कहे यो हमारा ग़ुलाम
जो न्हास्या अथा वो चुका कर सो काम
यो यक ठार यूसुफ को पाये उनो
पकड़ने कूँ बेगी सूँ धाये उनों
यो ख़िदमत के करने में नईं है दुरुस्त
तो नींद का दिवाना व चलने को मस्त
जो हर काम कूँ, भेज देना शिताब
उपर वईं च रह कर न लिआबे जवाब
जो कुछ बस्त हवाले करें तो गँवाय
चुकाये काम कूँ होर खाने को आय
हमारा तो जिव उस सू वेज़ार है
तो बेज़ार सब बल्के सेज़ार है
अगर कोई लेवेगा तो देंगे हमें
जो कुछ दाम देगा लेंगे हमें
सुने सोच सौदागरों ने तमाम
कहे बीच **सदना** (?) च है खूब काम
जो अपने सूँ दिल यों ई च नईं जिसका साफ़
तो रखना उसे अकल का है खिलाफ़
कमीं उसकी कर मोल तोड़े उनों
दिये बाद अजां दाम थोड़े उनों

उतर्या-उतरा धीर-तरफ, निकट न्हास्या-अस्वीकार किया (?) वई च-वही
बस्त-वस्तु हमें-हम भायां-भाई का ब. व. ।

चले लेको भायाँ ने थोड़े च दाम
संभल सोच याने के दे कर गुलाम
कुएँ में सूँ काड्या जिनें सट के डोल
बढ़ा काखा उस कने थे ले मोल
अधिक देको बेगी सू कर दिल कूँ शाद
मिसर कूँ च याने चल्या धर मुराद

अजब लोग ओ कोई हैं बुध के कम
जो इन्सान देते हैं ले कर दिरम
जो पीछे आने की क्या कहूँ यो बात
दिये थोड़े दामाँ कूँ यूसुफ़ सी ज़ात

जहाँ में का धान ले आयें यक बार का
तो होये मोल यक उसके दीदार का
जिता गंज है यो ज़मीं के तल्हार
तो यक बोल पर ते सटूँ उसकूँ वार
जो सर्राफ़ होये सो परखे कंचन
जोहरी च होये तो बूजे रतन
जो आशिक़ का जिसकूँ अछेगा निशान
तो माशूक़ कूँ वाई च लेगा पछान
यो याकूब उसका खबरदार है
जुलेखा कूँ लेना सज़ावार है

—यूसुफ़ जुलेखा

सट के-डाल कर शाद-प्रसन्न बुध-बुद्धि दिरम-चाँदी का एक छोटा सिक्का। दिये-दिखाई देता है दामाँ-दाम का ब. व. गंज-ख़ज़ाना वाई च-वही पछान-पहचान।

मोमिन दकनी (१६८०)

निहायत समज का है हैरत मुकाम
के याँ अकल कूँ दखल का नईं है काम

अक्सर कोई समजने क्या बाताँ करे
भूका खाली भाँडे में हाता करे

ज्यादा नको कर तूँ तक़रीर में
क़लम कूँ नको ल्या तूँ तहरीर में

हम्द बेहद है उसे उसी सुभान को
जो किया पैदा जिस्म और जान को
दो जहां का ख़ालिक़ व दायम है वो
सब फ़ना आख़िर के तैं क़ायम है वो
एक है और नईं शरीक़ दूजा उसे
ग़ैर उसके नईं समझ बूजा किसे
भई मुल्क सिजदा बशर को कब करे
आदमी आदम को सिजदा कब करे
ग़ैर हक़ के सिजदा किसको कर नको
काफ़िर मुशरिक जो होकर मर नको

याँ-यहाँ भाँडा-बर्त्तन दायम-शाश्वत फ़ना-नाशमान सिजदा-प्रणाम
बशर-व्यक्ति मुशरिक-ईश्वर को छोड़ कर दूसरे की भक्ति करने वाला।

देख हदीसाँ नईं तो सिजदा का मुकाम
है इबादत का कुफर तहव्वुर हराम

× × ×

क्या करेंगे तुज ऊपर तकसीर तईं
मर्द तेरा साहबे तदबीर नईं
है दीवट खाविन्द तेरा उल्लू की दुम
बेइल्म हो दीन को करता है गुम

—मेराजनामा मय दीगर रसायल

दुवेदा इश्क़ केरा सूर कीता
दो जग तिस सूर सूँ पुरनूर कीता
मन्धिर में दिल के दीपक वेकला है
जुसी का सहन उसी सूँ निर्मला है
वही सूर आ तजल्ली तनकूँ देता
भितर कूँ दिल के रोशन लाल कीता
सूरज होर चाँद होर तारे यो सारे
उसी के फ़ैज़ का खिलअत झकारे
जहे तिस फ़ैज़ का बारा भया है
ज़मीन होर आसमान सब भर रह्या है

हदीसाँ-हदीस का ब. व. तहव्वुर-आश्चर्यजनक, तकसीर-अपराध केरा-का सूर-सूर्य कीता-किया पुरनूर-प्रकाशमान मन्धिर-मन्दिर वेकला-विकल जुसी का-जिसका तजल्ली-प्रकाशमान खिलअत-पोशाक, राज्य की ओर से प्रदत्त बारा-वर्षा ।

के जे शै जांव तलक नज़र उनकूँ पहुँचाये
....नज़र आये
लगन जिसका जिस जिस धात सूँ हैं
ऊ नईं किसका खुदा की ज़ात सूँ है
ताल्लुक़ इश्क़ का ग़ैर अज़ खुदा नईं
अछों के पन खुदा तिस सोज़ जुदा नईं
परीखे वे गर इस राज़ का खास
के जे वहदत की दरिया का है ग़व्वास
तसव्वुर में हक़ीक़ी होर मजाज़ी
जुदा कोई क्यों करे यो इश्क़बाज़ी

चूला गर लाक लकडियाँ लाके सुलगाये
हण्डी में दूद नईं तो क्यों उबाल आये
बजे बिन थाल यो आवाज़ क्या है ?
जो घर नईं है तो यो दरवाज़ा क्या है ?
उसी सूरज छिपे की ताब है यू
उसी रोशन देवी की शाब है यू
जो सूरज है अदम तो ताब काँ की ?
देवी नईं हैं तो यू शाब काँ की ?
इसी जन्नत गर अहे दम पो यू
वही फ़ैज़ आ गया रोशन चमन यू

× × ×

धात-तरह ऊ-वह सोज़-जलना परीखे-परीक्षा करें ग़व्वास-गोता लगानेवाला
हक़ीक़ी-वास्तविक मजाज़ी-कृत्रिम शाब-जवान काँ की-कहाँ की दम पो-दम पर ।

रमूज़े इश्क़ का नाज़ुक खबरदार
तनूज़े आशिकी परगट रखनहार
दरस पा मकतब खतम उलवली में
क़दम रख इश्क़ की रोशन गली में
विलायत के सूरज का खास इसरार
ज़माने में करे यू लिया के इज़हार
के जब मेहदी सफ़ा कर सनद कर्ते
चल्या इसलाह देता हिन्द कर्ते
हुआ कई रूबरू फ़रमान आला
के ऐ खुरशीद बुरहान ताला
सरासर इल्म सू है हिन्द नुक्सान
कमालत इल्म का राखे खुरासान
अजम पर जाके दे वऊक़ (?) का डेरा
हमें वहा नई च अम्बरात है तेरा
वही सूँ पाके अम्र फ़तहयाबी
चल्या सैयद मुहम्मद कर शिताबी
ज़मीं पर राजपूता के चल आया
सबे भुई कुफर सू मामूर पाया
के हुई धरती पर थी जब सू बम्नी
करें कुफ्फ़ार गौशाला परस्ती
बड़ी यक सहर पा अख़्तियारी
हुआ था सामरी हर रोज़ भारी

रमूज़-भेद रम्ज़ रमूज़ ब. व. तनूज़े (?) इसलाह-सुधार अजम-एक देश, (एशिया अरब लोग अरब को छोड़ कर शेष संसार को अजम समझते थे) अजम-गूँगा सामरी-एक तरह का बाजा।

यक यक अर्जुन सिफ़त तीराँ कमान धर
चलावें चर्ख़ के अन्दर जते पर
बड़े चावाँ सूँ गावाँ पूजते थे
के पुरुषोत्तम के बाहन पूजते थे
क़ज़ा ता किया शाह जमा कूच
चल्या राह ख़ुरासां हुक्म सू पूच

× × ×

जल्द चर्चा के अब क़त्ल उस किये बाज
हुआ जीना मेरे तई हैं हराम आज
कह्या सोच उट के दोड्या फ़ौज के सात
के जा दिखाऊ कुल ज़रब का हात
ग़ज़ब सूँ जल्द जा मादर की आकिल
किया तस्लीम आ बैठा मुक़ाबिल
कहा यक तुर्क आ मुंज मुल्क में पैट
ज़िबह कर बैल के तीन पहर रहा बैट
रज़ा दी इस तरफ़ मैं जल्दतर जाऊँ
करूँ उस क़त्ल, या जीता पकड़ ले आऊँ
कहे कोइ फ़ौज शह दिया चल
ककर नही तो ख़ुदा सू है उसे बल
कहा तुज हुक्म है मुंज सर ऊपर जान
अगर है हक़ कहूँ मुज सब कूँ कुरबान
शहन्शा सख़्त हिम्मत सूँ निडर था
....

चर्ख़-आकाश ज़रब-तलवार का हाथ ककर-कह कर।

यकायक फ़ौज सूँ रजपूत आया
दर में शाह का चीच के निहाया
उतर तेजी थे अम्बरा जोड़ कर हात
धर्या...तेज सूँ अदब सात
यू अचरज पाके सारे रज के पूताँ
अटल ओ कुल राज सूताँ
कहे किस जाम सूँ तूँ चल के आया
नज़र पड़ते तेरे तईं क्यों लुभाया
अचम्बक आज तईं दीठा सो मुख खोल
हमारे तईं सरासर खोल कर बोल
तहय्युर सूं कह्या दाना-ए इसरार
के है वह पल का पैदा करनहार
जिने पैदा किया मार्या उसी ने
उसे क्यों मारना बोलो किसी ने
सदाक़त सूँ सभों का कर दिलासा
रह्या ठाड़ा हुआ मेहदी के पासा

—मसनवी इसरार इश्क़

चीच- ? निहाया-झाँका रज-राजा पूताँ-पुत्र (पूत का ब. व.) सूताँ-पुत्र (सूत का ब. व.) तहय्युर-आश्चर्यजनक दाना-चतुर इसरार-भेद, सिर ब. व. मेहदी-हिदायत करनेवाला, उपदेशक।

फ़ायज (—१७४५)

अव्वल नाम हक़ का ले बोलूँ सुख़न
बन्दूँ उसकी तौहीद खोलूँ सुख़न

× × ×

जिते हैं हिकायात के राबियाँ
यो किस्सा उनों यूँ किये है बयाँ
के था चीन में एक बड़ा बादशाह
दुहाई फिरे उसकी एक साल राह
उस अतराफ़ में था जिसे तख़्तो ताज़
इताअत करें मलिक देवे ख़िराज़
बिलायत मुल्क कुच न था उसको कम
किसी के तरफ़ ते न था उसको ग़म
वले यों कहे मुज को आनन्द नईं
के मुँज नस्ल में एक फ़र्ज़न्द नईं
जो मुज बाद अछै वारिसे तख़्त वो
जहाँ में निकाले बड़े बख़्त वो
मेरा तख़्त उससूँ के पावे निज़ाम
करे मुजको आलम मने नेक नाम
उसे सल्तनत ताज़दारी अछै
दुनियाँ में मेरी यादगारी अछै
खुदा पास दिन-रात माँगे नसल
करे खैर खैरात उसके बदल

तौहीद-एकेश्वरवाद हिकायत-कहानी इताअत-आज्ञा मानना वले-लेकिन अछै-रहे वारिस-उत्तराधिकारी बख़्त-भाग्य निज़ाम-व्यवस्था आलम-संसार नसल-वंश, पुत्र ।

इबादत बेताअत करे बेक़यास
कहे यों के या रब न कर तूँ निरास
दिया मुज को था रब, तू ये मर्त्तबा
पर कोई यो धंदगी ना फबा
अता कर मुजे यक फर्ज़न्द सूँ
बख़्तवार, क़ाबिल, ख़िरदमन्द कूँ
के मुज तें को नर अछे उसको देख
बदे उस सूँ चौंधेर मेरा नाम नेक

यही आरज़ू दिल में धरता अछै
खुदा सूँ मनाज़ात करता अछै
किया आजज़ी जब वो हद तें जियाद
दिया हक़ ने ई दिल को उसका मुराद

हुवा बन्द में उम्मीद का फल एक
बख़्तवार फ़र्ज़न्द मक़बूल नेक
के वैसा किसी शाह को गोती न था
दरया में भी इस धात मोती न था
देख्या उसको लायक़ तख़्तगाह का
तो रू रूँ हुआ शाद उस शाह का
भोत शुक्र कर ई गन्दोरी किया
अधिक माल वो आजिज़ाँ को दिया

बेताअत-निस्स्वार्थ, बिना दिखावटी पने के बख्तावार-भाग्यशाली चौंधेर-चारो तरफ मनाज़ात-प्रार्थना मकबूल-प्रिय (कबूल मक़बूल) गोती-गोत्र में उत्पन्न धात-तरह, प्रकार रू-रोम भोत-बहुत गन्दोरी- ? आजिज़-अशक्त (आजिज़ां ब व) ।

वज़ीराँ को तशरीफ़ देकर खुशहाल
दे इनाम लश्कर को कीता निहाल

वो खुशनूद अपना है कर जान शाह
रख्या उस केरा नांव रिज़वानशाह
क्या ई खुशी सात ई दिन गिनाय
उसे दूद पीने को दाई ढुँढाय
सो पैदा हुई एक दाई भली
मेहरबान होर गुन भरी मावली
सो लक्खन भोत अक़ल तरतीब की
मुलायम तबियत मीठी जीब की
जवाहर सतें गोद उसका भराय
बच्चे को ले जा गोद उसके बिटाय
उसे खूब गावाँ ....दिये
सन्दूकाँ सूं .... दिये
करे उस घड़ी देको ई मुल्क माल
करे होर क़बीले को उसके निहाल
बच्चे का भी वो भोत खिदमत करी
उसे पाल सँभाल मेहनत करी
बच्चा था तलग दूद उसको पिलाय
करी तरबियत ता उसे ध्यान आय

कीता-किया खुशनूद-सन्तुष्ट मावली-मा जैसा वात्सल्य रखने वाली (दक्षिण की एक जाति मवाली)

जब उस शाहज़ादे को आया शऊर
तो करने लगी नेकबख़्ती ज़हूर

—किस्सा रूह अफ़ज़ा और रिज़बानशाह

ज़हूर-प्रगट होना।

करीमुद्दीन सरमस्त (—१६८९)

हुआ जा अमीना के मुख पो रोशन
किया जो नूरे खाक आदम कूँ रोशन
दिया हैरत सगल आलम कूँ यो भेद
हुए सो आमिना ने रश्क खुरशीद
दलालत यो सही कुरान सूँ है
क़वी इस्लाम के ईमान सूँ है
रहा नूरे नबी आ जिस बशर में
बुतॉ दिसते थे बातिल उस नज़र में
न थी पुश्तेन में कई बुत परस्ती
बग़ैर अज़ सिज़दा हक़ पेश दस्ती
बुतॉ देक अमीना के मुख पो हर बार
निकल पड़ते यकसर हो निराधार
देखे यो हाल जिस पल बुत परस्ताँ
खुदा याँ अपने गिरते सो दो रास्ताँ
अपस में जमॉ होकर ज़िक्र नाचीज़
किये सब गुमरहाँ मिल कर यो तजवीज़
मगर हैं आमिना के सात बेज़ार
उसे आने कतं देना नहीं बार

आमिना-हज़रत मुहम्मद की मॉ सगल-सकल दलालत-लक्षण क़वी-शक्तिशाली
बुतॉ-बुत (मूर्ति) का ब. व. बातिल-मिथ्या गुमरहाँ-पथभ्रष्ट बार-बाहर ।

हुआ यों नूर जब मशहूर आलम
घरे घर तब किये मज़कूर आलम
पड़े हैरत में जा जब खल्के सालम

सो उस दिन आ वहाँ यूसुफ़ मुनज्जिम
कहा अब्दुल मुत्तलिब सात मिल कर
कर्तां हूँ खुश खबर सुन शाद दिल कर
शिकम में आमिना के हैं मोहम्मद
शर्फ़ मन्द उनके हो तुम जद्दे अमज़द
बशारत दी मुबारक बाद बोल्या
निपट खुश होके दिल सूं शाद बोल्या

उसी रात आमिना के ख़्वाब में आ
जो बुजुर्ग पीर कोई परताब में आ
कहे ए आमिना, है तुज बशारत
नबी आखिर जमाँ साहेब शफ़ाअत
शिकम में है तेरे हक़ के करम सूं
तुजे है खुश ख़बर देवां के रम सूं
नबी मुरसल हरयक आदम सूं लेकर
बा आखिर ता ख़ल्फ़े मरियम सूं लेकर

मज़कूर-चर्चा, वर्णित ख़ल्क-संसार सालम-सम्पूर्ण मुनज्जिम-ज्योतिषी, (नज्म मुनज्जिम) अब्दुल मुत्तलिब-मुहम्मद के दादा कर्तां हूं-कहता हूं शिकम-पेट जद्दे अमजद-बुज़ुर्गवार, दादा बशारत-शुभ समाचार शफ़ाअत-सिफारिश करनेवाला मुरसल-भेजा हुआ (रसूल मुरसिल) ख़ल्फ़-बेटा।

इसी धात हर नबी हर रात आते
मुबारक आमिना कूँ दे सिराते
कते ऐ रहमते आलम की मादर
खलफ़ तुम कू मुबारक शाहे सरवर

× × ×

उसी रोज़ आमिना पर दर्द आग़ाज़
किया था रात कूँ खालिक़ सबब साज़
तबल बजने लगे थे अर्श ऊपर
मलायक आ ज़मीं के फ़र्श ऊपर
सँवारे थे बिसाते शादमानी
शफ़क़ पैन्या लिबासे अर्ग़वानी

---हालात विलादत आँ हज़रत

सिराते-सराहना करते मादर-माँ खलफ़-पुत्र सरवर-नायक बिसात-फ़र्श
शफ़क़-क्षितिज अर्ग़वानी-सुर्ख़ ।

क़ाजी महमूद बहरी (१७०५)

ऐ रूप तेरा रत्ती रत्ती है
परब्रत परब्रत पत्ती पत्ती है

परब्रत में ओक न कम पत्ती में
यक सा रहे रास होर रत्ती में

होर यूँ बेकहे न जाय तुज कूँ
जो बीच जगत के जाय तुज कूँ

सागर तो ना सुरमेदान में मा गा
सन्दूक में सूर क्यूँ समागा
तूफ़ान तनिक सुमन की बू में
समदर एक आँख के अंजो में
दरिया में सदफ़ लाक भर्या
पन क्यों भरे सच्चा सदफ़ में दरिया ?

एक पल में तो फ़लक बसे क्यों
एक घर में दो जहाँ धसे क्यों
जुज़ कुल में छुपे न अक्स उसका
यो बोल न साफ़ कुहनस का

ओक-निवास स्थान रास-ढेर मा गा-समायेगा समदर-समुद्र अंजू-आँसू
सदफ-सीप फ़लक-आकाश जुज-हिस्सा कुहनस-पोशीदा ।

सब तुज में अगर कहे तो सच है
ज्यों जल के मझार कुच है मुच है

बादशाह औरंगज़ेब की तारीफ़

अब बोल तूँ मदह बादशाह का
होर उसकी कमालिय कुलाह का
जिसकी यो दो बालपन की आदत
आलमगीरी है होर इबादत
यक मुल्क नहीं जो उन लिया नहीं
यक नफ़ल नहीं जो उन किया नहीं
ऐसा न हुआ किसी शहान में
ना बल्के बड़े मशायेखान में
जिस नाँव अहै अबुलेमुग़ाज़ी
सुलतान औरंगजेब ग़ाज़ी
दीनदार दिलेर और दाना
यक इल्म न सब मने सयाना

कवि का निवेदन

मैं कोठरी छोड़ भार आया
दालान में उस दुना की धाया

मझार-में। कुचमुच-थोड़ा बहुत कुलह-ताज, मुकुट, टोपी आलमगीरी-विश्व-विजय मशायेखाँ-बड़े लोग।

जब बरस चार गये गुज़र तब
आ सामने मुख दिखाये मकतब
बिस्मिल्ला मुँजे कहे कहो हाँ
मैं कह्या रहीम रहमाँ
यानी थे यती बेज़हन ज़ीरक
जू दंग थे जवाँ और पीरक
इस उम्र में इश्क़ जिव में जाग
यों भेड़ लिया ज्यों भेड़ कू बाग
यों अंग नन्हें थे या बड़े थे
यक आँग पर ओड़े पड़े थे
लाग्या यो दिल उस अलख के लग कूँ
उस सर्व के डोल होर ढलक कू
इश्क आग की मन में दहकी थी
भर तन में तमाम तबक की थी
या मुज में नवा हुआ है पैदा
या जग में अव्वल ते है हवेदा
टुक सोस न रुक कर उस परी का
दिल शौक़ लिया कबीसरी का
गर बीच कबीसरी न आती
वल्ला यो आग मुजे जलाती
चालीस बरस भये थे मस्ती
यो शेर को शाहदा परस्ती

मकतब-पाठशाला ज़ीरक-चालाक ज़ीरक-हुशियार, चालाक भेड लेना-जकड लेना, दो चीजों को मिलाना डोल ढलक-गतिविधि तबक एक बर्त्तन हवेदा-प्रकट, पृथ्वी के नीचे और ऊपर का आकाश कबीसरी-कवीश्वरी शाहदा-(?)।

होर शोर भी भाँत भांत का था
बहु भाँत जो मेग सात का था
हर बूंद न यक अमोल मोती
मोती न हर यक बीत जोती
हिन्दी तो ज़बाँ च है हमारी
कहने न लगन हम कूँ भारी
होर फ़ारसी इसतें अति रसीला
हर बोल में मार्फ़त की बानी
सीता की न राम की कहानी
था पूरा बड़ा यक बड़ा पिटारा
सो भागनगर में खो गये सारा
जे नज़र किया अथा **सिकन्दर**
जिन चरख़ कूँ उन दक्खिन के चन्दर

हिकायत सुलतान वज़ीर

सुलतान सूँ यक वजीर हो सैर
बोल्या दिला रज़ा मुँजे न कर देर
खटपट में अबस यूँ उम्र घट गई
होर पिंड की पैहरन भी फट गई
ना नूर नयन ना ताव तन में
यक बाव है बेबदल बदन में

मेग-मेघ साँत-शान्ति चरख़-आकाश हिकायत-कहानी अबस-बेकार
पिण्ड-शरीर पैरहन-जामा बाव-वायु (वातरोग) ।

अब दोस्ती इस दुनी की बस है
दिल दीन सूँ बाधना हवस है
यानी के यकाद कुंज बिलगाव
यक भाव सूँ बन्दगी में गल गाव
प्यासे कूँ अछै जो नीर प्यारा
यूँ शाह कूँ था वज़ीर प्यारा
हर भाँत हर एक बल माने
देना ना अपस सूँ फाँक जाने
रख जीव में ज़ाहिरा हो ब्रह्म
बोल्या के भला है जा तूँ जमजम
पर बादशाहत मने हमारी
पैदा सो किया डाल बारी
दस्तूर था दर असल था स्याना
क्या यक यो दिया जवाब दाना
ऐ शाह, तेरा दिया फिराये
होर उनि च मेरा दिया तरावे
सुलतान यो सुन पुकार ताना
ज्यों घूर के तार झड़झड़ाना
मभूत हुआ जो मैं लिया क्या
यों मुज कूँ ग़ैर तेरा दिया क्या ?

बोल्या ओ जो मैं दिया हूँ ज़ाहर
सो दरज कितक हैं भर जवाहर

यकाद-एकाध कुंज-कोना फाँक-पृथक् करना जमजम-ख़ुशी ख़ुशी
उनि च-वही मभूत-हैरान ।

यो माल, यो मुल्क बस्त बासन
यो पालकी नालकी सर बासन
यो बाग़ है यो सरा सहेलियां
घट मास मीठ्या जो गुड़ की भेलियां
लब जिनके शकर ही नयशकरक़ंद
खिल बात करे न बात कू रद
मुख फूल सियाह जुल्फ़ सुम्बल
ज़ काल काल है काल जिनके काकुल
घोड़े हैं केतक जो जल पो चल जायँ
तलवार जो बिजली-सी झलकायें
हाती हैं केतक फाड़ ऐसे
होर तू बी दिया सुगाड़ ऐसे
बोल्या ओ वज़ीर ओ शहन्शाह
यक अर्ज़ है सुन तूं अदल की राह
जिस अमर कूं तूं जानता है
होर उसकी भा पछानता है
सो अमर दिया तेरे अमल कूं
किमखाब दिया ज़बून कमल कूं
रख अपनी इल्तफ़ात ग़ायत
कर अमर मेरा मुंजे इनाअत
होर तूं बी दिया सो सब तेरे पेश
करता हूं जो मैं हूँ हाल दरवेश

बस्त-वस्तु नालकी-एक तरह की खुली पालकी सरा-ठहरने की जगह नय-नया
सुम्बल-जटामांसी, एक सुगन्धित औषधि काकुल-जुल्फ़ केतक-कितने ही फाड़-पहाड़
किमखाब-एक जरीन कपड़ा जबून-निकृष्ट इल्तफ़ात-तवज्जह ग़ायत-ज्यादा।

इस बात में शह विचार कीता
इन मरा तूँ मुज पे बार कीता
तिस अमर केतें कहाँ सू लाना
मौजूद कर उसकूँ क्यों दिखाना
बेहतर तो कुछ अब तलब न करना
अपस्के दिये सूँ दर गुज़रना

मिल जीव सूँ यक जवान पूछा
ना जान बल्के जान पूछा
ए जीव तू कौन है सो मुजे कह
कर मोल सूं आपने मुज अगे
ना सूल सू सूकशम सू है काम
है मूल सू तुज मेरा सरंजाम
तब जीव दिया जवाब नीका
यक ठाँव पकड़ न कुछ मनीका
सो क्या के यो सब सिंगार मैं हू
भीतर बीतो मैं हूँ भार मैं हू
जे जिस्म लिया है और हस्ती
तूँ बूज ओ सब मेरी है बस्ती
बिलफ़ेल जो तू कहे कि तू कौन
सो मैं हूँ न मैं हू जो के फ़िरोन
गर है तू पलीद मैं अगर पाक
मैं आग आकास जल पों खाक

सूकशम-सूक्ष्म बिलफेल-इस समय फिरोन-एक राजा (?) पलीद-गंदा, खराब ।

मैं बिजली में अभाल में मेग
मैं लाकड़ी में अनाज में देग
पग़फ़ूर बी मैं फ़क़ीर बी मैं
ज़रबफ्त जुबूँ हसीर बी मैं
मदमस्त गेंद में गुन में
बुल बी तो मैं बहार में चमन में
मालूम हुआ कई हैं ए लाल,
यक जीव कूँ फोंड कर यो अश्काल
हर शै के ऊपर तले यही जीव
गर बीच में भुलभुले यही जीव

—मनलगन

अभाल-(?) ज़रबफ्त-सोने चाँदी में मँढा हुआ जुबूँ-खराब हसीर-बोरिया, चटाई
अश्काल-शक्ल का (ब. व.)।

वजदी (१७१३)

हिकायत बुलबुल

वाह वाह बुलबुले गुलज़ार इश्क़
वाह वाह ऐ पंछिये **पस्मार ?** इश्क़
शौक़ सूं दिल के ज़रा **मरगूल** उठ
दर्द दिल मीठे सदा सूं बोल उठ
एकदम इलहान **दाउदिये** ऊंचा
जीव को जग के कर अपस्का मुब्तिला
ज़िरह दाऊदी की ख़्वाहिश है अगर
इस लव्हे के नफ्स को ज्यों मोम कर
जब लव्हा यह मोम नमने होवे नरम
इश्क़ में ज्यों आवे **दाउदी** करम

एक दीवाना था नंगा आज़ाद दिल
ख़ल्क़ को कपड्यों सूं देखा शाद दिल
पस कहें या रब मुझे भी कुछ उड़ा
कांपता हूं ठंड में मैं हुड़हुड़ा
तब दिया हातिफ़ ने उसको यो निदा
धूप में जा बैट ऐ मर्दे गदा
हस के दीवाना दिया उसका जवाब
कहा नहीं कुछ तुझ कने बिन आफ़ताब

पस्मार- ? मरगूल-पक्षियों की आवाज़, गवैयों के आलाप का एक ढंग इलहान-आवाज़
सदा-आवाज़ शाद-प्रसन्न उडा-उढ़ा ।

भई निदा आया के दस दिन सब्र कर
जे मुकर्रर है सबूरे . को अजर
यह निदा सुन ओ दिवाना चुप रहा
आस करता ठंड-बारा सब सहा
ताके दस दिन बाद न चाहा यक रवा
गूदड़े जूने नवे थिगले लगा
पस कहा दीवाना या रब आज लग
खिरक़ा सीने में रहा था क्या बिलग
या खज़ाने में नवे कपड़े न थे ?
या गवाँने गये थे सो सपड़े न थे ?
जो जुने थिगले सिया है इस वज़ा
कुछ अजब तेरी क़दर है और क़ज़ा
यों च है तेरी इनाअत परवरी
कॉ ते सीकिया है तूँ यह दरजीगिरी

दरबयान उज़्र आउदने मोर

मोर आया बाद अजाँ आपुस सवार
जिसके हर एक पर में कई नक्शो निगार
नाज़ सूँ पग पग आँगे धरने लग्या
जल्वा उरूसे नमन करने लग्या

हातिफ़-एक फ़रिश्ता निदा-आवाज़ गदा-फ़क़ीर, ग़रीब अजर-फल बारा-वर्षा खिरक़ा-एक लिबास गवाँने-खोने सपडना-मिलना जूना-पुराना कज़ा-ईश्वर का आदेश यों च-यों ही कॉ ते-कहाँ से सीकिया-सीखा बाद अज़ां-इसके बाद आपुस-स्वयं नक्शोनिगार-चित्रकारी आँगे-आगे जल्वा-शोभा . उरूस-दुलहन नमन-तरह ।

पास हुदहुद के अव्वल आया नज़दीक
याद कर फ़िरदोस को रोया अदीक
बाद अजां बोला के मुज सूँ एक गुनाह
बहिश्त में सादिर हुआ है आह आह
भार डाले हैं मुझे तिस्ते हनोज़
है मुझे उस रोज़ ते सीने में सोज़
गरचे जिब्रील हूँ पंखियों केरा
शर्मिन्दा है उसते अब तक जिव मेरा
याद जब फ़िरदोस का आता है बाग़
जानो तन होता है सकल दाग़ दाग़
काँ सूं मैं बारे लगाया मार सूँ!
जिये पड्या हूं दूर हक़ के प्यार सूँ
ज्यों छूटा है हाथ सूं मेरा वतन
रात दिन रोता हूं मैं आदम नमन
है एता यह आरज़ू मेरे तर्धां
जे मुझे ले जावे कोई मेरे मकां
नई एता समुर्ग़ की परवा मुझे
बस है जन्नत बीच एक गज जागा मुझे

हुदहुद-एक पक्षी, कठफोड़ा फ़िरदोस-स्वर्ग अदीक-अधिक बहिश्त-स्वर्ग भार-बहार तिस्ते-उस से हनोज़-अब सोज़-जलन पंखियों-पक्षी (पंखी का ब. व.) केरा-का जानो तन-प्राण और शरीर काँ सूं-कहाँ से बारे-आश्चर्यवाचक शब्द आदम-मनुष्य एता-इतना मेरे तर्धां-मुझ में जन्नत-स्वर्ग।

जवाब दादन हुदहुद

पस कहा हुदहुद के ऐ सुन रे गँवार !
बादशाह के घर में तूँ मँगता है ठार !
क्यों मिलेगा घर तुझे चुप शाह का ?
होएगा क्यों महारम उस दरगाह का ?
जा तूँ अव्वल बादशाह का हो नफ़र
बाद अज़ाँ जा देख उसका दारो घर
घर धनी के बाज घर क्या काम आय ?
कोई खाली घर में क्या अराम पाय ?
क्या है जन्नत एक घर खाली पड़ा
गर चे दिसता है तुझे खाली बड़ा
क्या बड़ा घर क्या नन्हा घर जुज़ व कुल
हमें धनी के बाज सब यो बद असल
घर अगर होना तो जा ढूँढ ले धनी
पाक मुतलक़ नाँव है जिसका ग़नी
यह बहिश्त उसका है एक अदना मकान
गर चे नईं हैं कोइ मकाँ उस्का टिकान !
के अबस ढूँढता है तू जन्नत में घर
कर नको आला सूँ अदना पर नज़र

दादन-दिया गया ठार-जगह महारम-परिचित दरगाह-निवासस्थान नफर-नौकर दार-दरवाज़ा बाज-बिना जुज-अंश कुल-पूर्ण बदअसल-व्यर्थ पाक मुतलक़-पवित्रतम ग़नी-परम स्वतन्त्र अदना-अकिञ्चन अबस-विवश आला-श्रेष्ठ, उच्च।

हिकायते शागिर्द बा उस्ताद सवाल कर्द

एक था शागिर्द लिये साहब कमाल
उन किया उस्ताद सूँ अपने सवाल
हज़रते आदम थे हक़ के ख़ास ज्यों
भार डाला उनको भी जन्नत सू क्यों ?

पस कहा उस्ताद ने शागिर्द साथ
असल में थे लिये बुज़ुर्ग आदम के ज़ात
जो रखी **फ़िरदौस** पर टुक इक नज़र
ग़ैब के हातिफ़ ने यूँ लाया ख़बर
ग़ैर को जिन कोइ लोड्या मुझको छोड़
मुख उसका लेऊँ मैं उसते मरोड़
छीन लेऊँ जे कुछ अछे सो बेदिरंग
है मेरे ग़ैरत में ये नामोस व नंग
जिसको मेरे बाज जिसका दम अछे
उसके दुख देऊं गर चे वो आदम अछे
नई अगर बातिन में मेरा राज़दाँ
सर पे उसके ला सटूँ ग़म के पहाड़
जान जानाँ तूँ मिला दे ए सुभान
बल्के सट जानाँ पो अपने वार जान

कर्द-किया हुआ आदम-सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुआ प्रथम पुरुष हक़-ईश्वर भार-बाहर पस-बस फ़िरदौस-स्वर्ग ग़ैब-अदृश्य हातिफ़-एक फ़रिश्ता, आकाशवाणी लोड्या-पकड़ा बेदिरंग-तत्काल नामोस-अपमानित बातिन-अन्त:करण सटूँ-डालूँ जान जानाँ-प्राणों के प्राण जानाँ-जान का ब. व. ।

दरबयान उज्र आउरदन बत

आई बत नहा धो के पानी सूँ निकल
पैन कपड़े पाक तर उजले निभल
बात काढ़े जे अभूँ लग है कहाँ
मुज सरीके पाकदामन दर जहाँ
सब पंखियाँ में मैं हूँ अज़हद पाकतन
पाक जागा पाक जामा पाक मन
मैं चलूँ ज्यों औलिया पानी पो अब
गर करामत कोई करे मुझ सूँ तलब
बल्के पानी सूँ च है मेरा जनम
ना रहूँ पानी बिना मैं एक दम
कुछ अगर ग़म दिल में मेरे आये जब
देखते पानी को धोया जाय सब
ताज़गी पानी सूँ मुजकूँ है मुदाम
मैं चलूँ खुश्की पै क्यों ऐ नेकनाम
आ लग्या है काम मुज कूँ नीर सूँ
नीर बिन यह जिव रखूँ क्यों नीर सूँ
नीर सूँ बेशक़ है आलम की हयात
क्यूँ सटूँ मैं नीर सूँ अब धोके हात

पैन-पहन निभल-स्वच्छ (निश्छल) अभूँ लग-अबतक पंखियाँ-पंखी (पक्षी) का ब. व. अजहद-अत्यन्त पाकतन-पवित्र शरीर जामा-वस्त्र सूँ च-से ही मुदाम-स्थिर नीर-पानी हयात-जीवन ।

नई बियाबाँ पर मुजे चलने को पग
चल सकूँ मैं किस वज़ा सीमुर्ग़ लग
जिस्को होवे इब्तिदा सूँ हाल यूँ
ओ कहो सीमुर्ग़ लग अपड़े सो क्यूँ ?

जवाब दादन हुदहुद

पस कहा हुदहुद के ऐ पानी के मीत
के बंधी है इस वज़ा पानी सूँ पीत
छुड क्यूँ पकड़ी तूँ पानी केरा
नईं रहा मुख पै तेरे पानी ज़रा
गंद अपस का कोई...पानी सूँ धोय
तुझ उस पानी सूँ अगला गंद होय
घर भरे है.........साथ दिल
घर भरे तूँ है तो जा पानी से मिल
पाक पानी के नमन तूँ को लगूँ
घट भर्या का हर सुबह देखेंगे मूँ
गर नहीं बावर तो करना टुक क़यास
क्या गंदे मछली नमन तेरे है बास !

हिक़ायत शख्स दीवाना

एक दीवाना था जिसे स्याने के गत
कोई पूछा उसकूँ क्या है यो जगत

बियाबाँ-मरुभूमि अपड़ना-पकड़ना, प्राप्त होना दादन-दिया गया पीत-प्रीति
मूँ-मुँह बावर-विश्वास क़यास-अनुमान ।

जवाब देता उनके ये धरती फ़लक
अर्स कुर्सी आदमी जिनको मलक
एक क़तरे का है यो नक्शो निगार
एक क़तरे का है यह सब आश्कार
एक बुँद पानी ते है सब का जमाव
एक बुँद पानी ते है सातों दर्याव
क्या है यो धरती सो पानी पर निगार
नक्श को पानी के नईं कुछ ऐतबार
सख़्त भी बुनियाद है नक्शे आब
होवेगा यह नक्श एक पल में ख़राब
तूँ नको दिल बन्द अपस्का आप सूँ
कर हज़र इस बात के असबाब सूँ

दरबयान उज्र आउर्दन कब्क

कब्क ख़ुश गुफ़्तार आई बाद अज़ाँ
दिल सूँ ख़ुर्रम, मुक सो ख्वन्दाँ शाद माँ
लाल जैसी चोंच चिक मानिक नमन
बात करते झड़ पड़ें मुख सूँ रतन
नागहाँ परबत सूँ ख़ुश आई उतर
पस कही हुदहुद कूँ ऐ आली, गौहर

फ़लक-आसमान आश्कार-दृश्यमान निगार-चित्र आब-पानी हज़र-परहेज़ कब्क-चकोर ख़ुर्रम-प्रसन्न ख्वन्दाँ-हँसमुख शादमाँ-प्रसन्न नागहाँ-सहसा गौहर-मोती ।

है तुझे दर अस्ल गौहर के लगन
लाल के इश्क़ों हुई हूँ कोहकुन
रातों है मुझ कूँ गौहर की तलाश
राज़ मेरा हो गया है जग पै फ़ाश
लाल के आतिश पड़े हैं दिल मने
संग गुल जाता है जिसते तिल मने
क्या है मेरी भूक सो एक दो कंकर
बस है मेरी प्यास कूँ आबो गौहर
इस दुनिया जिसकूँ ऐसा कूत होय
क्यों न मौजे खून रघ याकूत होय
जब से गौहर का पड़या है दिल में ताब
रैन को निकल्या दिसे मुंज आफ़ताब
तू गौहर ढूँढने में है नियत रात-दिन
नईं है जिव को सब्र एक तिल एक छिन
न्हाट गई भूक और उड़ गया है ख़ाब
दिल पड़या है कशमकश में ज्यों तनाब
इश्क़ गौहर का अगर नईं जिस तिसे
उसो मुंज कू जिस्म है जौहर दिसे
जिस्म है जौहर कहो क्या आये काम?
ज़िन्दगी नाचीज़ है उसकी तमाम
मैं जो हूँ उश्शाक़ गौहर मस्त मस्त
जानते हैं मुजको सब गौहर-परस्त

कोहकुन-खनिक, पहाड़ खोदनेवाला आतिश-आग संग-पत्थर गुल-घुल कूत-भोजन रघ-रक्त न्हाटना-अस्वीकार करना ख़ाब-नींद उश्शाक़-प्रेमी, (आशिक़ का ब. व)।

नईं है गौहर के बाज मुँज कूँ जुस्तजू
जीब पर मेरी है नित ये गुफ्तगू
ग़म सूँ गौहर के है ये जो मुब्तिला
जिसके दुख सूँ दिल है एक लहू का डला
बस है मुज को लाल गौहर का खयाल
किस वजे सीमुर्ग़ का लूटूँ विसाल
मैं कहाँ सीमुर्ग़ की दरगाह कहाँ ?
हर गदा को पादशाह तक राह कहाँ ?

जवाब दादने हुदहुद

बोल उठा तिस बाद हुदहुद बेदिरंग
क्या सबब करती है इतना उज़रे लंग ?
क्या सबब खाती है तूँ खूने ज़िगर
रंग गौहर देख कर बद गोहर
क्या है गौहर अस्ल में रंगी कहाँ ?
रंग पर तू भूल मत तू ऐ सुभान
जे कहीं जावे निकल कर उसते रंग
संग का आखिर दिसेगा तुजकूँ संग
तालिब यो रंग को ढूँढता नईं
जौहरी तो संग को ढूँढता नईं

जीब-जाभ विसाल-संयोग बेदिरंग-तत्काल सुभान-पवित्र संग-पत्थर ।

हिकायत अंगुश्तरी हज़रत सुलेमान अले सलाम

इस जहाँ में एक यो गौहर न था
जे सुलेमाँ के अँगूठी पर अथा
चौं कधन उसका पड़्या था जग में हाँक
वो नगीना अस्ल में था पाँव टाँक
जब सुलेमाँ पाय वो अंगुश्तरी
आय सब फ़रमान में जिन्नो परी
तख़्त कई फ़रसंग का हाज़िर हुआ
हुक्म सूँ उनके चले नित बर हवा
बाद अज़ाँ वो बादशाहे नामदार
देख उस अज़मत को थे कीते बिचार
सब करामत उस कँकर ते है मुझे
जे मँगूँ सो होवे हाज़िर शै मुझे
गर न होता पास मेरे यह कँकर
काँ सू होता मुज को इतना कर्रो फ़र ?

क्या करूँ मैं इस कँकर का ऐतबार
ना दिसे मुजको तो हरगिज़ पायेदार
ये कँकर मुँजको तो सेवट ना निभाय
नईं जिसे सेवट सो ओ क्या काम आय ?
जिस कँकर सूँ एक घड़ी आराम नईं
मुल्क लश्कर सूँ भी उसको काम नईं

अथा-था चौं कधन-चारों तरफ़ टाँक-टंक अंगुश्तरी-अंगूठी जिन्नो परी-भूत और अप्सरा फ़रसंग-कोस शै-वस्तु कर्रो फ़र-वैभव सेवट-अन्त तक।

काम ना आता दिसे ये मुल्को माल
देव मुझे या रब, तूँ मिल्के बेज़वाल
पस दुनियाँ का माल और न्यामत लुटायँ
और अपे जंबील बन कर बेच खायँ
बावजूद उस खौफ़ के ओ शाह को
दौलते दुनिया ने मारे राह को
ता सुगल पैगम्बराँ के बाद अपैं
पाँच सौ बरसाँ को जावे बहिश्त में
ये कँकर उस शाह सूँ ऐसा करे
पस कहो तुझ कब्क सूँ क्या करें ?

यो गौहर जो संग है तो संग नको
जान जाना बाज भी कुछ मंग नको
क्या करेगा तू गौहर को ऐ अजब
जौहरी का दिल में दायम धर तलब

उस्र आवुर्दन हुमाँ

बाद अजाँ आया हुमाँ बा करों फ़र
छांव जिसकी बादशाहाँ का छतर
बोलने लागा के ऐ पंछी हूं मैं
....

देव-दो रब-भगवान् मिल्क-सम्पत्ति बेजवाल-अक्षुण्ण जंबील-बड़ी थैली सुगल-(?) कब्क-चकोर बाकरों फ़र-वैभव युक्त।

असल में धरता हूँ मैं हिम्मत बुलन्द
गोशो उज़लत में करता हूँ आनन्द
नफ्स को अपने रखा हूँ ख़ार कर
ना दिया इज़्ज़त मुझे हक़ प्यार कर
जब मँगे यो नफ्स एक दो रोज़ आड़
जान कर उसको कूत देता हूँ हाड़
इड़ नमन उसको समजता हूँ जलील
दस है मुंजकू ये बुज़ूर्गी की दलील
जानते नईं जे हुमाँ मेरा है नाव
पस हुमा हू क्यों न होवे मेरी भी छाँव
गर फ़रीदूँ हैं ...भर जमशीद शाह
छाँव सूँ मेरे हुए हैं बादशाह
साया परवरदा हैं मेरे सब मुलूक

....

बादशाहाँ खुश हैं मेरे नाँव सूँ
बादशाही पावें मेरी छाँव सूँ
होवे कब सीमुर्ग़ की परवा मुझे?
क्या सबब उस्का अछे सखा मुझे?

जवाब दादने हुदहुद

पस कहा हुदहुद के ऐ नफ्से ग़रूर
छाँव अपनी दूर कर जा याँ सूँ दूर

गोशो उज़लत-एकान्त कूत-भोजन फरीदूँ और जमशीद-ईरान के दो प्रसिद्ध शासक
साया-छाया परवरदा-पालित सखा-(मिट्टी का प्याला?) याँ सूँ-यहाँ से।

क्यों कना तुझ साहबे दौलत अताल
है किते.. नमने जो तूँ हद पर खुशहाल ?
ना पड़ो यो छाँव तेरी किस पो आज
काश के होता तुझे उस हड़ सूँ लाज
फ़र्ज़ कीता मैं के जग के बादशाह
होते तेरी छाँव सू आलमपनाह
लेकिन आखिर बादशाही के सबब
जा पड़ेंगे दुख मने महशर के शब
गर न होती छाँव तेरी आह आह
क्यों बला में पड़ते तेरी बादशाह

हिकायत सुलतान महमूद

अज़ कज़ा महमूद सुलताँ को किने
एक निस देखा मगर सपने मने
पस पूछा उसने वोंही राज़े निहाँ
क्या है ऐ सुलतान तेरा हाल यहाँ
जवाब देता उनके मुज दुख देन को
नाँव मेरा करके सुल्ताँ ले नको
बोलते थे चुप अबस ग़लत
मुँज बेचारे को चुपे सुल्ताँ ग़लत
बोलना सुल्ताँ उसे है साज़ बार
सल्तनत जिसके दायम बरक़रार

कना तुझ-तेरे पास अताल-शाश्वत महशर-प्रलय का दिन राजे निहाँ-गुप्त-भेद साज बार-शोभास्पद ।

मैं तो एक बन्धा परेशाँ नर हूँ आज
नाम मुलतानी सूँ आती मुज को लाज
फट पड़ो वो सल्तनत जिसका हिसाब
जवाब देना आ लग्या है दर अज़ाब
काश के दुनिया में होता मैं गदा
तो रहता आराम सूँ व्हाँ मैं सदा
खाकरो बी सब सूँ बेहतर था मुझे
ना छतर हो तख़्त यो अफ़सर मुझे
जाब जल कर उस हुमाँ के बालो पर
ना सटे साया अपस का हीस पर

—पंछीनामा

अज़ाब-कष्ट खाकरो-भंगी जाव-जाये हीस-(?) ।

नवाज़िदा अली व शैदा हैदराबादी (१७१४)

हुआ इक दिन मुझे इलहाम अज़ ग़ैब
के तू हुसनेन का शैदा है लारैब
बड़ तुज मर्सियों का जग में है धूम
मोहिब्बान के गुलाया दिल को ज्यों मोम
किताब इक तूँ बना हिन्दी ज़बान सूँ
अँखियाँ अलम की कर अब ख़ाब से ज्यूँ
हसन वहाँ से बिदा हो कर फिरे हैं
गुज़र मोसिल के ऊपर सूँ करे हैं
उठा उस शहर का सरदार नामी
चचा मुख़्तार का साद करामी
खबर हज़रत के आने की पाया
तहायफ़ लेके इस्तक़बाल आया
कहा ताले कई हैं आज यारी
बर आई है मेरी उम्मीदवारी
के पाया मैं क़दमबोसी की दौलत
किया हासिल दो आलम की सआदत
किया तक़लीफ़ शह कूँ घर उतरने
निहायत आजिज़ी लागा है करने

अज़ ग़ैब-अदृश्य (भगवान्) की ओर से शैदा-प्रेमी लारैब-निस्सन्देह मोहिब्बान-प्रेम रखने वाला (हुब-मोहिब्ब-मोहिब्बान) गुलाया-घुलाया अलम-दुःख ख़ाब-नींद मोसिल-एक गाँव साद-नाम तहायफ़-भेंटें (तोफ़ा का ब. व.) यारी-दोस्ती बर आना-सफल होना दो आलम-दोनों लोक सआदत-सौभाग्य।

वली मोसिल में था इक शख़्स मक्कार
उठा ज़ाहिर में वह शह का हवादार
दमे इख़लास शह का मारता था
अपस्कूँ नाम पर से वारता था
तपाके दिल से कीता अर्ज आकर
के ऐ सरदफ़्तर आल पयम्बर
अगर मुज जानते बन्दा हूँ बेज़र
चलो मुज घर कतैं तशरीफ़ लेकर
हसन के देख उसकी जोश दिल
किये हैं घर में उसके जाके मंजिल
हुए मशहूर ये सारे जहाँ में
के उतरे शह फलाने के मकाँ में
ख़बर सुन सामयीन ने मिलके सारे
कल्हा भेजे हैं उसकूँ दे.........
खिलाता है **हसन** कूँ ज़हरा कर तूँ
तुझे देते हैं, जो चहता है ज़र कूँ
तमा दुनिया की ज़र पर कर वह बदज़ात
उठाया दीन सें इकबारगी हात

दरबयान दादन ज़हर दुश्मन दोस्तनुमाँ बाश्रान जनाब हिदायत इन्तमा

शह-बादशाह हवादार-हितू इख़लास-शिष्टाचार (ख़लूस का. ब. व.) अपसकूँ-अपने आपको तपाके दिल-हार्दिक कीता-किया आल-लड़की की सन्तान पयम्बर-पैगम्बर बेज़र-निर्धन फलाना-अमुक सामयीन-सुनने वाले कल्हा-कहला तमा-तमाम बाश्रान-प्रतिष्ठित इन्तमा-देने वाला।

नवाज़िदा अलीखां शैदा हैदराबादी

न बूझो तुम के यह सर्व खुश रंग
चमन उँगली रखा दातों में हो दंग
लगे गुलशन पे अजबस गम केहोल्याँ
हुए पुर खून कुल मेंहदी के फूला
ये मातम की खिजाँ का देख शेवा
उरूसे बाग़ हो गई आज बेवा
चमन पर देख कर उस दुख का पहाड़
दिया है खोल बालां सर्व शमशाद
देखे तब सरवर मज़लूम बेकस
बहा अखियाँ सेती आबेखा को असबस

—रोज़ोतुल इनहार

सर्व-एक वृक्ष (सरो) गुलशन-उद्यान अजबस-एकाएक होल्याँ-होली का (ब. व.) पुरखून-खून में तरबतर शेवा-तरीका उरूस-दुलहन बालाँ-बाल-का ब. व. शमशाद-एक वृक्ष, इस वृक्ष से प्रेमिका के क़द की उपमा दी जाती है सरवर-नेता मजलूम-पीड़ित (जुल्म-मजलूम) आबेखाँ-बहता-पानी, आँसू।

सैयद मुहम्मद बीजापुरी (१७२०)

अज़ीज़ां सुनो अक़ल सूँ कान धर
जो पैरो शरा के दिये यों खबर
सो ओ खोल कर यों किया हूं बयाँ
के आसानतर होवे सब पर अयाँ
जो बालक अछै आये जब सत ऊपर
मर्द होवे या हावे औरत अगर
व होने में बालिग़ हुआ उन पर फ़र्ज़
सो ईमान लिआना हुआ सब पै फ़र्ज़
अव्वल शर्त है य इ च ईमान का
सो इक़रार हर यक मुसलमान का
व अव्वल ज़बां सू च इक़रार कर
सो भई सिदक़ कर मानना दिल बेहतर
ज़बा सात कर कर अहद ऐ नेक तूं
खुदा कूं समज दिल मने एक तूं
भई जीता रहै हक़ बग़ैर जान वो
सुननहार है पन बग़ैर कान वो
कहन हार है पन ज़बाँ सूँ नहीं
अहै देखता पन अखिया सूँ नहीं
न ओ किस सरीका न कोई उसके सार
के ओ मिस्ल व मानिन्द ते है सो बहार

—ज़ादुल अवामीन

अज़ीज़ाँ-प्रिय (अज़ीज़ का ब. व.) पैरो शरा-शरा पर आचरण करनेवाला अयाँ-प्रकट य इ च-यही सिदक-सच्चाई ज़बाँ सू च-जीभ से ही अहद-प्रतिज्ञा मने-में सार-समान।

वली दकनी (१७४३)

नामे हक़ सूँ कर ज़बान कूं सर बलन्द
जान व दिल होय जिसके पढ़ते अर्ज़मन्द
नाम हक़ कूं नित ज़बान पर याद रख
दिल यही पढ़ने सूँ दायम शाद रख
शाह कारीगर क़दीम है होर हकीम
ख़ालिक़ व राज़िक व मेहरबान है रहीम
ज़ेर व बाला है जो कुछ कुदरत तमाम
ज़िन्दगी की उस सूँ हुई सूरत तमाम
बन्दगी होय उसकी सब पर फ़र्ज़ ऐन
खल्क ऊपर ज्यों सर बसर मानिन्द दैन
ओ दिया भेज हम ऊपर पढ़ने किताब
हम अपस कूँ बूजने राख्या ख़िताब
ओ जो कुछ बोल्या सो हम करना तमाम
हुकम पर दिल उसके नित धरना तमाम
ग़ैर उसके हुकम सूँ करना अमल
नफ़ा नईं नुकसान है जानो जहल
तालाब है निस दिन हमीं हैं कर क़बूल
पैरवी सूँ उम्मते हज़रत रसूल

दायम-सदा शाद-प्रसन्न ज़ेर-नीचा बाला-ऊँचा दैन-कर्ज़ ख़िताब-सम्बोधित करना जहल-मूर्खता।

शुक्र हक़ का जो धरे ऐसा इमाम
मुस्तफ़ा-सा बर्गज़ी ख़ैरूल अनाम
मेहतर व बेहतर है चन्दाँ सब ऊपर
सरवरे खातिम शहे जिन्नो बशर

—तर्जुमानामे हक़

इमाम-बड़ा, नेता बर्गज़ी-पवित्र, प्रिय ख़ैरुल इनाम-पवित्र नाम वाला, नाम अनाम (ब. व.) मेहतर-महापुरुष सरवर-नायक ख़ातिम-समाप्त।

शहाबुद्दीन (१७४७)

अफ़लों (?) के पास है यों नक़ल मशहूर
जिनों के दिल में है ईमान की नूर
के बाद अज़ कूच कर इस जॉ सो मीराँ
किये हैं शहर चन्द्र में ठिकाना
हुआ इस शहर में यों ग़लग़ला ज़ोर
के आया एक **वली कामिल** है इस ठौर
अधिक हो फ़ारिक़ हक़ और बातिल
बने पीछे वली कोई एक **कामिल**
हुआ नहीं आज लग होर ना होयगा
अगर सब उम्र दुनिया का सिरेगा
बयान हज़रत का सुने खल्क़ वहां का
जमाँ होता अथा जमा-ए गज़ बरा (?)
सब सूँ फ़ैज़ दावत की जबाने
अधिक पा फ़ैज़ हो मजज़ूब जाने
मुबारक लब का पस खौर वो जो खावे
ओ बी मसकूर हो मजज़ूब जावें
होये वकत बयान करते नहीं जारी
मुबारक रीश पर क़तरात जारी
जब हज़रत रीशे अनवर कूं झलकते
ज कोई इस सूँ यक शह पाते

अफ़ल-(?) नक्ल-कहानी जिनों के-जिनके जॉ-संसार ग़लग़ला-शोर फारिक़-अन्तर करने वाला, (फ़र्क़ फारिक) हक़-ईश्वर बातिल-मिथ्या होर-और सिरेगा-समाप्त होगा फ़ैज़-उपकार रीश-दाढ़ी क़तरात-क़तरा अनवर-नूरयुक्त।

उन्हें से चहार दिन हो जज़बे बहोश
अपस के जात कूँ कर कर फ़रामोश
मशायख़ से अथा वह शहर मामूर
व लेकिन थे अठारा इसमें मशहूर
अगर चे कई मशायख़ज़ादगाँ थे
अठारा साहब सज्जादगाँ थे
यो सुन कर जमा हो सब पीरज़ादे
सवारों जमा कर कर होर प्यादे.
कहते हैं रोज़ चौथे अपने हज़रत
बदन पर पाये हैं तबका हरारत
शुरू होते तब इस पर हुमायूँ
जो हर साअत लगे होने कूँ अफ़ज़ूँ
तो इस हंगाम में कोई यक बिरादर
उड़ाई तन ऊपर हज़रत के चादर
मुबारक हात सूँ चादर उठा डाल
कहे वहाँ यूँ के मुज कूँ किसी हाल
के इस मोहरे के तीन आलम में दावर
है भयी वास्ते करने कूँ इज़हार
यो बन्दा जब सते रेहम में रहा है
बजुज़ फ़रमान हक़ ना कुछ कहा

से-तीन चहार-चार मशायख़-शेख का ब. व. मशायख़ज़ादगाँ-शेख पुत्र सज्जादगाँ-पीर या फकीर का उत्तराधिकारी दावर-हाकिम, न्यायकारी रेहम-गर्भ।

अछो होश्यार तुम सारे के अब तक
मेरा भी है तुमारे सूँ सुखन यक

—मसनवी फ़ैज़ेआम

सुख़न-वचन ।

आजिज़ (१७६५)

कहूँगा मैं किस्सा सुनो सब इता
कहूँगा मुफ़स्सिल कहानी जिता
अथा बादशाह एक जानी ककर
उसी ठार रहने यमन का नगर
अथा बादशाह ओ बड़ा नामदार
जिलो में चले उसको कई ताज़दार
अथी फ़ौज़ हशमत सो कई लख हज़ार
खज़ान्याँ को उसके नहीं कुछ सुमार
न उसका मुलक कोई ग़नीम ले सके
न दौलत का उसकी गिनत ले सके
वज़ीराँ अथे शाह के नामदार
ओ हर एक मुल्क के दिसे ताजदार
वज़ीराँ में यक था ओ नामी ककर
कहे शाह उसको ईमानी ककर
ओ सारे वज़ीराँ में नामी वज़ीर
के फ़रमान में उसके थे कई लख अमीर
अमीराँ वज़ीराँ हज़ाराँ हज़ार
बैठे रूबरू सब कताराँ कतार

इता-इतना मुफ़स्सिल-बिस्तार से (तफसील मुफ़स्सिल) ककर-कह कर ठार-जगह जिलो-अनुचर हशमत-वैभव, दबदबा गनीम-शत्रु वज़ीराँ-वज़ीर का ब. व. दिसे-दिखाई देता है अमीराँ-अमीर का ब. व. हज़ाराँ-हज़ार का ब. व. कताराँ-कतार का ब. व.।

सो वो बादशाह शाहआली जनाब
सख़ावत इबादत में रहता ओ आप
सख़ावत सूँ फ़ुरसत न थी एक रती
करे दान घोड़े ओ कई लख हती
किता मुल्क और माल तसर्रुफ़ करे
करम की नज़र ओ जहाँ पर धरे
सिपाही कूँ पाले अपम जान सूँ
के गुरबाँ कूँ पाले बड़े मान सूँ
बुरे काम पर शाह जाता न था
किसी के जिगर कू सताता न था
सख़ावत में ऐसा अथा नामदार
के हातिम से था ओ सरस ताजदार
अदालत में नौशेरवाँ काम का
ओ हरवक्त में नेक के काम का
सिपाहीगिरी में दिलावर ओ शाह
के रुस्तम रहे रूबरू गुमराह
कहाँ लग सना शाह की मैं कहूँ
हर एक सिफ़त में उसके कम हो रहूँ

—मसनवी आलमपनाह

तसर्रुफ़-खर्च करना (सर्फ़ तसरुफ़) ताजदार-सम्राट सना-प्रशंसा।

इसहाक़ बीजापुरी (१७७१)

क्या नस्र क्या नज़्म हर एक बात कूँ
ज़ेब व रौनक़ है खुदा के हम्द सूँ
गर्चे हू मैं आज मदहर में मुक़ाम
लेक बीजापुर है वतने क़दीम
बाप मेरा मग़फ़र व मामूर है
मां रन में जग में सब मशहूर है

तोड़ ला राखे अनारॉ होर दिये
तुरुश थे जब उनकूं फोड़े होर चुके
मुजकूं बोल्या है सबा करता हूँ शाद
काम सूं देता हू मज़दूरी ज़्याद
दिल में भी उमीद नई रखता हू मैं
सुबह कू लाता हूँ मजदूरी कतैं
ज़न कहे क्या, अक्ल तेरी मैं कहूँ
देख नादानी को तेरी दंग हू
* **रावी अख़बार दाना-ए कुहन**
यों कहा आराइशे रू-ए सुख़न

नस्र-गद्य नज़्म-पद्य हम्द-प्रार्थना लेक-लेकिन मग़फ़र-कवचधारी मामूर-नियुक्त अनारॉ-अनार का ब. व. होर-और तुरुश-खट्टे सबॉं-सब का ब. व. **शाद-प्रसन्न** कतैं-कहते है ।

* एक चतुर कथक्कड ने सम्बोधित करते हुए फबती हुई बात कही । रावी-रिवायत करनेवाला अख़बार-खबर का ब. व. दाना-चतुर कुहन-पुराना ।

जब गये **अधम** ने शाही को जब छोड़
मुल्को मालो ऐश सूँ सब दिल को तोड़

....

दख़ल इस दरगाह का है मुजको मुहाल
तोसकी के मुल्क का व्हाँ होवे खयाल
जाके पहुँचे बरतलब बादे मिसाल
था सफ़ा एक बाग़ इस अतराफ़ में
हो सुख़न मक़सूर जिस औसाफ़ में
मग़ज़े जाँ को जन्वती राहत का शमीम
याद उसका दिल के गुंचे को नसीम
अज़ क़ज़ा जब शेख गये बस्ती भीतर
नईं रहता उस बाग़ को माली मगर
धर तलब माली का बस ख़ाविन्द बाग़
ढूँढता था चश्म का लेकर चराग़
देक इब्राहीम कू की अज़ क़ज़ा
बोल उट्ठी ए मर्द मज़दूरी गदा
बाग़ इक रखता हू ज्यों बाग़े **इरम**
बाग़बाँ हो ले मेरे सूँ दस दिरम

अधम-ईरान का एक जिला दरगाह-सेवा मुहाल-मुश्किल तोसकी-ईरान का एक स्थान बरतलब-बुलाने पर बादे मिसाल-हवा की तरह सफा-स्वच्छ अतराफ़-तरफ़ का ब. व. मकसूर-संक्षिप्त औसाफ़-प्रशंसा (वस्फ़ का ब. व.) मग़ज़े जाँ-दिल लुभानेवाली शमीम-सुगन्धित हवा गुंचा-कली नसीम-प्रातःकाल-की वायु अज़ क़ज़ा-संयोगवश ख़ाविन्द-मालिक चश्म-आँख गदा-फकीर बाग़बाँ-माली दिरम-साढ़े तीन मासे का एक दिरम, एक सिक्का।

कर क़बूल इस बात कूँ ओ पाक बाज़
बाग़ में रहे ज्यों निगाह सरो सरफ़राज़
बाद केतक रोज़ क़स्दे सैर कर
साहबे बाग़ इस तरफ़ गुज़र्या मगर
देख इब्राहीम कूँ यों पुकार
तोड़ ल्या जल्दी से कोई शीरीं अनार

तोड़ ला राखे अनाराँ होर दिये
तुरुश थे जब उनको फोड़े होर चखे
पस कहा खाविन्दे बाग़ बुल अजब
यो अनाराँ तुर्श लाया क्या सबब ?
बोल उट्ठे **अधम** के मुझकू खबर
कौन शीरीं कौन है जो तुर्शतर
लेके तोड़े जो थे खूब वा साफ़
सुर्ख़तर हो पुख्त रखूँ शिकाफ़
पस कहा है बाग़ में मुद्दत सूँ तूँ
चाक कर देखा नहीं है अझूँ
बोल उट्ठा **अधम** तूँ कर ऐतबार
बाग़ पर मुझ कू दिया सब अख़्तियार
जब अमीन हो के निगहबानी करूँ
पस अमानत में ख़यानत क्यू धरूँ ?

पाक बाज़-पवित्र सर-एक ऊचा पेड़ सरफराज़-ऊँचा केतक-कितने क़स्द-इच्छा। शीरीं-मीठा पस-बस खाविन्द-मालिक बुल अजब-अत्यन्त आश्चर्यसे तुर्शतर-अधिक खट्टे सुर्खतर-अधिक लाल खूँ-लाल शिक़ाफ-तड़के हुए चाक-चाख अझूँ-अब तक अमीन-रक्षक (अमानत रखनेवाला)।

मलिके बुस्ता सुना यू बात जब
हो तग्राज्जुब बोल उठा कुछ ग्रजब
......इब्राहिम **अधम** है मगर
जोर यू करता है ग्रपने नफ्स पर
नाम ग्रपना जब सुने मर्दे खुदा
किये दिल में यहाँ तो मैं रुसवा हुग्रा
बस चले वो बाग़ सूँ फिर कर न सग
हाक मार्या बाग़बाँ तब हो बतंग
जी ज्यादा तुझ कू मैं देता हू माल
तूँ न कर यू हरगिज़ जाने का खयाल
ग्रारिफ़े हक़ फिर दिये उसकू जवाब
पारसाई का दिया मुझकू खिताब
पस जो कुछ देवे सो वह मुजकू नई
बादशाही कू देवेगा तूँ यकीं
मत बुला मुझकू मेरी ये बात कोश
मैं बदल दुनिया के नई दीं फ़रोश
बोल कर इतना क़दम रख राह पर
बर्क़ नमने हो गये ग़ैब ग्रज़ नज़र
बाद चन्दे हज़रते शेख़ शफ़ीक
वाक़िफ़े ग्रसरारे हक़ हादी तरीक़

बुस्ता-बाग़ नफ्स-लालसा मर्दे खुदा-भक्त रुसवा-बदनाम हाँक [illegible], पुकारा बतंग-तंग हो कर आरिफ़-जानने वाला हक-ईश्वर पारसाई-नेक नई-नहीं यकी-निश्चय कोश-कोशिश दीं फरोश-दीन बेचनेवाला बर्क-बिजली नमन-तरह बादचन्दे-कुछ समय बाद शफ़ीक-शफ़क्कत करनेवाला, दयालु असरार-भेद हादी-हिदायत करनेवाला तरीक-तरीका ।

देख कर **अधम** कू मुल्के **शाम** में
यू कहे तूँ बोल है किस काम में
जो उठा दर्द लेके सीने के भितर
लबे दर्या के ....
जो गये इस शहर सूँ उस शहर कूँ
सैर बादी के नमन करता फिरू
लाल हो कब कोह में करता हूँ टार
कब अछू आहू-ए सहरा का यार
देखता हू हर तरफ़ कर कर निगाह
ता मिले कईं एक लुकमा.........पाय
शायद मंजिल का ना मुखड़ा नभाय
ना करे जो कूत हासिल का तलब
याद बेहासिल है कोशिश उनकी तब
देख इक बार चश्म अपना करके बाज़
गर तुजे किस बात का है इम्तियाज़
कूत हासिल बेशुबा इन्सान है
कूत बेज़ा शिरकते शैतान है

—**रियाजुल आरफ़ीन**

लबे दर्या-नदी के किनारे   बादी-हवा   नमन-तरह   कोह-पहाड़   अछूँ-रहूं
आहू-हिरन   सहरा-जंगल (आहू ए सहरा-जंगली हिरन)   नभाय-दिखाई देना
कूत-भोजन, ग्रास   (हलाल रोटी)   बाज़-खोलना   इम्तियाज़-विवेक ।

फ़ज़ल बिन मुहम्मद अमीन (१७८१)

के फ़िलहाल उस बादशाह पास हो
तुरत जाके आन पड्या है रखवाल हो
गया बरगाह पास उसको अव्वल
कहा है यो अहवाल सारा सकल
मुहम्मद का लश्कर सो आया यहाँ
किनारे पो दरिया के है बेगुमाँ
किये है जो किश्तियां का मुंज सूँ सवाल
वले मैं छिपा रख दिया नईं निकाल
बग़ैर अज़ हुकम मैं दिया नईं उनन
रखा हूँ छिपा यक जगे कर जतन
इता बेग होशियार होना भला
नहीं तो है नज़दीक आफ़त बला

सुन्या बादशाह जब दिया उसकू जवाब
के पार होके आया है दरिया शिताब
उसे मर्ग उसका जो लाया है खेंच
न तक़दीर का किसको मालूम है पेच
ओ यो बोल ख़ुशहाल हो यक धीर
बुलाया अहै एक अपना वज़ीर
कहा बोल जा तू मुहम्मद को अब
विलायत में मेरी तू आया अजब

बारगाह-दरबार बेगुमाँ-निस्सन्देह किश्तियाँ-किश्ती का ब. व. मर्ग-मृत्यु

अबस तू ने आया ना, आना न था
पिछे में तू............न जाना न था
जिते किश्तियाँ तुज को दरकार है
उते आज मुज पास तैयार है
बहुत रोज़ से था तुमारा तलब
हुआ है यकायक सो आना अजब
इता कूच पर कूच कर चल आओ
न कुछ दिल में अपने खौफ़ लाओ
सुन्या बहुत तुम्हारी अजब सरवरी
के दावा किये है सो पैगंबरी
देखूंगा तुम्हारी करामात जो है
के है साच या भूट अलामत अहै
हजारां सो आलम के घर कर खराब
फिरा दिन को उनके उनसे शिताब
भई अब मुल्क मेरे में कर चाल तूं
जो आये है क्या बात फ़िलहाल सो
तुमारा मुजे खूब आना नहीं
इता फिर सलामत सो जाना नहीं
फ़कीरां गरीबाँ बिचारे तुम्हें
क़जाकार आये हैं नाहक तुम्हें
मेरे चार फर्ज़न्द है पहलवान
दिलावर कवी ज़ोर हैं औ जवान

अबस-बेकार इता-इतना सरवरी-नेतृत्व शिताब-शीघ्र कजाकार-संयोगवश कवी-शक्तिशाली ।

सुनेंगे मुहम्मद वो आये यहाँ
न छोड़ेंगे हरगिज़ कहूँ बेगुमाँ
भला है निकल जल्द जा ला शिताब
वगर नईं तो **मक्का मदीना** खराब
करूँगा विलायत को सारा उजाड़
जमीं पर न बाक़ी रहे कोई पहाड़
सो यो बोल तू जा हक़ीक़त अताल
तेरे पर करें कुछ तो क्या है मजाल

—जंगनामा

विलायत-पराया देश।

शाह मुहम्मद (१७७९)

के हैं पाँच अन्सर सूँ फला यो तन
के माटी होर पानी व बारा तू गिन
भई आतिश है चौथा हवा है सो पाच
हर यक यक कू सात गुन है सो साँच

× × ×

के सारी रैन और भई सारा है दिन
करे सात आज़ा सत ज़िक्र जिन
के उस ज़िक्र केरा नाम है
वही दिल में होवे सो खल्बी कहै

जो होवे.........उस ऊपर देखना
वही जान है ज़िकर रोचीकना
जो उस देखते में होवे ज़ौक़ सो
सही जान है ज़िक्र सरी सो वो
फ़रामोश कर आप उस ज़ौक़ में
खफ़ी ज़िक्र ओ ही के जानो तुमें

—रिसाला तसव्वुफ

अन्सर-मूलतत्व बारा-आकाश (?) आतिश-आग आजा-अंग (अज़ू-शरीर के संधि-स्थल, अंग, अज़ू आज़ा ब. व.) केरा-का खल्बी-दिल (ख़ल्ब-ख़ल्बी) सरी-प्रकट ख़फ़ी-गुप्त।

क़द्रे आलम (१७८४

अगर दुश्मन का जान है सख़्ततर खौफ़ नमाज़ यों तब करनी होय तो लिये खौफ़ दो टोली हो के यक दुश्मन तरफ़ होय नमाज़ में यक जा मशगूल तब होय -

व यक टोला इमान सें बा जमाअत
मुक़ीम होय तो करना है दो रकत
मुसाफ़िर होय तो यक रकत गुज़ारे
मुक़ाबिल क् तर्फ दुश्मन सिधारे
दुजा टोला करे आ इकन-ा यों
मुक़ीम होय तो दो करना अव्वल ओं
मुसाफ़िर होय तो यक रकत अदा कर
सलाम फेरे इमाम उस वक्त अपर (?)
मुक़ाबिल होय यो टोला भी जाकर
खड़े रहे रूबरू दुश्मन बराबर
नमाज़ अव्वल किये सो ओ जमात
गुज़ारे अपनी बाक़ी आपी खिरात
दुजा टोला नमाज़ अपनी भी बाक़ी
गुज़ारें बाखिरात बाक़ी-साक़ी
नमाज़े शाम यक टोला जमात
इमाम उन सात करना है दो रकात

खिरात-कुरान की आयतों का उच्चारण   बाखिरात-कुरान की आयतों के उच्चरण के साथ   बाकीसाकी-शेष ।

ओ टोला जा ग्वंड़ दुश्मन के मूं पर
जो यक रकात करें आ टोला दीगर

× × ×

नबी फ़रमाये जो औरत शरम में
जो अपने मर्द के चलते हुकम में
जो औरत मर्द कूं रखने है खुशहाल
सवाब है हक़ में उस औरत के ऊपर आल
परिंदे जानवर सारे हवा के
मछलिया पानी के सारे दरिया के
फ़रिश्ते आसमाँ के यों ई च सारे
सूरज होर चांद होर सारे सितारे
जो इस औरत को बख्शीश और रहमत
हर यक दम भेजते देते हैं इज्ज़त
जो दूसरी कोई औरत होय हरामी
मर्द का दिल दुखाती है मुदामी
दुखाती दिल ओ गुस्सा भी दिलाती
मर्द सूं रोज़ क़ज़िये जो कराती
यो सब लोग उसपो लानत भेजते हैं
मुहम्मद **मुस्तफ़ा** जो यों कते हैं
क़यामत लग जो लानत उस पो नाज़िल
दुखाते हैं जो औरत मर्द का दिल

—**फ़िक़्ह महफ़ूज़े ख़ानी**

या ई च-यों ही मुदामी-सदैव कज़िया-लड़ाई, झगड़ा, मुकद्दमा उस पो-उस पर
यों कते हैं-इस तरह कहते हैं नाज़िल-गिरने वाला ।

गुलामनबी हैदराबादी (१७९१)

ग़रीब एक शख़्स था सहरा नशीन
किस रफ्तार तकलीफ़ था मर्द दीन
न था दिन कतें उसकू आबो ताम
हुआ रात को ख़ाब बिल्कुल हराम
कही एक शब उसकी औरत उसे
मियाँ हक़ न देखे ये हालत किसे
बदन पर है बस धूप का जामा साफ़
हुआ चाँदनी का निहाली लिहाफ़
हुआ कुर्स माह कुर्स नान बासफ़ा
हो नज़दीक लीजे बगल में छिपा
नज़र आती रोटी की सूरत नही
मिला आँसुओं का पानी यकीं
सबी ख़ीश-बेगाना हमसे खफ़ा
जो थे बावफ़ा हो गये बेवफ़ा
अगर माँगिये किससे जाकर नमक
तो कहते हैं मर जा न बेहूदा बक
कहाँ तक मैं अब फ़क्रो फ़ाक़ा सहूँ
नहीं मुज में बर्दाश्त ता चुप रहूँ
ये बातों कूँ सुन सुन दिया यू जवाब
के फ़रमाये हज़रत रिसालत माब

सहरा नशीन-वनवासी आबोताम-पानी और भोजन ख़ाब-नीद शब-रात
जामा-पोशाक निहाली-तोशक (गद्दा) कुर्स-गोलाई, मण्डल माह-चाँद
नान-रोटी बासफा-साफ़ सुथरा ख़ीश-आत्मीय जन बावफा-प्रेमी बेवफा-प्रेमहीन
फ़क्रो फ़ाक़ा-भूख रिसालत माब-प्रतिष्ठित, मुहम्मद की उपाधि ।

क़िनायत अजब गंज है पायदार
फ़ना जिसको हरगिज़ नहीं दोसदार
ऐ बीबी उसे कर ख़ुशी से कबूल
के ख़ुशनूद जिससे ख़ुदा और रसूल
खफ़ा हो कहे सुन ऐ छोटे मियाँ
क़िनायत का बस नाम है बर जबाँ
क़िनायत के तो हर्फ़ सीखा तमाम
अमल उसका आता नहीं मर्द खाम
किनायत तो गंजे रवाँ है यक़ीं
तुजे हाय रंजे रवाँ है यक़ीं
ये तकरार को छोड़ होशियार हो
अब इस नींद कू तुज के बेदार हो
शिताबी से कुछ कूत की फ़िक्र कर
ये बातों से नई फ़ायदा रख खबर

कहा क्या है मतलब ऐ बीबी तो बोल
मक़ासिद के मोती शिताबी से रोल
कहीं बेखबर कुछ तुजे नई खबर
के है पास एक बादशाह दादगर
के बन्दा है जिस दर का हातम सखी
बख़ीलों को जग से किया है नफ़ी

किनायत-सन्तोष गंज-खज़ाना फना-नाश दोसदार-मार्थी खुशनूद प्रसन्न खाम-कच्चा गंजेरवाँ-बहनेवाला खजाना कूत-भोजन रोर-रोल दादगर-न्यायी सखी-उदार बखील-कंजूस नफ़ी-समाप्त ।

हुए बहरो कान उसकी बख़्शीश से साफ़
करे कोई तक़सीर हो सब माफ़
करम का किया उसने गायत बुलन्द
गया जो के मुफ़लिस हुआ अर्जमन्द
दर उसका यकीं किब्ल ए हाज़ात है
रवाँ क़ाफिला रोज़ और रात है
अरब और अजम तुर्को ताजिक व रूम
है सारे जहाँ में सखावत से धूम
वो बहरे करम है व आबे हयात
हुए ज़िन्दा इन्सो व हैवाँ नबात
शहन्शाहे बगदाद है वो करीम
चला जा शिताबी न कर तरसो बीम
करे पल में मुफ़लिस कते वो अमीर
है उफ्तादगा का सदा दस्तगीर
मिलेगा अगर उससे होगा तू शाह
करे एक नज़र जावे हाल तबाह
कहा किस सबब से मैं जाऊँ वहाँ
मिले किस बहाने से शाहे शहा
कोई चाहे हीला मिलने कते
बजुज़ वास्ता मिलना कुछ ख़ूब नई

बहरो कान-समुद्र और खान गायत-झगड़ा किब्ल ए हाजात-जरूरतो को पूरा करने वाला अजम-एशिया बहरे करम-दया का सागर आब हयात-अमृत नबात-पेड़ करम-दया (करीम) तरसो बीम-डर और उम्मीद उफ्तादगों-गरीब दस्तगीर-हाथ पकड़ने वाला तबाह-बर्बाद ।

करे ता ओ अल्लाह का नायब करम
हमारा सभी जाय ये दर्दो ग़म
कहे हम हैं दरवेश बरगश्त हाल
हमारी है सूरत बशक्ले सवाल
हमें काहे को चाहिए कुछ सबब
हमारी बनी शक्ल सारी तलब
लेकिन तेरी ख़ातिर ये सूझी है बात
के कोई इससे बेहतर नहीं तोफ़ाजात
हमारी सबू में है पानी भरा
बहुत अहतयाती से है वो धरा
गढ़े में हुआ जमा बरसात से
उसी में रखे हूँ छुपा रात से
ये आब ऐसा कोई मकाँ में नहीं
मकाँ क्या के बल्के जहाँ में नहीं
हर एक क़तरा उसका है गौहर मिसाल
के गौहर तो क्या बल्के कौसर मिसाल
बहुत तोहफ़े शीरीं वो खुशबू है आब
चमक में है ज्यों चश्म-ए आफ़ताब
खज़ाना भरा निसदे शाहे जहाँ
लेकिन ऐसा पानी मिलेगा कहाँ

ता-जब तक   नायब-सहायक, मुख्त्यार   बरगश्त-परेशान   दरवेश-फ़कीर
सबू-प्याला गौहर-मोती   कौसर-स्वर्ग की एक नहर   शीरीं-मीठा   निसद-निकट।

ये हदिया ले जा बादशाह वास्ते
वो रोशन लक़ा मेहरोमा वास्ते
इसीसे वो खोलेगा रोज़ा यक़ीं
शिताबी से ले जा न रह अब कहीं
नहा थी वो औरत कतैं ये खबर
बहर जारी है मिसले शकर
ये बातां कतै मर्द ने जब सुना
गुले शौक़ बागे खुशी से चुना
कहा सच कही तूने बीबी ये बात
मिले शाह को ऐसा कब तोहफ़ाजात
नमद में सबू के तैं जल्द से
है जाना मुझे दूर और पर बसे
वो तैयार की ले रवाना हुआ
इनायते खातिर बहाना हुआ
मुसल्ला बिछा उसकी ज़न बानियाज़
मिनका रब्बे सलाम दुआ दर नमाज़
इलाही सलामत ये पानी के नई
तू पहुंचा शह ज़िन्दगानी के तईं
के रोने से औरत के बा दर्द सोज़
वो दारुल खिलाफ़त को पहुँचा बरोज़

हादिया-भेंट लका-चेहरा मेहरोमा-सूरज चांद बहर-समुद्र नमद-नरम लिहाफ़ सबू-प्याला मुसल्ला-नमाज़-पढ़ने का कपड़ा ज़न-स्त्री मिनका रब्बे सलाम-तुझ पर भगवान की दया हो दारुल खिलाफ़त-राजधानी बरोज़-उस दिन।

देखा एक दरगाह अर्श इस्तबाह
भरे है वो बख़्शीश व इनाम से वाह
सभी तौर के अहले हाजत वहाँ
है हाज़िर मिले न्यामतें बेकराँ
मुसल्माँ वो काफ़िर हैं उस जा तमाम
सबों पर है इनाम क्या खासो आम
सुलेमाँ से हाज़िर हैं लेता वो मोर
सखावत से हर एक के दिल में शोर
जो हैं अहले......जवाहर लिये
जो हैं अहले माना सरायत लिये
गर्ज़ दोनों अक़साम के तालिबाँ
इनायत में मामूर थे साहबाँ
यही दम बदम चौतरफ़ से निदा
हो जिस शै का मुहताज आवे गदा
अरब आया जिस वक्त बग्बादे खैर
नक़ीबों ने देखी के है शख़्स ग़ैर
खुशी से चले आये हैं उसके पास
मिले मेहरबानी से नेको असास

अर्श इस्तबाह-गगन चुम्बी अहल हाजत-इच्छुक, याचक बेकराँ-अगणित जा-जगह सबों पर-सभी पर सरायत-प्रभाव अकसाम-प्रकार (किस्म का ब. व) तालिबाँ-इच्छुक (तलब का ब. व) मामूर-नियुक्त, कर्मरत निदा-आवाज शे-बादशाह गदा-गरीब नक़ाब-द्वारपाल, पार्षद असास-नीव, बुनियाद ।

गुलामनबी हैदराबादी

पछाने मतालिब कहैं बेमिक़ाल
अता उनका था काम पेश अज़ सवाल
लगे कहने उसे ऐ वजे उल अरब
कहां से तू आया तुझे क्या तलब
कहा मैं हूं मुफ़लिस गदा और ज़बूं
बनाओगे वजे उल अरब तब बनूं
नज़र करती है बस तुम्हारा जमाल
मेरे दिल को हासिल है फ़रहत कमाल

—मसनवी दर फ़वायद बिस्मिल्ला

कहैं-कहते हैं बेमिकाल-बिना बोले अता-दान वजे उल-आकृति ज़बूं-बुरा, फटेहाल जमाल-सौन्दर्य, वैभव फरहत कमाल-बेहद खुशी ।

मुहम्मद बाक़र आगाह (१७३९)

हैंगे इस बाब में बहुत अखबार
कुछ मैं लिखता हूं उन सते यार
है रिवयात अली से ए हमदम
बोला इस तरह सैयदे आलम
जो मुझे देवेगा अज़ीयत ग़म
मेरी इज्जत के बाब में बस तुम
हैंगी उस पर मुदाम लानत रब
होर है उसमें बशार (?) खबर इस ढब
कहा सरवर जो देवेगा आज़ार
मुजकूं दर बाबे इज्जत अतहार
वह दिया सच खुदा करें आज़ार
के कहा इस तरह से पैगंबर
जो किया जुल्म मेरे आल ऊपर
या लड़ा उनसे या दिया दुश्नाम
उस पो मौला किया बहिश्त हराम
होर कहा वह कि शाह दें यक बार
यों किया है दुआ के ए दातार
जिस को मुज बुग्ज पर सदा मन है
होर मेरे आल का वह दुश्मन है

हैंगे-हैं बाब-अध्याय, द्वार अखबार-खबर का ब. व. सते-से रिवायत-कहानी सैयदे आलम-मुहम्मद, संसार के सरदार अज़ीयत-कष्ट सरवर-नायक अतहार-पवित्र आल-लड़की की संतान दुश्नाम-कलंक उस पो-उस पर बुग्ज़-शत्रुता

दिये तो उस शख़्स को अया बहुत
और दे उस कर्ते माल बहुत
माल से उसको बस है वह तबोताब
के होय महशर में उसको तूल हिसाब
बस है यह उसको अज़ उफ़ूरे अयाल
के शयातीन हो उसके मालामाल
इब्ने मसऊद इस तरह बोला
यो कहा हमसे सरूर बोला
हैगा दोज़ख़ के चौथे बाब ऊपर
यो नविश्ता के क़हर से दावर
उसको निसदिन दखेगा ख्वार मुदाम
जो करेगा इहानते इस्लाम
होर ज़लील उस कने करेगा ख़ुदा
जो इहानत में आल के है सदा
होर रिवायत किया **इमाम हुसेन**
के कहा यो पयंबर को नैन
देवे जो मेरे नाम को दुश्नाम
उससे बेज़ार हू मैं होर इस्लाम
आयशा मोमिनान की वह मादर
बोलती है, कहा है यों सरवर

उस कनें-उसके पास से तबोताब-रंजोग़म महशर-प्रलय का दिन तूल-लम्बा चौड़ा
उफ़ूरे अयाल-बच्चों की अधिकता शयातीन-शैतान का ब. व. इब्न-पुत्र सरूर-?
बाब-द्वार नविश्ता-लिखा हुआ कहर-विपत्ति दावर-न्यायकर्त्ता इहानत-जिल्लत
आल-लड़की की सन्तान ।

हैंगे छः शख्स एसे ज़िश्ते सियर
के मैं लानत किया हूँ उनके ऊपर

—रियाजुलखया

अब सुन हाल असहाबे फ़ील
किस तरह किया हक़ उनको क़तील
क्यो कर कीता उनको मक़हूर
था सरूर का नूर व ज़हूर
है तारीख व तफसीर बहतर
के अब्रहा नामी एक था खर
यों अज्म किया था वह शैतान
ता कर देवे काबा वीरान
सात उसके थे मर्दाने कार
वे अस्प सवारा तीन हज़ार
होर फ़ील सवारा चार हज़ार
होर ऊटो का कुछ नहीं था शुमार
हर फ़ील अथा यक कोह पैकर
थी आहन की पाखर सब पर
थे जल्दी में घोड़े से जियाद
थे दौड़ में वह मानिन्द बाद

ज़िश्त-? सियर-तलवार असहाब-साहब का ब. व. कतील-निहत, जिस कत्ल किया गया फील-हाथी मकहूर-विपत्ति युक्त (कहर-मकहूर) तफ़सीर-वर्णन, कुरान की टीका अज्म-पक्का, निश्चय ता-जिससे सात-साथ अस्प-घोड़ा कोह पैकर-पहाड जैसा आहन-लोहा पाखर-कवच बाद-हवा ।

यह लश्कर लेकर वह मलऊन
मक्के का तरफ कीता है मुह
जब लोग अरब के सुन यह खबर
आ उससे लड़ हैं सबक़त कर
मक़तूल हुए है मोत उन यू
होर भागे थोड़े मक्के कू
दो तीन मरातिब वह लश्कर
जंग उससे किये नई पाये ज़फ़र
अल हासिल जब नज़दीक आया
यक क़ासिद को वहाँ दौड़ाया
बोला के तोकू मुज जानिब सूँ
सब अरबाँ के सर दफ्तर कू
है कीना हम कू इस घर सूँ
ता तोड़ टुकड़े कर उसकूँ
है दिलकी ख्वाहिश इसको इते
नई काम तुमारे जंग सते
गर दिल है तुमारा जंग ऊपर
तो फ़ील करेंगे हम यकसर
जब क़ासिद मक्के में आकर
अम्र के ऊपर कीता है नज़र

मलऊन-निन्दनीय कीता-किया सबकत-आगे बढ कर मकतूल मृत (कत्ल-मकतूल) मोत-बहुत जफ़र-विजय मरातिब-बार, (मर्तबा का ब. व.) क़ासिद-दूत तोकू-तुझ को सर दफ्तर-सरदार कीना-शत्रुता ता-इस लिए अम्र-काम।

भोत उसका किया अदब बजान
लुटपुटने लगी तब उसकी ज़बान
होर बेखुद होकर भुई पर गिरा
होर खूर खूर तब करने को लगा
जब अक़ल हुई उसकी मौजूद
उस क़हर को कीता है सजूद
बोला के तू है शेख़ मीर कुरेश
हर खूबी में है मीरे कुरेश
पस बोला के उसको सब पैगाम
सुन उसको कहा वह मीरे किराम
नईं हमको हर्गिज है वह बल
ता उससे करें हम जंगो जदल
होर मुल्क हमारा नईं है घर
इस घर का साहब है दीगर
वह तुड़वा दे गइ इस शह सू
क्या हाजत है करना हम कूं
गर देवे उसको वह कुव्वत
तो क्या है सुलतान की कुदरत
यूँ बोल उठा वह बविस्वास
होर जल्द गया उस ज़ालिम पास

अदब बजान-अदब बजाना भुई-पृथ्वी। कहर-विपत्ति सजूद-सिजदा करने वाला
मीरे किराम-बड़ा आदमी जंगो जदल-लड़ाई झगड़ा दीगर-दूसरा।

वह शह उसकी ताज़ीम किया
ले इज्ज़त हौर करीम किया
यक हाती था उस पास सुफ़ीद
थी उससे उसको सब उमीद
जिस जा वह हाती जाता था
तो फ़तह उनों को आता था
था नाम वह हाती का महमूद
नईं करता था वह शह को सजूद
उन बोला वह हाती लावो
सरदारे अरब को बतलावो
जब आया वह फ़ीले महमूद
देख उसको किया फ़िलहाल सजूद
यह देख जला सरदारे हबश
दिल बीच हुआ अपने नाखुश

बोला है क्या मतलब तेरे
वह बोला ऊटा दे मेरे
बोला है तुझे ग़म है ऊटा का
कुछ ग़म नईं पत रहमाँ का
वह बोला वाली इस घर का
है खालिक़ सब बहरो बर का

ताज़ीम-अभिवादन करीम-दयालु सुफ़ीद-सफ़ेद जा-जगह उनों को-उन्हें सजूद-(?) ऊँटा-ऊँट का ब. व. पत-प्रतिष्ठा वाली स्वामी ख़ालिक-सृष्टिकर्त्ता (खल्क खालिक) बहरोबर-समुद्र और भूमि।

वह करेगा अब इस घर को जतन
ना छोडेंगा किसको उस कन
पस ले वह किया ऊटा अपने
जल्द आया पत अल्ला कने
हात अपना रख काबा के ऊपर
बोला ए ख़ल्लाक़ अकबर
हर साहबे मंजल अपना घर
करता है जतन अज़ शर ज़रूर
यह घर है तेरा ए क़ुदरत
है तुजको सभी से ले इज्जत
यह लश्कर ले फ़ीलाँ को बहुत
आया के तुड़ावे उसको तुरत
इस बात को तू रखना है रवा
इस घर को करें तेरे वो फ़ना

इस दावत को जब खत्म किया
ले सात अपस के सबको गया
जब बैठा कोह तबरा पर
थे गिर्द उसके अरबॉ यकसर
तब अब्द मतलब बा मर्दुम
बोला के सुनो ए याराँ तुम

उस कन-उस के पास   ख़ल्लाक-उत्पन्न-करने वाला, सरजनहार   फ़ीलॉ-फ़ील (हाथी)
[illegible]   रवा-उचित   सात-साथ   कोह-पहाड़   अब्द-दास।

यह नूर जो आया काबे पर
है उसकी अलामत हमको ज़फ़र
वह लश्कर ज़ालिम रोज़ो गर
फ़ीला को चलाये काबे पर
ता मक्के में तूफ़ान करें
होर काबे को वीरान करें
महमूद कर्त तब पेश किये
होर लश्कर पीछे उसके दिये
वह हाती अपनी जागे पर
अटका है बहुत बेखुद होकर
हरचन्द चलाते थे उसकू
वह नई हिलता था जागे सूँ
जब लश्कर का था रहबर ओ
सब अटके है वहाँ हैराँ हो
इतने में हुई बलाये हवा
मुर्ग़ां अबाबीलाँ पैदा
वह मुर्ग़ां सब एकजां होकर
काबे पो ठहर गये थे यकसर
दो पाँवा में होर चोंच भितर
पकड़े थे नखूद से पत्थर
हर मुर्ग़ तब ऊपर हर सवार
यक कंकर को डाला ऐ यार

ज़फर-लाभ रोज़-मृत्यु ? रहबर पथप्रदर्शक। मुर्ग़-पक्षी अबाबीलाँ-चमगादड़ (अबाबील का ब. व.) एकजाँ-एक जगह नखूद-चना।

सर फोड़ कर उसका वह कंकरा
हाती के शिकम सते गुज़रा
लश्कर वह हुआ सब वहाँ नाबूद
को न बचा वहाँ बजुज महमूद
था अब्रहा पीछे लश्कर में
यह देख हुआ हैरान मन में
फ़िल फ़ौर हुआ है उसको जुज़ाम
जीने से किया उसको नाकाम
जल्दी वहां से भाग गया
यक पीछे उसको पीट लिया
जो हादसा मक्के में देखा
सुलतान हबश से जाको कहा
जब बात किया पूरी वह खर
वह मुर्ग़ सट्या कंकर उस पर
फ़िलहाल गया वह दोज़ख में
शह बहुत डरा उस हालत में
ले अब्द मतलब कुल अरब
आया मक्के के अन्दर तब
माल उनका जो था सब हाल किया
होर अरबों को भी उससे दिया
दो रोज़ में उन मुर्दों से
बदबू उठी है मक्के में

शिकम पेट   नाबूद-बर्बाद   बजुज-अतिरिक्त   जुज़ाम-कोढ़   पीट-पीठ, पीछा
हादसा-दुर्घटना   खर-गधा   सट्या-डाला   दोज़ख-नरक   अब्द-दास, बन्दा
हाल-विवरण ।

सरदारे अरब जा काबे कूँ
ज़ारी से कहा है **मौला** सूँ
मौला ने एक नदी भेजा
ता उनको अदम में सत लेजा
अकीती अव्वल सबको वह दूर
यह **अहमद** का था नूरे ज़हूर
हुई तबसे अरब को बी इज्ज़त
सब करने लगे शाहाने हुरमत

हश्त बहिश्त

कहता था ओ टो जहा का **मौला**
टुकड़ा है मेरे ज़िगर का **ज़ोहरा**
मैं खुश हू जो चीज़ ओ खुश है
नाखुश हू मै जिसमें ओ तुर्श है
ज़ोहरा की फ़ज़ीलत व शर्फ़ में
यही है यो **हदीस मुस्तफा** में
राज़ी है खुदा खुशी से उसकी
नाखुशी है भई नाखुशी में उसकी
दुसरी है खबर भई **मुस्तफा** सूँ
है फ़ातिमा सब ज़नान की खातून

जारी-रोना धोना अदम-अनुपस्थित अकीती-किया नूरो जहूर-चमत्कार बी-भी
हुरमत-प्रतिष्ठा ज़ोहर-मुहम्मद की पुत्री फातिमा तुर्श-कृद्ध (खट्टा)
फर्ज़ीलत-बड़प्पन, महत्व शर्फ-महत्व जनान-जन (स्त्री) का ब. व. खातून-स्त्री।

आती थी **नबी** के पास जब औ
ला ला अथा उसकू शाह आगे हो
हात उसका पकड़ जबी के ऊपर
बोसा दे बिठाता उसकूँ **बराबर**
होता था अगर **नबी** मुसाफ़िर
करता था बिदा उसकू आखिर
आता था अगर सफ़र से औ चल
जाता अथा उसके घर कू अव्वल
पूछा कोई **आइशा** को यक बार
था किसके ऊपर नबी का लिए प्यार
बोली के था फ़ातिमा के ऊपर
उस शाह का प्यार सबसे अक्सर
मर्दा में किस ऊपर अथा ले
पूछा तो **अली** बले ऊपर के
यक रोज़ नबी खुदा के प्यारे
खातून के घर तरफ़ सिधारे
था उसके ऊपर लिबास मोटा
बाला से शुतर के ए
औ देक नबी के चश्म भर आये
खातून कू तब करम से फ़रमाये

अथा-था शह-बादशाह नबी-पृ॰वी बोसा-चुम्बन मुसाफिर-यात्री [illegible]
सफ़र-यात्रा आइशा-मुहम्मद की पत्नी मर्दा-मर्द का ब॰ व॰ बालों-बाल का ब॰ व॰
शुतर-ऊँट देक-देख चश्म-आँख करम-दया।

ऐ फ़ातिमा आज जो तू कर
दुनिया के मुशफ़िकों के ऊपर
जन्नत है **सबा** के रोज़ तुजकूं
जन्नत के ज़नान की है तू खातून
करता था ओ यक दिन बा ऐहसान
खातून व **अली** के सात बाता
पूछा **अली** शाहे खल्क़ कते
ओ दोस्त भोत है तुज किन है
फ़रमाये नबी के ओ है मुजकूं
महबूब तेरा ऐ **अली** तेरे सूं

—तोहफ़तुल अहबाब और तोहतुल निसा

मुशफिक-शान्तिदायक (शफ़क़कत मुशफिक) सबा-(प्रलय ?) बा ऐहसान-उपकृत भोत-बहुत महबूब-प्रिय (हुब्ब-महबूब)।

सैयद मुहम्मद आशिक बारह आल (१८१०)

तूं दाता है तेरे यो मगते हैं सब
गवाता है तू सब यो मँगत्याँ का रब
के जे जब जिसके है दिल पै च खास
तू देता है उसकू न करता निरास
तुजे छोड़ जाते हैं दूसरे के घर
सबब जो बशरपन का हैबग्रसर
व लेकिन वहां भी थे सुभान
बशर की क्या कुदरत करे किसकू दान
जो देता दिलाता थें मेरे रब ये
यो तेरे सो ज़ाहर के हाता में सब
तूं रज्ज़ाक़ मुतलक़ तूं दातार है
तूं सत्तार, गफ्फ़ार गमख्वार है
जमीं-ग्रासमाँ होर बर्ग बहर
तेरी याद करते हैं श्यामो-सहर
व लेकिन मेरी मैं कहूं क्या मजाल
करू मैं जो तेरी खुदाई का ख्याल
ग्रजब तूं हैं हिकमत में ऐ कारसाज़
तेरा तूं च जाने यो राज़ो नियाज़

गवाता-गायन कराता है मँगत्याँ-मँगना (भिक्षुक) का ब. व. दिल पै च-दिल पर ही
बशरपन-मनुष्यता बशर-व्यक्ति सत्तार-दोषों को ढँकनेवाला ईश्वर (सत्र छिपाना)
गफ्फार-क्षमा करने वाला (गफ्र-क्षमा) सहर-भोर कारसाज़-काम करनेवाला
तूं च-तुम ही राज़ो नियाज-रहस्य ।

तू ऐसा है हिकमत में ए पाकज़ात
न करने में आती हैं तेरी सिफ़ात
के जब तू उठा **कुंज मख़फ़ी** भितर
न था किसकू मालूम क्या था मगर
के चाहा करूं आपकूं आशकार
निकल शौक़ सूँ वें च पर्दे के भार

× × ×

के याने कता है अपी यू खुदा
यो कहने पे उसके करे मिल अदा
मगर कोइ मुहब्बत रखे मुज सते
तो मै भी मुहब्बत रखूं उस सते
करे दोसती कोई मेरे सगात
तो मैं भी करूं दोस्ती उसके सात
सो मेरी मुहब्बत कू सुन ए बशर
कता हूं इसे खूब सुन होश धर
अव्वल इस मेरी दोसती कू सुन
बिजा दोसती तू मेरे सात गुन
सो पहले कसोटी ऊपर उसके कस
भई खूब देखता हूं उसे किस **अपस**
कसोटी मेरी अब सुनाता हूं तुज
यो सुन कान धर कर ज़बानी यो मुज

सिफ़ात-विशेषताएँ (सिफत का ब व.) आशकार-प्रकट वैं च-वही अपी-स्वय
सतें-से कता हूँ-कहता हूँ बिजॉ-फिर

के साँचे में इस आज़माइश के जो
के ठहरे अपस-सा नबी सू जो ओ
तो फिर उसका क्या पूछना है ए यार
ओ दोनों जहाँ का हुआ शहरयार
वले तुमकू एक दाख़िल देके हम
कते हैं सुनो मिल के सब मर्द ज़न
ओ जू करके साँचे में तीर कर
और ऊपरी कर्ते खैंचता डाल कर
वले एक दो तीन छे सात बार
जो होये उनो साँचे मे सूँ आर पार
अगर निकले उसमें ते साबूत ओ
तो ओ तीर क़ीमत का होता है जो
अगर ओ फटे या ओ तड़के ज़रा
वड़े मोल में उसके बी अंतरा
ई वे बात है इसकूँ तिस कान धर
सुनाता हूं तुज दाख़िला दे मगर
के रब की कशिश के यो साँचे में जो
रहे ठहर कर होर साबूत ओ
के जब अपने तईं यूँ करे ओ सही
तो रब होर उसमें न रह दी दुई
वले वेक आसान है या कबल
ओ करता है उसकू सो सुन तूँ अवल

शहरयार-बादशाह जन-स्त्री बी-भी कशिश-आकर्षण वले-लेकिन।

वले ओ बचा कर सुनाता है बोल
छुपाता नहीं राज़ कहता हू खोल
जो खालिस मुहब्बत करे कोई यार
तो औरत ओ पकड़, सटो उसके मार
करे फिर ज्यादा मुहब्बत कते
तो लेऊँ छीन कर उसकी दौलत कते
भई क़ायम रहे वें ओ मुजको पकड़
तो आजिज़ करूँ कुवत सू मार कर
करूँ इब्तदा उसका खाना खराब
न खाने कू रोटी न पीने कू आब
भई उस पर बी कायम रहे ओ अगर
तो फिरने लगाऊँ उसे दर—बदर
अगर सवाल भी जा करे ओ किसे
निकल लै फटकराऊ उसे
फिरे भई परेशान हो खारज़ार
जिधर जाय उधर स होय मार मार

× × ×

फ़क़ीर शेख अब्दुल क़ादर मोहिउद्दीन की प्रशंसा।

मोहिउद्दीन खिलक़त के सरफ़राज़
मोहिउद्दीन का रब पो चलता है नाज़
अजब नाज़ है ई सुनो **मोमिना**
उसे अब सो कहता हू तुमना सुना

सटो-निकाले। खारजार-दुखी खिलकत-संसार सरफराज-प्रतिष्ठित
रब पो-भगवान पर।

मोहिउद्दीन हक़ मे सवालो जवाब
हुआ सो कना हू सुनो बा अदाब
के एक रोज़ खालिक़ सो परवर दिगार
जो बातिन सू आवाज़ कर आशकार
कहा ए मोहिउद्दीन मँगो कुछ तुमें
के इस बात की आरज़ू है हमें
कहे सुनके माशूक रब्बानी जब
तेरे पास क्या है मगूं मैं ए रब
सुनो ए मुरीदा यो क्या नाज़ है
यो क्या नाज़ है होर क्या राज़ है
सुन्या हक़ मोहिउद्दीन का यो ज़बान
कहा फिर तो बहुती च हो मेहरबान
यो क्या बात कहते हो पीराने पीर
मुजे क्या जो बूजे हो तुमने हक़ीर
जो चाहो सो सब है ओ मेरे मने
खुदाई है मेरा सो मेरे कने
यो सुन कर सो रब के तरफ़ सू कलाम
दिये जवाब फिर **ग़ौसुल आज़म** ने तमाम
अहे यो बाता सुनाता है या
खुदाई कू तेरे करूं लेके क्या
सुनो ए मुरीदा तुमें खारो आम
वे परवाई हज़रत की कू दिल तमाम

खालिक-पैदा करने वाला   बातिन-आन्तरिक   माशूक रब्बानी-ईश्वरी प्रेमिका
बहुती च-बहुत ही   हकार-जलाल, घृणित   मेरे मने-मुझ मे   ग़ौस-प्रार्थना पर पहुँचने वाला ।

कहे फिर जनाबे इलाही के बीच
के होकर **मुराक़िब** में अम्बिया कू मीच
ऐ साहब **सत्तार** ऐ किर्दगार
के ऐ खालिक़ खल्क़ परवर दिगार
जो थी चीज़ मेरी सो लायके क़दर
सो ओ के च तू ने दिया बात कर
ऐसा क्या मँगू तुज कने ज़ुल जलाल
जो कहता है मागो मुजे तूं इबताल
कहा हक़ ने ऐसे ओ क्या चीज़ है
के मैं रब हू मेरे सूं सब नीज़ है
दिये जवाब फिर **ग़ौस अमजद** ने दें
नबूवत दिया तू मुहम्मद कतें
विलायत अली पर किया आशकार
दिये **दुलदुल** क्या साहबे ज़ुल्फ़ेखार
शहादत दिया भेज **हुसनेन** पर
अली फ़ातिमा के जिगर ओ नूरे ऐन पर
यो तीनों शयो तूं दिया तीन कूं
अतया क्या मगॅ माज के दीन कूं
भई इसते ज्यादा है क्या तेरे लगन
मँगो कर कता है सो ऐ ज़ुल मिनन
यो सुन ग़ौस के मुख सते बात जब
किते वक्त लग जवाब बोल्या न रब

किर्दगार-ईश्वर ओ के च-आकर ही ज़ुल-जलाल-वैभवशाली इबताल-बेकार
नीज-दूसरी चीज़ ज़ुल्फ़ेखार-तलवार नूरे ऐन-आंख की रोशनी शयों-शे का ब. व.
अतया-दान ज़ुल मिनन-उपकार करने वाला ।

कहा फिर किते वक्त के बाद फिर
अहै सच्च तुमें कहूँ ए दस्तगिर
वले अब तूँ ओ शै के सानी नहीं
जो देऊँ आतिया अब सो तेरे तईं
भला अपने दिल कूँ करो मत मलूल
रखो उस कों खोल मानिन्द फूल
मेरा नाम क़ादिर है साहबे सकत
मेरे कस ते ना हो सके **मारफत**
सो यो नाम क़ादिर का मैं तुज दिया
कुतुब ग़ौस पर तुज कूँ फ़ायक़ किया

—**इशारतुल गाफ़लीन**

दस्तगिर-(दस्तगीर), रक्षक सानी-समान मलूल-रंजीदा, दुखी (मलाल मलूल)
कादिर-सामर्थ्यशाली कस ते-शक्ति मे (कुदरत कादिर) फायक-श्रेष्ठ-अधिकारी।

वली वेल्लूरी (१८१० के लगभग)

वली अपने च ग़म में सट नको होश
उनके मातम के दरिया कूँ हैं बे जोश
अंकिया के नहर सूँ दीदे का पानी
कर ऐसे बाग़े ग़म की बाग़बानी
के महशर लग रहे ओ ताज़ा होर तर
अछे नित कुदसिया उस पर झूबर
अता खोल आह सूँ गुंचा दहन का
शहादत बोल **क़ासिम बिन हसन** का
देखे क़ासिम ने अपने भाई का मैं
जम्याँ है इस पे सारा ख़ाक होर ख़ून
सितमगर ख़ार सूँ ओ फूल-सा तन
पड़े हैं ख़ाक में हो चाक दामन
दुखो जलने लगा रूह वह रोना सब
उठ्या क़ासिम के सत में धुआँ तब
सो वई रूमीन च शह के सामने आये
अपस के दिल कु जा दर्द का सोर दिखलाये
कहे ऐ अम्मे बुजुर्गवार व मेरे
दुनियाँ होर दीन के आधार मेरे

सटना-डालना, छोड़ना अँकियाँ-आँखें दीदा-आँख महशर-प्रलय के बाद का न्याय-दिवस कुदसियों-फरिश्ते, पवित्र झूँबर-समूह दहन-मुंह गुंचा-अर्धोन्मीलित कली गुंचा दहन-सुन्दर मुख जम्याँ-जमा हुआ ख़ार-काँटा अम्म-चाचा।

मेरे पर भाई का ये सख़्त है ग़म
हुआ है जान व दिल इस ग़म सूँ बरहम
रहा नईं अब मेरे में सबर आराम
रज़ा देना बजाऊँ जाके समसाम
यो सुन कर उन शाह ने फरमाने उनकूँ
मेरा है यार इस जंगल में तूँ
मेरे भाई **हसन** की है तू निशानी
तुजे मैं क्यों करन देऊ जाँ फिशानी
रज़ा मैं क्यों तुजे देकर जलाऊँ
दिल अपने हात सूँ अपना जलाऊ
तलक क़ासिम की मा क़ासिम की ख़ातिर
निकल डेरे में आई दौड़ बाहर
पकड़ क़ासिम का दामन हात मुहकम
लगी फ़रियाद सूँ करने कूँ ला मातम
हुसेन इब्न अली के पाव पड़ कर
लगे कहने कू मल मल अपना सर
मेरे कासिम को हर हाला रखो तुम
रज़ा मैदान पै जाने देव नको तुम
गरज़ हरगिज़ रज़ा नईं पाये क़ासिम
तो वा थे फिर के घर में आये क़ासिम
अपस जानू पे सर रख ग़म सूँ शहज़ाद
बैठे थे घर में इतने में किये याद

—जंगनामा हज़रत क़ासिम

बरहम-चकित समसाम-तलवार मुहकम-मज़बूत वा थे-वहाँ से जानू-घुटना।

उमर (१८१४)

निरंजन रूप अलख निर्गुन निराकार
वही **ख़ालिक़** वही राज़िक जहांदार

अमीरान कूँ सुख़न सूँ सरफ़राज़ है
मन की इसतें वज़ीरान सय्यार है
सुखन के शमे सूँ हो बज़्म रोशन
सुखन माने के सूरत का है दर्पन
दिलों की खान का गोहर सुखन सच
ज़बान के तेग़ का जोहर सुख़न सच
सुखन सूँ मनुष्या कू शान-शोकत
सुख़न सूँ शा इरान कू मान-इज्ज़त
सुखन सूँ होवे वाज़े माज़ी व हाल
गुज़िश्त्या का समज में आवे अहवाल
सुखन सूँ नामवर होते सुखन्दाँ
सुखन के तालिबान सब होसमन्दाँ

× × ×

फ़रीदों का नवासा नस्ल होशंग
जिसे **तैम्हूर** ने था ताज व रंग
छतरधारी सकल ईरान ज़मीं का
जग-आधारी धनी ताज व नगीं का

राज़िक-पोषक (रिज़्क-राजिक) अमीरान-अमीर का ब. व. सरफ़राज़-माननीय
वजीरान-वज़ीर का ब व. सय्यार-सैर करने वाला शम-दीपक की लौ (मोमबत्ती)
गोहर-मोती वाज़े-प्रकट माज़ी-भूतकाल हाल-वर्त्तमान काल होशंग-एक बादशाह।

वज़ीर उसका अक़्ल बेदार दिल नाम
कहे हैं जिसकू तारीख़ा में निसाम
निस्ब में दो गौ फरज़न्द नग म्याँन
ज्ञानी खान्दान ....
यूँ चेहरा और यो बेदार दिलवर
अपस में यक जद थे नामावर

—मसनवी मुख़्तसरन इश्क़

स्वामी प्रसाद स्वामी (१८२४)

पाया न कभी यह दिल दीवाना किसू ने
हैरत में कोई रह लिया वीराना किसू ने
सब कुफ्र और इस्लाम के झगड़ों में हैं भूले
देखा न कभी जिस्म का बुतख़ाना किसू ने

—मजमूए अशआर

किसू ने-किसी ने बुतख़ाना-मन्दिर।

शाह मोहम्मद (१८२५)

अता फ़स्ल दुसरा मो सुन बे शग़ल
मुमकिन-उल-वजूद का बयान है नवल
मुमकिन-उल-वजूद बूज उसकू मो किये
इस ज़ाहिर वजूद के बातिन में है
यो मिएसाक के दिन मो पैदा हुआ
ऐसे रोज़ सू यो हो बिदा हुआ
हम है मुमकिन की सूरत मो बूजो असल
करे मैर सपने मने जो निकल
जो बेदारी देखी सूरत तो जान
है खतरात की बूजो मूरत मो जान
वजूद यो मो बूजो न अज़ली अहै
के अमृत की सूरत सूँ अब्दी अहै
सुनो अन्सरी तन का मज़हर है यो
सुनो बात मशहूर है, अज़हर है यो
इसराफ़ील मोक्किल सो इसका अहै
के तालुक़ यो बारी सूँ रखता अहै
सबब ओके मुमकिन के सारे फ़ेल
हर खतरात व हरकात सारे सगल

अता-प्रदान बेशग़ल-बिना मशग़ले के मुमकिन-उल-वजूद-जिसका नाश आवश्यक नहीं और जिसका अस्तित्व जरूरी नहीं। नवल-नया बातिन-छिपा हुआ है मिएसाक-प्रलय अज़ली-अनादियुक्त अब्दी-प्रलययुक्त अन्सरी-मूलतत्व से सम्बन्धित मज़हर-जाहिर करने वाला अज़हर-प्रकट मोक्किल-नियुक्त, कर्त्ता बारी-ईश्वर, नये आविष्कार करने वाला फेल-कार्य ।

जो खतरात व हरकात हर सू तमाम
यो बारी सूँ निस्बत सो रखते मुदाम
रखी ख़ासियत बावकी यो सो तन
करे सैर यो तन सो बिजली नमन
मिसाल हूर के तन यो अमृत है जान
तबा बावकी दौड़ कर कर पछान
के नफ़्स लव्वामा इसका अबयार
मलामत कर निहार अपस्को मार
के याने मलामत बदी पो जो कर
के चहता है रहने शरा के उपर
है यो **नफ़्स मोमिन** जो खासाँ के तीन
जतन कर को रखना इस बातां के नीन
है न फ़सना बी इस तन का ख़तरा सो जान
के याने शरा के मुआफ़िक सो मान
यो जैसा के ख़तरा निगाह करने का
दिया कुच कसब सूँ शिकम भरने का
दिया खुश खूराक खाने होना सो भोत
दिया वक्त बेवक्त सोना सो भोत
जो इस तोर के ख़तरे हैं सो तमाम
उनों कौन हैं जो लोग हैंगे अवाम
दिल इस तन का बूजो मुनीब कर को सब
के याने सो नेकी कद न आये जब

हरसू-प्रत्येक दिशा   बाव-वायु   नमन-तरह   तबा-विशेपता   नफ़्स लव्वामा-बुरे कामो को धिक्कारने का भाव   अबयार-(?)   ख़ासाँ-ख़ास का ब. व.   नीन-(?)   कसब-पेशा, प्राप्त करना   मुनीब-मुनीम, प्रतिनिधि   कदन-(?) ।

बदी के हुए खतरा तो तोबा करे
वहाँ खूब नेकी के ला कर धरे
खुदा के कदन मो रजू हो निहार
उस तन के मो दिल का यही कारोबार
है रूह मुताहर के इस फ़न का जान
के याने मो हरकात पो देखे मान
इस हरकात कू देख सलाह व निहार
इसे की च हरकत सूँ हरकत हुई भार
भई हैवानी भई रूह कर कर कते
के याने के सूफ़ी है अक्सर जिते
अकल कूँ इस तन की वहम करको जान
वहम बोलते मो सुनो यो बयान
क़यासे अकल सू जो जाकर गुज़र
के इरशाद सू पीर के सर बसर
कुल्ह एक वहम पकड़े खुदा की सो ज़ात
होर पाक जू चमड़ा सूँ समज हुई यो बात
समज उसकी तौहीद अफ़आली अब
के याने कहे फ़ेल उसके च सब
जू मजज़ूब के कोई शराबी ने कान
किया काट को तो दिया कोइ वे नान
भई एक आको पूछा यो किनने किया
तो बोल्या के रोटी जो जिनने दिया

मुताहर-पवित्र   सरबसर-सम्पूर्ण, सिर से पांव तक   तौहीद-एकेश्वरवाद
अफ़आली-कर्ता   मजज़ूब-दीवाना तन्मय (जज़्ब मजज़ूब) सरभंग   नान-रोटी

भई पूछ्या दिया तुजकू रोटी किनने
तो बोल्या मेरे कान काख्या जिनने
है इस तनकी राह सो तरीक़त सो ए यार
के याने चली बातिनी की सफ़ार
तमाम बन्दगी ज़ाहरी की सो कर
बाद उसके दिल बातिनी में सो धर
होकर आशना तू दूसरे तन का अताल (?)
गवाहाँ के खतर्या कू सटना निकाल
सगल याद में रब की क़ायम रहना
भई दिल की सफ़ाई में दायम रहना

—खजाने मार्फ़त

बातिनी-आन्तरिक आशना-दोस्ती, मित्र, प्रिय सटना-फेकना दायम-हमेशा ।

शाहमियाँ 'तुराब' दखनी (१८४०)

'तुराब' अब कर रक़म रंगीन बयान ओ
सुने जो खल्क़ सारा दास्तान ओ
इते ओ दास्तान कहता हूँ याग
होयेगा खल्क़ सब सुन अश्क बारॉ
भई उसके काम हैं मालूम किसकूँ
अपस का भेद नईं देता है किसकूँ
दिवाने को सियाना कर दिखाता
सियाने को दिवाना कर बताता

सुना हूँ गुलशनाबाद एक नगर था
वहाँ एक महजबीं गुलरू का घर था
निहायत हुस्न में औतार थी ओ
कुल पंचार में सरदार थी ओ
अथी यो पाकदामन पारसा नार
नमाज़ पंच वक्ता होर ज़िक्र चार
कभी नागा नहीं करती थी अक्सर
चतुर सब औरता में थी विचित्तर
खसम राज़ी रज़ामन्द सब क़बीला
न जाने औरता का मकर व हीला

रक़म-लिखना ओ-वह दास्तान-कहानी इते-इधर अश्कबारॉ-आंसू बरसाने वाला
जबी-माथा महजबी-चॉद की तरह सुन्दर गुलरू फूल की तरह सुन्दर आकृति
पंचार-? अथा-था पारसा-नेक विचित्तर-विचित्र मकर व हीला-छल कपट।

अछे हिलमिल हमेशा ओ ख़सम सूँ
के ज्यू है आशना साबित क़दम सूँ
कभी कोई नईं हुआ आज़ुर्दा ख़ातिर
अथी खुश ख़ल्क़ मो दिलबर बज़ाहर
जहाँ आवाज़ ना महरम का आवे
वो तोबा कर वहाँ सूँ अटली जावे
ऊन्चा घूंघट न सारा मुँह को खोले
न बाताँ शोख मिल शोखिया सूँ बोले
व लेकिन सरोक़द नाज़ुक बदन थी
सकल खूबाँ मने जादू नयन थी
कमान-अब्रू निगाहे खंजर पलक तीर
अदा सैफ़ दुधारा ज़ुल्फ़ जंजीर
सर पा नाज़नीन दिलदार दिलबर
बला थी, ज़ुल्म थी, ज़ालिम सितमगर
कहाँ लग उस परी रू को सराऊँ
दिल आशिक सिरा कर क्यों जलाऊँ

गया था नोकरी को उसका खाविन्द
अकेली घर में थी दिलदार दिलबन्द
हुए थे दिन जो कोई शातिर ना आया
खबर भी खैरयत की कोई न लाया

आशना-प्रिय आज़ुर्दा-दुःखी दिलबर-प्रिय बज़ाहर-प्रकट महरम-अपरिचित व्यक्ति अटली-टल कर सरोकद-सर नामक वृक्ष के बराबर जिस का कद था खूबाँ-खूब (उत्तम) का ब व. अब्रू-भौंह सैफ़-तलवार रू-आकृति सिरा-ठंडा शातिर-पत्रवाहक ।

पर उस नगर ओ गुलबदन नार
कहीं मारे गया या ओ बीमार
कहे फिर दाई को ओ यों बुला कर
बुला मुल्ला को दाई जल्द जाकर
भोत दिन सो नहीं आई खबर है
न जाने क्या सबब उनके उपर है
ओ अब लग नौकरी किसका किये नईं
जो घर की कुछ खबर हरगिज़ लिये नईं
या कई लश्कर में जा सपड़े हैं रन मे
या कई अटके हैं शौक़ व रागो रंग में
या कोई सौकन ने दिल उनका बहलाई
या किसके जा हुए हैं घर जँवाई
भोत जादूगर राँडाँ वहाँ हैं
उनो जाकर रहे चाकर वहाँ हैं
मेरे बिन यक घड़ी रहता नहीं था
मेरे बिन बात कई करता नहीं था
अता भेजा नईं झूटी किताबत
किया है जाके शायद वहाँ की औरत
किया तो खूब है जीता रहे ओ
खबर आई तो उसकी बस है देखो
सुनी यो बात सो दाई चली भार
बेचारी नार कूं करने गिरफ्तार

भोत-बहुत अबलग-अब तक सपड़ना-फँसना सौकन-सौत अता-अब तक
किताबत-पत्र व्यवहार भार-बाहर ।

जहाँ पड़ते थे लड़के भोत मे मिल
वहाँ बैठा था मुल्ला यक फ़ाज़िल
ले तसबीह हात में करता ज़िकर था
लगन के दर्द सूँ ओ बेखबर था
रखे शमला चीरा बाधे मदूर
करे सानी शरीअत काम अक्सर
सुनावे सब कर्ते मसला मसाअल
करी तसलीम जाकर उसको दाई
हक़ीक़त बोल खत लिखने बुलाई
सुना सो दाई सूँ मुल्ला ने यो बात
चला लेकर क़लम दावात सँगात
खबर बीबी को दे आया है मुल्ला
कहे बीबी उसे घर में बुला यहाँ
उनें बुत (?) घर में गोशा कर बुलाई
बिछौना करके परदे कन बिठाई
अपी बैठी सुन्दर परदे के अन्दर
बुला मुल्ला कूं अपने घर भीतर
बिठा परदे कने मु[illegible]ा बिचारा
सुनो बारी लगन का यक नज़ारा
गँवाया पारसा की पारसाई
किया जुहद व रिया की जग हसाई

पड़ते-पढ़ते भोत-बहुत फाजिल-विद्वान तसबीह-माला ज़िकर-चर्चा तसलीम-अभिवादन गोशा-पर्दा कन-पास अपी-खुद पारसा-सदाचारी पारसाई-सदाचारिता जुहद-प्रार्थना करनेवाला, परहेजगार (जाहिद-जुहद) रिया-ढोंग ।

पूछा ले हात में मुल्ला खामा
हक़ीक़त क्या लिखूं सो वो नामा
देखा तो ओ परी रू झाकती थी
ग़रूरे हुस्न में ज्यों मदमती थी
हुए एक बार जो चक चार दोनों
रहे हैरत सूँ हो लाचार दोनों
यकायक देख दीवाना हुआ तब
लगा कहने को "बोलो क्या लिखूं अब" ?

कहे ओ नाज़नी सब अपना अहवाल
न समजी ओ हुआ सो देख बेहाल
हक़ीक़त सब सुना बोली सो सुन्दर
कहा......... भी क्या लिखूँ गर
कहे भी ओ परी रो, करके तकरार
"देखो फिर क्या लिखूं" बोला गिरफ्तार
कही दो चार बार उस कर्ते तब
समज के दिल मने दीवाना है तब
देखी तो कुछ भी पड़ता न लिखता
चुपी चुप क्या लिखो कह कर बिलखता
क़लम यक हात और यक हात क़िरतास
बैठा हैरत ज़दा......परदे के है पास
कही तब दाई कू गुस्से में आकर
तू दीवाने कू क्यों लाई बुला कर ?

खामा-लेखनी उस कर्ते-उसके प्रति किरतास-कागज़ ।

गया था कीं तेरा तब होश दाई
जो ऐसे मस्त दीवाने कूँ लाई
कही तब दाई मैं लाई थी सयाना
इता दिसता हुआ उजड़ा दिवाना
भला चंगा सूँ मुल्ला ओ दिस्या तब
बिसर सब होश दीवाना हुआ अब
लगा अब के अभी में उसको शैतान
हुआ यक बारगी बदबख़्त मस्तान
हमारे शहर में था ओ ई च नामी
भोत आलम तो करता है गुलामी
मुआ सब फ़ाज़िलों में ओ बड़ा है
न जानो क्या सबब उस पर खड़ा है
है सारे मुल्क में उसका पुकारा
जो करता खूब है सदक़ा उतारा
जहा लग भोत शैतानाँ व खबीसाँ
उतरते उसके ताबीजा सों यक माँ
मुए तलपट की सब सुन कर भलाई
मोंडीकाटे को मैं लिखने बुलाई
मुए के जिव के गुन मैं जानती क्या ?
करेगा यो ककर पछानती क्या ?
कही तब दाई को दे उसको जाने
भोत आलम में हैं स्याने-दिवाने

कीं-कहाँ इता-अब, इधर दिस्या-दिखाई दिया बदबख़्त-अभागा ओ ई च-वही फ़ाज़िल-विद्वान सदका उतारा-जादू टोना ख़बीस शैतान, दुर्भाव रखनेवाला मोंडीकाटे-सिरकटे ।

कही तब दाई मियाँ तुम भार जाओ
नको चुप क्या लिखूँ कर गुल मचाओ
बुला लेउं तुम तो तब नई थे दिवाने
भले चंगे दिसे तब मुजको सयाने
यकायक क्या हुआ मैं तुम पो वारी
बिसर कर अक्ल काँ गई है तुमारी
बड़े फ़ाज़िल तुमें मुल्ला कला कर
भई किस अच्छर का पकड़ा तुमको छर
भला अब जाओ अपने घर को प्यारे
हुआ क्या तुमको मैं वारी तुमारे
बिसर शमला उठे कुमला के मुल्ला
रहा नई याद तसबी और मुसल्ला
क़लम दावात उसी जागे सारा
उठा सो 'क्या लिखू' कर हाँका मारा
चल्या ओ 'क्या लिखूँ' करता बिचारा
लगा जब इश्क़ का सैफ़ दुधारा
पड्या आलम में उसका 'क्या लिखूं' नाम ?

रहा होकर खाक गोई गुलफ़ाम
नहीं हरगिज़ कहीं खाता था खाना
था फिरता 'क्या लिखू' करता दिवाना
सुने यो बात जो शागिर्द सारे
नंगे पावों च दौड़े सब बिचारे

भार-बाहर काँ-कहाँ मुसल्ला-जिस वस्त्र पर नमाज पढते है सैफ-तलवार
गुलफाम-फूल जैसा वर्ण ।

देखे उस्ताद कते कर क़दम बोस
लगे मलने को सारे दस्ते अफ़सोस
के ऐ साहबे करम, फ़य्याज़े आलम
येता किस पास जाना दर्स को हम ?
तुमे काँ गये थे ख़त लिखने की ख़ातिर
यकायक क्या घिरा तुमन पर

— मसनवी तुराब दखनी

अरे मन मुझे बोल तेरा ठिकाना
कहाँ सू हुआ है यहाँ तेरा आना ?
न तेरा यहाँ ख्वीश ना कोई बेगाना
यहाँ सूँ कहाँ फिर तेरा होगा जाना ?
अगर तू है परदेसी जोगी सयाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

जिये लग तो जोरू बच्चे प्यार करते
मोये पर तो मुर्दा ककर जी में डरते
तेरे सात हर्गिज़ नहीं कोई मरते
तुझे गाड़ माटी में सारे बिसरते
ये ऐसा है परपंच झूटा जमाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

दस्त-हाथ येता-अब दर्स-अध्ययन ख्वीश-आत्मीय नको-मत मोये-मरने
ककर-कहकर सात-साथ ।

यह तन-मन सकल धन बदल जाने हारे
अपस कूं तू माया में ना घालना रे
सुख आनन्द सूं उसको ना पालना रे
हरेक भाँत जीने के दिन टालना रे
जो हुशियार गुनवन्त चातुर है राना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

यहा चुप तू दो दिन मुसाफिर हो आया
बराबर है तुज कूं जो अपना पराया
अबस जग के धंदे में तू शुद गँवाया
······नहीं काम आयेगा अपना पराया
बिसर जाको अपना सो वो घर पुराना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

यह माटी के तन कू तू सिंगारता की
उसे चुप खिलाता है के दूध और घी
निकल जायगा तन सूं जिस वक्त पर जी
रहेगी वह आखिर कू माटी की माटी
मिथा बूज कर चुप यह झूटा जमाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

बच्चे और जोरू न कुछ आएंगे काम
के जब मौत का तुज कूं आवेगा पैग़ाम

की-क्या। मिथा-मिथ्या बचे-बच्चे जोरू-पत्नी।

देवेगा तेरी तू च झड़ती सुब्ह शाम
बिसर जा के धंधे मनीराम का नाम
चुपी आतमाराम कर कर बहाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

रूपा और सोना तूं एक बार देखत
अकड़ता है क्यों पहन ज़र तार किसवत
सबा मार लातों से लेवेगी इज्ज़त
बिसर जावेगा तब यह धन, माल, दौलत
यह दुनिया के माल कूं ना पत्याना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

अछा देख चीरा किसी के तू सर पर
अपन कूं नहीं कर को हसरत नको कर
नहीं काम आयेगा यह हिर्स आखिर
बक़ा जान, फ़ानी तेरा यो समझ घर
मुदामी समझ कर इसका ठिकाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

यह संसार सूं हात धोना है आखिर
सगे-सोदरे मिलको रोना है आखिर
क़बर में अकेला च सोना है आखिर
तुझे खाक़ दर खाक़ होना है आखिर

तू च-तू ही। किसवत-पोशाक सबा-(प्रलय ?) हसरत लालसा हिर्स (लालसा)
बका-शाश्वत फानी-नश्वर मुदामी-शाश्वत अकेला च-अकेला ही।

··· ·· · ···लेगा देखत बिछाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

अरे मन तुझे राम का घर कते हैं
भइ पंच भूत का तुझ कू जेवर कते हैं
मुनव्वर सजा अर्श अकबर कते हैं
तेरा रुतबा सब में बुलन्दतर कते हैं
ये बस्ती सो दुनिया पो हो कर दिवाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

क़ब्र में तेरा कोई साती नहीं है
कठिन वक्त का कोई सगाती नही है
बजुज़ राम के कोई साती नही है
के जिस दिल में इश्क़ ज़ाती नहीं है
अगर इस बला से अपन कूँ बचाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

'तुराब' से तुझे काम जब आ पड़ेगा
होकर घाबरा तब निपट गिर पड़ेगा
तेरा तुजकू लेने का देना पड़ेगा
तू उस वक्त पर बोल किस्से लड़ेगा
जमा कर को सब माल धन का ख़ज़ाना
अरे मन नको रे नको हो दिवाना

मुनव्वर-प्रकाशमान (नूर मुनव्वर) अर्श अकबर-स्वर्ग का श्रेष्ठ प्राणी कते-कहते
साती-साथी बजुज़-अतिरिक्त ।

ऐ पंच भूत का किया है चुप इतना सांसा
घड़ी में जो तोला घड़ी में जो मासा
बेगाना करेंगे चरन से थी आसा ?
न रहिये उपासा ना रहिये उदासा
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया हात में भीक का जिसने काँसा

अमीरां सो बेहतर फ़क़ीरां कलाते
समज फ़र्श मखमल अगंबर बिछाते
मनका कोई खाय तो कोई मानिक खाते
हो कर खाक दर खाक शाही जगाते
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया हात में भीक का जिसने काँसा

जो बाँदा लंगोटा लगा खाक तन कू
दिया छोड़ एक बार जब उन वतन कू
जला इश्क़ की बात में मालो धन कू
रखी कास ना पास हरगिज़ कफ़न कूँ
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया हात में भीक का जिससे काँसा

गदा मांग खाता है टुकड़े घर-घर
लगा कर लँगोटा कलाता क़लन्दर

इतना सासा-इतनी झंझट झाँसा-भ्रम, कष्ट काँसा-फकीरों का कटोरा, कमण्डल
कलाते-कहलाते कास-कौड़ी गदा-भिक्षुक ।

ओढ़े गूदड़ी हौर बिछावे बगंबर
रखे फ़ख्र दायम तू शाहा के ऊपर
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झांसा
लिया हात में भीक का जिसने कॉसा

फ़क़ीरी में क्या फ़िक्र दरकार है रे
हमेशा तेरा गर्म बाज़ार है रे
ओ रज्ज़ाक़ मुतलक़ खरीदार है रे
हर यक जा पो हादी-सा दातार है रे
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया हात में भीक का जिसने कासा

न किसी के भले बोलने की खुशहाली
न परवाए तहसीन है ना डर व गाली
ना चाहें गरम लिहाफ़, ना बज़्मे निहाली
न दिल में दरद कुछ, ग़म कहत साली
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया हात में भीक का जिसने काँसा

हज़ारों सूं पेवन्द किये गूदड़ी पर
रखा नाम उसका . ...व बिस्तर

गदा-भिक्षुक बगंबर-बाघांबर दायम-स्थायी रज्ज़ाक-दाता (रिज़्क-रज्ज़ाक) हादी-ईश्वर (हिदायत-हादी) तहसीन-तारीफ़ बज़्मे निहाली-सभा को लगने वाली ।

समझता है उस कूँ व अज़ किस्वते ज़र
न किस ठग का विश्वास ना चोर का डर
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झासा
लिया हात में भीक का जिसने कॉसा

गदा काम ए बंग जिस वक्त चढ़ावे
मैं पुर्त्तगाली न खातिर में लावे
खिज्रा कर बराबर शहन्शा कलावे
ओ तकिया नशीं कईं न जावे न आवे
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झॉसा
लिया हात में भीक का जिसने कॉसा

करम सू गदा हात जिस का पकड़ते
असर मुफ़लिसी तख़्त शाही ओ चड़ते
गदा किस सू हरगिज़ न लड़ते झगड़ते
न दुनिया व दौलत कूँ देखत अकड़ते
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झॉसा
लिया हात में भीक का जिसने कासा

जो दुनिया में साबित मुहब्बे अली है
सदा उसके हक़ में फ़कीरी भली है
गदाई करे होर कलावे वली है
उसे जग की रुसवाई में कामिली है

किस्वत-पोशाक कास-कौड़ी मै-शराब करम-दया रुसवाई-जिल्लत, अपमानित कामिली-पूर्णता ।

अरे मन उसे क्या है दुनिया का झाँसा
लिया भीक का हात में जिसने कासा

दिया आज सो ओ ई च फिर देवेगा कल
नको हो तूँ चुप कल कू धोका सू बेकल
समज कर सदा बोरिया फ़र्श मखमल
'तुराब' का सुखन यह सदा जान अफ़ज़ल
अरे मन उसे क्या है दुनिया का झासा
लिया हात में भीक का जिसने कासा

सवाल तालिब

गुरुजी ओ सूक्छम का कुछ भेद पाऊँ
तुमारे चरन के तो बलिहार जाऊँ
मैं अस्तुत तुमारा तो काँ लग सराऊँ
दयावन्त दाता तुम्हारा है नाँव
मेरे पिण्ड का सब बता देव ठाव

जवाब

जो लिखने सूं नुकता भार आया
ओ ही सूक्छम अर्द मात्र कलाया
तूँ में, पिण्ड में यूँ के माता में जाया
वहां सू यहा सूक्छम नाम पाया

अफ़ज़ल-बेहतर (फाज़िल (अ) अफ़ज़ल) ओ ई च-वही सुख़न-वचन अफ़जल-सर्वश्रेष्ठ काँ लग-कहाँ तक नुक्ता-शून्य अर्द्धमात्र-अर्धमात्रा।

हुआ जमा पंचभुई का सारा माया
अहंकार का हंक चौफेर माया

प्रश्न

गुरुजी **मूलाधार** का भेद बोलो
मेरे पिण्ड के बिस्तार का भेद बोलो
ओ शै होर परस्तार का भेद बोलो
भये अनहद की हुंकार का भेद बोलो

जवाब

गुदस्थान ओ धारा चक्र चतुर्दल
रक्तवर्ना होर देव का बल
ओ है सिद्धि............मेरा फ़ज़ल
यही जी लो......सकल सवाल उस स्थल
है आधारचक्र बन्द चार अंगुल
सो इस्तदा है.................कमल

—रिसाला बारा बहार

शै-वस्तु परस्तार-प्रसार इस्तदा-दरख्वास्त, प्रार्थना फ़ज़ल-अनुग्रह।

शेख़ अब्दुल कादरी (१८७०)

मुहम्मद होकर निकल्या भार
बुरक़ा ख़ाकी कर इज़हार
पंजतन म्यानी आप रब
हर हर तन में पंजतन सब
ज़ात ख़ुदा की नूर झलक
जिव सूं पिव है देख अलग

पानी सेती हुई माटी
सारी कुदरत की भट्टी
फिर सब जाके कर उरूज
जहाँ से आया वहाँ बूज
देकर बोलूं तुज बयाँ
यो सब तुजकू होय अयाँ
मंगता है सो नफ़्स है जान
दिल समजता है सो पछान
रूह देखनहारा दूर
सोता है सो सब का नूर
होर जगाता है सो ज़ात
बूजा नहीं तो होवे घात

होर एक तुज कहूं असूल
पाँचों के हैं पाँच फूल

पंजतन-मुहम्मद, अली, फातमा, हसन, हुसेन भार-बाहर खाकी-पार्थिव रब-ईश्वर उरूज-उन्नति अयाँ-प्रकट ।

माटी का फूल तसलीम जान
पानी का फूल मुहब्बत मान
खाली का फूल है सफ़ा
यो सब बूजे तो है नफ़ा
अब में कहूँ तुजको चल
पाँचों के हैं पांच फल
माटी का फल सूँघना
पानी का फल चाखना
आग का फल देखना
बारी का फल लगना
खाली का फल सुनना
गर्ज़ सब कू है कहना
होर भी कहू तेरे संग
पान्चों के पॉन्च रंग
माटी का रंग पीला है खयाल
पानी का रंग सारा लाल
आग का रंग काला जान
बारी का रंग हर्या मान
खाली का रंग है असमान
जॅ मैं कहा सच है मान
होर भी कहूँ सुन मर्द
पान्चों के हैं पाँच दर्द
एसा करना है तुज पर
बे याद मत जाँ सर

खाली-आकाश बारी-हवा सर-निकालना।

यक दम याद होवे सदा
यक पैगंबर होवे पैदा
माटी का दर्द फोड़ा फुन्सी
पानी का दर्द सर्दी मुनी
आग का दर्द ताप हरारत है
बारी का दर्द ठण्ड और लरज़ा है
खाली का दर्द तीरक बायी
सब में कहे ऐ भाई

—रिसाले वजूदिया

क़ादिर बीजापुरी (१८९२)

करूँ मैं यहाँ ते यो क़िस्सा बयान
अजर क़िस्सा के लग जवाहर खान
कुरैश था एक मर्द मक्का के ठाँव
जो ख़ालिद अथा बिन वलीद उसक नाँव
अथे सात बेट्या न था उसकूँ पूत
ओ मोहताज था होर फ़रज़न्द सपूत
अथे तीन सो साठ तिस घर में देव
यो करता था पूजा सकल मकर देव
हुज़ूरी में देवॉ के हर रोज़ दिन
करे सात बकरे तसद्दुक़ सो उन
उनें सूँ करे तलब फ़रज़न्द ओ
अक़ीदे सूँ देवा ते दिलबन्द ओ
किते दिन गुज़र गये वले इस वज़ा
न पाया बुतां ते उनें कुच जज़ा
हुआ मेहरबान उस पर गिरहगार
हुआ है अमल खास खालिद के नार
अब एक रैन नाज़िल किया हक़ ने नूर
मगर घर पो खालिद के मानिन्द सूर
देखत सब फ़रिश्ते फ़लक के पुकार
कहे तूं हमारा है परवर दिगार

बेट्यॉ-बेटी का ब. व. तिस-उस तसद्दुक-बलि (सदका तसद्दुक) वले-लेकिन
बुतॉ-बुत (मूर्ति) का ब. व. जज़ा परिणाम गिरहगार-? नार-नारी फ़लक-आकाश।

यो क्या नूर नाज़िल फ़लक तें किया
भई काफ़िर के घर पर शर्फ़ तू दिया
जो कुच्च पूछता हू क्या रब ओ मैं
तुमें बूज सकने नहीं उस कतें
बन्दा यक चहता हू पैदा करन
मैं तिस घर बेहतर तें हुवेदा करन
अहले बैत कू ओ नफ़ा देनहार
मददगार अछे ओ मुहम्मद का यार
नबी के करें दुश्मनों पर गज़ब
कने काम होने सू ज़ाहिर अजब
सो नबी रब तें यो जब मिला यक बयान
रहे जब हो सुन, सबने अलहक़ पछान
मुहम्मद का सुन नांव ओ आरिफ़ वजूद
ओ भेजे मुहम्मद पै हरदम दुरूद

—किस्स ए शमऊन

हुवेदा-प्रकट अहले बैत-घरवाले अलहक़-भगवान से दुरूद-हज़रत मुहम्मद को सलाम भेजना।

सनती (लगभग १६१० से १६५०)

बचन का अजब मय यो है ताबनाक
फ़हमदार के गोश का जिस्म खुराक
बचन का बी साग़र सुराही अक़ल
भर्या मद फ़िरासत अज़ा में नवल
सुनो अब कता हू नवल बात यो
शहा मिस्र का हाल था घात यो
कहूँ मिश्र के शाह का अब बयान
बड़ा दादगर बासखी मेहरबान
के फ़रज़न्द यक उसकू क़ाबिल अथा
अजब हुस्न में खूब साहबे जमाल
जिस हुस्न तल दब रहे नित हिलाल
खुदा तरस होकर धरे खल्क नेक
न उस सार कोई आज के जग में देक
नित आसूदा आलम कू रक अर्ज़मन्द
पिदर कन अथा ओ सदा स्पन्द
खसूसन जो ओ मिश्र का बादशाह
ज़माने की गर्दिश करत उस तबाह
नेकी यकायक पढ़ने कबल
देखो काम किया यो लिआय अगल

मय-शराब ताबनाक-प्रकाशमान फ़हमदार-बुद्धिमान गोश-कान सागर-प्याला फ़िरासत-बुद्धि अज़ॉ-बॉंग कता हूँ-कहता हूँ दादगर-न्यायशाल हिलाल-दूज का चॉद सार-समान आसूदा-सुखी और सम्पन्न स्पन्द-उपदेश ।

सकल शहर के वे वज़ीरां तमाम
अपस सात ले कर सबी खासो आम
वगर मशावरत दिल में अपने घट
मुकर्रर बद अन्देश अन्देशे निपट
सुन्या यो खबर शाह जब भर के गोश
ओ हुशियार हो दिल में लिया के होश
चल्या हो के राही फरज़न्द व ज़न
मुसाफ़िर हो कर सट दिया जो वतन
चल्या रात दिन भोत अफ़सोस कर
अपस वक़्त पर निज अपी रोस कर
यकायक जा पोंच यक शहर पास
रह्या कर सकूनत पकड़ दिलहिरास
अपस हाल पर सख़्त रंजूर हो
रह्या दुख सते दिल के माजूर हो
क़ज़ा लिल्ला यक रोज़ शह के पिसर
निकल घर ते आया शहर के भितर
देखत वालिदेन अपने मक़मूर हाल
परेशान अपन भी फिकर लग दुबाल
सोना देक जागा उने खुश शक़ल
किया रब ने उसके ऊपर तब फ़ज़ल
के उस शहर के शाह का बाज़ छूट
निकल कर गया हद ते ओ बाज़ छूट

गोश-कान जन-स्त्री सटना-छोड़ना, फेंकना सकूनत-निवास रंजूर-दुःखी, बमिार कज़ा लिल्ला-ईश्वरादेश पिसर-बेटा वालिदेन-पिता-माता मक़मूर-नशे में मस्त दुबाल-दुगना बाज़-पक्षी।

हो दिलगीर शह बाज़ के बाज़ तब
खजिल करके वले अपना उस सबब
किया शहर में हात धर फ़िक्र कू
शग्ले दिल लगाया उसे ज़िक्र सूँ
सकल मर्दुमा उसके पाने खबर
लगे फिरने रन-बन में हर यक बशर
परागन्दा हो कर यक यक रग ढूँढन
बिखेरे यके जगए दानिया नमन

× × ×

तूँ दे साक़िया मय मुहब्बत लिबास
जो दिल मस्त लोगाँ सुने इल्तमास
यो खता मेरे फन का रुझान भर
किया भिरक (?) सू खुश यो अफ़सान तर
के जिस दिल में मामूर होय इश्क़े हक़
ऐसे जिव कू प्यारा लगे मुज वरक़
येना ए मुखन्दा हो खातिर में ले आओ
ग़रीब इस बिचारे की हिम्मत कू पाओ
दे ओ दाद हर ठार इन्साफ़ कर
कुदूरत सते दिल कतें साफ़ कर
अजब है नज़ाकत भर्या यो सुखन
के सुन ताज़ा के लें अधिक दिले चमन
सहावे मुहब्बत की बरसा के नीर
दिला आशिका के करूं ताज़ा फिर

खजिल-लजालू दानियाँ दाने इल्तमास-प्रार्थना मामूर-कार्यनियुक्त (अम्र-ममूर
सुखन्दाँ-कवि कदूरत-दुःख, मनमुटाव ।

सुख़न सादमानी का कर इब्तिदा
सुनाऊँ ले आ भार ख़ुश नवा सद
तफ़र्रुज़ सते शाहजादा निकल
चल्या कामरानी का धर दिल शग़ल
ओ फग़फूर की बारगाह बीच आ
सलाम हाजिबा कू किया तब निझा
अली की दिये उस जमाअत तमाम
के पूछ हाल उसका किये इन्तक़ाम
यहा सब अपस का कहा उन हुज़ूर
सुने बात सारी व हाजिब ज़रूर
कहे होके इक़बाल ऐ जाने मन
नसीहत सुन तू हमारा सुख़न

गुलदस्ता मसनवी सनती

इब्तिदा-आरंभ तफ़र्रुज-सैर कामरानी-आकांक्षा निझा-झुका हाजिब-द्वारपाल
इन्तक़ाम-बदला ।

इब्न निशाती (लगभग १६१० से १६६०)

थी रानी शाह की यक सतवन्ती नाँव
चन्द्र सूरज कधीं देखी न थी छाँव
कधीं दरपन में जो मुख देखे जाय
देख अपने नयन की पुतलियाँ सरमाय
कधीं पकड़ कँगोई जो खोले बाल
हया माने हो कगोई को देवे डाल
वो सत की सतवन्ती औतार नारी
सताँ का मान ·· ······ रख भारी
कधीं नज़र गिर जो पड़ती थी नयन तल
अपस के खींचती थी रुख पो आँचल

× × ×

जे कोई है बाग़बा इस फूल बन का
चमन लाता है यूँ ताज़े सुखन का
कते यक शहर मशरिक़ की कदन था
जो उसका नाव सो कंचन पटन था
कंचन का खूब उसे चौगिर्द था कोट
कंचनपुरी कूँ उस कंचन के थे कोट
हिसार उसका दरया के था खारी
दिसे खन्दक वो दरया तिस बन्धारी
कंचन की तिस पो थी तोपाँ जँबूरी
कंचन बुरजां पो कंचन की कंगूरी

कधी-कभी   मशरिक-पूर्व   कदन-तरफ़   हिसार-परिधि, घेरा।

कंचन के थे कंकर कंचन के कुंज

....

कंचन कू काल बाँधे थे हर टार
कंचन के थे महल कंचन की दीवार
कंचन तिस ऊपर तोप ज़रब ज़न
कंचन के मग़रबिया (?) थीं होर फ़लाखन
कंचन की थी ज़मीन कंचन के झाड़ा
घरा कंचन के कंचन के किवाड़ा
जिदर देखे बी कंचन था कंचन था
उसते नाम उस कंचन पटन था
बनी ऊंची थी वा जो चौफेर दिवाला
अलंग नासिक रहते थे वा ला इहा
जो होवे जब सूरज तिसका नद के पार
दिसे सब रात के आलम में आगार
गगन के तल की ऐसा शहर नादिर
नहीं देखे थे अखिया के मुसाफिर
अजब तासीर था वा की हवा का
सदा हंगाम था नश्वनुमा का
बिखरे तो ज़मीं पर वाँ के कांठे
थे फूलते पल में फूलाँ के दो फाटे
सूकी लकड़ी अगर कोई ले को गाड़े
दिल करे सबर हो साखाँ कूं काढ़े

फ़लाखन-गोफन, नासिक (?) नादिर-अद्‌भुत वाँ-वहाँ काँठे-काँटे
नश्वनुमा-बढ़ना ।

चित्र अगर कोई महल। में लिखाये
हरकत में चित्र दरहाल आवे
अगर एक क़तरा कोई उस नीर का ले
जो आजमाने के तई दरिया में डाले
पकड़ तासीर उस क़तरा सूँ······जा
अजब नहीं था मीठा होवे सो दरिया
सदा खुशहाल थे सब लोग वा के
थे खातिर जमाँ वाँ के साकिनान के
जिता लेवे भी इशरत कम था वाँ
अथा सब कुछ वले एक ग़म न था वाँ
खुशी का मेगरा — वाँ बरसता
अथा इस धात सूँ वह शहर बसता

× × ×

कंचन पटन का बादशाह की तारीफ़

अथा इस शहर में एक नामवर शाह
सुलक्खन भागवन्ता नेकतर शाह
शहाँ में जग के उसकूँ सरवरी थी
जगत के सरवराँ में बरतरी थी
इताअत में थे उसके ताजदारा
थे उसके हुकम में सब शहर यारा

साकिनान-निवासी (साकिन का ब. व.)   इशरत-आनन्द   मेगरा-बादल
सरवरी-नायकत्व ।

न कोई सानी उसे रू-ए-ज़मीं पर
सब उसके ज़त में था बहर होर बर
न कोई आवे ज़माने के सितम सूँ
सुनने कूँ लावे दिल की नाद उसकूँ
फ़लक के ज़ुल्म ते उस टिकन ज कोई आवे
सदा जिव की नमन वो परवरिश पावे
ज कोई हाता के सीपियाँ कूं पसारे
कई मतलब किये पुर मोतिया सू सारे
सिफ़त बारीकी नमने जग में था सूर
अथा बानी नमन हो ज़िक्र मशहूर
जगत था बाग़ शह ज्यों बाग़बाँ था
हमेशा ताज़ा उससू सब जहाँ था
जो कुछ धरना सो सब धरता उठा वो
समै इस धात सू करता अथा वो

दर मदह व बयान अद्ल पादशाहे कश्मीर

हिकायत एक उसते मैं सुना हूँ
ज़बाँ सूं फूल उसके मैं चुन्याँ हूँ
के यक कोई पादशाह कश्मीर में था
मुकम्मिल अक्ल होर तदबीर में था

बहर होर बर-समुद्र और पृथ्वी फलक-आकाश नमन-तरह हातों-हाथ का ब. व. सीपियों-सीपी का ब. व. पुर-पूर्ण सिफत विशेषता बागबों-माली धात-तरह समै समय हिकायत-कहानी ज़बाँ-जीभ पादशाह-बादशाह।

कते थे उसके तईं सुलतान आदिल
न था कोई सहाबती में उस मुकाबिल
रजा बिन शाह के कोई हँसने जो जावे
हया के हात तिस टुकड़े करावे
न था कुदरत जिनके बुलबुला कूँ

....

बेगाने पर नैन नरगिस जो खोले
दिलावे बाव के भोत उसकूँ झकोले
रज़ा लेकर सटें अब्रे बहाराँ
कली में बाग़ के मोतिया के हाराँ
सबा कू नईं सकत था जो हर एक सूँ
चमन ते ले परागन्दा करे बू
लगाया था अपस दिल के चमन में
व शह अपने सीने के फूल बन में
सर्व क़द उनके क़द के नौनिहाल्याँ
समन रूपाँ की कालाँ कलालाँ
चमन उस तख़्त था होर फूल था ताज
वो ऐसी धात सूँ करता अथा राज

कते थे-कहते थे सहाबती-साहबी रजा-अनुमति नरगिस-एक फूल बाव-हवा
अब्रे बहार-बरसने वाला बादल सबा-प्रभाती हवा सर्व-एक पेड़ सनम-चमेली ।

मजलिस अरास्तने पादशाह काश्मीर दर बाग़ आउर्दन बाग़बाने कुल।

मुनज्जिम अक्ल का देखा ताज़ा तक्वीम
दिया है बात सूँ उस वक्त तरक़ीम
निकल कर मेहरवा है कई शिकम ते
हो **यूनिस** की नमन वफूरे गम ते
दिया है बहरे फ़ैज़ आलम को दुरन्दाँ
हुए फूला शुगुफ्ता होर हैराँ
हज़ारा साज़ केते मुअम्मा संजी
लग्या भी कोपल्या काली करंजी
उठी थी बन मने फूला की महकार
खोले थे फूल लागे कई हर एक टार
कलिया लादी गई . ...निशान्याँ
दिसे याक़ूत की हो सुरमेदान्यां

ज़बान कुशादाने बुलबुल पेशे पादशाह व अहवाले खुद शरह दादस्त

दिलासा शाह सूँ बुलबुल जो पाया
ज़बाँ मतलब की बाता सूँ अछाया

मुनाज्जिम-ज्योतिषी (नज्म-मुनज्जिम) तक्वीम-पंचांग शिक़म-पेट वफूरे गम-बहुत दुखी शुगुफ्ता खिला हुआ फूल मुअम्मा-विचारणीय विषय कोपल्याँ-कोंपलें करंजी-करंज का वृक्ष, करंज की हरियाली से दूसरे वृक्ष की हरियाली की उपमा देते हैं याक़ूत-लाल

लग्या कहने अव्वल गुज़रे सो बाताँ
बिरह एक तैं सो यक केता सो घाताँ
मेरा था बाप सौदागर खुतन का
न था परवा उसे गंज मालो धन का
बड़ा था भोत सबाँ सौदागरा में
अथा मशहूर सालम बन्दरां में
अथा मशहूर सब सौदागरा सूँ
कते थे काफ़्ला-सालार उसकूँ
भरे थे अशरफिया मोहराँ के अंबार
ढेगाँ सूँ थे रूपे होर दीनार
मनाँ सूँ था रूपा खंडिया सूँ सोना
थे लाख्यां करोड़ अशरफिया करोड़ सू होन्ना
मतबख अतलस व मख़मल फिरंगी
.........सग़लात होर ताश नीम रंगी
सितम दो दिन जो काड्या था कडावा
पड़ी थी बन्दराँ सालिम पड़ावा
कधीं सादा लेकर आवे अरब का
कधीं शीसा लेवे जलब का हलब का

धातों-धात का ब. व. खुतन-चीन का शहर, खुतन की कस्तूरी प्रसिद्ध है गंज-खज़ाना सबों-सब ढेगों-ढेग (ढेर) का ब. व. मनों-(मन का ब. व.) खंडियों-खंडी (बीस मन की एक खंडी) का ब. व. होन्ना-हुन्न मतबख-रसोई घर (?) सग़लात-एक तरह का कपड़ा ताश ज़रीन कपड़ा बन्दरों-बन्दर (बन्दरगाह) का ब. व. कधी-कभी जलब-ऐसा व्यापार जिसमें एक शहर से सामान लेकर दूसरे नगर में बेचा जाता है हलब-श्याम का एक नगर जहाँ का आइना मशहूर है

कधीं सौदा ले जावे रूम होर शाम
कधीं जाता बंगाले पर ते आसाम
कधीं वस्त सूँ जावे अस्फ़रायन
कधीं जावे सफ़ाहान ते मदायन
कधीं तबरेज ते सरवान जावे
कधीं हमदान सूँ काशान आवे
कधीं अरमन सूँ जा..........तूस
कधीं उतरे जो यक मंजिल अछे रूस
कधीं अछता मुकाम उसका सरन्दील
कधीं शीराज़ अछता होर अर्दबील
वतन कर चन्द रोज़ अछता ख़ुतन में
कधीं दूकान खोली जा यमन में
कधीं शीराज़ सूँ जाये दमावन्द
कधीं जात बुखारे सूँ समरकन्द
कधीं काबुल पो ते लाहोर जाता
कधीं मॉडू कधीं माहोर जाता
तिजारत के भोत सो रास्तों वो
गया एक मर्त्तबा गुजरात कूँ वो
अथा मैं इस सफ़र में उसके सँगात
घड़ आया सो क्या कहूँ उस ठार पर घात
मेरा सो वक्त थी अव्वल जवानी
नवी अपड़ी थी मुँज कूँ शादवानी

अस्फ़रायन-अस्फ़हान सफ़ाहान-एक शहर मदायन-एक शहर तबरेज-ईरान का शहर

जवानी के बरस सो बीस लग भी
कहे हैं आज़रूरत ता चहल साल
परियाँ कू ही समज बेलाड़ का हाल

दर तारीफ़ दुख्तर ज़ाहद

अथी इस ठार एक ज़ाहिद कू बेटी
फ़रिश्ताखू था तिस आबिद कू बेटी
चतर चंचल सरग-कवल सुहानी
ना उसके कोई था सूरत में सानी
चन्द्र आधा कहूं क्यों मैं पिशानी
चन्द्र हर्गिज नईं ऐसा नूरानी
भौंहां कूँ क्यों कहूँ मेहराब भी कर
कहा है नूर मेहराब उनके ऊपर
कहूं क्यों उसकी पलका कू सो तीरा
नहीं हैं कोई तीरा के असीरॉ
नयन को नरगिसा कहना है नासाज़
चमन की नरगिसा में का है वो नाज़
नयन नरगिस............सो है ज़ोरी
कहा है नरगिसा में लाल डोरी
कली चम्पे की थी या सके को बोल्या
छबी उसकी यो मैं नासिक के लोल्यॉ

चहल-चालीस जाहिद-परहेजगार फ़रिश्ताखू-फरिश्तों की तरह नेक असीर-बन्दी।

कहू रुख़सार कू क्यों उसके लाला
हर एक लाले के दरम्यानी है काला
अधर कूँ लाल ते क्यो कर कहू मैं
लाल में नाज़ुकी नईं कहू मैं
दसन कूँ क्यो कहू आनारदाने
अथे इस पर दीवाने होके दाने
थुड़ी की सार जग में सेब की भी
यूँ इसमें इश्क़ का आसेब की भी
जोबन कू क्या कहूँ मैं कुब्ब ए नूर
किने भूल बेल तिस आता है अमाँ
करन का फूल के गेंदा कू कुरबाँ
कहा है करवरा में इसके आसार
सोन है कड़ोड़ाँ कू इस पे वार
कमर कूँ क्यों कहूँ इसके यो शर्ज़ा
कमर को किये सामने शर्ज़ा भी हर्ज़ा
ज कोई इस चाल कूँ हस कर कहा है
हँसों ...... पै हँस हँस कर कहा है
मैं सर ते पाव लग इस मोहिनी का
के था त्यो क्या सिफ़त कर नईं सकूँगा
हवस उस देखने का मुजकूँ अपना
तमाशा दिसे कू मेरा दिल सर उचाया
प्यारे का प्रीत प्यारा लख्या सो
प्रीत का टंड होर वारा लग्या सो

रुख़सार-कपोल थुड़ी-ठोड़ी सार-समान आसेब-प्रभाव कुब्ब ए नूर-चरम सीमा कुरबाँ-कुरबान कड़ोड़ाँ-करोड़ों शर्ज़ा-चीता वारा-हवा।

अवल था हाल कुच वाँ कुच हुआ होर
प्रीत की चपेटी लागी भोत रोज़
दरिया होके लगे नैना उबलने
लग्या जिव शमा होके जलने
जो चाल आती अथी वो चुलबुली मुज
तो होती थी सीने में गुदगुदी मुज
धुआँ आहों का सर पर बदली छाय

. . . .

कली में हुआ दिल तंगो नाशाद
हुआ टुकड़ गरेबां फूल की याद
प्रीत की आग में तन जल हुआ राक
सबूरी का मेरा दामन हुआ चाक
सो इस औतार पर मन रात बदली
तबियत की मेरी सब धात बदली
लगे कहने हरेक कोई बना को बहाना
बदी जाता फ़लाने का फ़लाना
जो उसकूं देखने का मुंज हुआ ज़ोक़
जो आया दिल में मेरे उबल शौक़
हर एक तिसल जानूं चम्बक की कली कूं
हलू छुप कर देखूं उस छलनी कूं
सीने में दम कूं अपने साद लेकर
कमर कूं अपने दामन बाँद लेकर

राक-राख धात-तरह तिसल-(?) साद-संधा, छेद।

न देखे कोई त्यों आहिस्ता डग डग
हलूँ इस काँद ते उस उस काँद कूँ लग
कर इस चन्दन बरन के घर तरफ़ मूँ
..........................तारे बखेरूँ
नित उट कर ग़म सूँ मैं वो......जा
धुँवे सूँ आह के बाँदूँ कलावाँ
करूँ हर शब में मैं नैन सूँ आब पाशी
उसासा सूँ करूँ हर.......... फ़राशी
केतन दिन कूँ पछे उमीद का सूर
मेरी बखता की नैनाँ कूँ दिया नूर
नसीबाँ मजलिसो जो आख़िर हुए यार
मेरे ताले केरा आया सो एक भार
यकायक झाक कर देखे मुँज नार
मेरी होर उसकी दीदे हुए चार
नज़र का बाज़ार या सूँ.........
हुआ मैं हुस्न के उसके रख्या टग
किया सो दश्त का आहू निकल कर
पड्या उस मुख के गुलशन में फिसल कर
उसे देख इश्क़ सू मेरा बहल्या दिल
हम दोनों के दिल रहे एक मिल
हुई सो मेहरबाँ आख़िर परी ज़ात
करूँ मैं जिस रविश वो भी करे याद

काँद-कंधा   केतन-कितने हा   फराशी-बिछौना   बखता-भाग्य   ताला-भाग्य
दीदा-आंख   दश्त जंगल   आहू-हिरण   गुलशन-बगीचा ।

कधीं मैं सर ते चलता जाऊँ उस घर
कधीं वो भी रखे पग मुँज नैन पर
कधीं चल जाऊ मैं उसके क़दम गिन
कधीं मेरा करे वह घर भी रोशन
कधीं कोई ना सुने त्यों बात करते
.........बाता इशारत सात करते
कधीं देखे यकायक दीदार
पसार आँख्यों पलक को ना पलक मार
बहर हाल इस रविश सूँ मिल हमें दो
मुहब्बत सूँ रहते थे एक दिल हो
यकायक यो खबर ज़ाहिद को अपड़ाई
यो उसकी .... खाई
नहीं कुच खूब जारी का है चाला
है जारीखोर का मूँ जग में काला
नहीं आई है जारी खुश खुदा कू
नहीं भाई है जारी **मुस्तफ़ा** कूँ
नहीं जारी **अली** ज़रा क़बूले
बुजर्गां कोई नईं जारी पे फूले
लिख्या है सो अपड़ता है व लेकिन
रहता नईं जीव रोवे होर तपे बिन
लग्या ज़ाहिद खबर सूँ तलमलाने
अपस में अब पछाड्याँ ग़म सूँ खाने

अपड़ता-प्राप्त होता है   ज़ाहिद-दुष्कर्मों से बच कर ईश्वर-उपासना करने वाला।

पड्या सो शर्म का गौहर निकल कर
दरया ग़ैरत (?) केरा आया उबल कर
ले देख आबरू जग में नमीआँ
वो जाय सवारी किये आगे जेबाँ
कहीं है जीव प्यारा है शर्म
खुदा सब का रखनहारा है शर्म
होकर सब खल्क की कसरत सूं तन्हा
किया हुजरे में हो ख़िलवत सो तन्हा
खड़ा हो एक पाँव पर हो सरो का धात
पसारा अपने दो हस्त ज्यों डाल के पात
मँग्या सूरत हमारी होने तब्दील

....

थे रहमत के खोले दिन किवाडा
खोले थे फ़ैज़ के उस ·· किवाडॉ
हुआ ज्यों तीर हो उसके सहर की
सियर में सात अम्बर में गुज़र गई
इजाबत की निशानी पर लगी सो
क़बूलियत की पेशानी पर लगी सो
रही है तूते मुज में दर्दनाकी
किये नई तूने उसकी सीना चाकी
धरूँ मैं तूत-ए संबुल की नमन ताब
व नरगिस के नमन है तू ही बेखाब

गोहर-मोती जेबॉ-सुशोभित तन्हा-एकाकी ख़िलवत-एकान्त सहर-प्रात:काल सियर-विशेषता (सीरत, सियर का ब. व. इजाबत-स्वीकृति तूत-शहतूत ।

इब्न निशाती

दुआ सूँ ख़त्म बुलबुल बात कूँ कर
कहा यूँ मुख़्तसर इस बात सूँ कर
कहू क्या मैं तुजे मालूम है सब
मेरी सो बख़्त होर तेरी नज़र अब

—फूलबन

ग़व्वासी दकनी (१६४५ के लगभग)

मीठी एक हिकायत अजब खूबतर
रिसाला मेरा खूब शहद व शकर
के एक शहर का एक था बादशाह
जहाँगीर आलम था शहन्शाह
बड़ा महरबान अदल औ शहरयार
इनको नाम उसका सो बाला कुँअर
वजीर उन कने खूब हुसन कमाल
मलिकाँ हज़ारा सू थे महल महाल
उसे कई विलायत भोत शहर थे
....
अथी उसकी बेटी थी साहबे जमाल
अथा नाम उसका सो चन्दा कमाल
था उस बादशाही में गवाल एक
इस्म उसका लोरक अथा नाम नेक
गोरू हाक एक दिन औ आता अथा
शहर की गली में सू जाता अथा
शहन्शा की बेटी झिझकी उसे
खड़ी थी सो वो देखी उसे
कही मन में क्या खूबसूरत है जान
गोरू हाँकता··· ··· . ········· ..

हिकायत-कहानी रिसाला-पुस्तिका अदल-न्यायशील शहरयार-नागरिकों की सहायता करने वाला साहबे जमाल-सौन्दर्य का धनी इस्म-नाम गोरू-गाय भैंस

खड़ी हो इशारत सू कही नेक ज़ात
कैती हू तुजे सरफ़राज़ी की बात
यो सुन बात गवाल तसलीम कर
कहा मुज पो करना महर मै के नज़र
कही सुन तू ग्वाल ए जान यार
के गोरू के पीछे अहै ख़्वार ज़ार
मेरे पास धन माल है ले मेहता
तुजे देऊँगी मैं ओ सारा जेता
वले माल सारा इहाँ ते सलूक
हमें होर नहीं, मिल को जाए मलूक
यो सुन कर कहा मेरे घर नार है
ओ सतवन्त नार आईमान औतार है
के साहब मुजे चादा होर सूर का
मेरे घर में शोला है कोहतूर का
इस्म पाक उसका कहूँ मैं टुक एक
पतिव्रत मैना सो है नाव नेक
उसे छोड़ जाना तो वाजिब नहीं
मैं भूल माल.............मुनासिब नहीं
यो सुन बात चन्दा कहे विस्तार
आपी हो खुद तुज कूँ करता है ख़्वार
तुजी का अहै कौन खूब.... .सदर
अरे गावदी क्या तू जाने क़दर

इशारत-इशारा का ब. व. कैती-कहती सरफराज-उन्नति तसलीम-अभिवादन
मै-शराब ख्वार जार-दुखी मलूक-मुल्क का ब. व. गावदी-गॅवार

जो कुच तेरी क़िस्मत सो तूँ पायगा
... .

यो सुन बात लोरक कहा शायरी
पकड़ हात मेरा करम तूँ करी
तू चन्दा मैं लोरक हूं नौकर तेरा
बला दूर करू तुज ऊपर जीवन मेरा
ले चन्दा कू चोरी सूँ बाहर हुवा
सो ओ ग़लबला जग में ज़ाहिर हुवा
सो राजा वहां का बैठ्या तख़्त पर
खबरदार उसकी ले जाये खबर
तेरी पाक दामन कूँ लोरक गँवार
बड़ा ढीट होकर किया बदमिगाल
सुन्याँ सोचा राजा हँस्या खिलखिला
कहा मेरे जिव का यो तोस्या मिला
कहा अपने लोगा कूँ मूँ खोल बात
गया चोरी कर चोर गवाल ज़ात
सो घर उसके मक़बूल यक नार है
भोत दिन सूँ उस पर मेरा प्यार है
अगर हात मेरे जो आवेगी ओ
घोल्या खुशी से मेरे दिल की यो
कहा अपने लोगों कूँ कुटनी मंगाव
ढूंडी जाको कुटनी कू यक खूब पाव
चले ढूँढते शहर नगरानगर
गये ढूँढ कर सब मुलक तल उपर

ग़लबला-शोर [illegible] सिला-प्रभाव [illegible] (कबूल मकबूल)

लेकर आ शहन्शा कूँ तस्लीम दिला
बहुत प्यार सूँ तख़्त नज़दीक बुला
कहा ल्या को मैना कूँ तू दे मुजे
बहुत माल बख़्शिश करूँगा तुजे
सुनी बात दौड़ी ओ तसलीम कर
कही उसकू ऐ बादशाह तख़्तवर
अछो उम्र दुनिया में तेरी दराज़
जो होते हैं तुज ते जगत सरफ़राज़
अगर लाक परदे अछे जिस महल
अहे नार कोई सात परदे बिचल
....गफ़लत सते भाऊंगी
तेरे सामने ल्याको दिखलाऊँगी
यो मैना तो गवाल की नार है
उसे मूंद लेना तो क्या बार है
बड़ा काम फ़रमा जो मुजकूँ सजे
है इस काम ते भोत लियानत मुजे
शहर की बुड़यान में मेरा नाँव है
मगर ज़न ज़ना में मेरा ठाँव है

—मसनवी ग़वासी दक्कनी

दराज-दीर्घ बार-विलम्ब लियानत-अपमान ।

नवाई (१६७१)

दे साकी मुजे जाम भर कर शराब
मैं जल कर बिरह ते हुआ हू कबाब
सुराही को तू कॉ ते हुई निकाल
हलीमी (?) प्याले में याकूत डाल
दीवाना हू दे जाम पुर मुजे
के बिरह दिया है धतूरा मुजे
उसी तें च करता हू दीवानगी
गवाया अक़ल अपना मैं दीवानगी
मगर मद की मस्ती सूं खामोश हू
अथा देखता है तू बेहोश हू
प्याला दिया भर के साकी निहल्ल
भमकता सूरज के नमन भलभल
पिया शाह बहराम लेकर शराब
सख्या सूं में यक दाना कबाब
बुला शाह मजलिस में सेफ़ोर कूं
दोनों भाई खुमताल खबतूर (?) कूं
नज़दीक अपने ममनद पर बिटला
किया मस्त तीनों कूं प्याला पिला
महन्दस के देह हात में जाम शाह
कहा यों ज़बान खोल बहराम शाह

हलीमी-सजा देने में देर करना (हिल्म-हलीम) उसी ते च-उसी से गवाना-खोना
बहराम-ईराक का एक न्यायशील और उदार राजा सख्या-दाता खुमताल-शराब का पात्र महन्दस-गणित जानने वाला, (हिन्सा-महन्दस)।

देखा हूँ ले ग़म ज़माने ते मैं
अपस के सो बख़्त आज़मा के तैं
यो मुद्दत भर्या मैं सो ज्यूँ आफ़ताब
किया नहीं हू यक रात सुग्व सते ख़ाब
कोई अपने हाल पर ज्यूँ अब हाल
यो जंगल में रोता है होकर निढाल
कोई बाग कूँ मारता ज़ेर कर
ज़मीन के ऊपर डालता घेर कर
कोई अपने सफ़ीर सते सक रंग
खड़े होके रहता लेकर फ़रंग
कोई सर मगर का पकड़ काट कर

....

तू हिकमत सू लकड़ी के तोते कू बात
करेगा अगर आदमी के संगात
तू फत्तरां की मछली अगर रास कर
तिरावेगा बहुत फ़न सू पानी उपर
तूँ यो सब बड़े हम जिते कर न जान
नन्हें काम थे यो समज है सो जान
खुदा कू समजना बड़ा काम है
जित काम उस काम के आगे खाम है
खुदा कू उन पड़ने के तीन चीज़ है
वो तीन चीज़ जिस नहीं सो नाचीज़ है
वाला जो तू मिल सो उस यार कूँ
के वो निपट है अपने करतार सूँ

ख़ाब-नींद बाग-शेर फ़रंग-बुद्धि,सावधानी ख़ाम-बुरा।

खुदा सूँ जो कोई निपट है उस्तवार
सो उन पर खुदा भोत धरता है प्यार
अगर तू नेका है तो मिल निपट सूँ
जो इस सार का होयगा निपट तूँ

—मसनवी बहराम गुलअन्दाम

उस्तवार-दृढ़ ।

शाह मुहम्मद हैदराबादी (१७८७ में लेखक की मृत्यु)

फ़स्ल भई कहूँ दरमियाने क़बर
दफ़न क्यों जो करना सो ओ बेखबर
क़बर कोइ खुदा वास्ते जो खुदाय
खुलासा में है वाँ महल एक भाय
लम्बे क़द बराबर सो होय बातमीज़
यो चौड़ाई में उसके अज़ीज़
जो है मुज़मिरात में सुनाया हू जान
के शक किसके तई ना पड़े तूं पछान
भई डोंगाई में होय सीने तलक
है अफ़ज़ल अछे तो ज्यादा बलक
अछे मर्द मैयत ओ या ज़न अछे
क़बर उन जो दोनों की भई यो लिखे
लहद करना उसकू सो सुन्नत है जान
सो ए शेख सुर्खी में पछान
लहद याने क़िब्ला कदन भई अन्दर
यो बाजू सो भी खोदते हैं क़बर
यो मैयत के तई उसमें धर घर (?) अज़ीज
के ढेलों से यूँ बन्द करते हैं नीज़
बिया नई तो ला कर कच्चे ईंट कू
यो तिरछाने अबन्द करते हैं मूँ

फ़स्ल-अध्याय वाँ-वहाँ मुज़मिरात-गुप्त डोंगाई-गहराई सीना-छाती
अफ़ज़ल-सर्वश्रेष्ठ बलक-बल्कि नीज़-भी।

अहै कन्ज़ के बीच सुन लेव अब
कच्ची ईंट या ब्रास है मुस्तहब

× × ×

क़यामत में एक ज़न की खातिर बिचार
गिरफ्तार होयगे सो शख्शा चहार
पिदर भाई होर मर्द चौथा पिसर
अज़ाब देखेगी वों उनों सख्ततर
सुनो ग्यारवाँ सो ज़रर का जो शै
अछे राह में तो दूर करना सुनो

—खजान ए इबादत

कंज-मुस्लिम सदाचार सम्बन्धी एक पुस्तक 'कंज उल दकायक' मुस्तहब-जो करना अच्छा है अज़ाब-विपत्ति, पाप।

सुलेमान ख़तीब

पगदण्डी (१९५३)

यक नवी आरस सरीका चुरमुरा को शम से
गाँउ के बाजू से निकल को घाट कू जाती हूँ मैं

जिनके अंगे चान-सूरज भीक के सानक हैं दो
ऐसे ऐसे आफ़ताबाँ को उठा लाती हूँ मैं
यूँ च खाली सुन को होंगे तूर के बाताँ तुमें
मू अंध्यारे आको देखो तूर बन जाती हूँ मैं
तूर बन जाती हूँ मैं जी नूर बन जाती हूँ मैं

ह्याँ पो छुपती व्हाँ निकलती खेलती जाती हूँ मैं
धान के खेताँ में जाको माँग बन जाती हूँ मैं
पीले पीले लेको घाघर जैसे सुन्ने की लकीर
लकलकाती, डोलती, गाती हुई जाती हूँ मैं

मैं कुँआरी छोरियों की एक लम्बी सास हूँ
दो दिलाँ में चुबने वाली एक बिंगी फाम हूँ
हात में जंगल के हूँ तकदीर की टेडी लकीर
कच्चा पक्का वादा हूँ मैं [illegible] आस हूँ

ये उतारा ये चढ़ावाँ, बाँसुरी का राग हूँ
मनचले गबरू जवानाँ के दिलाँ की आग हूँ
... .
वो धनक बी क्या धनक जी मैं धनक का भाग हूँ

मलकुल मौत कूँ कहो के आवे
हुकम खुदा का बजा वह लावे
जो कुछ अमर अल्लाह का उस पर
वह जो करे अब मुज पर आकर

× × ×

मुहम्मद के सम्बन्ध में अली ने कहा माना

यहाँ से निकल मक्के कूँ जाना
वह है जाय अमन अमाना
या जाना तुम हिन्दुस्तान कूँ
छोड़ना बिल्कुल अरबस्तान कूँ
नाना नबी कहते थे मज़कूर
संग दिली अरबों की मशहूर
नाना नबी अरबों में रहते
लेकिन अक्सर यों नित कहते

दोहा

मैं हूँ अरबस्तान में अरब नहीं मुज बीच
मैं नहीं हिन्दुस्तान में हिन्दी मेरे बीच

× × ×

जाय-जगह मज़कूर-विवरण (जिक्र मज़कूर) संगदिल-कठोर हृदय ।

आइकाँ बनेंगी राँडा बेगले फिरेंगे छोरे
पम्मो उटा को मॉटी डालेगे नाउँ पो तेरे

देवल मस्जिद गिराता ग चट करको हाता तुट्टो
कै-दस लगा रे तुज्जे हल्लक में फोड़े फुट्टो
मै करको तेरे टुकड़ मुल्काँ पो मेरे वारूँ
फाड्ँ कफ़न रे तेरा, डोला तेरा सवारूँ
गजरे सरीके श्याराँ तू पाड़ करको रक्ख्या
बड़ियाँ के सब निशानाँ तू हाड़ करको रक्ख्या
मुल्काँ कूँ लेको क्या तू धो को पिएँगा जालिम
अल्ला की प्यारी जानाँ मर खप को जाएँगी सालिम

बड़ियाँ-बड़ा का ब. व. हाड-बीरान

अज्ञात समय

लाला पेमचन्द श्रीवास्तव

खुदा तुज को शाही सज़ावार है
सिफत को तेरी कुछ न आकार है
तेरा नाम रोशन ज़बा पर धरे
तू बाहर व भीतर उजाला करे
मुकर्रर है दर्पन का खासा तुझे
जो जिस तौर देखे उसी त्यों सुझे
अजब कुछ है भुली-सा या खेल
कली बीज मा या के डाली भी जेल
तूने जग दिखाया पै तू ना दिखे
ज्यूं आखों से सब दिखे ना आखें दिखे
करे तू मदद तो है आसा सभी
दही को मथ पर निकलता है घी
है जिस दिल के तईं जिस मुहब्बत का लाग
मुये तक न छुटता हो चकमक की आग

सदफ़ फारसी से गुहर मुद्दा
ले अकर करनफूल हिन्दी किया

सिफ्त-बड़ाई मुकर्रर-बारबार ख़ासा-स्वभाव, विशेषता सदफ-सीप गुहर-मोती मुद्दा-गोल ।

दास्ताने ख़ाब दीदने हिन्दी

सुनो अब नये तौर की और बात
बयावार कहता हूं खूबी के साथ
जो था केदहिन्द हिन्द में बादशाह
हशम और रुतबे में पनाह
सो दस रात दस ख्वाब देखा उनें
ताज्जुबजदा हो डरा आप में
पूछ सब सयानों मे ताबीरे ख़ाब
वले किस कने साफ़ पाया न जवाब
निहायत किसीनें कहा शाह पास
है यहा एक मेहरां इसम हक़ शनास
इबादत में रहता है रोशन ज़मीर
बतावेगा ताबीर वह मर्द पीर
गया केद मेहरान के घर को तभी
बया कर उसे ख़ाब बोला सभी
अव्वल ख़्वाब बोला जो घर है बड़ा
हती एक उसमे हुआ आ खड़ा
व ख़ाने में था एक सूराख तंग
गया उसके अन्दर से बाहर मतंग

बयावार-सिलसिले से हशम-रौबदार ताबीर-फल, वर्णन वले-लेकिन केवॉ-सातवॉ आसमान, एक नक्षत्र ताबीरे खाव-सपने का वर्णन इसम-आदमी शनास-पारखी जमीर-अंत:करण मतंग-हाथी।

दोयम येके मुज तख़्त पर आन कर
जवान एक बैठा है **बाकरवफ़र**
सोयम ख़्वाब देखा जो कर पास एक
उसे खींचते थे मर्द चार नेक
न कर्पास उस ईंचने में फटी
न चारों के हाथों से चादर छुटी
चहारुम जवाँ एक प्यासा बड़ा
हुआ आँ दरिया किनारे खड़ा
किनारे पै देखा जो मछली चढ़ी
सो भागा ? मदद वहां सते उस घड़ी
लगी पीठ माही व दरयाये आब
चला भागता वह जवा हो खराब
पंजुम ख़्वाब देखा जो है इक शहर
मर्द ज़न वहां को रहें घर ब घर
सब हैं अपने अहवाल में बाफ़रह
करें काम दुनिया का बीना तरह
से शुम रात को शहर देखा अजब
मकानदार वहा के हैं बीमार सब
मगर कुछ जो हैं तन्दुरस्ती में
सो बेज़ार हैं जान से आपने
व बीमार आ आ उन भलों के मकान
करें पूछना क्यों हो बेजार जान

बाकरवफर-शानशौकत वाला सोयम-तीसरा कर्पास-कपास, चादर ईंचने-खीचने
माही-मछली आँ-उस पंजुम-पाँचवाँ अहवाल-हाल का ब. व., स्थिति
बाफरह-सन्तुष्ट, प्रसन्न बीना-चक्षुयुक्त सेशुम-छटा ।

देखा सातवें रात सपना कठिन
के घोड़ा है इक, हैं उसे दो दहन
दो मुंह से चरता है दाना व काह
व लेकिन नहीं लीद करने को राह
देखा तीन खुम आठवें ख्वाब में
है दो उसके अन्दर भरे आब में
दोतर्फ़ा से दोनों खाली के तीन
भरे हर दो जानिब से भरता है नीन
नहुम माद गाव एक लागर हक़ीर
जंगल बीच पीती है बछड़े का शीर
बच्चा भी तवाना व लागर है गाय
पिये पुर शिकम तो भी अघाय
दहम एक चश्मा है लब खुश्क तर
गिर्द उसके पानी की भीगी पथर

—तरजुमा शाहनामा

दहन-मुँह काह-घाम खुम-खुर आब-पानी नीन-? शिकम-पेट माद गाव-गाय लागर-दुर्बल हकीर-कमजोर शीर-दूध तवाना-मोटा।

अमानुल्ला

अल्ला है वह करीम कहावे
सबकों खिलावे वह नहीं खावे
आपन खावे ना कुछ पीता
बिन खाये पीये वह जीता
जीता है बिन जान जिस्म वह
ला इलाह। इल्लालाह
अल्लाह है वह **कबीर उल् अकबर**
याने बुजुर्ग है वह बरतर
बरतर सब सों बाला बुलन्द है
ला ग़म अलम इल्ला आनन्द है
आनन्द ही आनन्द है बस वह
ला इलाह। इल्लिलाह

मुहम्मद मुतवास्सित दरयाव
तीन लोक है उनकी नाव
तीन लोक की नाव का मल्लाह
पार उतारो मुहम्मद वल्लाह

इल्लालाह-नहीं है कोई पूज्य ईश्वर के अतिरिक्त कबीर-बडा उल्-का अकबर-महत्तम ला-नहीं अलम-ग़म इल्ला-मगर मुतवास्सित-(औसत, मुतवास्सित) न अधिक न कम।

दोहा

तुज कारन सरवर नबी देख अजायब हम
हफ्त अफ़लाक पर ईद है हफ्त जमीं पर ग़म

ऐसी कह हक़ ने भिजवाई
मलकुल मुल्क मौत **मदीना** आई
आकर नबी के द्वार पै ठाडे
दस्तक दे सलवात पुकारे
सूरत बन कर आराबी की
करने लगा वह नात नबी की
भीतर से इक आइ पड़ोसिन
थी **अनसार** गिरो की नेक ज़न
कहने लगी सुन ऐ आराबी
दुख में हैं वह नबी बेताबी
तू क्या कहता ऐसे दुख में
जब आइयो तब होवे सुख में
सुन कर इज़राइल जो बोले
अमर अल्ला में सुख कौन खोले
कहने लगे मैं मलकुल मौत हूँ
सब दुनियाँ को अकेला मौत हूँ

सरवर-सबसे ऊपर हफ्त-सातवां अफ़लाक-आकाश (फलक का ब. व.) मलिकुल मौत-इजराइल फ़रिश्ता दस्तक-किवाड खटखटाना सलवात (अ)-आवाज़ आराबी-जंगली, गँवार नात-तारीफ़ गिरो-समूह ज़न-औरत बेताबी-कष्टयुक्त अमद-आदेश, काम ।

लेकिन मुजको अम्र अल्लाह है
याने मुहम्मद हबीब अल्लाह है
बिन पूछे उसके घर अन्दर
मत जाना ऐ मलकुल अक्सर
वह जो बुलावे तब तू जाना
नहीं तो पीछे पग फिर आना
ऐसा हुकम अल्लाह का मुजकूं
इस कारन मैं पूछूं तुमकूं
जाकर कहो के मुहम्मद प्यारे
मलकुल मौत खड़ा है द्वारे
हुकम करो तो घर में आवे
नहीं जहा का तहाँ फिर जावे
बाहर पड़ोसन भीतर बीबी
सुनती थी वह बेटी नबी की
रोती रोती नबी कन आई
मलकुल मौत की बातें सुनाई
सुन कर नबी ने कहा के बुलाओ
मलकुल मौत कूं मुज कन लाओ
वह अल्लाह का भेजा आया
हुकम अल्लाह का मुझ पर लाया
हुकम अल्लाह से कैसे फिरूँ मैं?
उसकी रज़ा में राजी रहूं मैं
राजी रहूँ मैं रब की रज़ा में
तोबा करू मैं अपनी खता में

हबीब-मित्र मलक-फ़रिश्ता उल्-का रज़ा-मर्ज़ी ख़ता-अपराध।

मलकुल मौत कूँ कहो के आवे
हुकम खुदा का बजा वह लावे
जो कुछ अमर अल्लाह का उस पर
वह जो करे अब मुज पर आकर

× × ×

मुहम्मद के सम्बन्ध में अली ने कहा माना

यहाँ से निकल मक्के कूँ जाना
वह है जाय अमन अमाना
या जाना तुम हिन्दुस्तान कूँ
छोड़ना बिल्कुल अरबस्तान कूँ
नाना नबी कहते थे मज़कूर
संग दिली अरबो की मशहूर
नाना नबी अरबो में रहते
लेकिन अक्सर यों नित कहते

दोहा

मै हूँ अरबस्तान में अरब नहीं मुज बीच
मैं नहीं हिन्दुस्तान में हिन्दी मेरे बीच

× × ×

जाय-जगह मजकूर-विवरण (जिक्र मजकूर) संगदिल-कठोर हृदय।

फुट कर दोहे

पाये शहादत शाह हसन दुनिया छोड़े दूर
जिसे कोई छोड़ता जाकर, जाकर जाय ज़रूर

जिसके नाना का कहें कल्मा नित उठ हाय
उसके नाती कूं देखो मारा ज़हर पिलाय

आदम कब चाहते थे जन्नत छोड़ के जाय
जब दुश्मन पीछे पड़ा शैतान मलून हाय

झूठा कारोबार है झूठी सब तदबीर
साँची बात नसीब की बरहक़ है तक़दीर

दुनियादारी बावरे चलत न छूटे सो न
लिखनेहारा लिख गया मेटनहारा कौन

—गंजीन ए शोहदा

मलूम लानत किया हुआ बरहक-नि:सन्देह ।

अल्ला नाम जपो रे भाई
जो तुमें कुछ है चतुराई
अल्ला नाम जपो दिन राता
ग़ैर का छोड़ो दिल से नाता
अल्ला नाम जपो हर साँसा
जो चाहो बैकुण्ठ का बासा
अल्ला नाम से हो निस्तारा
अल्ला नाम है सब से प्यारा

अल्ला-सा दूजा नहिं कोई
जो कुछ अल्ला करे सो होई
जो कोई अल्ला का नाम जपेगा
नीडर दो जग बीच रहेगा
जो चित अल्ला साथ लगावे
तुरत मजूरी अपनी पावे

जिसने अल्ला नाम न लेना
फिसट फिसट यारो वाका जीना
जिन अल्ला से नेह न लाया
जन्म अकारथ आप गवाया
उनने बात कहे है फ़क़ीरा
....

अल्ला नाम हर दम तूँ लीजो
जब लग लसे भलाई कीजो
हर दम अल्ला नाम बिचारो
तन मन सभ अपना तुम वारो
अल्ला अल्ला हरदम भजो
अल्ला कारन सब कुछ तजो
जात भात पूछे नहिं कोय
हर को भजे सो हर का होय

माटी का एक पुतला कीना
दम नफ़क़तो जो वामे दीना
जब जे पुतला अन्दर आया
शुक्र खुदा को कह के सुनाया
यह सुन सभ अचम्भे रहे
मन में सब शर्मिन्दा भये

कूकर टेढ़ी पूँछ री कभी न सीधी होय

और न कुछ मोह से बन आई
इतनी बिनती कूक सुनाई
तू साहब सांचा है मेरा
मैं आजिज़ बन्दा हूँ तेरा
तू जो चाहे कर सो अब मोंको
पैदा किये की लाज है तोको

नफ़कतो-मैंने फूंका, फूकना आजिज़-दास।

जो तू चाहे कर मोथसा
चीरे कान को साँई हाथ

दोहा

अहद अहमद एक हैं जान खुदा के नेक
मीम अहमद का एक कर रहा एक का एक

बहुत दिनों में निकट्टू आये
पैसा एक न पूँजी लाये
घर का घोड़ा बेच कर खाया
रीते हाथों घर में आया
बेचे तेग और ढाल कटारी
मैं क्या कहूँ अल्ला की मारी
ऐसी कमाई कोई न करियो
ऐसा निकट्टू जग से मरियो
बारह मास जो बाहर रहे
क्यों ना जोरू के ताने सहे
जब जोरू से मिलने आया
अपना बीता हाल सुनाया
कहा रे जोरू मैं क्या करू ?
कब लग मैं तकदीर से लडू ?
जब तक के मैं चाकरी करी
पर उल्टी मेरी किस्मत पड़ी

अहद-एक ईश्वर अहमद-मुहम्मद ।

ऐसे नवाब की नौकरी कीनी
जिन मोक़ू एक कौड़ी न दीनी
तीन बरस मैं साथी रहा
जो दुख परा सो मैंने सहा
आखिर कुछ धन मोह न दीना
शम्शी क़मरी घटा महीना
गैर हुज़ूर में कुछ ना कहे
पैसे सभी ठिकाने रहे
जब जोरू ने यह किस्सा सुना
उठ कर उसने खूब-सा धुना
जूती का दे सर पर मारी
और लपक कर पाग उतारी
दाढ़ी पकड़ जब खींचन लागी
लप्पड़ों से मुह कूटन लागी
कलकल तोड़ी औ सर फोड़ा
मारा बहुत कह्या थोड़ा
धौल चकर जब लागी पड़ने
तोबा तोबा जब लागा करने
उँह दमादम इधर उधर
ए मेरे मिया, मैं जाऊँ किधर
खसम निकट्टू फूहड़ जो ये
कहो तो यह घर क्यों कर होये

—मूरख समझावनी

शम्शी-सौर क़मरी-चान्द्र ।

अब्दुल्ला हाशिमी

हिकायत यहाँ सुनो यक मर्द व ज़न का
उठा कहँ बाग़ कीं यक फूल बन का
उठा यक बाप यक मादर सूँ फ़रज़न्द
उनेनों कूँ न था कपड़ा सो पेवन्द
वले यक थी पुरानी फाट चादर
गदाई कूँ सो जावे पैन चादर
चले ईसा पयम्बर गुलिश्ता क
देखे वहाँ सहनफ़ (?) आदम बुताँ क
पयम्बर के कीनी आकर फ़रियादी
नबी हैं तुम खुदा के जग के हादी
हमारे पर करो कुछ फ़ैज़ बानी
निकल जावे नसीबाँ की गिरानी
क़बूले थे पयम्बर खुश वजा सूँ
मगूगा में मुनाज़ात अब खुदा सूँ
कहँ इतना सुनके हक़ सू मनाजात
ग़रीबाँ के दुआ बर लिया तूँ हाजात
सुबह पोचाऊँगा मैं सवाल का जवाब
तुम्हारे पर खोलेगा फ़ैज़ का बाब
क़बूलिया रब पयम्बर की ज़बानी
करूगा बख़्श ज़ाहिर सब निहानी

गदाई-भिक्षा मुनाजात-दुआ माँगना बर-पूर्ण हाजात-माँगना (हाजित-लालसा का ब. ब.) बाब-दरवाज़ा निहानी-गुप्त बात।

अगर शाही मँगे तो शाह करूँगा
वगर सूरत मँगे तो माह करूँगा
दुआ मग्या तुमें पैली च बारे
पयम्बर ने कहे वहाँ स सिदारे
किये औरत मर्द ने मिल फिक्र खास
हमें क्या क्या मँगे अब बोल खुदा पास
कहा ओ मर्द मैं शाही मँगूगा
जग का बादशाह होकर मरूँगा
ज़न बी बोली जो औरत ने ज़बानी
मँगूगी खूबसूरत नौजवानी
दोनों मिल कर खुशी सूँ रात सारी
गुज़र गई रैन जग पर सूर सवारी
रैन की बादशाही कर आवारा
सूरज पैदा हुआ कुहन का सितारा
दोनों मिल कर खुशी से रात सारी
किये तजबीज़ जाने नहीं सो खारी
सुबह हुई कर उठ ओ सो नार
समज म'दक़ सुबह का वई हुई बहार
वज़ू करने चली आवे रवाँ को
चली हैं खूब नाले पै घर सो
लगे करने वज़ू मिल जन्नत जोड़ा
वज़ू का सब हुआ फ़ैज़ निबोड़ा

माह-चाँद पैली च-पहले ही कुहन-पुराना खारी-अपमानित (ख़ार-अपमान)
आबे रवाँ-बहता पानी ।

अव्वल आग़ाज़ कर ज़न ने दुआ कूँ
दिया सूरत जवानी बेवफ़ा कूँ
निछल सूरत दिया बख़्शिश खुदावन्द
चन्द्र जिसकी सूरत का पाक पैवन्द
ज़माने की जितनी ख़ूबाँ हुई तल
अजब चन्द्र बदन थी पाक निर्मल
जमालाँ में सकल ओ हुस्न वाली
सो एक में वैसी सब की डाली
न थी सूरत उसकी जग में सानी
अजब था हुस्न उसका नौजवानी
न थी चन्द्रबदन काँ थी **मलेका**
नहीं **मधुमालती** काँ थी जुलेखा।
हुस्न मधुमालती का क्या बिचारा
जुलेखा ने छिपी जाली किनारा
अपसकी नौजवानी की तरंग कूँ
चलाई थी जो खूबी की अलंग कूँ
के वैसे में देखो यक बादशाह चल
सवारी के बदल आया था जंगल
खड़े सुन्दर देखा मोहन ज़माना
पेशानी जिसकी थी चन्द्र निशाना
देखो उस बादशाह के नयन के बाज़
मोहन के रूप के तोती पर परवाज़

ख़ूबाँ-उत्तम (ख़ूब का ब व.) जमाल-सुन्दर परवाज़-उड़ना।

अब्दुल हाशिम

इश्क़ की बाज़ी मार्या था लोटन
महाफ़ी में बैठा कर ले चल्या धन
मेरी औरत महाफ़ी में बिठा कर
ले जाया कर ज़बर्दस्ती सरासर
मँगूगा मैं दुआ रब के हुज़ूरी
अजब है बादशाह मेरा सबूरी
जिसम धन का तू रब मूँ जो सूर का
तूँ है मालिक मेरे ऐब्रो हुनर का
मेरा तूँ बादशाह है रब तवाना
सूर का मूँ मेरी ज़न का दिवाना

—दुर्रुल मजालिस

महाफ़ी-एक सवारी धन-स्त्री तवाना-बलवान।

यही कहते थे सब मिल या मुहम्मद
चले क्यों छोड़ हम को वा मुहम्मद
भला जब आप जन्नत को सिधारें
पयम्बर किसको हम कहके पुकारें
तब आँसू आँखों में भर लाये हज़रत
दिलासा उनके तईं फरमाये हज़रत

× × ×

अली की शहादत

जहाँ तक हैंगे वहाँ के रहने हारे
वह मेरे वास्ते रोवेंगे सारे
सिधारो घर को ए सरदारे उम्मत
तुम्हारे से मैं अब होता रुखसत
हसन रोने लगे मल हात से हात
कहे बाबा चलूँगा मैं भी अब सात
अली बोले के लेवो अब राह घर की
न आइयो तुम क़सम है मेरे सर की
सिधारो तुम तो घर को मेरे दिलदार
किया मैंने तुम्हें इस घर का मुख़्तार

वा-आह! (वाय फारसी का दुःख का उद्गार वाचक, कविता में संक्षिप्त रूप) जन्नत-स्वर्ग पयम्बर-(पयाम, सन्देश पहुँचाने वाला) तईं-लिए हैंगे-हैं उम्मत-पैगंम्बर के अनुयायियों का समूह दिलदार-प्रेमी मुख्तार-मालिक।

हिकायत

एक जोगी अपस के जोग संग
ना औरों सा देव भोग के संग
मिल पिव से पाक अपने घर में
इस्लाम भी कुफ़्र लेके हर में
रहता था सदा अलक निरंकार
ना पीर अपस्के कुफर के टार
ना और तरीक़ में रखे पाँव
ना जान मिवा कहीं उसे ठाँव
चन्द रोज़ था इस फ़क़ीर संग
दोरंगी को छोड़ हो के यक संग
एक रोज़ का इत्तफाक़ ऐसा
जंगल में ठना था शब बसेरा
दोनों ही थके हुए क़दम के
ठस खाये हुए अपस्के दम के
उस दश्त में सारी रात बारे
कुछ जागते सोते शब गुज़ारे
पर जोगी यों ही रहा था बैठा
अपस्के था पिव मन में बैठा
जब रात अखंड दोपहर हुई
तब मुझ में यह बात की गुज़र हुई

दश्त-जंगल ।

यूँ पूछ उठा ए प्यारे जोगी
ए जान के मनमोहन के भोगी
किस हाल में हो खामोश बैठे
किस बात के आप हैं के दर पै
सुनते ही यह बात सर उचाया
यह बोल मेरे को कह सुनाया
गुरु मैं अजब खयाल में था
यां जान से खीलो खाल में था
ए जान तू कौन है मुझे कह
या खाक है, पवन है मुझे कह
या आग है और या है पानी
बतला दे मेरे को तुझ निशानी
किस शक्ल में किस लिबास में है
या धरती में या अकास में है
पैदा किया कौन है तेरे को
जो भेद तेरा है कह मेरे को
जब मुझ को दिया जवाब यो जीव
मैं जीव हू भई हरेक का पीव
मैं वह हू के आप ही आप में हूं
फ़िराउन-सा मैं, यह मैं नहीं हूं
ना खाक हू, बाद हूँ न पानी
ना आग हू ना कोई निशानी

दरपे-पीछे होना, खोजी खीलो खाल-बेहूदा बातचीत फ़िराउन-एक बादशाह
बाद-हवा ।

ना किसने किया मेरे कूँ पैदा
मैं आप से आप हूं हवेदा
है भेद मेरा मेरे में मामूर
न किसको यह भेद पाने माजूर
कुल चित्र के मैं लिबास में हूँ
हर फूल में, फूल बास में हूँ
नापाकी में नहीं पाकी मैं हूँ
नूरे मन भी मैं हूं खाकी मैं हूँ
यह कौन सिवा मेरे हैं खाली
है दोनों जहाँ मुज हात थाली
हर जिस्म को जीव है यही जीव
उश्शाक़ को पीव है यही जीव
अल किस्सा यह बातें होते होते
हम दोनों दुई को खोते खोते
इतने में खिरोस बाग हाँका
सादिक़ का शफ़क़ फ़लक पे फाँका
पढ़ सलात व फ़र्ज़ को गज़र के
राही हुए अपने रह गुज़र के

—रिसाला मनमोहन

हवेदा-प्रकट मामूर-रखा हुआ (अम्र मामूर) उश्शाक़-आशिक़ का ब. व. खिरोस-मुर्गा
शफ़क़-उषा सलात-नमाज गजर-प्रात:काल भोर रह-मार्ग।

शाह सुल्तान सानी

जगत सो दर्पन इन्सान रूप
मुख देखे हक़ अपन रूप
ज्यो दर्पन में नज़र न झाये
नज़र नज़र में नज़र हो जाये
यों पिव जिव का माया जान
जिव देकर पिव ले उस आन
सात सिफ़त यूँ जाये गुज़र
जद पिव अपना आय नज़र

ऐ इश्क़बाज़ पुरफ़न बलिहार तुज मकर पर
आप खेले, आप खिलावे, यह दुहरे डगर पर
करता है बद लच्छन होर लेता है नेकनामी
दिल में है ज़हर क़ातिल शहद व शकर अधर पर

हो ··· . ········· ·······················
एक तू दिसे हज़ारां है खतम तुज सहर पर
समुन्दर तूँ, हवा पैं उबल्या है शौक़ सते
आसमान जुदा जुदा रख डुलता है हर लहर पर

शादी का ज़ौक़ लेने आया है तूँ ज़मीं में
तोहमत रख्या है चुपके तूँ बहुत होर सक़र पर

पुरफ़न-मक्कार   सहर-प्रात:काल   सक़र-नरक   छन्द-छल कपट ।

यो छन्द बन्दी तेरी साजी तू च प्यारे
सच तू बड़ा हुनरबन्द हर क़ाफ़ हर लहर पर
था तूँ हुनर में फ़ायक़ सुलतान हो को आया
भार्या है एक सिक्का हर मुल्क हर शहर पर

किस यार की सोब्रत नको तेरे च मुज कू सात बस
बाताँ किसी की क्या क्या सुन तुज मुख की मुज एक बात बस
वो जग में लिये हैं न्यामताँ पन क्या करूँ ले मैं इता
सब उम्र लग तुज कुवत कू तुज अधर का ना बात बस
परवाना कहता हूँ कहीं उस ओर होर शब ते सदा
तुज जुल्फ़ व रुख लिखता हू सो मुजकूँ वही औक़ात बस
तुज पास ऐ सुलतान जरा मँगता नहीं, मुख ना फिरा
मुज से गदा कू बख़्शे तुज वस्ल का खैरात बस

करने जग सब क़त्ल यक तुज दस्त की तरवार बस
होर आशिकाँ कूँ मारने तुज तेग का यक बार बस
तुज जुल्फ़ के यक दाम में जावें सपड़ दोनों जहाँ
होर बन्द करने खल्क़ कू तुज जुल्फ़ का एक तार बस

तुज हुस्न के खुरशीद का तिरलोक में ताबिश पड़े
होर शाम कूँ मरते जिया तुज रुख का यक झक्कार बस
तुज सार का होर दाता नहीं हर दान कूँ
होर मुज गदा कूँ देवने तुज मुखड़े का प्यार बस

फ़ायक़-श्रेष्ठ औक़ात-समय (वक्त औकात) दस्त-हाथ दाम-फ़न्दा, जाल
खुरशीद-सूर्य ताबिश-गर्मी हज़-जायका।

पिया के हज्र सूँ मेरे नयन यक पल न सोते हैं
मनाऊँ मैं जिता तो भी निपट ग़मगीन होते हैं
एता इस जग दुखियारियाँ कूँ रखूं धात समजा कर
बिछड़ कर बेक़रारी सूँ सदा........ ... . रोते हैं

जिस दिन ते मेरा सीस लग्या तेरे क़दम ते
जिस दिन ते छूट्या है हज़र के अफ़सोस अलम ते
अब किये है निकल मुज ते जुदाई की ग़मी सब
मग़रूर हुआ दिल ओ बेकल उस कल मेहनत व ग़म ते
तुज इश्क़ के साग़र में किया मस्त ऐ साक़ी
लाचार छोड़ाया है मुजे ज़ुहदो हरम ते
कर नियत अव्वल मुजकूँ क्या हश्त तू आखिर
पाया हूँ मगर पाँच जनम छूटई जनम ते

—दीवाने सुलतान

हजर-परहेज़ साग़र-प्याला ज़ुहद-परहेज़गारी हरम-क़ाबा हश्त-अष्टम।

असदुल्ला शाह

ना सोत पिव का है अजब तू समज उस कूँ निरस
उलझावे से उसके सुलझ जब कह निरस है क्या सरस
यहाँ ही बयान सुन मुख़्तसर ओ इस्में हक़ पर होश धर
ले बूज उसकूँ रोज़ तू मत यहाँ अटक यक सौ बरस

जागर से पैदा फ़ाम करो
जद अदू को अपने लाम करो
जब हर हर घर को राम करो
वे काम करो ये काम करो
दिल देवल में विश्राम करो
हर नाम पिया दिन शाम करो

जिस दिल कूँ कहते सात सिफ़त
ओ सात सिफ़त का कर तू बरत
ओ ए हिरस हका की देक सूरत
ओ ही सूरत में है हर की गत
दिल देवल में विश्राम करो
हर नाम पिया दिन शाम करो

जग धंधे में घर धंधा है
ओ पाया सो सच्च बन्दा है
कुल शै में दिसता चन्दा है
ओ पाया नैन सो कुन्दा है

फ़ाम-वर्ण अदू-शत्रु देवल-देवालय शै-वस्तु नैन-नही कुन्दा-बेकार है।

दिल देवल में विश्राम करो
हर नाम पिया दिन शाम करो

कईं मस्जिद कईं ओ है देवल
कईं पीछे सब के कईं अव्वल
कईं मार हुआ है कईं नेवल
कईं प्यासा भूका कईं है जल
दिल देवल में विश्राम करो
हर नाम पिया दिन शाम करो

कईं सूर हुआ है कईं चन्दर
कईं जन्तर कईं ओ है मन्तर
कईं घर के बाहर कईं अन्दर
कईं नार हुआ है कईं सुन्दर
दिल देवल में विश्राम करो
हर नाम पिया दिन शाम करो

तू आशिक़ कामिल को कहीं देक कमाले
न उसने करेगा तेरे से हीले हवाले
तिरजग का ओ यक पल में बतावेगा उजाले
ऐ नफ्स को अपने में मियाँ तूने सँभाले
तद आयी है महबूब दिसेगा ओ बनाले

—दीवाने असदुल्ला।

मार-साँप नेवल-नेवला। कामिल-योग्य नफ्स-वासना।

नवाये दकनी

रिवायत और है यक है खूब नादिर
दो रावी उसके हैं अहले बसायर
जो मनबर शाहे दीनी सो कहे हैं
....

के जब मैं सैर कर फिरता था अल पास
सो तब यक शख़्स आया है मेरे पास
कभूँ आँगीं नहीं देखा था हाशा
लगे करने कूँ मुज सें यह मुख़्न आ आ
अयाँ है तुमकूँ अब सोहबत की रग़बत
कहा मैंने न ....हूँ सोहबत
कहे इस शर्त से ऐ नेक अतवार
खिलाफ़ इसमें न करना तुमें जिन्हार
जवाब उनकूँ भला बेहतर दिया हूँ
कहे बैठो यहाँ लग ताके आऊँ
ऐता कह कर हुए ग़ायब उसी बार
राह में यक बरस लग बैठ उस ठार
बरस पीछें मुजे आकर मिले हैं
घड़ी यक मुज कने बैठे रहे हैं
उठे हैं फिर के यों मुजकूँ कहे हैं
न जाओ यहाँ से जब लग आऊँगा मैं

रिवायत-कहावत, दन्तकथा नादिर-अद्भुत रावी-अनुकरण करने वाले बसायर-जानकार (बशीर का ब. व.) अलपास-पास से हाशा-हर्गिज रग़बत-लालसा अतवार-तरीक़े (तौर-अतवार का ब. व.) जिन्हार-हर्गिज़ ।

बरस यक और भी ग़ायब रहे वो
बरस के बाद फिर आकर मिले सो
जगो पर आपके था मैं क़वी जो
मेरे बाजू से बैठे यक घड़ी वो
उठें मुज कूं कहे तुमने न जाना
यहां लग ताके होये मेरा आना
रहे हैं और ग़ायब यक बरस तें
बरस गुजरे पै फिर आकर मिले हैं
ले आये दूद और नान अपने हमराह
कहे मैं ख़िज्र पैगम्बर हू वल्लाह
हुआ हुक्म खुदा जो तुम से मिल कर
यह दूद और नान खावें यक जगो पर
उसे खाकर दोनो फ़ारिग हुए जब
कहे तब मुज सें यों ऐ वासिले रब
उठो, दोनों चलें बग़दाद अन्दर
तो हम बग़दाद में आये हैं फिर कर
कहे तब हाज़िरां ने अर्ज़ यूँ कर
हुए साइल के ऐ आलम रहबर
जो इन तीनों बरस में क्या ग़िज़ा था
तुमें खाये थे ओ और कूत क्या था

कवी-दृढ नान-रोटी साइल-प्रश्नकर्त्ता रहबर-मार्गदर्शक ग़िज़ा-भोजन कूत-खाद्यसामग्री।

कहे जो वहाँ रवाँ चीज़ाँ थे पैदा
गियाह सब्ज़ हरियाली हुवैदा

—याजदह मजालिस

गियाह-घास हुवैदा-प्रकट ।

व इब्लीसन भुईं पर थे हमला किया
व सातों तबक़ सूँ उलंग कर गया
बहिश्त के जो बैठ्या व जाकर किनार
तरद्दुद तलाशी किया ठार ठार
यो दरवाजे जन्नत के खुलसी तो ना
क्यों कर होय बहिश्त में जावना
यही फ़िक्र भई कुछ करना अहै
क़ज़ा सूँ मुहर यक ऊपर आय कर
बहिश्त के कँगूरे उपर जायकर
नज़ारा किया मुहर वा बैस कर
व इबलीस बैठ्या है उस ठार पर
मुहर उसकूँ पूछया के तूँ कौन है
बहिश्त के किनारे के बैस्या अहै
व इबलीस बोल्या फ़रिश्ता हूं मैं
जो यों सैर करता हूँ हर द्वार मैं
मुहर फिर को पूछया के क्या वास्ते
तू तहक़ीक़ मुंज बोल जिस वास्ते
गड्या यों के यक तिल खड़े जाय कर
बहिश्त फिर को देखूँ बरे एक नज़र

इब्लीसन-शैतान ने तबक-पृथ्वी के नीचे और उसके ऊपर विद्यमान आकाश खण्ड तरद्दुद-चिन्ता बजा-इसके बाद मुहर-मोर बैसना-बैठना तहकीक-अच्छी तरह जाँचा हुआ।

कह्या मुहर हमनों कूँ फरमान नईं
बहिश्त में हर एकस के तईं जान दईं
कह्या यो हुआ खूब धरता हूं मैं
बड़ा काम हर ठार करता हू मैं
दुआ तुज के तईं खूब सिकलाऊँगा
तेरे सात मैं बहिश्त में आऊँगा
डर्या मुहर होर साप सुन कर यो बात
मुँडी भार लेकर कह्या उसके सात
अगर खूब तूँ जानता है दुआ
तू अलबत्ता यो हुनर मुजकू सिखा
रज़ा नईं कह्या वो जो किसकूँ ले जाय
ज़रा बाट के नईं जो तू जाकर आये
कह्या इस क़दम सूँ न जाने सकू
चले एक हिकमत सू आने सकू
अगर मुक तूँ टुक पसारे तो आउ
मुडी गाडने फिर को तू अपने ठाउ
वहाँ थे जो पला ज़मीन जाऊंगा
बहिश्त देक कर बेग फिर आऊंगा
उसी धात वो सांप मूह खोल्या
व इब्लीस जा मूं में पेस्या
मुँडी साँप ज्यों बहिश्त में लाया
व इब्लीस ज्यों बहिश्त में आया

मुंडी-सिर भार-बाहर वल-लेकिन मुक-मुख।

तब इबलीस पूछया उस सांप कूँ
मुँजे गेहूँ केरा झाड़ दिखलाया तूँ
नको खाव कर मना कीता खुदा
देखूँ यक नज़र झाड़ कैसा हैगा
व आदम के तई मना कीता है के
देखूं गेहू का झाड़ कैसा है के
बज़ा साँप ऊ झाड़ दिखला दिया
देक ऊ झाड़ इबलीस ने फ़न किया
जो इबलीस उस झाड़ कू देक कर
वो रोने लग्या ज़ार अरड़ाय कर
अव्वल कोई न समजे थे रोने का नाम
जो उस वक्त रोना हुआ सबकूं काम
हव्वा और हूरा नज़ीक उसके आय
उसे सारी पूछे तूँ रोता के भाय
के वह साँप रोता हलूं यों कह्या
तुमारे बदल यूं जो रोता हुआ
उसे फिर को पूछे के क्या है सबब
गुनहगार हक़ सू हुए तुम अब
तुमन कूं बहिश्त में थे बागा बहार
दुनिया में तुमें होयगे खारज़ार
व आदम देखन आय उस झाड़ कूं
व हैरॉ हुए देक कर झाड़ कूं

केरा-का बज़ॉ-उसके बाद ऊ-वह दूरॉ-दूर का ब व. हलूं-धीरे खारज़ार-दुखी।

जड़ा झाड़ के थे रूपे के तमाम
व डालियाँ अथे सब सोने के तमाम
थे पाता ज़बरजद व याकूत के
जो ज़ेबा निछल खूब सुन्दर दिसे
उसे देक आदम कू बी हवस आई
अथे दाने भुरिट्यां सते खुशनुमाई
कहे या इलाही 'यो आला जिनस
मेरे हक्क पो कीता है यो ना जिनस
कह्या बारी ताला यो बख़्श्या हूँ मैं
व लेकिन यो मेहमान के खाने के तैं
मेरे घर कू मेहमान जो आयगा
के यो शीर खुरमों विने खायगा
अजब है जे जो आय मेहमान हो
सो क्यों खाय ओ आपना खान जो
बज़ो भई कह्या यों व इबलीस आ
हव्वा के हुज़ूर आ कह्या स् वो खा
यो गेहूँ खाव उसका ही ले फ़ायदा
होगा हज़ औरत मरद का अदा
यो दाने गेहूँ के जे कोई खायगा
मुल्क होर फ़रज़न्द दुनिया पायगा
मेरी बात सुन कर गेहूँ खावो तुम
दुनिया आल औलाद ले पाओ तुम

ज़बर जद-हीरा   भुरटियों-भुट्टे   खाने के तै-खाने के लिए   खुरमों-खिजूर
विने-वह   बज़ो-इसके बाद   इबलीस-शैतान   हज़-लज्जत   आल-बेटों की सन्तान।

यो औलाद की बात सुन खुश हुई
गेहू खाने का हवस ले गई
व इब्लीस के सू कौन सच कर पत्यायी
हव्वा गेहूं के दाने ऊपर हात बायी
व इब्लीस खाया है चुप झूट मूँ
तहां सूं हुवा झूट सब जग में तू
हव्वा हात गेहूं के सटे झाड़ पर
लिये तीन दाने उनमूं काट कर
वहाँ एक दाना अपी खाय हैं
दो दाने जो आदम के तई ल्याय हैं
रखे ल्याको आदम सफ़ी के हुजूर
झमकता अथा गेहू के दान्या प नूर
तब आदम कहे यूं के क्या है कहो
हव्वा खोल बोली हैं वो बात सो
खुदा मना कीता सो दाने है यो
मैं यक दाना खाई हू तुमना कूँ दो
बहुत धात आदम जो हैफ़ी किये
हव्वा कूं फिरा कर जो यूं पूछे
कहे यूं के लज़्ज़त यो धरता है क्या ?
असर उसके दाने का करता है क्या ?
खुदा जानते हमना किया है मना
गिराहट है यो जिन्स हम खावना

हवस-इच्छा पत्यायी-भरोसा किया बायी-डाली ल्याको-लाकर सफ़ी-अच्छा, पवित्र (सफ़ी आदम का एक विशेषण) हुजूर-सामने दान्यों-दाना का ब. व. धात-प्रकार हैफ़ी-अफ़सोस।

मना हक़ किया है यो ना खाऊँगा
बहिश्त में थे मैं भार ना आऊँगा
हव्वा वाँ थे उठ कर जो बेगी शताब
क़दह भर को लाई जन्नत का शराब
पिये वह शराब होर दाने कूँ खा
खुदा मना कीता सो वादा चुका
वो तीनी च में तन कूँ मस्ती जो आई
अपन तन केरा सुद बुद गंवाई
वो दोनो लगे हो को फिरने लगे
हरेक झाड़ तल रो को करने लगे
बज़ाँ झाड़ अंजीर के सात सूँ
मँगे हैं उनन किन केतक पात सूँ
मँगे झाड़ अंजीर के पात ओ
व शर्मिन्दगी सूँ किया सर फ़िरो
कह्या झाड़ से यार कुच पात ले
शरम ढाँप अपनी आपस सात ले
यो दोनों ले अंजीर के पात सूँ
अपस कूँ लिए ढाँप सब जात सूँ
बज़ाँ बहिश्त म्यांने जिते थे विते
गुनहगार आदम हव्वा कर कते
बज़ाँ हक़ सूँ आया निदा झाड़ कूँ
जो पोशिश किया है मेरे यार कूँ

क़दह-प्याला तीनी च-तीन ही केरा-का लगे-नंगे हो को-हो कर केतक-कितने ही सर फ़िरो-सिर झुकाना म्याँने-में विते-उतने निदा-ध्वनि पोशिश-लिबास, ढाँकना ।

तेरे फल में ना होय कुच होर हाड़
जो शीरीं अछे शहदन में हो झाड़
तू बन्दे खुदा कू मुहब्बत किया
मेहनत की रे वक्त मुरव्वत किया
तेरे फल कू बन्दा जे कोई खायगा
व लज़्ज़त जन्नत का वही पायगा
हव्वा होर आदम जो हैराँ हुए
वो फिर फिर को दोनों परेशा हुए
कह्या हक़ के ऐ आदमी मुजते (तू ?)
यो कहे न्हॉटता है बुरा होके यूँ
तू अव्वल किता खूब दाना अथा
यू शैतान तुज यों दीवाना किता
के **आदम** कह्या ऐ खुदा तुज से मैं
हो कर शर्मिन्दा न्हाटता हूँ जो वैं
कह्या हक़ के अव्वल तुझे में कह्या
नको खाव कर तुज नसीहत दिया
के दुश्मन तुम्हारा हो शैतान है
तुमें उसते बहुतक अंजान है
तब आदम-हव्वा दोनों अरड़ा के रोय
हमन सू हुआ है गुनाह ऐसा होय
हव्वा होर आदम कहे यूँ पुकार
हमें तो तेरे मुक सूँ है शर्मसार

शीरीं-मीठा जन्नत-स्वर्ग न्हॉटता है-भागता है किता-किया हमन सूं-हम से ।

कहे यूं के ऐ ख़ालिक किर्दगार
गुनहगार बन्दे बख़श एक बार
के हमना सते तो हुआ यूं खता
बख़श यो गुनाह तूं हमारे खुदा
कहा बारी ताली के दुनिया में जाव
इरादा तुमारा जे कुछ है सो पाव

× × ×

किस्सा ईशू अने सलाम

जो मूसा के बाद अज़ सो ईशू नबी
हुए हैं बनी इसराइल पो सबी
खुदा उनके तई दे को पैगम्बरी
बनी इसराइलों ऊपर सरवरी
कहे यू बनी इसराइल सार क
लड़ायी करो जाको जब्बार सू
व ईशू लिये सब कूं संगात तब
किये आ लड़ाई उनों सात सब
किये मार कर सब हज़ीमत दिये
लिये सार उनों का ग़नीमत लिये
बज़ाँ पादशाहान थे··· ····· . ···
व कम्बख़्त काफ़िर जो बेदीन थे

किर्दगार-(?) ख़ता-अपराध बनी-वंश इसराइल-एक जाति हज़ीमत-पराजय ग़नीमत-लूट का माल बज़ाँ-इसके बाद ।

लड़ाई कू आये हैं योशा के टार
जो योशा उनो कूँ किये मार खार
हज़ीमत दिये सब उनां कू तमाम
बज़ा वाँ ते आये अहे शार शाम
उनां कूँ बी यक बार सब मार कर
विलायत लिये मुल्क उस टार पर
किये मार सब घेर उस टार सब
कते हैं नक़ल यो जो सब एक बार
नबिया में नही कोई योशा के सार
ग़िज़ा यू किया होर लिया शार भोत
मुहक्कम जज़ीरे मुल्क टार भोत
किये मार इस्लाम कू आशकार
व काफ़िर के तई ज़ेर कर खारज़ार
नबियां कू ग़नीमत न था किस हलाल
जो लेवे उनां मार कर सब यो माल

× × ×

क़िस्सा तहतुल सरा

ज़मीं के तले यक ठरा कर मकान
हर्या उस तले एक पत्थर अहै जान

हज़ीमत-पराजय कते हैं-कहते है नबिया नबी का ब. व. शार-शहर
मुहक्कम-मज़बूत (हुक्म-मुहक्कम) आशकार-प्रकट ठराकर-ठहरा कर हर्या-हरा ।

जो पत्थर रह्या है चक्कर बीच सख़्त
सरा के तले दोज़खियाँ का है तख़्त
वो तहतुलसरा का कहूँ उसकी बात
अरबी लक़ब है क़दीम एक बात
ज़मीन है जो गाजर की जड़ के निमन
व पानी में ज्यों के कँवल के निमन
व पानी में सूँ जो निकले भार
रखे हैं जो पत्थर हर्या उस तलार
वहा दोजखियाँ का है मज़कूर ले
व तहतुलसरा के उसे नाव है
उपर अर्श है होर तले हैं सरा
ज़मीन गाय की दुम निमन ज्यो तरा
व दोज़ख कूँ उसकी जो निस्बत किया
जो यकनिस फ़रिश्ते हवाला दिया
न डरने अगन कूँ न पानी कूँ वो
न कुछ प्यास पानी न खाने कूँ वो

—किस्ससुल अम्बिया

दोजखियाँ-दोजख (नरक) का ब. व. निमन-समान तलार-नीचे ।

मुहम्मद गौसी

रही यूसूफ़ सते हुशियार हुशियार
मेरा पोंचाओ लाकर फिर को दिलदार
लिये यूसफ़ कूं चले भायां बहर हाल
शह के पास हुरमत सूं करे चाल
उठा बकरियां उसकी एक चरागाह
दो फ़रसंग शहर सूं वहाँ लिए राह
अगो चलते थे यूसुफ़ शाद फ़रहाँ
खुशी करते हुए हँसते खिरामाँ
पिछे चलते थे दस भायां मिला कर
जिधा पिछे वो जंगल बीच यकसर
चलाये मिल को सब यूसुफ़ ऊपर हात
लगे कोई मारने तफ़रांख कोई लात
लगे यूसुफ़ कू देने बहुत आज़ार
लगे करने कू हर यक मार पर मार
लगे यूसुफ़ कूं देने बहुत दुश्नाम
करे यूसुफ़ ऊपर गालियाँ का सग्राम
लगे रोने कूं यूसुफ़ देख खारी
घिघिया कर आजिज़ी होर बहुत ज़ारी

सते-से पोंचाओ-पहुँचाओ फरसंग-कोस अगो-आगे शाद-खुश फ़रहाँ-प्रसन्न
खिरामाँ-धीरे धीरे, इठलाते हुए जिधाँ-जहाँ तफ़रांख-थप्पड़ (?) आजार-दुःख
दुश्नाम-(फा.) गाली जारी-रोना धोना।

तुम्हारे नईं गुनाह हुए मुज सूँ सादर
बता क्यूँ मारते हो मुज कूँ व आख़िर
तुम्हारे मुँजे सो नबी अंथ बाप
मुँजे क्यूँ मारते हो धौल और निहाप
तुम्हारा नईं किया तक़सीर भार्या
मेरे सूँ तुम यो क्यूँ करते हो अदायाँ
मुँजे क्यूँ इस क़दर करते हो आज़ार
तुम्हारा नईं हकीक़त में गुनहगार
अमानत में पिदर के किया खयानत
मुँजे क्यूँ मारते हो बेनिहायत
पिदर के हक़ कूँ कुछ लावे नज़र में
रखो अपने के तईं हक़ के कदर में
मुँजे लाये पिदर सूँ कर को तदबीर
अज़ीयत का तुमें कर दिल में तदबीर
पिदर पर देख कर बख्शो मुझे अब
अमानत में तफ़ाउत में करो सब
करे हरचन्द यूसुफ़ आजिज़ी तब
वले नईं रहम लाये बेकडर सब
कहे तूँ झूठ क्यूँ बोला है सपना
पिदर कूं तूँ कर्या मरहून अपना
कहाँ महताब है कहाँ है सितारे
जो बोला ख़्वाब में बोला है सारे

निहाप-(?) तक़सीर-गल्ती भार्या-भाई का ब. व. पिदर-पिता अज़ायित-कष्ट तफ़ाउत-अन्तर मरहून-मुग्ध (रहन-मरहून) महताब-चाँद ।

पिदर कूँ तूं हमारे सूँ फिराया
पिदर के दिल सते हमना गिराया
मगर है दिल में तेरे आरज़ू यूं
कलावे सब हमारे पर बड़ा तूँ
गर तूँ चहता हमें आबाद करना
अपस आगे नवा हम सर कूं धरना
तुजे अब जान सूँ हम मारते हैं
अपस का दण्ड सारा सारते हैं
बारे देखें तेरा यहा दादरस कौन
यहा आता तेरा फ़रियादरस कौन
पड़े यूसुफ़ यहोदा के क़दम पर
यहोदा ने कहा भाया कूं यों कर
नको मारो तुमें यूसुफ़ के तईं अब
रहो उस अहद पर क़ायम इता सब
किये थे तुम मेरे सूं अहद मिल कर
के इसकूं डालना कुए के अन्दर
येता यू मारने के क्या हैं अक़वाल
सताने के तुम्हारे क्या यू अफ़आल
रहो क़ायम अपस इक़रार ऊपर
खयाले क़त्ल में लिए दीन का शर
हो यहोदा सूँ सुने सब, सब बिरादर
हुए क़ायम अपस इक़रार ऊपर

कलावे-कहलावे   अहद-प्रतिज्ञा   अकवाल वचन (कौल-अकवाल ब. व.)
अफ़आल-आचरण (फ़ेल-अफ़आल ब. व)   शर-बुराई ।

अथे एक जाह् तब नज़दीक उन सू
किये यूसुफ़ कूँ सब पे इस वजा सू
करे नंगा मुबारक उनके तन कूँ
निकाले उनके तन सू पैरहन कूँ
उनो कूं डोल में बन्द कर बिठा कर
वो छोड़े डोल कूं कुए के अन्दर
निपट करते थे तब यूसुफ़ ज़ारी
था उनके पाक दिल पर दर्द व बीमारी
किये थे या इलाही पाक क्या किया मैं
के इस भायों सूँ छिन कर क्या लिया मैं
न उनकूं आज लग मैं कुछ सुनाया
हम है भायां करको मैं उनको पतयाया
यो करते हैं मेरे जुल्म इस तौर
नहीं कोई भाई पर किया ऐसा ज़ोर
न कोई दिसता पिदर कूं जाको बोले
पिदर पर जा मेरे अहवाल खोले
बहुत रोते अथे मज़लूम यूसुफ़
निपट रोते अथे करते तआस्सुफ़
न भाया का हुआ तब नर्म कुछ दिल
न आया रहम सूँ उनके दिल पो यक तिल
यहोदा की थी रस्सी औ डोल हात
अथा शमून भायाँ दूसरे सात

जाह-जगह पैरहन-पोशाक दिसता-दिखाई देता है पिदर-पिता मजलूम पीड़ित (जुल्म मज़लूम)

यो पोंचा निस्फ़ जा लग डोल जाकर
कठिन दिल कर को शमऊन बिरादर
अपस से ना अदावत सात दाख्या
छोड़े लिए हात में रस्सी कूँ काख्या
अथा शमऊन के यूँ दिल के अन्दर
के मरना बावड़ी में पड़ाव अनवर
अथा नेज़े बराबर चाह में आब
पड़ा यूसुफ़ का जिस कुए में ताब
कता रस्सी किया शमून ने जब
सो **जिब्रेल अमीन** कुऍं में आ तब
उठा कर ले को यूसुफ़ मुअल्लक़
अपस के हात के ऊपर इमलक़

—**किस्ससुल अम्बिया**

निस्फ़-आधा जा लग-जहाँ तक अनवर-प्रकाशमान (नूर अनवर) मुअल्लक-अधर इमलक़-सम्पत्ति ।

ग़रीब शाह

सो मरिअम केरे जिब्रील
फिराये पर अपने बहु करे जलील
फिराये पराँ कूँ जुदाँ तीन बार
कहे तब निकल ऐ ईसा तू भार
ऐ ईसा, सटो पेट का अब वतन
दिखावो मुबारक ज़माले अपन

हो मुस्ताक़ तुज देखने आये हम
धरें आरज़ू फिर देखें तुज कूँ हम
सो यों बोल कर टुक किनारे हुए
वहीं हूर **मरिअम** कने सब किये
जनाने का दस्तूर जो है नशर
बला ल्याये हूराँ वो सब सर बसर

सो मरिअम कतें दरद तब दम बदम
उठ्या जोर कुव्वत सते दर्दे शिकम
जुदाँ पेट का दर्द जोरा किया
तब मरिअम सूँ ईसा तवल्लुद हुआ
जब मरिअम सूँ पैदा हुआ आफ़ताब
लेकर आये तब **हौज़े कौसर** का आब
लेकर आये हैं **आबे कौसर** कूँ जब
जच्चा होर बच्चे कूँ नहलाये है तब

सटो-छोडो जमाल-सौन्दर्य नशर-प्रकट मुश्ताक़-इच्छुक (इश्तिआक़ मुश्ताक़)
शिकम-पेट तवल्लुद-उत्पन्न आफ़ताब-सूर्य आब-पानी ।

लिबासाँ जन्नत के पिनाये अनूप
डिसें सूर ईसा मरिअम सरूप
पिछे तख्त पर लिया जच्चा कूँ बिठाय
बच्चे कूँ कनवारे मे ल्या कर सुलाय
ओ बैठे अथे पेट कूँ दे को लोड
खड़े थे केते हूर हाता कू जोड़
यकन्दर सफ़ा बन्द सलामा किया
मुबारक अछो कर दुआ सब दिया
जवाहर के तबक़ा जन्नत सूँ ले आये
हीरा होर मोती लाल मिल के लाये
अपस हात में हूर सारे लिये
जच्चा होर बच्चे पर तसद्दुक दिये
ले आये भई कई भात तबकों सवार
खिलाये पछे न्यामत खुशगवार
भई लाये हैं **तेज़ाना** जन्नत सूँ हूर
खिलाये हैं मरियम कूँ हूराँ ज़तूर
केतक हूर गावे बजावे केतक
यो दोनो पे बुलबुल सो जावे केतक
के मरियम कूँ जब हूर सारे जनाये
खुशी सू **बधावा** जेते मिल को गाये

लिबासों-लिबास का ब. व. पिनाये-पहनाये कनवारा-पालना लोड-गोड़। सफॉ सफ़ा (कतार) का ब. व. तबक-एक तरह का बर्तन तसद्दुक-न्यौछावर (सदक़ा-तसद्दुक़) तेज़ाना-भेंट (?) ज़तूर-एक वस्तु केतक-कितनी ही।

मेकाइल जिब्रेल नादिर कलाम
फ़रिश्त्यां कूं ले सात कीते सलाम
ए ईसा सलामलेक ऐ शहा
दिया तुज बुज़ुर्गी खुदा इस वज़ा
तुजे देखना था बड़ा हम कूं शौक़
तुजे देक पाये हज़ारा सूं जौक़
दिये जाब उनकूं अलेकुल सलाम
ए जिब्रेल, मेकइल नेक नाम
मेरी मा ये रहमत खुदा ने किया
करम फ़ज़ल सूं मुझ नबूअत दिया
मुझे भी अथा आरजू बिल यक़ीन
देखूं तुमकूं ए जिब्रेल अमीन

× × ×

करूं इस सूँ बेहतर हिकायत बयाँ
कहूँ मगर फिर बेवफ़ाई ज़बा
कहते हैं के ईसा नबी पर सलाह
ज़बाँ पर मलाहत अछे पर मलाह
भई एक रोज़ ओ शह सवारी अमीर
रखे जा गुज़र एक जंगल के धीर
दिस्या सख़्त मुश्किल मश्क दक़ीक़
था पानी का वा इक चश्मा अमीक़

नादिर कलाम-अच्छी वाणी वजा-तरह जौक-सेना जाब-जवाब नबूअत-नबीपन। मलाहत-खूबी, मिठास दिस्या-दिखाई दिया दकीक़-कठिन, सूक्ष्म अमीक-गहरा

दरख़्तां यकस्में यकस यूं भरे
सटे उसपे ख़शख़श तिल्ली ना झड़े
रहते वैसे जंगल......................
सो यक नार दो मर्द तीनों जने
देखे दो मर्द एक औरत सह जान
रहने थे ओ तीनों सो जंगल के म्यॉंन
अलावा खड्डु तीन खोदे थे ओ
रहते थे अपस में जुदा सब सूं हो
पूछे उनकूं ईसा ने ऐ दोस्तां
हक़ीक़त तुम्हारा मुज बयॉं
तुमें कौन है सब जुदा क्यों रहते
गढ़े खोद कर इस वजा क्यों रहते
कहे वो ऐ ईसा, ऐ शाहेजदा
करे तुज पर रहमत करम नित खुदा
सबब बेनवाई के जंगल तजे
फ़क़ीर के सबब सूं शहर कूं तजे
हमें दोनों हैं जुफ्त ऐ रहनुमॉं
ऐ फ़रज़न्द, हमारा गुलामी शमॉं (?)

—क़िस्सा हज़रत मरिअम

यकस्में यकस-एक में एक सह-तीन म्यॉन-में बेनवाई-विवश, अकिंचनता
जुफ्त-जोड़ा ।

ज़ईफ़ी

अलामते क़यामत

ये दीगर क़यामत सो दज्जाल आये
सो ओ अहले इस्लाम के तईं फिर आये
क़यामत के आगे तो वो आयगा
कीता उससे आलम दग़ा खायगा
कहते हैं के दज्जाल वह लानती
जो देवाँ में एक देव है लानती
के है सारे देवाँ में सरज़ोर वह
वलेकिन है एक आँख का कोर वह
तबीयत वह धरता है शैतान की
करे राहज़नी अहले ईमान की
ज़मीं बीच आवेगा वह शूमवार
जो होकर बड़े यक गधे पर सवार

× × ×

भई एक रोज़ ओ ख़ास बशर
जो बैठे थे आकर मस्जिद भीतर
अबूबकर थे और उमर नेक नाम
भई उस्मान अली थे वलियों के इमाम
यह चारों खलीफ़े नबी पास थे
हो चारों भी ईमान के साथ थे

अलामत-लक्षण अहल-साथी देवाँ (फा.)-उद्दण्ड, सर्कस राहजनी-मार्ग भटकाना
शूमदार-अभागा, दुष्ट बशर-व्यक्ति ।

थे बाज़ भी असहाब हाज़िर कितेक
नबी पास बैठे हैं लग उसमें देख
यकायक कहे काफिराँ साथ चल
अबू जहल आया नबी के अगल
अदावत पकड़ दिल में बेहिसाब
नबी सृ कहा आके यो बेहिजाब
कहा यूं के सुन ए मुहम्मद तुमीं
निशान कुछ मेरा तुमें होता नहीं
कहलाते हो तुम यो ही नबी और रसूल
वले दिल मेरा कुछ न करता क़बूल
किया जग में शोहरत रिसालत का तुम
हमन में हुआ इस..................
बड़े तुम कलाते अपस घर में
वले बूझो क्या है मेरे बर में
मेरे बर में बोलो के क्या रग है
वगर नही तो तुम सृ मेरा जग है
मेरे बर में क्या बसत सो बोलो तुम
बयानवार **बारे** उसे खोलो तुम
तो मैं भी **बारे** तुम कूं समझूं सच्चा
वगर नहीं तुम्हारा नबूअत कच्चा

—हिदायतनामा हिन्दी

बाज़-दूसरे   असहाब-साहब का ब. व.   कितेक-कितने ही   अगल-आगे
बेहिजाब-खुलम खुला   रिसालत-पैगंबरी (रसूल-रिसालत)   वले-लेकिन   बर बगल
बसत-वस्तु ।

अली रहमती

कहूँ एक नसीहत अजब खूबतर
पहले पन्द सुनो जीव की कान धर
बुरे कूँ पहले पन्द सूँ क्या खबर
गधा क्या बूझे ज़ाफ़रान की क़दर
जो कोई मर्द दिल पाक इखलाक़ है
सो इस पाक बातों का मुश्ताक़ है
जो कोई खूब पारख में परकार है
सो इस गोहराँ का खरीदार है
जो कोई असल गोहर में कुच खूब है
उसे पन्द गौहर ते अपरूप है
दुनिया का जिता माल और गोहर
बला दूर इस पन्द दिल पर
यो बिन मोल गोहर के जिस नाँव पन्द
तुजे मुफ्त देता हूं रख जिव जतन
तू नादिर हुनर सूं करेगा अगर
फत्थर कूँ सोना होर सोने कूँ फत्थर

—क़िस्सा परहेज़गार व शैतान

पन्द-उपदेश गौहर-मोती नादिर-मोती ।

हसनअली शाह

कहता हूँ मैं मरिश्रम का पैदाश अव्वल
करूं ज़िक्र ईसा का पीछे नक़ल
देखो माँ जिनों की हैं मरिश्रम शुज़ात
श्रो बीबियां में बीबी अहै पाकज़ात
है मरिश्रम का क़िस्सा अजब ऐ अज़ीज़
है क़िस्सियाँ में क़िस्सा बहुत बातमीज़
यो मरिश्रम हुए किससूँ पैदा सुनो
हुए किस वजा सूँ हुवेदा सुनो
कते हैं के उमरान नामी अज़ीज़
इबादत में सालहा अथे पुर तमीज़
क़बायल था उमरान का बेहिसाब
शराफ़त मने थे नजाबत निसाब
बनी इसराइल में श्रो अथे
सो इसराईल में उन कतें सब कते
ठिकाना था **बैतुल मुक़द्दस** तमाम
रहते थे श्रो उमरान अली मुक़ाम
थी उमरान कूँ औरत नेक वक़्त
न होता था फरज़न्द दिलगीर सख़्त
अव्वल एक दुख़्तर श्रो हुई थी उसे
सो श्रो ज़करिया कू दिये थे उसे

पैदाश-पैदाइश शुज़ात-बहादुर क़िस्सियाँ-क़िस्सा का ब. व. हुवेदा-प्रकट सालहा-कई वर्ष नजाबत-सभ्यता, शराफ़त निसाब-जो माता-पिता की ओर से पवित्र (नसब का ब. व.) बनी-वंश दुख़्तर-बेटी ज़करिया-एक पैगंबर का नाम।

हमेशा खुदा कन ओ फरज़न्द मँगे
दुआयाँ करे रात सारी जगे
मगे जब वो ज़ारी सूँ हरदम दुआ
सो एक रोज़ हक़ ने दिया मुद्दुआ
खुदा ने किया जब उनों पर फ़ज़ल
रह्या पेट में उसके नादिर हमल
ओ नुत्फ़ा था उमरान के......का
रहम में ले उसके औरत सफ़ा
रहती थी अपस क़ौम में निपट सू
हुए शाद माँ जब हुए पेट सूँ
करे नज़र दरगाह में रब की तब
जिनो के जदाँ में यो बच्ची को जब
खुदा की नज़र करूंगी उसे
मेरे पेट में यो सो नादिर दिसे
हुए जिस वक़्त नौ महीने तमाम
जनी एक बेटी उनें नेक नाम
अजब सूरत पाक बेटी जनी
जो देखे सो बोले ये है पद्मिनी
कहूँ उसकूँ चन्द्रमुखी या परी
दिसें हूर त्यों खुश लच्छन गुन भरी

—क़िस्सा बीबी मरिअम

कन-पास फ़रजन्द-बेटा मुद्दुआ-मनोवंछित (दुआ-मुद्दुआ) फ़ज्ल-रहम नादिर-अद्भुत रहम-गर्भाशय सफ़ा-पवित्र दिसें-दिखाई देती है ।

मुहम्मद फ़िराक़ी बीजापुरी

इलाही हमारे पे हो मेहरबां
करम करके देना अपस का अयॉं
हमारे में नेकी कुच नहीं अमल
सो मू लेके क्या आये तेरे अगल
जो पूछेगा हमना हमारा हिसाब
सकल नई है देने को एक भी जवाब
किये नहीं हमें आज लग काम कुच
उनके बी न दिसता सरजाम कुच
अगर तूँ करम ते करे मग़फ़रत
तो कीते हमारी भी है मासिअत
जो देवेगा हमना हमारे पे डाल
न **होसी कदे बी** हमारा निकाल
न हमना कूं कर हश्र में मुनफ़इल
के सारी खलायक़ में होवें खजिल
क़यामत में सरपोश कर सब गुनाह
के वॉ ते ही हमना कूं तेरी पनाह
कते हैं के दो दिन है बसत में केवल
करम हक़ का होर अपने हों ता अमल
अमल होय तो भी करम है ज़रूर
करम नहीं तो है सब अमल में फ़ितूर

अयॉ-प्रकट अगल-आगे मग़फरत-क्षमा मासिअत-अपराध होसी-होगी कदे बी-कभी हश्र-प्रलय का दिन, उठाना मुनफइल-लज्जित खलायक-ख़ल्क का ब. व. खजिल-(?) सरपोश-ढॉकना ।

ये दोनों अगर है तो कुव्वत दुगुन
करम होर अमल जूँ सोना और सुगन
सुनो ज़िक्र उसी बात का कान धर
के मैं बोलता हूँ ज़बाँ खोल कर
हिसाबां किताबाँ यते टिन के सब
निपड़ जायँगे पल में उस रोज़ तब
न मौक़ूफ़ रह जायगी यकतो बात
ज कुच करके की है सो पावे बरात
जो दुनिया में मख़फ़ी हो रह जायगी
वो उस रोज़ मैदान में आयगी
खलायक़ खड़े रहेंगे सब हक़ के पास
बड़ा मोहकमा होयगा आसपास
कते वक्त लग कुछ न होवे जवाब
खड़े रहेंगे गर्मी ते होकर कबाब
किता वक्त गुज़रे पै हो अमर रब
मोहम्मद कूँ बेगी करो याँ तलब

× × ×

इलाही तू परवर दिगारे जहाँ
तेरे सू दारोमदार जहाँ
जगत का तू पैदा करनहार है
सच्चा साहबी का सज़ावार है
तेरे हात है कारसाज़ी की गत
ग़रीबा नवाज़ी की तुज है सकत

सुगन-सुगन्ध बरात-मुक्ति ।

गुनहगार मैं होर तूं है **करीम**
हूँ बीमार मै होर तूँ हकीम
करम सात हिकमत मेरी कर अता
के मैं पाऊ तुज मग़फ़िरत की शफ़ा
सदा कुव्वत अपस की इताअत करे
मुजे कुव्वत अपनी इबादत करे
घर अगर चला पलट अपस राह पर
मुजे ढिलमिला मत इधर होर उधर

—**मराहतुल हशर**

मग़फ़िरत-क्षमा इताअत-आज्ञापालन ।

क़ादरी

इलाही तूँ कुदरत का ग़फ्फार है
दो जग के बन्च्यां का तूँ आधार है

× × ×

तेरा अन्त जो कोई ना पाया अहै
तेरियाँ कुदरताँ किस नामालूम अहै
तेरी सिफ़त कहना किस ज़बाँ
सकत क्या ज़बाँ को तुझे है अयाँ

× × ×

मेरी धाक ते सब लरजते हैं
जिते देव राकस सों डरते हैं
तूँ छोरा अहे तुज मैं क्या करूँ
पकड़ लिए मेरे बादशाह कन चलूँ
मोहम्मद हनीफ़ कूँ तलख़ यो सुख़न
लग्या सो कहे देक उसके रुख़न
कच्चा है तूँ काफ़िर ऐ मुरदार ख़र
के यक हात मारूँ तो जाता है मर
बुरा मान काफ़िर ने हमला किया
गुर्ज़ का तड़ाखा सो सर पर दिया
सो शाह ने गुर्ज़ ले ढाल पर
कमर बन्द उसका पकड़ क़ैद कर

बन्च्याँ-बन्दा का ब. व. तेरियाँ-तेरी का ब. व. गुर्ज-एक लोहे का शस्त्र गदा की तरह ।

ओ च ज़ीन में ते पछाड़ उसे
सीने पर सो चढ़ बैठ बोले उसे
वेज़ान वई कमर में गाड़े खंजर
कहे बोल················तू मरदूद खर
तुजे मारने कु नई मुज कू आर
यो खंजर ओ मारूँ कलेजे ते पार

-शिकारानमा मुहम्मद हनीफ़

ओ च-उसी आर-शर्म।

क़ासिमअली

इलाही दो आलम का कर्त्ता तूँ
दोनों जग का पैदा करनहार तू
किया अपनी कुदरत सू खिलक़त ज़हूर
ज़मीन आसमान होर मलिक, जिन्नो हूर

× × ×

शिकार खेलना कू निकल हो तयार
चले चार यारौं सो होकर सवार
दो फ़रज़न्द अबा बकर आली जनाब
थे फरज़न्द दो उमर इब्न खत्ताब
शहर सूँ मदीना के बाहर निकल
शिकार खेलने कूँ चले दर जंगल
जंगल सू यकायक उठा यक गुबार
थी उस गर्द म्याने इकतालीस सवार
ज़ैतून पाक दामन व चलीस कनीज़
बेटी शाहे इरम की थी अज़ जाँ अज़ीज़
यो पाचों सवार उसकू आवे नज़र
सो घोड़े कूँ कर एड़.........
यों इच...............पास यक उनेमें
लगे कहने ले घेर मदीने में
कहो कौन हो तुम ऐ पाँचों सवार
यो जंगल में मेरे जो करते शिकार

कनीज़-दासी। अज जाँ-प्राण से यों इच-इसी तरह।

परिंदा ना पर मारे मुज हाँक तल
नगीन शहर टारे मेरी हाँक तल
मुहम्मद हनीफ़ नें कहे यो अताल
के ऐ शूख तेरे में है क्या मजाल
जो मर्दन का तूं पैन लेकर लिबास
मुकाबिल होय हम सते बे हिरास
कहे क्यों तूँ जान्या के औरत हूँ मैं
मुज किस वजे सूँ पछ्याना सो तैं
हनीफ़ शाह कहे यों ऐ सुन नाज़नीं
के एड़ जिस वक्त घोड़े कू तैं
तो मीना तेरा थुल थुल आया शताब
दोनों पाँव काँपे तेरे दर रिकाब
कही गर हूँ औरत वले हूँ बला
के मैं ज़ोर रखती हूँ बे इन्तिहाँ
मोत बादशाहाँ कूँ मारी हूँ मैं
मोत फैलवाना पछाड़ी हू मैं

— जंगनामा बी जैतून

अताल-वचन हिरास-आतंक, भय वले-लेकिन फैलवान-पहलवान।

शाह अब्दुलअली

यो क़िस्सा कता हूँ सुनो चोर का
न आसमान ज़मीं बीच कोई चोर था
कतें के गुजरात यक शहर था
के ओ चोर उस जा पे रहता अथा
सो उस चोर का बाप चोरी करे
चले भूक होर प्यास सूँ ओ मरे
के ओ चोर चोरी करे नित बड़ी
किया तो खुशी, ना पड़े एक घड़ी
चोरी बग़ैर कुछ गुज़रता न था
कधें पेट भर खाना खाया न था
विसी वज़ा उसका सो गुज़रान था
व लेकिन विसे कोई फ़रज़न्द न था
ओ एक रोज़ दिल में अन्देशा किया
फिकर ते च वई भुई पै सिजदा किया
खुदा या तू दे यक फ़रज़न्द मुजे
भोत आस कर बोलता हूँ तुजे
मेरे मन के तूँ बाग कूँ बार कर
व फल फूल डालियाँ हरे झाड़ कर
तूँ साहब अहै तख़्त होर ताज़ का
दुनिया दीन अर्श कुरसी लोलाक का
यकायक हुआ उस खुदा मेहरबान
दिया उसकूँ फ़रज़न्द दया कर सुभान

कता हूँ-कहता हूँ विसे-उसे भोत-बहुत बार-फल लोलाक-आसमान और जमीन।

हुआ पूत उसकूँ ओ साहेब अवल
सो ज्यों चाँद चँदना पुनम का निछल
खुशहाली हुई बाप होर माई कूं
सुलक्खन हुआ पूत उस जाई कूँ
कितक दिन कूं ओ ज्यों के श्याना हुआ
ओ हर एक हुनर-मन में दाना हुआ
के चौदा बरस का हुआ वई उनें
वई आया पिदर की जो खिदमत मनें
बुला कर पिदर कू कहा तू मेरा
कह्या यों के फ़रज़न्द हूं मैं तेरा
बजिद होके पूछन लग्या उसके तई
तूं क्या किस्ब करता है सो बोल मेरे तई
तेरा किस्ब मुज कूं तूं शिकलाव ना
हुनर फ़न तेरा मुँज कूँ दिग्वलाव ना
सदा किस्ब में तू ओ करता अछो
भोत धात न्यामत ओ ल्याता अछों
सुन्या, मिठियाँ बातां जो फ़रज़न्द तें
हुआ खुश अधिक मन में भोत धात तें
के सुन ए यो तू मेरी यक बात
मेरे किस्ब में है तो जिव का च घात
मेरा काम तुज कू माफ़िक नहीं
अगर चे अछे तो वफ़ाई नहीं
सदा मैं तो चोरी ओ करता अथा
कोई इस हद तलक मुज कू पूछा न था

जिव का च-जीव का ही।

खुदा के तुजे मैं हवाले किया
के जिव उसकी कुदरत पे कुरबान दिया
ओ कुदरत का साहब है परवर दिगार
ज़मीं पर किया बाग़ कु अपने बार
तमाम आम खासाँ कू पैदा किया
रिज़क उनका मातादे उनकु दिया
ओ साहब बड़ा हौर मेहरबान है
यो आलम सब उस पर ते कुरबान है
कोई मेहनत मशक्कत हमेशा करे
दया की नज़र तुज पे उन धरे
सुन्या बाब के मूं ते बाताँ तमाम
उबल कर उठे उसमें धाताँ तमाम
सो घोड़-कोड़ मगा कर ओ घर में रख्या
कहीं से बड़े मच का हुनर का सिख्या
छिप्या सूरजा बीच पाताल में
आया चाद सूँ मिल भार में
आधी रात अंधारे में आया उने
कहा बाप दे तूं रज़ा जावने
के देखूंगा मैं जा शहर के भितर
महल बादशा का जो है ओ किधर
करूंगा महल के भितर मैं गुज़र
यो बातां पिदर सुन के हैराँ हुआ
कलमला के कुरबान उस पर हुआ

बार-फल मातादे-अधीन ।

कहा यों नको जा मेरे मन के पूत
तूँ मँगता सो मैं ल्याकर देऊँगा तुरत
कधैं तू तो चोरी किया सो नहीं
के तुज बिन मुजे कोई दूजा नहीं
अगर तूँ जायगा तो मैं आऊँगा
चोरी करके मैं तुजकूं दिखलाऊँगा
के तसलीम कर कर बोल्या बाप कूँ
नको आ मेरे सात इसी रात कूँ

—क़िस्सा चोर

तसलीम-अभिनन्दन (सलाम-तसलीम)

हातिम दकनी

यक किस्सा नादिर सुनो इन्सान का
बोलता हू यो बड़ी-सी शान का
यों सुन्या हूँ शहर मशरिक़ का नक़ल
बादशाह उस शहर म्याने था अक़ल
हक़ ने जब ओ बादशाह वहा का किया
दौलत व न्यामत उसे बेहद दिया
जो कुछ उसकू चाहिए सो सब अथा
लेकिन उसके घर में फरज़न्द न था
हक़ सूँ मगता था दुआ ओ सुबह शाम
आरज़ू फ़रज़न्द का रखता था मुदाम
हक़ ने अपना फ़ज़ल जब उस पर किया
यक पिस्र मक़बूल तब उसकू दिया
शह ने उसका नाम राखा करके दिल
चाद होर सूरज था उसके आगे खजिल
परवरिश लिए प्यार सू करने लगे
कोई बाक़ी नहीं रहा उसके अगे
जब बरस चौदा मने ओ आया
इल्म होर हिकमत हुनर सब पाया
एक दिन अपने सँगातियों के सगात
खेलने में यों कह्या कोई ऐसी बात

नादिर-अद्भुत मशरिक़-पूर्व पिस्र-बेटा मक़बूल-प्रिय (क़ुबूल=कबूल)
खजिल-शर्मिन्दा ।

जो पिये **आबे हयात** इन्सान अगर
ता क़यामत लग जिये इस जग भितर
मौत से तहक़ीक़ वो पाये **नजात**
यक ज़र्रा पीवे अगर आबे हयात
बादशाहजादा ने सुन कर बात यो
बादशाहे अक़्ल के संगात ओ
बोलने लाग्या मुझे आबे हयात
गर मिले तो मौत सूं पाऊँ नजात
दिल मने मेरे हुआ है यो खयाल
जिवना उस बाज है मुज कूं मुहाल
बादशाहे अक्ल ने जब यो सुना
सुन के दिल की बात तब सर कूं धुना
बोल उठा मुद्दत पछे हक़ ने मुझे
फ़ज़ल कर अपना दिया हैगा तुझे
मौत मेरे जिव कूं था तुज सूं आधार
बाज मेरे मुल्क रहेगा बरक़रार
अब किया है दिल मने तू यों फिकर
को मिला आबे हयात इस जग भितर
इस फिक्र सू बादशाह की अक्ल आये
अपने सब अरकाने दौलत कूं बुलाये
ये हकीक़त सर बसर उन सूँ कह्या
सुन के सब मजलिस ताज्जुब हो रह्या

आबे हयात-अमृत ता-तक नजात-मुक्ति बाज-बिना अरकान-सदस्य (रुक्न अरकान ब. व.)।

बोल उठे सारे नेका आबे हयात
शाहज़ादा दिल जो यो करता है बात
शाह के था नौकरां में यक बशर
उन उठा शह के आगे तसलीम कर
नाम उसका बोलते थे सब नज़र
हर जगह जाकर ओ करता था गुज़र
बोल उठ्या शह सूं हुकम गर पाऊं में
हर वज़ा आबे हयात ले आऊं मैं
जब नज़र सते सुन्या शह ने यो बात
बोलता हूं ल्याऊंगा आबे हयात
आबरू की शह उसे खिलअत दिया
नज़र ने तसलीम कर कर ओ लिया
मंई मगा तबर्ज़ा ? उत्तम ज़ात का
पांचने हारा अथा दिन-रात का
नाम उसका बोलते थे अख्तियार
नजर कू बख्श्या के उस पर सवार
नज़र ने रुख्सत लिया शह सूं जधां
शाहज़ादे दिल कन आया बाद अज़ां
दिल कूं यो बोल्या ऐ शाहज़ादे मेरे
मैं चल्या हूं काम के बदले तेरे
हक़ सते उमीद यों रखना मुदाम
हर वज़ा ते करके आऊंगा यो काम
मैं ज लग आऊं तुमें रहना खुशहाल
और कुच रखना नको जिव में खयाल

ऐश व इशरत में रहना आनन्द कर
में ज लग आऊ न करना कुच फ़िकर
ले के रुखसत जब नज़र वहां ते चला
राह में कै भाँत का जंगल मिल्या
भई कितक दिन क जो आया यक काम कर
पाया उस ठार बस्ती का निशान
उस म ; के पास आया जब नज़र
यक क़िला देख्या उनें बाँ खूबतर
उस कतें क़िले दिलावर नाम था
ले ज़बर्दस्त उस जगा का काम था
नज़र ने देख्या क़िला कू इस वजों
दिल मने कीता फ़िक्र श्रो बादे अज़ाँ
तब नज़र लोगाँ कू पूछ्या उन तमाम
इस शहर के पादशा का क्या है नाम ?
खल्क बोल्या शाह हिम्मत नाम है
यो क़िला रहने का उसका ठाँव है
तब नज़र कीता फ़िक्र यो दिल मने
हर वज़ा जाना इता शह के कने
क़िला में अय्यार हो बैठ्या नज़र
जा किया हिम्मत के मजलिस में गुज़र
ज्यों देख्या है शाह हिम्मत ने उसे
बोल उठ्या लोगाँ कूँ ऐ बेगाना दिसे

ज लग-जब तक कतें-कहते है अज़ॉ-बॉग अय्यार-मक्कार, ढोंग।

नज़र कूँ लेते पकड़ वैसे मने
जल्द उसकूँ ले गये हिम्मत कने
तब कहा हिम्मत ने उसकूँ ऐ हैवान
कौन है तूँ कॉ ते आया इस मकान
तब नज़र बोल्या मुसाफ़िर हू फ़क़ीर
यो हक़ीक़त है मेरी ऐ राह गम्भीर
तब कहा हिम्मत ने हम देवें निशान
पोंचनी मुश्किल भोत है उस मकान
तुज कू वा जाना भोत दुश्वार है
राह में उसके खतर बस यार है
नज़र बोल्या गर निशान मैं पाऊँगा
हर वज़ा अपस कू वॉ पोंचाऊँगा
तब कहा हिम्मत उसकूँ ऐ नज़र
किस वज़ा वॉ जा करेगा तू गुज़र

—मसनवी हुस्न व दिल

पोंचनी-पहुँचना भोत-बहुत ।

मोहम्मद क़ादरी

मोहिउद्दीन सुल्तान सो पीर है
दुनिया दीन में ओ जहांगीर है
वलियाँ में उसे बादशाही खतम
जिते सब वलिया पर है उसका क़दम
जिते ग़ौस होर कुतुब हैं यो खबर
लिए चाव सू आपने सीस पर
मंगे औलिया दान ईमान का
बजा ल्याय सब हुकम सुलतान का
के मखदूम सैयद मोहम्मद सरवर
हुए टुक जो तेरे क़दम गिनते दूर
कहे मैं न ले सू न मुँज कूं गिना
अव्वल का था अव्वली च येता है मना
क़दम का रिवाज़ तो उसे दूर है
येता की तो मजलिस है कुच और है
कहे बात सादा ता मखदूम ने
देखे खाब भी येक वैसे मने
के बैठे हैं जानो मुहम्मद नबी
शिफ़ाअत करनहार ओ अरबी
मोहिउद्दीन सुलतान क़ादर क़बूल
लई गोद में आको आले रसूल

वलियाँ-वली का ब. व. ग़ौस-सन्त कुतुब-नेता शिफाअत-सिफ़ारिश करना, मध्यस्थता ।

मुबारक नईं पर फिर आवें क़दम
देखे उनपै इतना रसूल का करम
देखे ख़ाब सादात मख़दूम ने
उठे जाग कर बेग वैसे मने
देखे ख़ाब उठ जाग पाये निशान
किये दिल में याद लिए पछान
देखे ख़ाब इस धात का सरबर
तवाज़ किये तो नूर नाम पर
कहे कोई लेते हैं खांदे ऊपर
वले मैं लिया आपने सीस पर
गैयत हैं सब गौस इस शहर के
जिते कुतुब परिवार इस दास के
मोहिउद्दीन सुलतान है बादशाह
जिते औलिया कुतुब उसके गदाह
मोहिउद्दीन सुभान के प्यार का
ओ इश्क हो रब्बी के दीदार का
हिकायत भी है राबियाँ ते यहा
मोहिउद्दीन का सुन करामत अयाँ
जो बग़दाद शाह कू इनाअत हुआ
उठ्या शहर में ग़ल्बला नवा
जो आते हैं इस टार गौस-उल आज़म
देखाते हैं अपने मुबारक क़दम

धात-भाँति तवाजे-आदर सत्कार खाँदे-कंधा गदाह-फकीर दीदार-दर्शन
अयाँ-प्रकट ग़ल्बला-शोर ।

अथै शेख सना अव्वल ते वाँ
रहते थे मुरीदां सो करो नान मकान
खलीफ़े अथै सात सौ बिल यकीन
अथै सब खिलाफ़त पै कुर्सी नशीन
करामत सूं भरपूर सब खास थे
जिते सब मुर्शद के मिल पास थे
के जिस वक्त दाखिल हुए दस्तगीर
सो बग़दाद के बीच अज़मत के पीर

—मोहिउद्दीन नामा

शेख सना-सनाअ नामक एक महात्मा   बिल यकीन-विश्वास के साथ।

महमूद दकनी

उमर बेगी बेगी मर्दाने में आये
हर यक के घर कू खत ले जाये
अर्ज़ सात हज़रत अली कूँ दिये
ज़बानी हक़ीक़त वहाँ की कहे
हर यक ने खत अपना पड़ाने लगे
यो अहवाल सुन तलमलाने लगे
बरस सात बाद आये थे इधर
न जाने खुदा ले आऊँ कहना फेर कर
सुने सब ने ओ दोस्तदारा अमीर
उमर कूँ लाने गये बाद फिर
पोंचे शाहे इरम के क़िले के ओ पास
सुन्या शाहे इरम दिल में कहा ऐ सगाश (?)
पोंचे उमर ने जा आये ऐ शहरयार
हमरा ले हनीफ़ फ़ौज़ बारा हज़ार
क़ासिद ने यो कर दी जा खबर
के चंगा हुआ पाव शह का मगर
सवारां भई यारों हज़ाराँ सवार
फ़ज़र आ करें तुम सते कारज़ार

—जंगनामा मुहम्मद हनीफ़

सात-साथ पड़ाने-पढ़ाने पोंचे-पहुँचे हमरा-साथ कासिद-सन्देशवाहक कारज़ार-लड़ाई।

अज्ञात लेखक

मसनवी किस्सा मैना सतवन्ती

के यक शहर में था बड़ा ओ के शाह
जहाँगीर आलम अथा शहंशाह
सचें अदल में मेहरबाँ शहरयार
नेको नाम उसका सो बाला कुँआर
उसे सब विलायत बहुत शहर थे
सभी खल्क वां के सो दीनदार थे
सुन्या हू जो यक शहर का ताज़दार
धरे माल होर मुमलिकत बेशुमार
था लोरक ककर उसकूं बेटा सपूत
था आसरा जिसका प्यार उस पर बहूत
अथा उसके हमसाया राजा गम्भीर
थी मैना जो बेटी उसे बेनज़ीर
ओ हम तोल आपस में कर दोसती
किया भाव लोरक का मैना सती
ओ हम से दोनों अथे यार हो
हो दिलबर अथे होर दिलदार हो
हो खुशहाल दोनो करें राज राम
इसी धात मशगूल थे सुबह शाम
कते हैं जो उन पर क़ज़ा का अमर
हुआ यो जो इस धात होना ककर

अदल-न्याय शहरयार-नागरिकों की सहायता करनेवाला मुमलिकत-मुल्क का ब. व. ककर-कह कर हमतोल-समान कते हैं-कहते हैं क़ज़ा-भाग्य।

यकायक फ़लक उन पै कीता है हद
देखो उनसूँ कीता है क्या काम बद
ओ खुशराज़ उनका बहुत देख कर
यो कीता उनों पर सो यों बद फ़िकर
उनके होनहार जो कुछ काम है
यो खिलक़त कू सारी न कुछ खाम है
बजुज़ ख़ालिक़ जिन, इन्स, व बशर
उनकी होनहारी की नई किस खबर
बन्दे कू खबर क्या जो पुर ऐब है
जो सत्तार व आलिमुल ग़ैब है
लिख्या था उन्हों कू जो तक़दीर सू
यो करता है अपनी ओ तदबीर सू
यो भेजा उन पर जो बादे ज़वाल
यकायक दिया उनकूँ गुरबत मे डाल
लिया छीन सब उनकी दौलत तमाम
जो ओ मुल्क उनके भी आला मुक़ाम
जो ओ खादिमा सब भी सारे हशाम
चले ओ निकल कर भी होकर अदम
गवां मुल्क-माल चले ओ निकल
के पर मुल्क में जा रहे ओ सकल
कितेक दिन सो वहाँ रहके हर हाल सू
किया फ़िक्र भी अपने खयाल सूं

फलक-आकाश कीता-किया ख़ाम-ख़राब इन्स-इन्सान बादे जवाल-पतन खादिम-सेवक हशम-नौकर चाकर, सेना।

येता कूत की फ़िक्र करे ना हमें
अँदेशा भी कुछ दिल पै धरना हमें
कते फ़िक्र में ढूंढ कार्या फ़िकर
के चरवाई करना भोज खूब तर
कतेक गोरवाँ भी जमा करके तब
चराने लगा उसकूँ हर हाल सब
कितेक दिन जो गुज़रान करते अपन
किया जमाँ खातिर सो हर हाल मन
जो जिस शहर में ओ किये थे मुक़ाम
ओ खुशहाल रहते थे हर सुबह शाम
कते उसके हमसाया था कोई नगर
थी चन्दा ककर नार वाँ एक सुगढ़
थी मशगूल रंग रूप ते नार ओ
सुगढ़ भाव धरती थी चौसार ओ
बले मर्द उसका सो मूरख गवार
न चन्दा धरे मर्द पर कुछ भी प्यार
यो तारीफ़ चन्दा की सुन सर बसर
तो लोरक गया आप उसके नगर
गुज़र जो गया उसके महलाँ उपर
तो देखी छज्जे पर ते चन्दा सुघर
रहे खूब मन में ओ सुल्ताने जाँ
... .हो पशेमाँ

कूत-भोजन कार्या-क्रिया गोरवा-गोरू (गाय, भैंस आदि) का ब. व.
हमसाया-निकट ककर, वाँ-वहाँ पशेमाँ-पछतानेवाला।

खड़े हो इशारत किये उस सँगात
किते हों तुंजे सरफ़राज़ी की बात
यो सुन बात कूँ तस्लीम कर
कहा मुज पो करना करम की नज़र
कहे सुनके ए आशिक़े ज़ाने यार
के होता है तूँ गोखा म्याने ख़ार
मेरे पास धन माल है होर मता
तुंजे देऊंगी मैं सारा जता
वले मान धन सारा उलीच कर
हमें होर तुमें जावें एक मुल्क पर
यो सुन कर उनें बात बोल्या उसे
मता माल यो सब दिखाना किसे
मेरे घर में मक़बूल एक नार है
सही ....यूसुफ़ का सब बार है
न हाजत मुजे चाद होर सूर का
मेरे घर में शोला है कोहेतूर का
इस्मे पाक उसका सो है नावूं नेक
अाने बत मैना सो नाव नेक
उसे छोड़ जाना तो वाजिब नहीं
मैं किस धात सेती लजाना नहीं
यो सुन बात चन्दा कहे उस्तवार
अरे हो खुदा तुज को करता है ख़्वार

तस्लीम-स्वीकार मता-सम्पत्ति जता जितना है मकबूल-प्रिय कोहेतूर-एक पर्वत जहाँ मूसा को ज्ञान प्राप्त हुआ इस्म-नाम नावूं-नाम उस्तवार-दृढ़ ख़्वार-दुखी ।

× × ×

यो सुन बात चन्दा ते लोरक तेरा
तूँ चन्दा मैं लोरक हूं कूकर तेरा
जो दोनों की या नज़रां हुयां दो चार
तो लोरक के मुतलक़ हुई ऊन नार
किये दोनों मिल यो अख़्तियार से घर
लिये माल होर ·········· ·· · ······
लिये चन्दा कूं चोरी से बाहर हुआ
सो यो ग़लबला जग में ज़ाहिर हुआ
सो राजा वहाँ का बैठा तख़्त पर
ख़बरदार उसकू दिये ल्या ख़बर
करे बात यूं ख़ल्क़ हर ठार में
अचम्बा हुआ क्या इस शहर में
ओ ग्वाल नापाक लोरक यो ज़ात
गया शाहज़ादी को ले गत रात
तेरे पाक दामन कूं लोरक गवाल
बड़ा ढीठ होकर गया ले निकाल
सुन्या बात राजा हँसा खिलखिला
कहा मेरे दिल का टूट्या बिस्वसा
कहा अपने लोगों कू मुँह खोल बात
क्या चोरी करे चोर ग्वालज़ात
सो घर उसके मक़बूल एक नार है
भोत दिन सूँ उसपे मेरा प्यार है

कूकर-कुत्ता गलबला शोर सरबसर-सम्पूर्ण ।

खड़े ये महल पर मेरे थे नज़र
अँखियाँ ताब ना ल्या सरबसर
के जिस वक़्त देख्या मैं उसका जमाल
निदाँ ते रह्या नईं है मुज में ज़वाल
गया लेके लोरक ने चन्दा निकाल
जवानी को नैना के कर पायमाल
किया बाप चन्दा का मन में बिचार
कि ये देख मैना हुआ शर्मसार

जमाल-सौन्दर्य निदाँ-आवाज पायमाल-रौंदना।

तर्जुमा रिसायल हज़रत अब्दुल क़ादर जिलानी

जो कोई उसकूँ पावे तो साहबे कमाल
उसी कूँ है हरदम पिया का विसाल
सरज (?) कर इल्ला अल्ला के कुछ नो बोल
अपस पीर कामिल का इसरार खोल
पिचानो वो क्या है मगतारना
जो कोई देखता सो उसे देखना
ओही देखने की है सूरत सिया
राज़ सब जगत का उसीसे हुआ
सियाही ओ क्या है तू कर ले क़यास
जिसे तुज ओ सूरत बिसे आसपास
ओ सूरत बमाने मुनव्वर अज़ीज़
इल्म ही तो करले ओ कई तमीज़
इल्म जिसकू कहते सो काला अहै
उसीका जगत पर उजाला अहै
सरजना (समझना ?) सियाही कूँ मुश्किल है जान
उसे अहदियत हम कहते पछान
नहीं थी इल्म कू वहा कुछ तमीज़
ओ इजमाले वहदत में पाया अजीज़
किया वहदियत में तफ़सील जब
है सातों वजूदों से.................रब

इल्ला-मगर, अतिरिक्त इसरार-भेद ब. व. पिचानो-पहचानो मुनव्वर-प्रकाशमान अहदियत-एकत्व इजमाल-सारांश, तथ्य वहदत-एकत्व ।

ओ सातों वजूदों को जानों ज़रूर
उसी सूं विसी का जो कल का ज़हूर

गद्य

सवाल सात सूरतां खुदा-ए ताला के ज़ात में क्यों थ्याँ? जवाब-ज्यों अलिफ़ में के सात नुकते होकर थ्यां। सवाल—अनासरा किस जागी आसूदा होते हैं? जवाब—मुमतन उल वजूद में आसूदा होते हैं। सवाल—बीनाई में दानाई है? जवाब—बीनाई में दानाई है या दानाई में बीनाई है। खफ़ी में क्या हाल है? दानाई मा बीनाई न इश्क़ न उर्फ़ा हैं।

आसूदा-विश्राम मुमतनउलवजूद-जिसका अस्तित्व असम्भव हो खफ़ी-गुप्त उर्फ़ा-पहचाननेवाला।

जामे उल हक़ायक़

हिकायत

नक़ल है कोई शख़्स घरे सूँ उने
शहर कूँ आया तमाशा देखने
फ़िकर दिल में आई यों उसके मगर
कइ गँवाता जायँ अपना बसर
एक तुमड़ी पाऊ कतें बांध कर
शहर में कई सो रहा जा बेखबर
कहूं उसके पाव सूं कोई शख़्स ने
पांव कूँ बँद्या वैसे मने
उठ को देखा है जिसे बाद्या जिनें
ओ इच मैं हूं मैं समज्या उनें
जूं के बिसर्या है उनें अपस कतें
यूँ बिसर तू आपकू ना पाय कहीं
....

नफ़स तेरा ज़ंग अर्ली बोले हैं जान
लायक़ उस है बेज़ग्र पछ्‌ान
है वजूद तेरा व तेरे पर हराम
ना समज उसकू हलाल ऐ मर्दे खाम
बद कतें जो नेक समज्या उस ऊपर
कुफ़र का इतलाक़ आवे सरबसर

नक़ल-कहानी ओ इ च-वही जग्र-गुनाह इतलाक-बोलना सरबसर-सम्पूर्ण ।

है सलामत के बीच वहदत के इमान
दो में इमात (?) हैं तू ले पछान
दो वजूद के हैं जो कोई क़ायल सो ओ
भार हैं मजहब ओ मिल्लत सूँ देखो
ऐतक़ाद उनका अक़ायद का खिलाफ़
फ़िक्र कर देखो उसे कहता हूँ साफ़
हद होर ज़िद सूँ है देखो वो पाक ज़ात
है मुनज्ज़ा उसके भी कामिल सिफ़ात
खास उसे लाहद कते गर हद लगाएँ
क्यों उन्हो ईमान होर इस्लाम पाएँ
जो मुखालिफ़ होय बराबर का उसे
ज़िद कते हैं सो तू हरगिज़ ना दिसे
ज़रा उस कते बराबर हुए अगर
मुत्तफ़िक़ होकर रहना बा एक दीगर
पाक व हक़ है देखो इस ऐब सूँ
बूज पाक इस पाक कूँ हो पाक तूँ

× × ×

सरबसर बादल की अखियाँ सूँ तूँ जान
दीखेगा जायज़ नहीं हक का पछान
जो अखिया नाक़िस हैं अपने यक तूँ
ना सकेगा देखने कूँ बूज तूँ
नुक़्स अँखिया का निकल जब जायगा
दीख तब हक़ हर तरफ दिस आयगा

वहदत-एकत्व इमात-खंभा भार-बाहर ऐतकाद-भरोसा अक़ायद-कायदा का ब व. मुनज्ज़ा-पवित्र मुताफ़िक-सहमत (इत्तफाक-मुत्ताफ़िक)

फिर तुख़्म उसका पीस कर पीवे अगर जवान
सफ़रा-ए पित या सिये हुए यही यरख़ान
साखित करे सुदाअ को और उम्मेहार आज़
कुलिया व मसाना के जलन को देवे कगार

× × ×

नामे ख़ुदा सूँ जल्द हुआ है नुस्खा तमाम
जो फ़ैज़ लेवे इस सते दकनी में खासो आम
दाखिल नहीं है एक दवा सब ग़िज़ा है देख
लेकिन ये माले जात ग़िज़ा ए बजा है देख

तुख्म-बीज सफरा-पित साकित-कम करना सुदाअ-सिर दर्द उम्मेहार-बुखार कुलिया-गुर्दा ।

किताबे फ़िक़्ा

सात शर्त ईमान की ग़ैब पर आन ईमान
इल्म ग़ैब अल्ला का खासा कर कर जान
मोमिन हो अख़्तियार मे जान हलाली हराम
रहमत पर उम्मीद कर ग़ज़ब खौफ़ तमाम

× × ×

ईमान सभी दो भांत है मुजमिल मुफ़स्सिल जान
कलमा तैयब सिदक़ दिल पर ईमान मुजमिल पहचान
भली-बुरी तक़दीर कू खालिक़ से तू जान
जलावे पछूँ मौत के माने सो अहले-ईमान
मानूं अल्ला एक है और न दूजा कोय
यारी वह सब खल्क कू बेनयाज हैं सोय
ना जोरू ना मर्द है ना शहवत ना साख
ना माय ना बाप है ना बेटा ना आख
ना कुछ खावे ना पिवे ना सोवे दिन-रात
ना रोवे ना हसे ना बैठे ना उठ चले सात
ना चौड़ा ना पातुला ना तन ना रंग जान
ना उस बोये ना मिस्ल है ना उस तरफ़ मकान
ना बाहें ना दाहें ना ऊपर ना तले जान
ना पीछों ना बीच है ना आगो से मान
ना थोड़ा ना मोत है ना उस नुक्स जवाल
ना जौहर ना जिस्म है ज़ात सिफ़ात कमाल

गैब-अदृश्य मुजमिल-सारांश मुफस्सिल-विस्तृत बेनयाज-जो किसी पर अवलंबित नहीं शहवत-इच्छा, लालसा जौहर-जो वस्तु स्वयं सम्भूत हो जवाल-अवनति।

जिवता है बिन जिव सें सुनता है बिन कान
देखता है बिन आँक से क़ादर बिन तन जान
बोलता है बिन जीव सें बूझे बिन दिल नाल
मारे जिलावे खल्क़ कूँ अपने अदल के नाल

× × ×

अपने अपने काम पर फूले नही ज़िन्हार
ना कुच खावे ना पीवे ना उन अदद शुमार

रोज़ा रमज़ान

रोज़ा माह रमज़ान के जो कोई करे अदा
छूटे सख्त अज़ाब से पावे बहिश्त ज़ज़ा
तीस या उन्तीस दिन रोज़ा माहे रमज़ान
नियत हर दिन फ़र्ज़ है यह मसला पहचान
नियत रात की शर्त्त नईं ज़वाल ताईं जान
नज़र मुअइयन नफ़िल कू और माहे रमज़ान
नियत रोज़ा रात कर जो तू वाक़िफ़ होय
... कज़ा वास्ते और नज़र मुतलक़ होय

× × ×

सन हज़ार छियत्तर में बीच रमज़ान तमाम
औरंगशाह के दौर में नुस्खा हुआ तमाम

ज़िन्हार-हर्गिज ज़वाल-जब सूरज ढलने लगता है नफ़िल-ऐसी प्रार्थना जिसके न करने से बुराई नही, करने से अच्छाई ।

लोकगीत

महलों में से निकली हँसता मुह कुम्हलाया
माई पूछै गोरी पेऊका याद आया
चन्नी रात का चन्ना पड़ मेरी म्हाडी पो
बिजली तेरी दार साई करतें बात।
चोली, चितापूरी, रंग में धारबारी
कौन सिलाय री गोरी भाई राजधारी।
जवारां के खेत में लोटे जैसे भुट्टे
अम्मा तेरे पेट में मोती जैसे बेटे।
बड़ा मेरा घर बड़ाइया बावे सो
दादाओं का नाम लेके परपोते नादे सो।
संदल घिसते घिसते क्यों जी भाभी हसे
संदल के फेरा में मांग के मोती दिसे।
इलायती के थाले किसके घर को जाते
बेटी काढ़ियुँ नाने बादशाहों के बाड़।

२

गाभिनी बहिन का गरभ दिसत गोरा
पलो ले री आड़ा सीपे कुक में हीरा।
गभिना गभिना हाथ पो गिनती दिन
गरभवाली बहिना लगी पूरे दिन।
गोरी का गरभ मुझे नहीं मालूम
क्या लाई मालन रसीले जामुन।

गाभिन का जान माँगा खटाई मिठाई
साँई खरीद किये आम की अमराई।
पहलन पेठ लेकर आ बैठी सहेलियों में
शरम नको जाई नही दिसता मीरियों में।
नारियल जैसा पेट हरनी जैसा बच्चा
सालू के पर्दों में रेशम जैसी जच्चा।
जच्चा मेरा गोरी, नहीं खाती बोल
साँई खरीद किये जजगी के जाफ़ल।

३

मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी
मैं मोट चलाताउँ हल्लू हल्लू
मोती सरका मोट का पानी
सीता सरकी पाक जवानी
चम्पा चबेली दौना मरवा
दिन का राजा रात की रानी
मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी

मोट का पानी पायल बाजे
राधा रानी छुन छुन नाँचे
मस्त अकड़ को किरसन सरका
मुरली बजाना हमना साजे
मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी

सरका-समान।

काले खेताँ हरये कर दे
मूँ में मकइ के मोती भर दे
उजली चन्नी रुई रे बनिये
चांदी ले को सोना धर दे
मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी

मडी मडी को पानी बाँटू
तू बी न्हाटे मैं भी न्हाटू
चाँद के सरकी खुरपी लेको
धान की बाली हल्लू काटूँ
मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी

न्ह्योकाळा

न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया
उड़ते सो अबराँ काले पतंगाँ
चांदी के डोरे पानी के धारा
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

पानी की झड़ियाँ मोती की लड़ियाँ
बादल के घोड़े सोने की छड़ियाँ
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

चन्नी-चाँदनी मडी-क्यारी न्हाटूँ-दौड़ूँ न्ह्योकाळा-वर्षा ऋतु अबरा-अबर, (बादल) का ब. व.।

नद्दी की चद्दर चांदी का पत्तर
फुल फुल के फुग्गे सटते है ऊपर
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

फुलाँ की डाली आरस है बाली
झुक झुक को मरती शरमा को खाली
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

नद्दियाँ बी साँपा लोटाँ बी सांपा
चोटियाँ तो पूरे सांपा च सॉपा
न्ह्योकाळा आया न्योकाळा आया

बिजल्या बी खेलतैं आखाँ मिचौली
मछल्या बी खेलतैं आखा मिचौली
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

सिगा कटा ले को बछड्या में खुलगा
सूरज बी खेलता है आखां मिचौली
न्ह्योकाळा आया न्ह्योकाळा आया

५

सैयाँ जी को टैगे कना
अम्माजान से मिलतू कना
अम्माजान से क्या मिलना
चलो बीबी घर अपना

सटना-गिरना आरस-दुलहन लोट-लहर कना-कहना ।

आया हूँ घोड़े सवार
खर्चा हूँ बारा हज़ार
चलो बीबी म्याना तयार

सैयाजी को ठेरो कना
अब्बा जान से मिल तूँ कना
अब्बा जान से क्या मिलना
....

—ग्राम अकोलगा सैयदाँ, बीदर

६

सैली मेरी गेंद ममोला
दिल मेरा वाई लिया माँ !

सैली मेरी चाँद ममोला
मेरा दिल वाई लिया माँ !

सैली की उची पिशानी
भरी मजलिस में पछानी
वही दौलत की निशानी
मेरा दिल वाई लिया माँ !

सैली-सहेली वाई-वही ।

सैली मेरी गेंद ममोला
मेरा दिल वाँई लिया माँ !

सैली तू पैनी है माला
सातों सैलियों में है आला
माले का कंकर है बाला
मेरा दिल वांई लिया मा !

सैली तू आती झटाझट
दरवाजे खोले पटापट
बलैयाँ लूँगी चटाचट
मेरा दिल वाई लिया मा !

सैली तू पैनी है दुपट्टा
साता सैलियां में भकाटा
सैली को हुआ है बेटा
मेरा दिल वाई लिया माँ !

सैली हँसती बुलाई
चन्दन चौकी पो बिठाई
गले छाती से लगाई
मेरा दिल वाँई लिया माँ !

सैली का आँगन भुआँरा
उसमें बाँदी हूँ गँवारा

भुँआर-भूला ।

उसमें खेलता है प्यारा
मेरा दिल बाँई लिया माँ !

—ग्राम नन्दगाँव, हुमिनाबाद, बीदर

गुलबर्गे की टोनी सवा हात का पन्ना
मुक में हँसता बन्ना बन्नी का क़द नन्हा

७

भई के घर को गइ तो भावज आड़ी तेड़ी
रख ले साड़ी चोली भाई से मिलको चली
भई से मिलने गई तो भावज खड़ी भार
तुज से क्या दरकार भई मेरा सरदार
हमन भावज रानी सबसे बड़ी स्यानी
बादल पो का पानी पचतोला से छानी
नन्दाँ आतैं कर को उड़ते उड़ते सुनीं
ऐसी हैबत पड़ी भाबी छै महिने खाट चढ़ी
भानी आतैं करको भाई उठके खड़े
देखो भावज बीबी हमन नन्दाँ के मान बड़े

पचतोला-जरीन कपड़ा ।

गद्य

बन्दा नवाज़ (१३८८-१४२३)

वजुदुल आरफ़ीन है नाँव उसका, वो ही पावे नसीब है खूब जिसका। ज कोई जो पीर कामिल सूँ तो देखे अली उसके मना नईं है भी किसका, ऐ आरिफ़ हरेक इन्सान कूँ—"वजूद हैं सो इसमें चार वजूद बन्द के हैं" एक वजूद बारी ताला का है, अम्मा हरेक वजूद के शर्तों व लवाज़मात सो वो समजना होर अमल करना, तो अपने मतलब कूं अपड़ेगा, पस अम्मा उस पाँच वजूदाँ है, क्या बयान, अल्ला ताला कुरान में फ़रमाया है,⋯ ⋯⋯ याने मैं तुम्हारे तना में हूं तुमें मुजे देखते नईं, होर हज़रत अली फ़रमाते हैं ⋯⋯ ⋯याने ज कोई अपने नफ्स कूं समझा पस वो तहक़ीक़ समझा अपने परवर दिगार कूं: ऐ आरिफ़, वो पाँच वजूदां सो कौन कौन, एक वाजिबुल वजूद, दूसरा मुमकिन उल वजूद, तीसरा याने मम्तने उल वजूद, चौथा आरफुल वजूद, पाँचवां वहदतुल वजूद, इसमें चार वजूदाँ फ़ना है, पॉचवा वजूद बक़ा है, जो वजूद बक़ा है सो वो हक़ ताला का है, क़ौले ताला⋯⋯ ⋯ ऐ आरिफ़, पहला तन वाजिबुल वजूद पांच अनासरा सूँ हुआ है-माटी, पानी, आग, बाद, खाली। माटी के गुन पांच रगाँ, गोश्त, हड़, चमड़ा, बाल; माटी का फल सूंघना। पानी के गुन पाँच-अराख़्त (?) जुलाब, खोय, मगज़; आब मने पानी का फल चाखना। आग के गुन पॉच—भूक, प्यास, काहिली, नींद, हज्म, आग का फल देखना। बाद के गुन पाँच—हिलना, चलना, भोंकना, काँपना, बिसरना, बादी का फल लगना। ख़ाली के गुन पॉच शहवत; ख़ाली का फल सुनना। वाजेबुल वजूद उसका

वजूद-अस्तित्व आरिफ़-ज्ञाता, महात्मा क़ामिल-पूर्ण अम्मा-लेकिन अपड़ेगा-प्राप्त करेगा तना-तन का ब. व नफ़्स-आत्मा, वासना फ़ना-नाश बक़ा-शाश्वत अनासरा-अन्सर (तत्व) का ब. ब. बाद-हवा ख़ाली-आकाश रंगॉ-रग, नस का ब. व. अराख़्त-(?) ख़ोय-आदत बाद-हवा शहवत-लालसा ख़ाली-आकाश।

मुक़ाम शैतानी बात शरिअत अक़्ल क़यासे............ए, अारिफ़, इस ख़ाकी कूं वाजिबुल वजूद कहिये सो क्या माने, याने इसका तमसील यूं है के वहां का........ ...होर इस वास्ते के ख़ुदा ए ताला उस रूह मीसाक़ी के बीज कूं इस ख़ाकी तन के ज़मीन में पेर्या तो बीज होर झाड़ दोनों मिल कर क़ालबियत कूं अपड़े याने इस ख़ाकी वजूद कूं फ़ज़ले करामत बख़्शिया सो इस की सोहबत सूं हैं, होर **कलमा व नमाज़, रोज़ा व हज व ज़कात** हैं, बाज़ केतक चीज़ हे सो वो समजना वाजिब है. मुक़ामें शैतानी कहे सो क्या याने इस ख़ाकी वजूद में नूर...   .. ...होर ज़ात परवर दिगार में गर कहता सो वो फ़ेले शैताजी होर जे फ़ेल अल्ला मना किया है सो वही फ़ेल करना जे करो कह्या है सो उने करना, इस बाबत में हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाये हैं—पहला मुक़ाम शैतानी कहना मंज़िल नासूत केरी, शरिअत की बात लगे ना क्यों कर उतरे गहेरी।

बात **शरिअत** कहे तो क्या माना, नफ़्स का ख़िलाफ़त करे हलाल होर **हराम** कूं पछाने कम खावे, कम पीवे, कम सोवे, कम बोले, होर ख़ल्क़ सूं सोहबत कम रखे होर परहेज़गारी में रहवे, ऐसी बात **शरिअत** कहते हैं: वहां सते ज़िक्र **जली** अख़्तियार करे, बमुआफ़िक़त हर्दाम याने लक़लक़ा उसे बोलते हैं के हमेशा ज़बान हरकत में अछे। केतक जाके हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाते हैं के अपने काम सूं फ़ारग़ हुए बाद अज़ ख़ाली हुज़रे में जाकर बैठे होर इसमें ज़ात सूं मशग़ूल होवे बलन्द आवाज़ याने अल्ला अल्ला भोत बोले...... . ...याद करो ख़ुदा कूं, याद भोत जो तुमारे कूं ज़िक होए इस बाबों में हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाये हैं—

मीसाकी-आस्तिक, वचन पेर्या-बोया क़ालबियत-शरीर धारण करना फ़ज़ल-अनुग्रह फ़ेल-काम नासूत-संसार लक़लक़ा-रटन केतक-कुछ ज़िक-तृप्त बाबों-बाब (प्रकरण या अध्याय) का ब. व.।

बैत

ज़िक्रे जली नित बसना यादे अल्ला हर दम पाऊँ
यों हर आज़ा बरतन पूरे नासूत पावे ठाऊ

अल्ला अल्ला बोले तो आवाज़ कानों से सुनना होर सोज़ कन होर रो-रों, रग-रग सब आज़ा में बरतना में निरकन, नफ़्से अम्मारा कहे तो क्या ? याने ऐसे बोलते हैं के हरेक आदमी कू तवज्जो करने नहीं देता है, होर इबादत में काहिल बख़्शता है होर किब्र व कीना, बुग्ज़ व हिर्स, हवा व बख़ीली व तुम्बी व शहवत यो तमाम फ़ेल नफ़्स अम्मारा के हैं होर इबलीस कू रान्या सो यही नफ़्स था—याने नफ़्स अम्मारा फ़रमाने हारा है फ़ेले बदी याने — ... नफ़्शे पग्वर ... मग ।

बैत

अम्मारा घर शैतानी होर मंजिल बी नासूत
लव्वामा खुशनूद बिला ऊपर देखे हित भोत

अक्स क़यास कहे तो क्या माने ? खुदा कू अपने क़यास तें समजता है के खुदा चाँद ऐसा अछेगा, या सूरज ऐसा अछेगा, होर अल्ला ताला कूँ एक सूरत का तमसील देता है............**मेक्किल** महतर **मेकाइल** कहे ता क्या ? याने **मेकाइल** पानी के हवाले होर इस वजूद कू ताज़गी बख़्शता है, सो वही है, होर खतर्या कू बिधारा है अपस थे है, होर माटी कूँ पानी बग़ैर क़ूत नहीं इस वास्ता यहाँ मेकाइल दरकार है... ....शहादत मद्दा

सोज-जल रों रो-रोम रोम आज़ा-अँग किब्र-घमंड कीना-ईर्ष्या बुग्ज़-प्रतिहिंसा, आन्तरिक शत्रुता बख़ीली-कंजूसी शहवत-लालसा नफ़्स अम्मारा-लालसा इबलीस-शैतान लव्वामा-(?) बिला-बिना अछेगा-होगा महतर-बुजुर्ग खतर्या-खतरे का ब. व. बिधारा-विदीर्ण किया अपस ते-अपने से क़ूत-शक्ति, भोजन मद्दा-प्रशंसक ।

कहे तो क्या याने इस खाकी तन सूँ मरना है..........याने मरने के अंगे मरना वो क्यों इस पाँच हो उसके लज़्ज़तां सूँ गुज़रना तो जानो यो तन इसते ही छूट्या होर मुआ तो ये रस्मी शहादत हुआ होर सुक-दुक दोनो जान कर खुदा की याद में रह्या तो जीवन भोग कर भूके हुआ तो इसे ऐनी शहादत कहते हैं। मंजिल नासूत कहे तो क्या ? याने ज़िक्र जली करते करते **मालिक** पर दो हाल घिरते हैं—अव्वल हाल जीवाँ का, दूसरा हाल......... का ये दोनों हाल भी फ़रामोशी के हैं, सालिक खुदा की याद में अपस में यो फ़रामोश करना उस हाल के सालिक कू आशिक़ बोलते हैं, इस बाब में हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाये हैं :—

बैत

मंजिले नासूत किसकूँ कहता उसके यूँ ई च निशानी
बालपने की रुत भली पाछूँ देक जवानी

क़ल्बे मुस्ग़ा कहे तो क्या ? याने इस तन का बंधना होर लम्बा होना, होर चोड़ा होना होर क़ल्बे मुस्ग़ा सूँ है होर रूह नामा सूँ है रूह नामे का होर नफ़्से अम्मारे का जागा भी दिल में है, नफ़्से अम्मारा क़ल्बे मुस्ग़ा रूह नामा मुअक्किल मेकाइल अक्ल क़यास इस पाँचों का तबियत एक है, इस बाब में हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाये हैं :—

बैत

नफ्स दिल रूह एक, इन फ़ेलों ख़ारिज़ देक

होर इस वजूदे खाकी कूँ सात हरफ़ाँ की ख़्वाब कहे हैं क्या वास्ते के इसमें शैतान दाखिल न करे। वो सात हरफ़ यो है के ये है-वाव, नून,

---

ऐनी-बिल्कुल यूँ ई च-यों ही क़ल्बे-मुस्ग़ा-हृदय का माँस पिंड नफ़्से अम्मारा-लालसा।

मीम, दाल, काफ़; इस सात शुग़ल बोलते हैं। 'ए' कूं क़दम के जागा दिसते हैं दाव उसका यो है याने ऐ बारे खुदा या मेरे क़दम तेरे उस मुक़ाम में साबित रख। जो तेरी इबादत बग़ैर उठेना। दूसरा शग़ल 'हे' याने ऐ बारे खुदा या मेरे जाँ कूँ तेरी याद में रख। तीसरा शग़ल 'वाव' कूँ नाफ़ में रखे हैं, दावत उसका यूँ है याने ऐ बारे खुदा या मेरे दम कूं तेरे ज़िक्र में टिके रख जो तेरे ज़िक्रे बग़ैर यो दम खाली न जावे, चौथा शग़ल 'ते' कूं सीने में रखे हैं, दावत उसका यू है .... याने ऐ बारे खुदा या न्यामते हक्क़ानी व नूरानी मेरे सीने में नाज़िल कर। पाँचवाँ शग़ल 'मीम' कूँ हलकूम में रखे हैं। दावत उसका यो है, याने ऐ बारे खुदा या मुज में तेरे ज़िक्र का नूर ऐसा नाज़िल कर के बातिल का सब मेरे गले में अपने ज़िक्र का इलहाम बख्श, ताके तेरा शौक़ दायम अछें। छटा शग़ल 'लाम' कूँ पेशानी में रख्या है, दावत उसका यो है याने ऐ बारे खुदा या मुज में तेरे ज़िक्र का नूर ऐसा नाज़िल कर के बातिन का सब आलम नज़र पड़े। सातवाँ शग़ल 'काफ़' कूँ दिमाग़ में रखे, दावत उसका यो है याने ऐ बारे खुदा या मेरे दिमाग़ में बू-ए मुहब्बत का बास ऐसा भेज के इस बास ते मस्त होऊँ होर इस जिस्मानी आलम थे खलास होकर उस रूहानी आलम में दाखिल होऊँ होर तेरे बग़ैर सब चीज़ कूँ हराम जानू।

मुरीद यह इर्शाद याद रखना आरिफ़ हुआ तो पछानेगा। इस किताब के तीन नॉव है। अव्वल नांव .... हदीस ....इसका मानी अपस में खुदा को पछानना होर खुदा कूं देखना सो उसका बयान बोलते हैं के आरिफ़ कूं इस आयत हदीस के खबर सू बाहर खुदा कू ढूँढता तो कुछ हर्ज नईं। पछानत अपनी कर कर उसकू पछानना, वाजिब होर फर्ज़ हुआ।

जाँ-प्राण नाफ़-नाभि हलक़ूम-हलक़ का ब. व. बातिल-असत्य दायम-शाश्वत बातिन-गुप्त मुरीद-शिष्य।

बात दीगर अव्वल बात इस तन में ······कूँ अल्ला बोलते हैं होर ······ कूँ बन्दा बोलते हैं। बात दीगर हज़ार कोस पो.जाको जिव की आँखों की जोत देखते हैं सो उस जोत कूँ अल्ला बोलते हैं। भई उसे देखे पिछे पछानत का एक क़तरा आता है, सो उस क़तरे कूँ बन्दा बोलते हैं। बात दीगर इस गोश्त के तन में खुदा कूँ बी पछानना अपसकूँ भी पछानना-रहगद, लहू, हाड़, चमड़ा इस चिजाँ कू अल्ला बन्दा न बोलना! इस चिज़ाँ के सूँ अल्ला बन्दा खारिज़ है, देखता सो अल्ला पछानता सो बन्दा—बात दीगर नज़र सूँ देखना, बाद अज़ दिल में खतरा लाना। अव्वल नज़र बाद अज़ खतरा लाना देखना। अल्ला क़तरा बन्दा अव्वल भी बन्दा अल्ला में अथा, अब भी बन्दा अल्ला में है। आखिर भी बन्दा अल्ला में ई च अछेगा।

—तर्जुमा वजुदुल आरफ़ीन

रहगद-पीप बाद अज-इसके बाद में ई च-मे ही अछेगा-रहेगा।

शाह बुरहानुद्दीन (१५६८)

तूँ उसमें एक हो जाता के जद अमर हता उस थे । **सवाल**—जिस वक्त मशाहल होता उस वक्त उस थे जुदा दिसता नहीं तो वही हो सपूरन ही ता । वलेकिन इस नूर में सू निराकार में कछु तफ़ावत नहीं चूँ के दरया क मोज तो वही सूँ निरांकार सो हैं बी अन्त बी कन्त बी निहायत ए जीता भोता कार सब मेरी आरद मँझा उठा हज़ार इल्म मेरी··· · ······मुँजे निशान ना । मुँजे मश्ल ना आना, ना जाना, ना कुच रूप, ना कुच मानिन्द, ना निशान में हूँ, निरांकार सूं सहजे सहज का ।

—कल्मतुल हक़ायक़

मशहल-(?) तफ़ावत-अन्तर मौज-लहर ।

मौला अब्दुल्ला (१६२३)

ऐ यारे खुदा, या ज्यादा कर होर बरकत दे हमना कूँ गुनाह कबीरा बयान कबीरा उसे कते हैं के ओ गुनाह कबीरा किया होर तोबा नईं किया अगर मुआ तो बग़ैर अज़ाब के छुटता नहीं। खुदा-ए ताला अज़ाब देकर बख़्शेगा। होर गुनाह सग़ीरा उसे कहते हैं के अगर बन्दा गुनाह किया, बाज़ तोबा कर मुआ खुदा-ए ताला चाहे तो बग़ैर अज़ाब दिये बख़्शे अगर कोई नेकी किया तो खुदा-ए ताला उन नेकी बदल गुनाहा कू दूर रखता है। अगर सग़ीरा गुनाह अच्छया तो होर कबीरा गुनाह नेकी करने सू दूर नहीं होता है बग़ैर तोबा करे गुनाह कबीरा यो है खुदा सूँ शिर्क ले आना गुनाह कबीरा है। होर खुदा की रहमत ते ना उम्मीद होता गुनाह कबीरा है होर खुदा के अज़ाब सूँ ना डरना गुनाह कबीरा है। हर एक गुनाह दायम कर्या अगर सग़ीरा अच्छया तो बी गुनाह कबीरा है। सेहर जादू करना गुनाह कबीरा है होर झूट गवाही देना गुनाह कबीरा है। मुस्लमानाँ के मूँ पर थूंकना गुनाह कबीरा है। होर मुसल्मानाँ के मूँ पर तफ़राक़ मारना गुनाह कबीरा है। औरत पर पाड़ना गुनाह कबीरा है। मर्द सूँ मर्द मिलना गुनाह कबीरा है। [illegible] करना गुनाह कबीरा है।

× × ×

सब सुननहारे होर बोलन हारे सवाब उसका मैअत के हक़ में बख़्शना यो सब सुन्नत है होर वहाँ ते इतने वक्त कहना के एक ऊँट जुबह कर कर कवाब करें। अगर इतने वक्त नहीं तो............ता मैअत कूँ दिलासा होता है यो हदीस में आया है। होर तीज़ा, सातवाँ, दसवाँ, बीसवाँ करना यो

कबीरा-बड़ा कते हैं-कहते हैं मुआ-मरा अज़ाब-पाप का फल सग़ीरा-छोटा शिर्क-किसी दूसरे का सम्मिलन सेहर-जादू तफ़राक़-तमाचा [illegible], ईश्वर की पूजा के अतिरिक्त दूसरे को पूजना।

बिदत है। होर चालीसवें कूँ लहद भरना होर कुछ खाता ककर ऐतक़ाद करते हैं यो सब कुफ्र है। होर यों आया है के मैअत के जनाज़े के सात कुछ चीज़ ले जाना हो, इस क़बरस्तान में फ़कीरों कूँ बाट देना यो अफ़ज़ल है जो दखनी में इसे **तोशा** करके बोलता है।

× × ×

दुआ मँगने का तरीक़ा यो है के हाता दोनों दराज करे। खान्द्या के मुक़ाबिल होर दोनों हाता के दरमियानी खड्डा अछे होर दुआ मँगे बाद अज़ मूँ पर सूं हातां उतारे यो सब **सुन्नत** है।

—अह्कामुल सलवात

लहद-क़ब्र अफ़ज़ल-अच्छा खान्द्याँ-कन्धे।

लिखाना तो बी उसका सिफ़त नईं होय इस वास्ते मुख़्तसिर कहा हूँ के मेरी ज़बान से कहाँ हो सकेगा। पन तमाम सिफ़ताँ इसी सात सिफ़तों से, अक़्ल से पछानना।

—कुंज उल मोमनीन

शाह बुरहानुद्दीन क़ादरी (१६७३)

ऐ आरिफ़ बात हक़ीक़त कहे तो क्या याने इस अँधारे में वाजिब और मुमकिन दोनों दिसते है। उस अँधारे में अपन शुरता ? हो आ़ाफ़ुल वजूद इस अंधारे में कौन देखता सो दीगर मुक़ीम उम्मी होर आरिफ़ दोनों पर शाहद सो अपना रूह है। इस बात में हज़रत शाह बुरहान साहब फ़रमाये हैं राह हक़ीक़त रूह सूँ ताल्लुक दिल सेती कित कू च आशिक़ पर यो हाल सज़ावार कहते न आवे बूज। ज़िक्र रूही कहे तो क्या याने जो अपने आज़ाँ हैं सो सब खुदा के च जानना होर उसते जो कुछ फ़ेल होते हैं सो सब खुदा के जानना। यों आशिक़ कूँ अपस खुदा में गँवाता है, होर मैं पने सूँ पाक होता है। इस बात में हज़रत बुरहानशाह फ़रमाते हैं-रूही अन्तर ध्यान लगावे, यो लग देवे याद रूही बरक़रार विस पाया देखत हुआ शाद ज़िक्र रूही मुशाइदुल आरिफ़ मुशाहिदा कहे तो क्या ? बग़ैर इस रूह सों अपने पीर का मुशाहिदा देखना ज़िक्र रूहीं मुशाहिदा कहे तो क्या ? याने देखना होर हाज़िर जानना याने पीर का मुशाहिदा देखना।"

—रिसाले वजूदिया

वाजिब-भगवान, सूक्ष्म मुमकिन-स्थूल जगत उम्मी-मूर्ख, अनपढ़ शाहद-साक्षी मुशाहिद-देखने वाला।

रिसाला तसव्वुफ़ (१६९८)

जानता है तू तो चुप कर रह अनजान मत बोल
रतन खान की कोठरी कहायके न पाना खोल

होर जिव के इस बाब में मौलाना शेख सादी फरमाये हैं······ ·।

× × ×

एक बुजुर्ग सूं हिकायत सुन्यां हूं के पैगंबर मजलिस सू बैठे थे होर उस महल में अक्सर यारा होर उम्मत के खासाँ हाज़िर थे। हज़रत रिसालत पनाह उनो सों खुदा ताला के राज़ क्याँ बाताँ करते थे व लेकिन उस वक्त हज़रत उमर मजलिस में आये होर हज़रत रिसालत पनाह उनों आते से देक कर यारों कूँ होर उम्मत के खासा फ़रमाये के खामोश अछो बाद अज़ हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ी अल्लाहू अन हो होर फ़िरासत सूं······हज़रत रिसालत पनाह अपस सूं इसरारे अजायब व सुखनाने ग़रायब छिपाये होर पिनहा किया। पस सवाल क्यों ना करूँ ऐ मुहम्मद, यो क्या सबब है जो साहब ने इस बन्दे सूं इस सुखन का दरेग़ किये होर छिपाये। उसी दरेग़ सूँ सवाल किये बाद अज़ाँ हज़रत रिसालत पनाह ज़बाने गौहर फिशाँ सूँ जवाब यों दिये के ऐ उमर हमारा नज़र होर करम होर लुत्फ़ सब असहाबाँ पर होर उम्मत के दोस्ताँ पर होर खासाँ पर यक है लेकिन आलिम के माफ़िक़ होर उनों की अक्ल होर लायक के माफ़िक़ फ़रमाते हैं क्या वास्ते तिफ्ले शीरखार अगर चे कोई बिरयानी दिआ लाद खिलावे तो मर जायेगा व शिकम अमास होयेगा पर ऐ उमर यों ताक़ीर करना तिफ्ल सूँ फ़िल हक़ीक़त दरेग़

हिकायत-कहानी उम्मत-मुसलमान, पैगंबर के अनुयायी अछो-रहो रज़ी अल्लाहू अन हो-ईश्वर उनसे प्रसन्न रहे फिरासत-बुद्धिमान ग़रायब-अद्भुत शीरखार-दुधमुँहा अमास-सूजन, खराब ताक़ीर-देरी तिफ़्ल-बच्चा।

नहीं है बाद अज़ाँ हज़रत उमर यो बात मुहम्मद अपने दिल व जान सूँ क़बूल किये तो ऐ दोस्त तूँ भी इस किताब का समझ तालिब कू थोड़ा थोड़ा समझा जिंव के मादर अपने फ़रज़न्द दिलबन्द कूं परवरिश करती है, ता बालिग़ हुए लग.........।

मुहम्मद शरीफ़ (१७००)

रसूलिल्ला फ़रमाते हैं के फ़क़ीरी मेरी बुज़ुर्गी है, नक़ल है के एक रोज हज़रत रसूलिल्ला नमाज़ गुजार कर पीटे मुबारक **क़िबला** तरफ़ कर कर बैठे, याराँ पूछे के या रसूलिल्ला असल फ़क़ीर क्या है ? रसूलिल्ला फ़रमाये के असल फ़क़ीरी करामत है, ज़ाती करामताँ ते है । यारा पूछे के दरवेश क्या है ? रसूलिल्ला फ़रमाये के दरवेश खज़ाना है, अल्ला ताला के खज़ाने ते भी । याराँ पूछे के या रसूलिल्ला फ़क़ीरी कित्ती खसलत है ? रसूलिल्ला फ़रमाये के खामोशी फ़क़ीरी कू ग़नीमत है होर खाना-पीना रिज्क अल्ला ताला कने तलब ना करना जो कुछ हलाल वजे का रिज्क पोंचाता है, तो ओ रिज्क खाना होर पीना, होर खुदा-ए ताला का याद हरवक्त अछना, सारा दिन रोज़ा रखना, सारी रात इबादत करना अगर फ़ाक़ा पेश आया तो खुशहाल होना होर किसी के आगे ना बोलना ।

× × ×

हज़रत फ़रमाये हैं के मरने आगे मरो, उसका हासिले मुराद यो है के जो एक फ़ेल होर अफ़ाल नफ़सानी है उसते यो बाज रखना के जूं मुर्दे इस फ़नाँ उल वजूद की सन्दूक थे बाज है । जो कोई यों मशक्क़त करेगा उसकूं हरगिज़ मौत नहीं है, होर ओ फल ज़िन्दगी का दोनो जहाँ में पाया । हिकायत– साहबे दिल आशिक़े मुतलक़ होर वासिले औलिया मशहूर हज़रत शाह मनसूर रूह कहे हैं के ओ बुज़ुर्गवार क़ब्ल अन्त मूतूँ सों मूतूँ में जमा हुए थे, याने मरने थे अव्वल मरना उनों पर बार था, हज़रत रब्बुल आलमीन यो तोफ़ीक़ अपने महबूबाँ कूँ मरने सूँ अव्वल मरने का देवे के ओ साहबे दिल ज़ात के मुकाशफ़ होर **मराक़बे** में लाकों नफ़ी कर कर इल्ला

किबल-सामने करामत-करामत ख़ासलत-स्वभाव अफ़ाल-कार्य मूतूँ सों मूतूँ-मरने से पहले मरो तोफ़ीक-उपदेश मुकाशफ-प्रकट ।

अल्ला में यों महो थे के जूं शमाँ में पतंग महो होता है, होर उस रात इस आलम की उस आलम की बस्ती सूँ बेखबर थे। नदी के दामन में ओ खाकी जसद था। नागाह परवर दिगार जहानियाँ के हुकम सूँ ऐसा अज़ीम ·······के ओ नदी-तलाब भर कर चली बल्के आलम के आने जाने ते टली, माटी उस पानी सें बह कर उस जसद मुबारक के सर लग मिली मग ज़रा सर की खोपड़ी नज़र आती थी, उस जिस्मानी जुस्से कूँ इस हाल की खबर न थी इसी वजह चहार पहर रात टली होर मुँह खुला। पानी अपने अपस के क़दीम वतन पर आया। सुबह व सादक़ हुआ, आलम सब नींद सूँ होशियार होकर फिरने लगा होर इस औलिया अल्ला कूँ उनों के बिछाने पर देखे नहीं नज़र आये। आलम घाबरे हुए। थोड़े कहे के फ़क़ीर नदी के पानी में डूब कर मुआ बाद अजाँ ढूढते नदी के किनारे आये होर देखे के चिक्कड़ भोत नदी में भर्या है, उस चिक्कड़ में एक जरा सरकी खोपड़ी नज़र आती है, बाद अज़ आलम उस मुबारक ज़ात कूँ मोये कर कर समज कर कुदाली फावड़े लेकर चिक्कड़ आसपास का हटाये ओ साहबे शहदा उरूज़ मंजिल सूँ नजूल की मंज़िल में आये आन कर खड़े रहे। हिन्दू मुसलमान उन पर ईमान ले आकर आंग धुला कर उनों के बिछाने पर ले आये होर आँग पर होर अगर सुलाये। बुजो ऐ मुहिब्ब हो के "मोतो क़ब्ल अन्त मोतो" का हाल यो है, दूकानदारी कूँ होर इस हाल कूँ भोत फ़र्क़ है। शेर—"बुलहवस सूँ दूर है हालात यो। बाल सूँ बारीकतर है बात यो।"

—गंज मख़फ़ी

महो-तल्लीन जसद-शरीर जुस्सा-शरीर।

मुहम्मद वली उल्ला क़ादरी (१७८२)

"मुहम्मद वली उल्ला क़ादरी हुकम किये मुजकूँ हज़रत शहजी विलायत ········होर सदर नशीन मुस्तफ़ा के हज़रत शाह हबीबुल्ला क़ादरी बाक़ी अल्ला ताला उनों कूँ हमारे सिर पर होर आँखियाँ पर जब तलक के आफ़ताब झलकता और चमकता है, ये किताब मारफ़त उल-सलूक जो तसनीफ़ मग़फ़रत पनाही हो······ ···फ़ारसी ज़बान से उसे हिन्दी ज़बान में बयान कर होर आयत होर हदीस के माने थक यक बयान कर।"

ऐन तौहीद रखता था। बफ़राज जहान अपने सिफ़तों के क्या वास्ता के उस मर्तबे में उस क्या सिफ़तां भी यों ही च मुक़फ़ी है। सो इस मर्तबे थे अपने में नज़र किया। अपन कूँ तमाम क़ाबलियतां होर सिफ़तां सात पाया तो तौहीद उसकी ऐन मार्फ़त हुई होर फिर कर जिस वक्त उन पर क़ाबलियना की हक़ीक़त की ढूँड्या तो मुझें अपने बग़ैर दुसरा कोई इस क़ाबलियतां की हक़ीक़त नहीं पाया। तो मार्फ़त उसकी हक़ीक़त हुए। क्या वास्ता के अपन कूँ हक़ीकत तमाम क़ाबलियतां के पाया। होर जिस वक्त वो क़ाबलियतां अदम के मुल्क थे वजूद के शहर कूँ रवाना होयाँ तो हक़ीक़त उसके ऐन तरीक़त हुई याने वो अहवाबुल वजूद हक़ीक़त के मरतबे थे तरीक़त कूँ आया होर जिस वक्त वो क़ाबलियतां वजूद के शहर कूँ पहुँच्याँ मैं वजूद में आयां होर आपन कूँ ज़हूर के बाज़ार में हर इक सूरत-शकल सों जो यक़ीन उनका है कोशिश कियां। तो मुझें तरीक़त उसको ऐन शरीअत हैं याने वो क़ाबलियतां अपने अहकाम के हद कूँ पहुँच्याँ तो शरीअत हुए होर शरीअत के माने हुकमां और हदाँ हैं जो इस हद थे तजावुज़ न करे

मग़फ़रत-क्षमादायक तौहीद-ईश्वर को एक जानना मुक़फ़ी-पोशीदा, छिपी हुई बफ़राज-ऊँचाई के साथ अदम का मुल्क-परलोक तरीक़त-रास्ता, साधना का मार्ग अन्तःकरण को शुद्ध करना तजावुज़-कमज्यादा।

हक़ सुभान ताला के क़ज़ा में जो के पैगंबर अले सलाम के शरा में ऐसे हद बाँधे हैं जो इस हद थे कोई तजावुज कर नहीं सकता है। ऐसे उस वजूद तमाम उसका हरेक अपने हद सों जो यक़ीन उसका है, ऐसा हक़ सुभान की क़ज़ा में बाँधे हैं जो बग़ैर अज़ हुकम उसके अपनी हद थे को तजावुज़ नहीं कर सकता है। मुझे ऐसी शरीअत ऐन तौहीद उसकी है। इस हमीयत सों के जात उसकी अपनी यक़ीन के ऐतबार ऐन यक़ीन है। होर ला यक़ीन के ऐतबार ऐन ला यक़ीन है होर यों क़माले वहदत है। ज़ात की तई उस ज़ात के ख़ालिस लताफ़त थे। इस वास्ता के शरीअत मज़हर तरीक़त का है होर तरीक़त मज़हर हक़ीक़त का है होर हक़ीक़त मज़हर मार्फ़त का है होर मार्फ़त मज़हर तौहीद का है होर तोहीद मज़हर ज़ात का है होर ज़ात सब मज़हराँ में ज़ाहर हैं। सब सिफ़ताँ सात।

—तरजुमा मारफ़त उल सलूक हिन्दी

क़ज़ा-इरादा शरा-इस्लाम का धमीय क़ानून हमीयत-ग़ैरत, स्वावलम्बन
वहदत-एकत्व मज़हर-प्रकाशक मार्फ़त-ईश्वरयि ज्ञान जानना।

तारीख श्री रंगपट्टन (१८०२)

जब दीवान पटन का तख्त के राजा से हुक्म लिया वास्ते तस्क़ीर करने के रियासत मज़कूर के तैयार हुआ और असबाब जंगी लिया और फ़ौज़ तमाम सवारों की सराया से बुला भेजा और पैदल वग़ैरा सात लेकर वास्ते तम्बी करने के नारायणगुड़ा पालीगर देवनहली के कूच ब कूच कर कर मकान मज़कूर पर आकर उतरा आउर क़स्द मोरचा बन्दी का किया आउर जगह मरहला बदने वास्ते देख कर नजूमियों से नेक दिन आउर नेक साअत पूछ कर कामगारी करने मोरचा की कमटियां के ओहदेवालों कतें बुला कर ताकीद किया आउर काम शुरू किया आउर उसी वक्त कट्टी गोपालराज राजा बेंगलूर का मकान मज़कूर में था उस कतें एक परवाना लिखा कर क़ासिद के हात देकर तरफ़ बेंगलूर के रवाना किया और ऐसा उस फ़रमान में लिखा था के खास सवारी मय लश्कर वास्ते लेने सल्तनत देवनहली के रौनक़ अफ़ज़ा हुई है बल्के मोरचा बदन की कामगिरी शुरू है तुम बमुजर्रद देखते ही उस फ़रमान के जल्द आना जमैयत हमराह लेकर। यहाँ आकर पहुँचना एक लहज़ा देर और दिरंग ना करना। ऐसी बातों लिखा कर रवान किया। जब वह क़ासिद शपाशप दौड कर परवाना ले जाकर राजा मज़कूर कतें पहुँचा और राजा परवाना ले कर अपने सर पर रखा और बोसा दिया और आँखों कूँ लगा कर मुंशी के हाथ पढ़ने दिया तब वह मुंशी मज़मून फ़रमान का पढ़ कर सुनाया और उसी वक्त अपने इलाकें के सरदारा कतें बोला और ताक़ीद किया महाराज कराचौरी नन्दराज वास्ते तसक़ीर करने देवनहली के आये हैं और तुम्हारे तईं याद फरमाये हैं। सुबाँ फ़ज़र हमारा कूँच, तुम अपने अपने असबाब से तैयार होकर चलना ताकीद किया। उसी वक्त जवान की तलब

तस्क़ीर-घेरा कस्द-विचार मरहला-मंजिल नजूमियों-ज्योतिषी कमाटी-मजदूर साअत-घड़ी बमुजर्रद-तत्काल दिरंग-देर कराचोरी-कलचुरी तसक़ीर-घेरा।

आउर तनख़्वा देकर फ़ारिग़ हुआ। आउर बारूद-गोली वग़ैरा सिपाहियाँ कतें बटवाड़ा कराया जब तमाम जमीअत तैयार होकर मुन्तज़िर खानगी की थीं बमूजिब नविश्ता करचोरी नन्दराज के राजा बेंगलूर का अपनी जमीअत लेकर अल सुबह कूच कर कर एक रात और एक दिन में दाख़िल लश्कर नन्दराज के हुआ आउर हर दो राजा आपस में मुलाक़ात किये। दूसरे रोज़ नन्दराज वास्ते मौजूदात के हमराह कने गोपालराज के आये सो जमीअत बेंगलूर से उन कतें देखने तैयार किये आउर तमाम लोग मुशरफ़ मिसल से हुए उस वक्त हैदरसाहब अपनी जमीअत लेकर सब के आख़िर रूबरू कराचोरी नन्दराज के आया जब वह दीवान नन्दराज हैदरसाहब कतें जवान शाइस्ता और बाहोश देखा आउर निशानियाँ से ताले यावरी के चेहरा उसका रोशन था आउर पेशानी पर आउर आँखों में रोशनी आउर अलामात डोलती नज़र आती थी जब नन्दराज कट्टी गोपाल को पूछा यह जवान कौन है के बहोत बाहोश व कारदीदा नज़र आता है तब कट्टी गोपालराज उठ कर आदाब और तसलीमात बजा लाकर अर्ज़ किया आउर कमा हुक्का अहवाल सरगुज़िश्त हैदरसाहब का इब्तिदा से इन्तिहा तक मुफ़स्सिल ज़र्रा व ज़र्रा अर्ज़ किया।

नविश्ता-लिखित मुशर्रफ़-(शर्फ़-मुशर्रफ़) प्रतिष्ठा शाइस्ता-सभ्य तालेयावरी-विजय के चिह्न यावरी-विजय सरगुजिश्त-बीती हुई घटना, समाचार।

मकदूम शाह हुसेनी (१८१९)

इसका माने ख़ुदा कहा मुझे बूझो तुमना कौन पैदा किया। मेरा अमर तुमारे पर हुआ और अमर ख़ुदा का है इस वक्त·········कहे तुमें मेरे सों वादा किये इस तन में अछ कर हमें तुझे तहक़ीक़ करना कर कहे अगर कोई इस वादे कू पूँचे तो मेरा पका दोस्त होयगा। अगर नहीं तो मेरा दीदार ना देक सकेगा। कौल ताला··· ·· · इसका माने ख़ुदा कहा इस तन में मेरा दीदार पाना है। अगर नहीं तो यहाँ बी अँदली आख़िर कूँ बी अँदले यूँ कुरान में ख़बर अछ कर ख़राब होने का किया। हदीस··· ···नबी कहे मेरी सूरत तुमारे तनों में है सो पूच जवाब ऐ सालक सब आलम दो झगड़े के म्याने पड़ कर हलाक होते हैं। उनकी मुराद यूँ है कोई आक़िबत कूँ दीदार देखना बोलते हैं। कोई यहा देखना बोले हैं। आक़िबत को देखना कहे सो अँदले या देखना कहे सो मलऊन यो दोनो माने आशिकाँ कूँ सही है। यहाँ देखना सो मुर्शिद की जाहिर सूरत औ अपने में देखना सो आक़िबत।

कौल ताला·········ख़ुदा कहा मैं तुमारे के शहर के नज़दीक हूँ। कह्या सो बूजना यूँ कुरान में सनद अछ कर क्या फ़ायदा। सवाल तालिब पूछा—ऐ मुर्शद, यों सनद अल्ला की ज़बान कुरान नबी की ज़बान हदीस अछ कर नहीं। पूचने का क्या सबब? जवाब मुर्शिद, सुन ऐ तालिब यो आयत यूँ है··· ·····यो सब यक आलम कूँ दो देकते हैं, कोई मैं तूँ बोलते हैं, कोई अल्ला बन्दा बोलते हैं, कोई अज़ल-अबद बोलते हैं, कोई नूर ज़ात बोलते हैं। कोई मन अरफ़ा फ़क़अरफ़ा·········बोलते हैं कोई तजरीद

अँदली-अंधा आक़िबत-परलोक मलऊन-क्रोध पात्र, घृणित, धिक्कार योग्य शहर-स्वर नालिका के नीचे टेंटवा अज़ल-अनादि अबद-अनन्त मन अरफ़ा फक़ अरफ़ा-जिसने अपने को पहचाना उसने इश्वर को पहचाना तजरीद-एकाकी।

तफ़रीद बोलते हैं कोई नफ़ी इस बात बोलते हैं जे कोई अपनी पहचानन मिले है उनों कूँ यो सब हासिल हैं। ऐ सालक, इस दो झगड़े में नहीं लग। उसे राहत नहीं। हदीस ·· ··· इसका माना तो चीन, चीन मुल्क है। वहाँ लग मुर्शिद तलाश करना तो तेरा मुराद पावेगा, पीर कामिल मिले तो। सालिक सच्चा होना पीर के भाते में इसको देना तो पैगंबर कहे त्यों पावेगा।

··· ···हज़रत अली कहे पीर कू नबी कू अल्लाह कूं एक कर जानना यूँ अक़ीदा आय बादअज़ां इस्का गुमान नहीं टूटता, इसका यक़ीन अहद होना सवाल तालिब ऐ मुर्शद अहद कहे तो ज़ात क़दीम एकपना मैं तूं के कहना बैत-कण में कीता सब मन्नान, इस निशाँ का देव पछान। जवाब मुर्शिद सुन तालिब अहद पने का बीज गा ब में का उगना जान इसमें सब ही कती मन्नान कुल के माने सब सिफ़त बूझना लाज़िम, सब भात ······ भगत बन्दा अल्ला जान·········इसका माना कंज़ सो जमा मख़फ़ी पिन्हा दूसरा माना कंज़ सो जमीं पिन्हा सो बीज बीज में का बिस्तार कहे कई मालूम पने में नहीं आता ऐ सालिक बीज घडे में बन्द कर, मेवा तो कोई नई खाया ·····
इसका माना ख़ुदा कह्या तुमारे तन में दिल की ज़मीन है, इसमें अहद का बीज पेया हू, जो कोई दिल की ज़मीन पाक करेगा इश्क़ का मेहूँ बरसायेगा तो अहद का बीज में का नूरानी झाड़ बार आवेगा। बीजाँ जको जे मन में बोयेगा सो मेवा खावेगा, सालिक बीज एक बधारा भोत इसते हुआ है आलम कूँ मुश्किल-सवाल तालिब पूछा ऐ मुर्शिद अहद कहे तो एक हुआ; इसका बधारा क्यों हुआ, जवाब मुर्शिद सुन ऐ तालिब, क्याँ संगात अहमदपने के बोलूँ बात अहद की बीज पाँच चीज्या थ्याँ दो बात एक·········फल थे जड़ाँ का बिस्तार फलाँ में आया सू क्या क्या हुआ पाँच अनासिर पाँच फ़िरिश्ते

तफ़रीद-एकाकी   सलूक-(रास्ता) सालिक   बादअजाँ-इसके बाद   अहद-एक
मन्नान-ईश्वर (मिन्नत-मन्नान) कंज-ख़ज़ाना   मख़फ़ी व पिन्हा-गुप्त   अहमद-मुहम्मद
अनासिर-अनसर (तत्व ब. व.)

मक़दूम शाह हुसेनी

चहार तन चहार नफ़स चहार दिल, चहार अकल, चहार रूह, चहार कुत, चहार इर्शाद, चहार मंजिल, चहार शहादत, दो मक़ाम यूं झगड़े के बेदार हुए तो उसे फ़क़ीर का मुक़ाम बोलते हैं, सवाल-- ऐ तालिब मुर्शद यू तो नुज़ूल हुआ खुदा यहां······ जवाब मुर्शद सुन ऐ तालिब पीरे कामिल मिले तो सालिक का मुराद हासिल होता है, सालिक बी सच्चा होना पीर की भाँति में अपस कूँ दुनिया पीर कहे, यूँ करना तो उसका ज़ोरा नबी कहे।

—तलावतुल वजूद

रिसाले तसव्वुफ़ वगैरा (१८२३)

शहद का प्याला

एक रोज़ पैगंबर **सल अल्ला आले व सल्लम** सब यारों सात बीच घर हज़रत शाहे मर्दा अली करम अल्ला वजू के मेहमान हुए। उन्योंने एक तास रोशन बहोत भरा हुआ शहद से और ऊपर इस शहद के बाल से बारीक बाल पड़ा था आगे हज़रत सरवरे कायनात के लियाये। हज़रत ने इस तास पर नज़र किये के अजब ताश रोशन है भरा हुआ शहद और ऊपर यो शहद के बाल बारीक बहोत बाल से पडा है। हज़रत पैगबर············ यारों कूँ फ़रमाये के तुम इस शहद से और इस बाल से कुच तमसील करो व रूए मुबारक खुद बतरफ़ **अमीरुल मोमनीन अबूबकर सिद्दीक रज़ी अल्ला ताला** के किये हज़रत अबूबकर सिद्दीक अर्ज़ किये के मर्द दीनदार इस तास से रोशन बहोत और ईमान उसके दिल में मीठा बहोत और ईमान अपने साथ ले जाना बाल से बारीक भोत पीछे रूए मुबारक अपना तरफ़ अमीरुल मोमनीन उमर के किये हज़रते उमर अर्ज़ किये या रसूलिल्ला बादशाही इस तास से रोशन भोत और मुल्क बादशाही का इस बाल से बारीक भोत। पीछे रूए मुबारक अपना तरफ़ **अमीरुल मोमनीन** उस्मान के किये हज़रत उस्मान अर्ज़ किये या रसूलिल्लाह इल्म इस तास से रोशन भोत है और पढ़ना इलम का शहद से मीठा भोत और अमल करना इल्म पर बाल से बारीक भोत। पीछे रूए मुबारक तरफ़ अमीरुल मोमनीन अली के किये। हज़रत अली अर्ज़ किये या हबीबे खुदा इस तास से रोशन भोत और खिदमत मेहमान की शहद से मीठी भोत और

१ ईश्वर आपकी रक्षा करे तास-थाल सरवर-सरदार कायनात-दो लोक रूए मुबारक-चेहरा।

मेहमान कूं रखना बाल से बारीक भोत पीछे रूए मुबारक अपना तरफ़ ख़ातूने जन्नत के किये। हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा अर्ज़ किये या रसूलिल्लाह औरता सालिहा इस तास से रोशन भोत और जामा ऊपर मों इनो की शहद से मीठा भोत और अपने नयन आख से नामहरमों की निगाह रखना बाल से बारीक भोत। पीछे हज़रत फ़रमाये के पहचानना हक़ का इस तास से रोशन भोत और मुना पहचानना इस शहद से मीठा भोत। और पहचानत च दिल की निगाह रखना इस बाल से बारीक भोत। ऐसे में हज़रत जिब्राइल अलै सलाम आये और कहे या रसूलिल्लाह मैं भी कुछ कहूँ के राह खुदा ए ताला की निगाह रखना इस तास से रोशन भोत और ज़मीन राह की इस शहद से मीठी भोत और रज़ा खुदा ए ताला की निगाह रखना इस बाल से बारीक भोत या रसूलिल्लाह हदया लाया हू मैं के खुदा ए ताला फ़रमाया के बहिश्त इस तास से रोशन भोत और नियामत बहिश्त की इस शहद से मीठी भोत और सबों कू पुल सरात पर गुज़रना बाल से बारीक भोत।

गज़ल

सजन के बाज आलम में जिकर नहीं
हमन में हैं वले हमकूँ ख़बर नहीं
न पावे सन्दल राज़ इलाही
जिसे गरमीं सो दिल के दर्द सर नहीं
न पूछो दर्द की बेदर्द सों बात
कहे क्या बेख़बर जिसकूँ ख़बर नहीं

सालिहा-अच्छी, नेक, पाक ना महरम-जिनसे पर्दा हो हदया-तोहफ़ा बाज-बिना सन्दल-चन्दन।

अजब हिम्मत है उसकी जिसने जग में
बग़ैर अज़ यार दूजे पर नज़र नहीं
न देवें राह तुझकूँ मुल्के दिल में
वफ़ा का जब तलक तुज में असर नहीं

अब्दुल हमीद (१८४२)

सालिक पर तीन हाल घटते हैं, एक हाल जीव इनका खाता पीता, वली कोई देखता है, कर नहीं जानता। दूसरा हाल दीवानगी का के दीवाना जो कुछ अपन बोलता सो च बोलता, दूसरे का जवाब नहीं देता। तीसरा हाल नन्हा का, अपने खेल मे मशगूल अछता है, भूक लगती है तो रोता है, होर एक खेल खेलता है, मा बाप बुलाते तो नहीं जाता, उसी रोज इसे ले जाते हैं तो दिल इसका खेल बीच अछता है। यू मंजिल नासूत में तीन हाल घटते हैं। यू सालिक खाता पीता, हूकता, अछ कर खुदा की याद में आपे फ़रामूश करता सो मंजिल नासूत उसके तोहीद अकवाली याने ज़ाहिर के निसबत सू बोलता है, याने कयास की ज़बा सू बोलता है, कल्ब का ज़बाँ सू नहीं। इसका पर्दा खुबयत याने उसके और खुदा के मयानी यही तन परदा है। खुदा ने पान्च अनासर, पच्चीस गुन से यह तन पैदा किया है-माटी, पानी, आग, बाग, खाली। दो हाथ हैं तो मुठी बाधी जाती है, होर खोली जाती है, होर इस पाव में जहा खूब लगता है तो तहाँ रखा जाता है.........

यही तन सोते वक्त जहाँ का तहा पड़ा अछता है होर दूसरा तन ख़्वाब में बाहर निकलता है होर हडता फिरता है, सुनता है, देखता है, भोगता है। ख़्वाब में देखता है होर कोई होशियार करने में पान्च यहा आता है ऐसी बेगी है इस तन कू तो दो खासीता मन की, पस पाँच वक्त की नमाज़ मक्के में कर सके हैं, होर मुरीद का जहाज़ डूबता था सो जा कर काढ़े हैं होर भोत शिताबी सें अर्श लग जा सके ये तन ऐसा है होर पाक सूरत है, होर का ऐसा है के कुरान में खुदा-ए ताला बोल्या है के एक इसके दात जेव याकूत होर अनार के दाने ऐसे अछेंगे होर अखिया बड्याँ होर सीना औरताँ का अनार

नासूत संसार, प्रार्थना अक़वाला-वचन से सम्बन्धित (कौल अकवाली) कल्ब-हृदय बारा-हवा हडतां-भटकता अर्श-आसमान।

का फल ऐसा अछेगा; कधी नरम ना होयगा, दायम वो ही सख़्ती अछेगी। सर के बाल बड़े बड़े अछेंगे। मुँह मनी बास मुश्क होर अम्बर होर ऊद क ऐसा आवेगा होर इस ख़ुशबू से कौन होर यहाँ की नियामता कू होर फल-फुलारी कौन होर औरता की भूक कू लज़्ज़त इसते चालीस मर्त्तबा ज्यादा अछेगी। सब हज़म होयँगा होर खाना-पीना मोत अछेगा। वले अराक़त-फ़राग़त ना अछेगा। सब हजम होयेगा होर कहीं मोत नहीं होर टूटना, सड़ना, झड़ना, नहीं। आग में मरना नहीं, पानी मे डूब मरना नहीं होर फल-फुलारी में, होर मेवे में होर निआमता दुनिया की है जिते उसते मोत होर वे पायाँ वहा हैं होर दुनिया की चीजों उस चीजा कूँ चालीस मरतबा लजता ज्यास्ती अछेंगी। खुदा की आशनाई किये सो तो काल खाते पीते ज़ौक लेते अछेंगे। खुशहाली सू बासीरत होर बासूरत यही मानी देखने हैं। देखना यानी इस तन में नूरानी तन कूँ देखना।

—रिसाले तसव्वुफ़

अराक़त फ़राग़त-निश्चिन्त बसीरत-देखना।

नूर दरिया क़ादरी (१८६८)

मरना मनुष्या मरना आला मन अपरूप लेक
जीते मरना पित्र से मिलना जीना जीने का फल वेक

ए तालिब पहले नुज़ूल फिराक का विसाल हमेशा है। हक़ ताला आपस सो आपी था तो इसमें दुसरा कुच न था। जारी का चेत हुआ ज़ात में वहां सो आशक़ माशक़ बीना हुआ और क़दीम बीना बेहरकत होर जारी बनायो इसमें हरकत है तो अबी हरकतपना माशुक़ियत को लिकता है होर यो हरकत आशक़ियत को लिकता है मरतबा अव्वल मुक्त सो नफ़स जानना दिल देखता सो रूह रूह सो, जीव जीव सो बन्दा बन्दा सो, अंग उस पर मुशाहद अले मरतबे दुअम नुक्ता सो मुहम्मद है। इसमें बमिसल वेक वेक ज़ात है। मरतबा सोअम रूह मुकाम ज़ात रूह जारी सिफ़ात मरतबे चहारुम रूह मुक़ीम शाहदा में है। ओ माशूक़ है। ओ ज़ात है। मन नूर के शाहदे शिफ़ात है। मरतबे पंजुम नूक्ता ओ फ़ल वेक के है ज़ात है। इस पर शाहद सिफ़ात बन्दा खुदा का नफस रूह जारी सात अखिया सबा सिफ़ात है व सलाम ए तालिब वस्वास नफस के संग जानना दिल की आख बीनाई रूह का फ़ल है। शाहदी नूर का फेल है यो तीनों मिल ज़ात के मरतबे हैं, वहाँ सो चाहा के उसके मरातब का जहूर करूं के खुद देखा देखने में बूज पैदा हुआ। क्या वास्ते, जहाँ वेक है वहाँ बूज है। बग़ैर बूज के वेक को वजूद नहीं। इस वेक को अहदियत बोले। इस बूज को वहदत बोले जो बूज में होर वेक में विसको आया सो उसे वाहदियत बोलते है हो अहदियत ज़ात वाहद

वेक-एक नज़ूल-नाजिल होना फिराक-विरह विसाल-मिलन जारी-आरम्भ बीना-देखनेवाला दृष्य मुशाहद-साक्षी सबा-सात वस्वास-खतरा मरातब-मर्तबा का ब. व. बूज-समझ।

है। वहाँ कुज ऐतबार सिफ़त का नहीं सिवाय एकानियत के होर मैं पन कैं होर वहदत ज़ात काबिल महज़ है होर ाहदियत ऐके ज़ात है सिफ़तां के ऐतबार सो अहदियत मरतबे सो फिर नजूल होर जहूर किया सो आकर देख्या यानी क़ाबलियता पर नज़र किया इस देखने में बूज हायल हुआ। इस बूज सो सिफ़ता कू मुआइना किया। हर यक सिफ़त सूरत पकड़ कर दस्या सो इस वेक कू अरवाह बोलते। इस बूज को मिसाल बोलतें। सब सूरता दस्या सो इसे मुमकिनात बोलते हे सो ज़हर का तन वाजब-उल-वजूद व सलाम।

--रिसाले वजूदिया दकनी

कुंज-कुछ दस्यों-दिखाई दिया अरवाह-रूह का ब. व.।

मीर असगरअली काज़ी (१८६९)

इस वक्त महमूदशाह सुना के कन्नौज का राजा अपने साथ दोस्ती करने के सबब से कालिंगा का राजा जिसका नाम नन्दा था सो अपनी फ़ौज़ को लेकर कन्नौज के राजा पर हमला करने के वास्ते गया। और उस राजा से जंग कर कर उसका मुल्क ले लिया और उसको भी जान से मारा। महमूदशाह यह बात सुन कर बहुत गजब में आया और जल्द अपनी फ़ौज हमराह लेकर कन्नौज को गया और नन्दा यह देख कर घाबरा होकर फ़ौज़ को साथ ले अपने मुल्क को चले गया। और कन्नौज उस वक्त से अगली शान के माफिक नहीं रहा और लाहौर का मुल्क जो गज़नी से नज़दीक है, जिसका राजा अनन्दपाल था सो वह मुल्क राजा के हीने-हयात तग बादशाह के तावे नहीं हुआ। बाद राजा मरे के उस मुल्क को महमूदशाह अपने इलाके में लेने के वास्ते मशगूल हुआ।

× × ×

आखिर सिवाजी अपने सब खीश मय अयाल-अतफ़ाल खज़ाना पुरन्दर के क़िले में पनाह लेने के वास्ते घुसा। मिर्ज़ा राजा ने उसके अतराफ़ मुहासरा किया। सिवाजी भोत ना उमीद हुआ। तब मिर्ज़ा ने उससे इक़रार किया कि अगर तू मेरे हमराह दिल्ली को चलेगा तो तुझ को बेइज्ज़त नहीं किये सरीखा मैं तेरा जवाबदार होगा। जब सिवाजी इस बात को क़बूल किया और दिल्ली को पहुँचा तब उसको औरंगजेब ज्यादा इज्ज़त नहीं दिया मगर इतना ही किया कि छोटे अमीर के सरीखा क़ैद किया।

× × ×

नादिरशाह तब खज़ाना लुटवाया और तमाम बादशाहत के जेवरों

गज़ब-क्रोध हीने हयात-जीवन भर, ज़िन्दगी मे तग-तक अयाल अतफाल-बाल बच्चे ख़ीश-आत्मीयजन, सगे सम्बन्धी मुहासरा-घेरा।

और सोना और रूपा बेशुमार और जवाहिरात बेहिसाब जो इब्तिदा से मुगल बादशाहान अपने अपने महल में जमा किये थे सो तमाम मालोमत्ता और नगद वग़ैरा कुछ बाक़ी नहीं रहे।............नादिरशाह के हाथ लगा। दिल्ली में तीस पर पाच रोज तलग रहा ताके किसी जगह ज़मीन में गाड़ा हुआ माल या खज़ाना था सो जुस्त जू करके अपने हमदस्त कर लेवे। दिल्ली तमाम खाली हो चुके बाद अपने मुल्क को चला गया। जाते सो वक्त तीस पर दो करोड़ रुपये अपने हमराह दिल्ली से लेकर गया। नादिरशाह हिन्दुस्तान को अपने कब्ज़े में रखने का इरादा नहीं किया। किस वास्ते, वह समझा के मैं मुल्क फ़ारस और हिन्दुस्तान इन दोनों मुल्कों पर अमल नहीं कर सकूगा। फ़क्त काबुल और कन्धार को अपने इलाके में रखा और दिल्ली से जाते सो वक्त फिर मुहम्मदशाह को तख़्त पर बैठाया और जाते वक्त कुछ नसीहत करके चला गया।

× × ×

तब अहमद अब्दाली अगर चाहता तो हिन्दुस्तान के मुल्क को अपने कब्ज़े में ले सकता था, लेकिन इन दोनों मुल्कों को अपने कब्ज़े में नहीं रख सकता हूँ समझ कर एक महिला दिल्ली मे रह कर आलमगीर सानी का बड़ा बेटा जिसका नाम अलीगोहर था सो उसको तख़्त पर बैठाया और वह तख़्त पर बैठने के वक्त आलमशाह मुतलक़ बेकुदरत था जो शख्स के दिल्ली को लेना चाहता था सो ले सकता था। बाद चन्द रोज़ के वह एक रूहेले को के जिसका नाम क़ादर था अमीर उल उमरा बनाया। तब वह शख़्स बादशाह को मोत सताने के बाअस शाह आलम मखफ़ी से सेन्धिया को उसके जुल्म से बचने के लिए कुमक मागा। अमीर-उल-उमरा सुना के सेन्धिया आता है वह बादशाह पर बहुत जुल्म और सितम कर कर उनके आंख्यॉं अपनी कटारी से निकाल डाला और महल को लूट कर भाग गया।

जुस्तजू-तलाश हमदस्त-हासिल करना बेकुदरत-निर्बल बाअस-सबब।

मीर असगरअली काज़ी

उसके बाद मरहाटों ने दिल्ली को लिये। सन् १२१७ हिज़री मुताबिक १८०३ ईस्वी में लार्ड लेक साहब अंग्रेज़ी लश्कर के साथ दिल्ली गये।

—गुलदस्त-ए-हिन्द

सैयद बुलाकी (१८७७)

उस जिन्स कपड़े पैन त् जो सस्त होये, दिन टिके। ना पैन भुज्ञ शरअती तू, पैन कपड़ा लट ऊपर। कपड़ा लिबासी पैनता है दीन में राहत बहुत दस्तार होर पेरहन थे यही ईज़ार करे सिफ़त तर। किमखाब ना ज़र्बा कूं तूँ ना पैन ना हरगिज़ कधे। रेशम सू जू होवे पैन ना तिस थे बहुत परहेज़ कर। अख़्तियार हुआ कपड्या में सब उजला च कपड़ा यहा ना पैन। पीला, लाल, भई होर भई कुसुम्बा दूर कर पश्मी हो चर्पी पैन कम तिस पर नईं सिजदा रवा। अफ़ज़ (?) है सिजदा गेण पर नजदीक उल्मा मोतबर। दस्तार बेद तू सात गज होर छोड़ शलमा पीट पर। वे शलमा जो दस्तार है दस्तार है दस्तार शैतानी शआर वेस होर भई पाक रंद कुर्ता जो पैन जामा जू।

—**मजमुआ मसनवियात**

सस्त-सरता पेरहन-कुर्ते का निचला हिस्सा, दामन पश्मी-ऊन। चमो-चमड़े का दस्तार-शमला शआर-ढंग।

अज्ञात काल

अज्ञात लेखक

हज़रत शम्स तबरेज़

हज़रत बुरहान साहब शेर फ़रमाये हैं—हज़रत शाह बुरहान सूँ सुन बेत........देकर वजूद के बर्त्तन वह हरकत छोड़ें तन सब का मूं होंयें उदास, तो दिसे पंच बिलास। जे बाँदी पँच हवास तो होवे वही नफ्स जी नफ्स का जाया ओ स्वास, हो आवे दिल शनास, जे दिल थे रहे उपज तो वही है रूह समज। ऐ नफ्स दिल-रूह एक-इन फ़ेलों खारिज़ देक।

पैगंबर कहे मोमिन का दिल खुदा के बैसने का जागा है। मोमिन का दिल सो हीरे का टुकड़ा नो है और दिल ना सीधा है, न बावाँ है, न अंखे है, न पछे हैं, न तले हैं न उपर हैं, न दूर है न नज़दीक है, ओ दिल सो नूर है, जो कोई रूह कू तूँ ऊपर्या सो उसे खुदा की खूबी सभी कधे आता है। कधें लताफ़त हैं, कधे लताफ़त हैं, कधे सब ज़ोक़ है के जिसका दिल रूह की सिफ़त कूँ अपरेगा तो ओ खुदा के खासों कू अपरेगा। मैं तुमारे तना में हूँ, वले तम्हें देखते नहीं। हर कस में खुदा है, वले जैसा जिसका लायक़ है वैसा पाते हैं याने खुदा की पछानत करने में नमाज़ हासिल है सो वस्ल।

—रिसाल हदीस हिन्दी

बैसना-बैठना अखें-आगे कधें-कभी अपरेगा-प्राप्त करेगा वले-लेकिन।

गौसी दकनी

अल्ला ताला फ़रमाता है के जिसके सीधे हात में अमालनामे दिये जायँगे तब उसका हिसाब उस पर भोत आसान होगा और वह शख़्स ख़ुशी सो अपने लोगो में और हूरां में जायगा।

अल्ला ताला फ़रमाता है के वैसा शहर और वैसा क़बीला दुनिया में कम पैदा हुआ और तफ़सीर वाले लिखते है के आदियान के शहर का नाम इरम था और ज़ातुल इमाद (?) उस शहर की तारीफ़ है के उस शहर में आद की क़ौम बड़े बड़े इमारतां और बड़े बड़े बाग़ा बनाई थी। अब्दुल्ला बिन फ़लाया कर कर एक बुज़ुर्ग थे। उनका ऊँट गुम हुआ था सो वह ऊँट को ढूंढते हुए जाने में एक क़िला नज़र आया और उसमें बाग़ और हवेली नज़र आई तब यह बुज़ुर्ग अपने दिल में कहे के अगर मैं वहा जा कर लोगों से पूछूँगा तो अपने ऊट का पता मिलेगा कर कर आकर क्या देखते हैं के इस क़िले के दरवाज़े के दो पाटाँ जवाहर के हैं। यह बुज़ुर्ग भोत हैरत में आकर अन्दर जा कर देखे तो वहा कोई आदमी नही है, लेकिन नहरा और बागाँ और ज़मर्रुद की दीवारां और जवाहर के तख़्त और जवाहर भी भोत है। बाद यह बुज़ुर्ग क्या किये के थोड़ा जवाहर लेकर बाहर आकर फिर श्याम के मुल्क में आये और उस वक्त माविया यह श्याम के मुल्क में हाकिम था सो उन कूँ खबर पहुँची के यह बुज़ुर्ग को कुछ ख़ज़ाना मिल्या है। बाद माविया इस बुज़ुर्ग को बुला कर पूछने में वह कैफ़ियत तमाम बोले तब कहे के ज़ातुल इमाद करके जो कुरान में अल्ला ताला फ़रमाता है सो यह है और वहां आद की क़ौम से एक बादशाह शद्दाद करके आया था और बादशाह, तमाम लोग ज़र और ज़ेवर लेकर तीन सौ बरस से वह हवेली तैयार किया और उसके लवाज़िमा दुरुस्त करने को दस बरस लगे बाद वह हवेली तैयार

तफ़सीर-व्याख्या इरम-जन्नत फ़लाया-अमुक ज़मर्रुद-एक हरे रंग का जवाहर।

हुई तब बड़े बड़े लोगों को साथ लेकर इस बाग़ में गया बाद फ़रिश्ते में आकर ऐसा हाँका मारा के तमाम लोग मर गये बाद एक शख़्स माविया से कहा के मैं किताब में देखा हूँ के तुम्हारे ज़माने में एक शख़्स ऐसा होगा के उसका क़द छोटा और रंग सुर्ख होगा और उसके आँखाँ सब्ज़ होंगे और उसकी गर्दन पर खाल होगा। वह शख़्स अपने ऊँट को ढूँढते जाकर वह हवेली देखेगा, जब लोग इस बुज़ुर्ग कू यह तमाम निशानियाँ देखे जो ज़ाहिर थी।

—तफ़सीर पारा ए अम

रिसाला तसव्वुफ़

हक़ ताला कहता है था मैं कुंज मख़्फ़ी में, कुंज मख़्फ़ी क्या है ? उसे समजना, सो ऐन 'ला' है, 'ला' याने नहीं । सो उन्हे सब जागा मौजूद है, अरे भाई नीचे ज़मीन होर ऊपर आसमान है, इस ज़मीन और आसमान के दरमियान जो चीज़ नहीं है, उस नहीं में च हम तुम चलते-फिरते हैं होर खाते-पीते, सोते-जागते, होर जो कुछ करते हैं सो उस नहीं में च करते हैं, ज़मीन होर आसमान खड़ा है। अगर हम फ़र्ज़ किये के सात तबक़ आसमान होर कुर्सी होर अर्श के ऊपर किये तो आनके बोलते हैं के ला मकान है । ला तो कहते हैं नहीं कू । पस मालूम हुआ नहीं जिसे कहते हैं उन्हे च अर्श ऊपर है । उसका ठाव पाया नहीं जाता के उन्हें कहा तलग है । उस वजा सो अगर हम सात तबक़ ज़मीन के तले घुसे तो सात ज़मीन के नीचे पे नहीं च है । नहीं जिसे कहते है वही च भर्या है । उन्हें नीचे कहाँ लग भर्या है उस नहीं का ठाव मालूम नहीं होता, कहाँ लग भर्या है ? यही इस जहा के गिर्दा गिर्द होर आसपास मे है होर ज़मीन के ऊपर दरिया है । अगर हमे फ़र्ज़ किये के ज़मीन होर दरया के फैला रखे होर किनारे किये होर उसकी हद निहायत ⋯⋯तो उस किनारे के फैला रखे तो भी जिसे नहीं कहते है वही च नहीं दिस आयगा । होर उन्हे कहा तलग आके है सो उस नहीं का नहीं पता न पाया जायगा अरे भाई मुसलमान बोलते है के क़यामत के दिन सातो तबक़ ज़मीन होर आसमान होर जो कुछ उस दोनो के दरमियान है वो सब तोड़ कर नाबूद होयगा तो उस वक़्त यहाँ से ता वहा लग जिसे ला कहते है, होर जिसे नहीं बोलते है वही च अछेगा । होर कुछ न अछेगा तो यहाँ भी इतना मालूम करना के यो सब आलम कहाँ

कुंज-कोना, एकान्त मख़्फ़ी-गुप्त तबक़-स्तर कुर्सी-पाताल अर्श-आकाश अछेगा-रहेगा

सों आया था होर कहाँ जाके कम हो गया तो यहाँ भी बूजिया चाहे के जिस शै में सों यह सब आलम बाहर आया होर भी उस शै में च कम हुआ तो उस शै कूँ नहीं क्यों कर जानना होर उस शै कू नाबूद होर अदम क्यों कर बोलना यहा तक अकल की अँखियाँ सों देक होर कुछ दिल सों समज के चिराग़ का नूर कहा सो पैदा हुआ होर कहा कम हो गया होर यो आती बाव कहाँ सों निकलती होर भी कहां जाके समाती है होर यो सब आवाज कहां सों निकलती हैं होर भी कहाँ जाके समाती है। होर भी खाली होते हैं।

तरजुमा चहल हदीस

जे कोई सदका देवेगा दस हज़ार दीनार उस बेहतर है तमाम शै मुश्ताक़ है हर तरफ़ ज़न्नत की, पस ओ जन मुश्ताक़ है चार क़ौम सूं पहले जे कोई देगा खाना भूके कूँ होर दूसरा जे कोई पिनाया होयगा नंगे कूं कपड़ा होर तिसरा जे कोई रमज़ान के रोज़े रखेगा होर छोता जे कोई पड़ा अछेगा कुरान जे कोई **ज़ियारत** करेगा मेरी क़ब्र की मोये बाद अज़ पस ओ तहक़ीक़ ज़ियारत किया मेरी ऐ फ़रिश्ताँ सूँ सत्तर मलायक़ थे। सो जिब्रैल उनके ऊपर सलाम होर जिवो होर **मीकाइल** थे होर **इसराफ़ील** थे। होर **इज़राइल** इन सार्यों पो सलाम होर जे को बोलना है मुसलमान तमाम शुक्र सज़ावार है।

फ़रमाये हज़रत ने अछेगा ओ कोई मोमिन बीच मस्जिद ज्यों मछली बीच पानी के होर मुनाफ़िक़ बीच मस्जिद के अछेगा ज्यों जानावर बीच बहरी के जे कोई अल्ला ताला के वास्ते मस्जिद बादेगा देवेगा शुतर मेहारियां बीच बहिश्त के क़यामत के दिन फ़रमाये हज़रत सल्लम। जे कोई दीवा लगावेगा बीच मस्जिद के सात राताँ हराम करेगा अल्ला ताला उसके ऊपर सात दरवाजे जह तुम को अता करेगा नूर अल्ला ताला उसके ऊपर सात दरवाज़े जह तुम को अता करेगा नूर अल्ला ताला अपने में से उसके क़ब्र पर नूर उस दिन खुशवक्त होरेगा दिन क़यामत का जो उसके सामने अछेगा नूर उसके पीछे अछेगा नूर होर उसके सीधे तरफ़ अछेगा नूर होर उसके दावें तरफ़ अछैगा नूर।

सदका-भेंट, बलि मुश्ताक़-चाहनेवाला सत्तर-अनगिनत मलायक-फ़रिश्ते (मलक का ब. व.) मुनाफ़िक-दिल में कुछ और जीभ पर कुछ शुतर-ऊँट मेहार-ऊँट की नकेल।

किस्ससुल अंबिया

यूसुफ़ एक शब और एक रोज वहाँ रहे। ऐसे में एक कारखाने सालार उस जाय पर आ उतरा। अलगरज़ भायाँ तजवीज़ किये पिदर के रूबरू क्या मकर करना ? एक ने बोला यह बोलना के तुम पैगंबर हो, बरहक़ तुम्हारे जो ज़बान से निकला था वही हुआ। मुक़र्रर लांडगा खाया हम एक सुख्न व इत्तेफ़ाक़ कहना। तहक़ीक पैगंबरों की बुरा-सा तुज होते ही आप फ़रमाते थे खायगा सो लाँडगा खाया। हम सब काम में थे। उसको कपडों पास बिठाये थे और हो जानवर सहरा जुगाला करने को तो गये रूबरू ले गये सो खामोश रहेंगे इस तरह शब के वक्त रोते आकर कहे क्या करें ? यूसुफ़ को नज़दीक कपड़ों के बिठाये थे। एक ज़र्रा फ़रामोश हम हुए क़ाबू पाकर लाडगा खाया। तुम पैगंबर हो जो ज़बान से उनकी निकला था वही हुआ। तब याक़ूब बोले-तुम्हारी तक़रीर सब ग़लत है लेकिन मुझे सब्र दरकार है। देखो सब्र की जज़ा अल्ला ताला देवेगा और वह लहू के कपड़ा को आंखो पर रख कर रोने लगे। रोते रोते यूसुफ़ में बसारत आंखो से गई। उस वक्त जिब्रेल आये और सलामालेकुम कहे। हजरत याकूब जवाब सलाम का देकर पूछे मेरा यूसुफ कहा है कहो। जिब्रेल बोले अल्ला ताला जानता है। कहे तुम अल्ला ताला से अर्ज़ करो यूसुफ़ को मेरे तक पहुचा। जिब्रेल आकर जनाबेबारी से अर्ज़ किये तब हुक्म हुआ जा याकूब से बोल तू जिसको सौंपा उसको पूछ। वो तेरे से ला मिलावेगा। बमुजिब इर्शाद हक के जिब्रेल आकर बोले तब हज़रत दिल में समझे के अल्ला ताला मेरे पर गुस्सा हैं। तब बेअख़्तियार होकर दर्द व अलम से गिरिया व ज़ारी किये। कभी वह

शब-रात सालार-मुखिया पिदर-पिता मकर-छल, ढोंग बरहक-पूरा, जैसा कहा वैसा, असन्दिग्ध लाँडगा-भेडिया जज़ा-पुण्य का फल जनाबे बारी-श्रीमान ईश्वर बमुजिब-अनुसार आलम ग़म गिरिया-रोना।

फ़रामोश राम न रहे कहते हैं के एक रोज़ जिब्रेल नाज़िल हुए बादअज़ कलामे इलाही के कहे के ए रूह-उल अमीन तुम मलकुल मौत से पूछो के मेरे यूसुफ़ का जान तुम्हारे पास नज़र आया है या नहीं। मलकुल मौत कहा के नहीं आया। तब और भी ज़्यादा तशवीश हुई। हमेशा गिरिया व ज़ारी करते थे। सुनो ए दोस्तो, यूसुफ़ जुदा होने का सबब यह था के एक रोज़ दस्तरख्वान पर दरवेश कबाब मांगा व तआम खिलकत की मेहमानी का था। हज़रत उस दरवेश को देने में फ़रामोश रहे। अल्ला ताला जाना के फ़क़ीर को प्यारी चीज़ नहीं दिया तेरी वह प्यारी चीज़ को मैं बेतफ़रुक़ तेरी नज़र से लाता हूं। यह उसका बदला है। अलग़रज़ बाद अज़ सात रोज़ के सौदागर वहा आये और उनो पानी के लिए डोल उस कुए में डाले तब यूसुफ़ हुकमे इलाही से रस्सी डोल की पकड़ कर उस डोल में बैठ कर बाहर आये। तमाम सौदागर देख कर बहशत में आये। तब यूसुफ़ बोले हौल दिल में मत खाओ। मैं भी आदमी हूं। जैसे तुम हो वैसा ही मैं भी खाकी हूं। जिन्नात की क़िस्म से नहीं हू। तब वह वो सौदागर जमा होकर आये। उसी अर्से में यूसुफ़ के भाई भी आ पहुंचे। देखे के सलामत है। तब उन सौदागरों से कहे के ये हमारा गुलाम है। भाग कर इस जाय छिपा था। यूसुफ़ जवाब दिया चाहते थे के ऐसे में एक भाई अरबी ज़बान में बोला अगर तू कुछ कहा तो तुझे मार डालेंगे। तब यूसुफ़ खामोश रहे। भाई बोले यह गुलाम चोर है और दग़ाबाज़ है और भागता है। अगर तुम खरीद कर कर पासबान होकर ले जाते हो तो देते हैं नहीं तो किसू और को देवेंगे। तब जाबर सौदागर बोला हम लेते हैं। इतने पैसे हमारे नज़दीक नहीं हैं फिर भाई बोले इस चोर को खरीदने पैसे क्या ज़रूर। कुछ भी देव और ले

रूह-उल-अमीन-जिब्रेल की उपाधि तआम-खाना बेतफरुक-बिना अन्तर किये
हौल-भय, आतंक खाकी-पार्थिव जाय-जगह पासबान-रक्षक।

जाओ। तब उसने बोला मेरे पास अठारह दिरम खोटे हैं, राज़ी हो तो देवें। भाई कबूल किये। दिरम अठारह लेकर यूसुफ़ को गुलाम कर दिये, उस सौदागर के हवाले किये। यूसुफ़ गुलाम हुए।

मजमुआ नुस्खेजात

पित्त उछलने कूँ

काले कपास के कच्चे पाँच फल ल्याकर गरम उपले की राख के भूगल में भून कर बग़ैर आब जो कुछ रस निकल्या सो निचोड़ कर लेवे बाद अज़ उसमें एक माशा कबीर के बींज का आटा होर एक टाँक सुफ़ेद शक्कर होर दो माशा धान की खिल्लिया का आटा होर एक माशा बेलफल के बीज का आटा यों चारों जिन्स मिला कर फ़ज़र के वक्त पिलाना यों इ च सात रोज़ पिलाना। तुर्शी, बादी, औरत का परहेज़ अलबत्ता, बकरमे इलाही पित्त उछलते सो दफ़ा होवेंगे।

प्यास लगे तो

पानी की भोत प्यास लगते कूं इकग्यारा केंकड़े के पुश्त कियाँ खोपड़ियाँ लाकर टूकड़े करना होर तोला मिर्च ल्याना बाद अज़ यो हर दो पिला कर मिट्टी के बासन में तूअर मानिंद भून कर सर्द करना बाद अज़ खोपडियाँ के टुकड़े डाल देकर होर मिर्चियां चून लेकर और घांघड़े के रगट्टे रगड़ कर ऊपर का पोश्त फूक कर डाल देना बाद अज़ ओ मिर्चियाँ बारीक पीस कर कपड़े सूँ छान कर निगाह सूँ रखना, बाद अज़ फ़ज़र के वक्त एक टाँक आटा लेकर चाँवल के कच्च सू फंकी मानिन्द खाना यो इ च ज़ोहर के बक्त खाना यों इ च सोते वक्त खाना होर इस रोज़ चाकाभात होर मस्का बेनमक खाना दीगर कुछ ना खाना अलबत्ता बकरमे इलाही पानी प्यास उसी रोज़ बन्द होयगी। आजमूदा है।

भूगल-भूबल   यों इ च इसी तरह   जोहर-दो पहर के बाद   बकरमे-दया से

मूँह पर खिल्लियाँ हुए कूँ

घिया तुराई लेआकर पेंदे तरफ़ काट कर लकड़ी छेद करको मुगदअली चांवल भर कर उसके पेंदे के चकले उसी पर मूच कर धागा बंद कर टाँक कर रखना। खूब खुश्क हुए बाद अज़ चीर कर अन्दर के चावल सब काड़ लेकर निगाह स् रखना। बाद अज़ अन्दक लेकर पानी म पीस कर मुह तमाम भर कर लगा कर रात कू सोना फ़ज़र धोना, यो इच चौदा रोज़ लगाना। तुरशी, बादी परहेज़ करना। अलबत्ता बकरमे इलाही कीला दफ़ा होइगी।

मूँचना-ढँकना, बन्दकरना।

ई० वी० पद्मनाभन

मल्लन नवाजजंग

एक ज़माने में एक सोलह तालुके के बादशाह थे। जुम्मेरात के दिन शाम को पाशा ने इस्माल को बुलाया जो पेशी का सदर चपरासी था।

इस्माइल आया, और सलाम अर्ज़ करके खड़ा हो गया। सरकार ने उससे गुफ्तगू की।

'अरे इस्मइल, आज तो जुम्मेरात हैं। कल मुझे शिकार कूँ जाना है; तो मुझे दाढ़ी बनानी है। जरूर मल्लन्ना 'हज्जाम' को बुलाना, भूलना नको। मेरी दाढ़ी से कहीं जंगली जानवर घबरा न जाए।'

दूसरे दिन सुबह इस्माइल मल्लन्ना के पास गया और बोला—

'अरे मल्लन्ना, तेरे कू सरकार याद कर रैं, दाढ़ी बढ़ गई कते, घोट के चले जा।'

साढ़े आठ बजे मल्लन्ना डेवढ़ी कू आया और देखा तो क्या, सरकार बिस्तर पै पड़े हैं। उठने का नाम ई च नहीं लेते। इस्माइल को बुलाया और बोला—

'वाहरे इस्माइल, उंह; साढ़े नौ बजने कू आए, अभी तुम्हारे सरकार का उठने का नाम नईं। इस डेढ़ रुपये की डाढ़ी के वास्ते मेरे दूसरे डाढ़ियाँ खप गए जैसा दीखता है। आज तो जुम्मे का दिन है। क्या बोलता बोल?'

इस्माइल बोला—'आखिर तू हज्जाम का हज्जाम हीं ठहरा। अरे वाह, कटोरा ले, बुरुश फिरा, कफ ले को सरकार की ठुड्डी पै मल और घोट दे को चला जा।'

जुम्मेरात-गुरुवार पाशा बादशाह हज्जाम-नाई नको-नहीं।

'अरे भई, कही गलती से उस्तरा चलके बुड्ढे की टुड्डी पे काट-बूट न आ जाय।'

'अरे चला मियाँ, काफी तजुरुबेकार हाथ हैं तेरे।'

जैसा इस्माइल बोला, मल्लन्ना ने साबुन की कटोरी में बुरुश डाला और बिगैर किसी हिचकिचाहट के सरकार की डाढ़ी मल, उस्तरा चलाया, और डाढ़ी घोट के चलता बना।

सरकार ११-३० बजे उठे। उठने के बाद चाय पिये। चाय पीको पान खाने वख़्त उगालदान थूकने कू मंगाये तो टुड्डी पर हाथ चला गया और एक दम हैरत और गुस्से मे आको बोले-- 'इस्माइल, कल रात कू मेरे कू डाढ़ी थी ना रे। ख़ाब में कोई हजामत तो नहीं कर दिया?'

इस्माइल बोला -'सरकार! ख़ाब में कोई हजामत नहीं किया लेकिन १०-३० बजे मल्लन्ना, आप जिस वख़्त सो रहे थे, आया और हजामत करको चलता बना।'

सरकार बोले मैं इतनी देर तक सो गया था क्या? वह हज्जाम का बच्चा कहीं टुड्डी काट तो नहीं दिया?

इस्माइल बोला --सरकार टुड्डी तो आपकी है, मैं कैसे बोल सकूँ? हाथ फेर ले को देख क्यों नहीं लेते।

सरकार हाथ फिराको देख ले को ऐना मगाये और खूब अच्छी तरह देख को बोले---वाह रे वाह, हज्जाम! वाकई हज्जाम है मियाँ। यह हमारी रियासत की कारीगरी का नमूना है। जारे इस्माइल! उसकू बुला लेको ला। उसकू इनाम देंगे।

इस्माइल गया और मल्लन्ना के घर जा को आवाज़ लगाई---अरे मल्लन्ना! सरकार याद कर रैं।

जब मल्लन्ना इसकू सुना कि नईं कि अपनी जोरू यल्लम्मा को बुलाया

आको-आ कर ऐना-दर्पण।

और बोला--'अरी वो बुड्ढा मेरे कू बुलाता। क्या करता कि नई मालूम। बच के आया तो तेरी क़िस्मत, अगर वैसे ई लम्बे खड्डे कू चला गया तो मेरी क़िस्मत। मैं तो जारा हूं।' बोल के इस्माइल के साथ सरकार के पास पहुचा। सरकार हाथ में हुक्का ले को बैठे थे। दूर से फर्शी सलाम किया।

'आ गया रे।' सरकार देख ले को बोले।

'हां सरकार आ गया हूं। ग़रीब से कुछ गलती वलती तो नहीं हो गई?'

सरकार बोले--वाह, हमारी रियासत में ऐसे हज्जाम का होना खुद इस बात की दलील है के यह एक आला रियासत है। वाह! जो चाहे इनाम माग।

मल्लन्ना सरकार का मुँह ताकने लगा और फिर थोड़ी देर में घबरा कर बोला--सरकार! मैं धूप में फिरनेवाला। मेरे दिमाग के उड़ने के ज्यादा इमकानात हैं और उस पर ग़रद और धूल जमने के भी। मेरी जोरू यल्लम्मा छाव में बैठे रहती। उससे एक बार पूछ लेता हू। और उने जैसा बोली वैसा करतं।

सरकार हैरत में आकर को बोले--तू तो बड़ा सियासतदाँ मालूम होता। जब कभी मेरे कू पेचीदा मसायल पेश आते पहले मैं मंझली बेगम कू पूछता ऊ, बाद बड़ी बेगम को; फिर छोटी बेगम कू पूछ के तीनो के मुत्तफ़िक़ा राय पर काम करता ऊ। तू तो बहुत बड़ा अकलमन्द मालूम होता है, जाके जल्दी पूछले को आ।

मल्लन्ना घर कू आया और यल्लम्मा से बोला--सरकार मेरी हजामत से बहुत खुश हो कर बोले जो चाहे इनाम मागो बोलके। लेकिन मैं क्या बोलू मेरी अक्कल काम करी नई तुमकू पूछ के बोलता ऊ बोल के आया ऊं।

यल्लम्मा बोली--आखिर दुनिया में खुदा औरतों कू किस लिए पैदा किया? यह अक़ल तुमकू इस लिए आई के तुम मेरे मरद हैं। छप्पन कटोरे

जारा हूँ-जा रहा हूँ इमकानात-सम्भावनाएँ जोरू-पत्नी।

साठ उस्तरे, पचपन बुरुश और आइने पूछके ज़िन्दगी तबाह करने के बजाए जो मेरे कू पूछ के आता ऊँ बोल के आये यह तुम्हारी ज़िन्दगी का पहला ठीक काम है। दुनिया में हत्थी को हो या चूँटी को हो एक ही मर्तबा मौका मिलता है। पूछना है तो ठीक पूछ लो।

'अरे ठीक पूछ लो! ठीक मालूम रहता तो यहाँ तक आता ई च काहे कू? ठीक बोल ना।'

यल्लम्मा बोली--जा को बोल कि अपने सद्रे आज़म कू हटा कर मेरे कू गद्दी पर बिटाओ।

मल्लन्ना यह सुनके परेशान होकर बोला--क्या है गी वो। मेरे कू खतम कर को दूसरे कू शादी करने का इरादा है क्या? बुड्ढा मेरे कू खतम कर देता ना?

यल्लम्मा बोली--एक मारूजा है सरकार बोलने कू डर मालूम होता, जान बख़्श देने का आप वायदा करें तो बोलता ऊँ बोलके शुरू करना।

मल्लन्ना गया।

सरकार बोले--क्या है रे! पूछ लिया?

उने बोला--डर मालूम होरा सरकार बोलने कू।

सरकार बोले--डर क्या रे! तू मेरी गद्दी पूछ सकता है; पूछ।

वह बोला--सरकार, मैं आखर आपके सामने एक औरत की बात को सुन को मनवाने कू आया ऊँ। कहीं आप गुस्से में आको मेरे को शिफ़ न कर दें बोल के घबरा रहा था। लेकिन आप बोलने पे पूछतूँ। सुनिए सरकार, अब जो सद्रे आजम उल्फ़त नवाज जंग हैं उनकू हटा को मेरे कू गद्दी पै बिटाओ।

सरकार ने इस्माइल को बुलाया और हुकुम दिया कि फौरन उल्फ़त नवाज जंग को बुलाओ।

इस्माइल जा को बुलाको लाया। सरकार उनसे पूछे--मेरे खयाल में

सद्रे आजम-प्रधान मन्त्री होरा-हो रहा शिफ़-कत्ल।

ये आया के आपकू हटा दे को मल्लन्ना कू सदर आज़म बना दूँ। आपकी क्या राय है ?

उल्फत नवाजजंग ने कहा—सरकार एक आला रियाया बनके इतने दिन मैं आपकी खिदमत कर सकता था मेरी खुशकिस्मती थी और आप मुझ पे जिम्मेदारी सौंपे थे। अगर आपकी नज़र में एक अदना रियाया आला रियाया बन के आपकी खिदमत कर सकता है और आप खुश होते हैं तो मैं कौन जो रुकावट डालूँ, या उस ख़ियाल को भी दिमाग़ में लाऊं ? लेकिन एक मारूजा है सरकार।

सरकार [illegible] [illegible]।

वो बोला—सरकार, मल्लन्ना बोल के नको बिठाओ। इसे मल्लन नवाज-जंग का ख़िताब दे को बिठाइए।

सरकार ने कहा—खूब राय है। इसी खुशी में तुमको तहफ्फुज़े सल्तनत का खिताब और इसको मल्लन नवाजजंग का ख़िताब देता हू और खुसूसी गश्ती शाया कर दिए के मल्लन नवाजजंग सदरे आज़म बन गए। अब मल्लन नवाजजंग ने अपना नावीना का काबीना तैयार किया। उसका एक दामाद था जिसका पेट चीरे तो अलिफ़ नहीं उन्हें सदरुल मुहाम तालीमात बना और एक भूमय्या दोस्त था जो अपनी ज़िंदगी में 'थापी' भी नहीं देखा था उने सदरुल मुहाम तालीमात बना। इसी तरीके से अड्डे पे के लोगों के जंगल में चांदनी चमकने लगी।

ऐसे ही दिन गुजर गए। बाजू के डूंगरपुर स्टेट के राजा कू ये सब खबरें जासूसों से मालूम हुई के मल्लन नवाजजंग सदरे आजम हुए हैं, हजामत की खुशी में। तो वे बोले, चार पांच सौ आदमियों को ले को अपने सरहद के नज़दीक के तालुका वज़ीराबाद पै कब्जा कर लो। कब्जा हो गया।

सिपहसालारेआज़म शमशीर नवाजजंग शमशीर हिलाते सरकार के

काबीना-कैबिनेट।

पास पहुँचे और यह सनसनीखेज़ खबर सुनाई ।

सरकार बोले—मल्लन्ना को बोलो जाके । शमशीर ने मल्लन नवाज जंग से सारा वाक़या बयान किया । मल्लन्ना बोला—सोलह तालुके में एक तालुका चला गया तो क्या हुआ ? लेवी का सिलसिला, कम्युनिस्ट की गडबड, यह और तमाम परेशानिया सब आपु ई आप निकल गई । एक बटे सोलह के हिस्से की ज़िम्मेदारी खतम हुई । जिन्दा तिलस्मात की एक शीशी डूंगरपुर वाले के हाथ आ गई । चलो खुशिया मनाओ, फुलझड़िया लगाओ ।

इधर यह खुशिया मनाई जा रही थी के दुश्मन की फ़ौज़ पायेतख्त के बिल्कुल नजदीक आ गई । फिर शमशीर नवाज जंग शमशीर हिलाते सरकार के पास पहुँचे और अर्ज़ किया दुश्मन दरवाज़ा खटखटा रहे हैं । सरकार गुस्से में आके मल्लन नवाज जंग कु बुलाए । मल्लन नवाज जंग बाअदब, बामुलाहजा शेरवानी, दस्तार, बकलुस के साथ चार आदमी पीछे, चार आदमी सामने तशरीफ लाए । सरकार देखते ही बोले—सुना रे ।

मल्लन्ना—हां सरकार ।

'मेरी रियासत गए ऐसा है ना रे ?'

'कहां सरकार । मै दरियाफ्त किया ना । आपकी रियासत कहीं नहीं गई । जहा पहले थी वहीं है । चुपके ई च क्यों घबराते हैं । मैं माक़ूल इन्तज़ाम किया हूँ । वख्त आने पै मै खुद बतलाऊँगा ।'

सरकार परेशान हो के बोले—अब तो वखत आ गया बोल ना रे ।

मल्लन्ना—मेरे कु मालूम था पहिले ई च ऐसा होगा बोल को । इसी लिए मैं गॉव के बाहर इमली के झाड़ कु दो अस्तुरे बंध दिया था । एक आप ले लो एक मैं ले लेतू । कौन पकड़नेवाला, कौन छीननेवाला, दोनो मिल को आनेवालों की हजामत किया करेंगे ।

—अजन्ता (१९५१)

पाएतख्त-राजधानी बकलुस-कमरपट्टा ।

कहावत और मुहावरे

सौ गज वारूँ एक गज न फाड़ूँ

मुँह का मीठा हाथ का झूठा

झूठे हाथ से कौए को नहीं मारने के

दुनिया देख कर घुनियाँ फका

मुँह का न मुखड़े का

मुँह दीवाना दिल सयाना

दिल तरसता हात नहीं पहुँचता

खिला तो फूल नहीं तो मिट्टी धूल

दिल में आये तो गुणी नहीं तो पत्थर

उगली दिये तो पोन्चा पकड़े

बारह बरस को तारा टूटा तो देखने हारे का टीटा फटा

उसे मुझे बारह चांद हैं

दुख में दुबल

अपना सुन्दर दूसरों का जंगली सूअर

नहीं जानती सो नारी नौ गेटियाँ तोड़ी, कद्दू के पत्ते में कसीदा काढ़ी

सड़े पड़े सदर चढ़े पीले नींबू फिसल पड़े

पीच के बल से सड़ी चिन्डी भी अकड़ती है

तेरा जलो मेरा भुनो

मेहनती दिलगीर, चोट्टे खुशहाल

मेहनती को दलिया पाखण्डी को पुलाव

भाई का भाई, जुदा पका के खाई

जैसा सूत वैसी फेटी। जैसी माँ वैसी बेटी

जैसे कन्ता घर रहे, वैसे रहे विदेस

जैसे मिया काठ, वैसी सन की दाढ़ी
लँगोटी में फाग खेलते हैं

लोनिये का लोन गिरा दूना हुआ
तेली का तेल गिरा हीना हुआ

अब तो पत्थर के नीचे हाथ दिया है

अपनी बेर की घोलम घोला। हमरे बेर को भूखम भाखा
बासी फूलों बास नहीं। परदेसी बालम आस नहीं
बाल जंजाल, पले तो पाल, नहीं तो मूळों को टाल

जेब में नहीं खल्ली की डल्ली
छैला फिरे गल्ली गल्ली

चाँदनी मार गई
किसी को तवे में दीखे, किसी को आरसी में
गये दक्खिन, वही करम के लच्छन
लड़का रोवे बालों को। नाई रोवे मुडाई को

लायेगा दारा तो खायेगी दारी
न लायेगा दारा तो पड़ेगी हवारी

लँगडे ने चोर पकडा, दौड़ो मियाँ अन्धे

मर्द का नौकर मरे बरस दिन में
औरत का नौकर मरे छः महीने में

नानी आगे ननवाई की बातां
नई बस्ती कतैं, अरएडी का फुलेल कतैं

नरम लकड़ी किचल पकड़ी
दीदे दीवारां होना
ढेला घुले नाद घुलो
घर की जगह ढेला नको रहो
घर में झाड़ू फिरो
मज़ार हुए

किचल-कीड़ा नाद-तरह ।

पहेलियाँ

इत्ती सर के टिल्लू मियाँ
गज भर की दुम
भाग गये टिल्लू मियाँ
सपड़ गई दुम

—सुई

हरी गुंबज सुफ़ेद खाने
उसमें बैठे सिद्दी दिवाने

—सीताफल

आहा की थैली में ऊहू के दाने

—मिर्च

आहा-लाल।

परिचय

कण्हपा

ईसा की प्रथम शताब्दी तक बौद्ध धर्म अनेक मतों में विभक्त हो चुका था। वज्रयान की स्थापना भी बौद्ध स्थविरों ने की थी। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से वज्रयान का सम्बन्ध बौद्ध धर्म से नहीं है, किन्तु बौद्ध-धर्म में जो विकृतियाँ आईं, उन्हींके परिणामस्वरूप वज्रयान आदि सम्प्रदायों की स्थापना हुई। वज्रयान का प्रभाव उत्तर भारत पर ही नहीं दक्षिण भारत पर भी था। वज्रयान का प्रभाव ८०० ईसवी से लेकर ११७५ तक बना रहा।

ईसा की आठवीं शती में पाल शासकों का शासन बंगाल तथा बिहार में स्थापित हुआ। इन शासकों के आश्रय में बौद्ध-धर्म का उद्धार नहीं हो सका किन्तु उसके नाम पर वज्रयान को बल मिला। शीघ्र ही मन्त्र तन्त्र तथा वाममार्ग वज्रयान से मिल गये।

वज्रयान, तन्त्र-मन्त्र और अनेक विश्वासों को लिये हुए इसी समय लुइपा आदि सिद्ध उत्पन्न हुए। सिद्धों में ८४ व्यक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। चौरासी सिद्धो का प्रचार क्षेत्र बिहार, उड़ीसा तथा बंगाल रहा है। इन सिद्धों की जो रचना उपलब्ध हुई है, उस पर बिहार तथा बंगाल में बोली जानेवाली भाषाओं का प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि सिद्ध लोग बिहार अथवा बंगाल में ही उत्पन्न हुए।

जिस समय पालवंश का शासन शुरू हुआ दक्षिण भारत में वज्रयान का काफ़ी प्रचार था। जब बंगाल-बिहार में बौद्ध-धर्म को आश्रय मिला तो विभिन्न प्रान्तों में बसनेवाले वज्रयानी स्थविर वहाँ जमा हुए होंगे। सिद्धों और नाथों ने हमारी विचार-धारा को जिस तरह प्रभावित किया है उसके अनुसार यह अधिक उचित लगता है कि ये लोग भारत के विभिन्न भागों से एकत्रित हुए हों।

चौरासी सिद्धों में कुछ लोग साहित्य तथा आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष स्थान रखते हैं। किन्तु उन प्रमुख सिद्धों के जन्म-स्थान तथा समय असन्दिग्ध

रूप से ज्ञात नहीं हो सके हैं। जो सिद्ध अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध हैं उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना और भी असंभव है।

कण्हपा चौरासी सिद्धों में विशेष स्थान रखते हैं। जिन लोगों की गणना चौरासी सिद्धो में होती है, उनमें से बहुत से सिद्ध कण्हपा के शिष्य हैं। कण्हपा का जन्म-स्थल तथा जन्म-तिथि भी अब तक निश्चित नहीं हो सकी है। महामहोपाध्याय हरिप्रसाद शास्त्री ने उनकी रचनाओं का संकलन 'दोहाकोष' नाम से सम्पादित किया है। दोहाकोष की भूमिका में शास्त्रीजी ने यह बताने की कोशिश की है कि कण्हपा की भाषा पर मगही तथा अन्य बोलियों का प्रभाव है, फिर भी उनकी भाषा का अधिक साम्य प्राचीन बंगाली से है। भाषा-साम्य को लेकर शास्त्रीजी ने कण्हपा को बंगाली सिद्ध किया है।

कण्हपा के सम्बन्ध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। सुकुमारसेन ने बंगाली साहित्य का जो इतिहास लिखा है उसमें सिद्धो की चर्चा करते हुए लिखा गया है कि आरम्भ में आद्य तथा आद्या ने सर्वप्रथम देवों और चार सिद्धों की सृष्टि की। देवों में एक कन्या थी जिसका नाम गौरी रखा गया। गौरी का विवाह शिव से हुआ। शिव और गौरी विवाह के बाद पृथ्वी-तल पर आ गये। शिव ही आदिनाथ कहलाये।

चारों सिद्धो के नाम थे मीननाथ, गोरखनाथ, हाडिप्पा और कानप्पा। हाडिप्पा ही जालंधरनाथ और कानप्पा कण्हप्पा या कृष्णपाद कहलाये। मीननाथ भी और कोई नहीं गोरखनाथ के गुरु मछन्दरनाथ थे।

मछन्दरनाथ के सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है। शिव गौरी को महाज्ञान का उपदेश दे रहे थे। उस समय मीननाथ छिपे छिपे इस ज्ञान को सुनने लगे। संयोगवश गौरी को नींद आ गई और गौरी के स्थान पर मीननाथ हाँ, हाँ करने लगे। जब शिव ने मीननाथ का छल समझा तो उन्होंने शाप दिया तू यह महाज्ञान भूल जाएगा और कदलीवन में स्त्रियों में रमण करेगा।

इससे मिलती-जुलती एक कहानी और है। शिव गौरी के साथ कैलास पर चले गये और चारों सिद्ध चारों दिशाओं में तप करने लगे। हाडिप्पा पूर्व दिशा में, कानप्पा दक्षिण में, गोरख पश्चिम में और मीननाथ पूर्व में तप

कर रहे थे। गौरी ने चारों सिद्धों की परीक्षा लेनी चाहिए। जब चारों सिद्ध कैलास पहुँचे तो गौरी ने सुन्दर रूप धारण किया। जब गौरी भुवनमोहिनी बन कर आई तो चारों सिद्ध मोहित हो गये। भुवनमोहिनी के पूछने पर मछन्दरनाथ ने कहा मैं ऐसी सुन्दरी का दास बन सकता हूँ, जालन्धरनाथ ने कहा मैं ऐसी सुदर स्त्री की आज्ञा पर झाड़ू लगा सकता हूँ; इससे मिलती जुलती बात अन्य दो सिद्धों ने भी कही। गौरी ने चारों सिद्धों को शाप दिया। मछन्दरनाथ महाज्ञान को भूल कदलीबन में स्त्रियों में रमण करने लगे और जालन्धरनाथ रानी मयनावती के घर झाड़ू लगाने लगे। करहप्पा और गोरख किसी तरह जल्दी ही छुटकारा पा गये।

एक दिन करहप्पा आकाश-मार्ग से जा रहे थे। एक वृक्ष के नीचे गोरखनाथ तप कर रहे थे। गोरख ने करहप्पा पर खड़ाऊँ चलाई। खडाऊँ की चोट खा कर करहप्पा को पृथ्वी पर उतरना पड़ा। उसने गोरख से कहा—'किस बात पर गर्व करते हो। तुम्हारा गुरु मछन्दरनाथ कदलीबन में स्त्रियों में आसक्त है। मुझे देवलोक में ज्ञात हुआ कि तुम्हारे गुरु की आयु केवल तीन दिन शेष है। यदि कुछ सामर्थ्य है तो गुरु की रक्षा कर।' इस पर गोरखनाथ ने भी कहा—'तुम भी किस बात पर गर्व करते हो। तुम्हारे गुरु भी रानी मयनावती के यहाँ झाड़ू दे रहे हैं।'

गोरख तथा करहप्पा ने अपने अपने गुरुओं की मुक्ति का यत्न किया।

इन कहानियों से इतना स्पष्ट है कि ये चारों सिद्ध समसामयिक हैं। यह भी ज्ञात होता है कि मछन्दरनाथ और जालन्धरनाथ, जो गुरुभाई माने जाते हैं, दो भिन्न साधनाओं को अपनाये हुए थे और यह भिन्नता उनके शिष्यों में भी थी।

जहाँ तक गोरखनाथ के समय का प्रश्न है, वह बहुत कुछ निश्चित-सा है। महाराष्ट्र में सन्त ज्ञानेश्वर ने अपने अग्रज निवृत्तिनाथ से और निवृत्ति-नाथ ने गहनीनाथ से दीक्षा ली थी। गहनीनाथ के गुरु गोरखनाथ थे। इस परम्परा से गोरखनाथ ग्यारहवीं शती के ठहरते हैं। यदि गोरखनाथ ग्यारहवीं शती के हैं तो मछन्दरनाथ आदि को भी उनका समकालीन रहना चाहिए।

किन्तु जालन्धरनाथ और कण्हपा के सम्बन्ध में जो दूसरी कथाएँ प्रचलित हैं, उनके अनुसार कण्हपा गोरख के पूर्ववर्ती ठहरते हैं। ऊपर जो कथा दी गई है वह अधिक प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती।

कण्हपा के सम्बन्ध में श्री राहुल सांकृत्यायन ने यह बताया है उनका काल ८०६ ई० से ८४६ ई० तक रहा है। एक दूसरा मत यह है कि इनका मठ सोमपुरी (बिहार) में था। इस मत के अनुसार ये महाराज देवपाल के समकालीन थे और ये सन् ८६१ से ९०१ तक विद्यमान थे।

सिद्धों के सम्बन्ध में तिब्बती साहित्य से काफी जानकारी मिलती है। राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बती परम्परा के अनुसार कण्हपा का जन्म स्थान दक्षिण में माना है। दक्षिण में ही ये बड़े हुए और बड़ी आयु में बिहार पहुंचे। कर्णाटक में जो कथाएँ प्रचलित हैं, उनसे ज्ञात होता है कि कण्हपा का जन्म कर्णाटक में हुआ।

ऊपर सुकुमारसेन के बंगला-साहित्य के इतिहास से जो कथा दी गई है, उसमें इस बात का उल्लेख आया है कि कण्हपा दक्षिण में तप कर रहे थे, उन्हें गौरी के आग्रह पर शिव ने कैलास पर बुलाया। इस दृष्टि से भी कण्हपा का दक्षिण-वास सिद्ध होता है।

श्री राहुल सांकृत्यायन के कथन तथा कर्णाटक में प्रचलित कथा के के आधार पर ही कण्हपा को इस संकलन में स्थान दिया गया है। जब बंगाल के पाल नरेशों ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की तो दक्षिण के अनेक वज्रयानी स्थविर बिहार-बंगाल में चले गए। कण्हपा भी उन्हीं लोगों में से एक हो सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कण्हपा के जीवन का अधिकांश भाग बिहार-बंगाल में बीता।

इस संकलन में कण्हप्पा की रचना देने का उद्देश्य यही है कि नवीं शती में भी उस क्षेत्र के व्यक्तियों ने अपभ्रंश-हिन्दी की सान्ध्य-भाषा में लिखा है जिस क्षेत्र में दक्खिनी का विकास हुआ।

यदि कण्हपा का दक्खिनी क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है तब भी इस संकलन में कण्हपा के 'दोहाकोष' से लिये गये अंश से सहायता प्राप्त होगी।

संकलन में पुफ्फयन्त या पुष्पदन्त की रचना भी दी गई है। पुफ्फयन्त राष्ट्रकूटों की राजधानी मलखेड़ में रहता था और यह मलखेड़ कन्नड़-भाषी प्रदेश में पड़ता है। गुलबर्गा मलखेड़ से अधिक दूर नहीं है और यह निर्विवाद सत्य है कि आगे चल कर कुछ समय तक गुलबर्गा 'दक्खिनी' के विकास का प्रमुख केन्द्र बना रहा। कण्हपा और पुफ्फयन्त की रचना को साथ साथ पढ़ने पर यह पता चल सकता है कि इन दोनों की भाषाओं में कहाँ अन्तर है और कहाँ साम्य है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि दक्खिनी का जो रूप कण्हपा ने कर्णाटक में सीखा वह बिहार-बंगाल में जाने पर उसी रूप में शेष नहीं रहा होगा।

पुफ्फयन्त

पुफ्फयन्त या पुष्पदन्त के समय के निर्धारण में किसी प्रकार की बाधा नहीं है। इस कवि ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट या मलखेड़ का विस्तार से वर्णन किया है। इसकी रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि उसे राष्ट्रकूटों के मन्त्री भरत ने आश्रय दिया। भरत कृष्णराज (तृतीय) का समकालीन है; जिसका शासन सन् ६३६ से ६६८ तक रहा। राष्ट्रकूट बहुत समय तक दक्षिण में ही नहीं पूरे भारत में सबसे अधिक शक्तिशाली शासक थे। एक समय तो ऐसा आया जब इस वंश के संकेतों पर सिंहल का शासन चलने लगा था। राष्ट्रकूटों के साथ ही अलोरा की गुफाओं का निर्माण हुआ। अलोरा की गुफाएँ इस बात को प्रमाणित करती हैं कि यह वंश सांस्कृतिक कार्यों में कितनी रुचि रखता था और धर्म के मामले में उसका दृष्टिकोण क्या था।

पुष्पदन्त की रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि वह काफ़ी अभिमानी था और उसके इस अभिमान के कारण आश्रयदाता भरत को काफ़ी परेशान होना पड़ता था। पुष्पदन्त ने अपने लिए 'अभिमान मेरु' उपाधि का प्रयोग किया है। उनकी यह उपाधि कन्नड़ के कुछ अन्य कवियों ने भी प्रयुक्त की

है। 'अभिमान मेरु' उपाधि पुष्पदन्त को कन्नड़ कवियों की परम्परा में बैठाती है।

अपभ्रंश-हिन्दी के 'सान्ध्य काल' में जितने कवि उत्पन्न हुए हैं उनमें पुष्पदन्त की रचनाएँ साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनकी कविता का मूल्य केवल भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ही नहीं है, अपितु दक्षिण-भारत के इतिहास के लिए भी उपयोगी है। राष्ट्रकूट शासकों ने कर्णाटक की जनता तथा कन्नड़ भाषा को काफ़ी प्रभावित किया था। उस समय की सामाजिक स्थिति, समृद्धि तथा चेतना का आभास पुष्पदन्त की रचनाओं से मिल सकता है।

नामदेव

सन्त नामदेव के सम्बन्ध में इतिहासिकों तथा साहित्यिकों में मतभेद रहा है। महाराष्ट्र तथा अन्यत्र नामदेव द्वारा रचित जितनी कृतियाँ मिलती हैं, उनके सम्बन्ध में काफ़ी सन्देह बना हुआ है। महाराष्ट्र में दो नामदेवों ने प्रसिद्धि प्राप्त की। पहले नामदेव की मृत्यु सन् १३५१ ई० में हुई जब कि दूसरे नामदेव का निधन १६ वीं शती में हुआ।

प्रथम नामदेव ने महाराष्ट्र ही नहीं देश के अन्य भागों में भी अपनी जीवित अवस्था में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे सन्त ज्ञानेश्वर के साथियों में से एक थे और उनकी गणना 'सन्त मेळा' में होती थी। सन्त मेळा ने महाराष्ट्र में 'वारकरी' सम्प्रदाय के प्रचार में बहुत योग दिया। उस समय के सन्त मेळा ने जो उपदेश दिया उसके कारण महाराष्ट्र की सामान्य जनता में भी भागवत धर्म की प्रतिष्ठा हुई। शतियाँ बीत गईं किन्तु महाराष्ट्र की जनता वैचारिक क्रान्ति तथा चेतना के लिए सन्त मेळा के सन्तों की ऋणी है। सन्त ज्ञानेश्वर की मृत्यु के पश्चात् भी नामदेव पर्यटन करते हुए कीर्तन-मनन का प्रचार करते रहे। इनका जन्म कार्तिक शुद्ध ११ शक ११६२ (सन् १२७० ई०) में माना जाता है। महाराष्ट्र के इतिहासज्ञ इस तिथि को प्रामाणिक मानते हैं।

नामदेव के पिता का नाम दामासेठ और माँ का नाम गोणाई था। इनकी एक बहन भी थी जिसका नाम आऊबाई कहा जाता है।

नामदेव बचपन से ही भक्त थे। जब इनकी अवस्था आठ वर्ष की थी तब इन्होंने भगवान् की मूर्त्ति के सामने दूध रख कर कहा—"यदि तुम दूध नहीं पीओगे तो मैं भी दूध पीना छोड़ दूंगा।" इनकी हठ को देख कर भगवान् ने दूध पी लिया था। आयु के नवें वर्ष में वारकरी लोग इन्हें मानने लगे थे।

इनका विवाह गोविन्दसेठ सदावर्त्ते की कन्या राजाई के साथ हुआ। नामदेव का अधिकांश समय भगवद्भक्ति में व्यतीत होता था अतः इनकी माता तथा पत्नी सदैव इनसे अप्रसन्न रहती थीं। जब घर में शान्ति नहीं मिली तो नामदेव पण्ढरपुर चले गये। यहाँ उनकी मित्रता गोरोबा काका, सावंता माळी आदि भक्तों से हुई। नामदेव यहाँ अपना अधिकांश समय भगवान् की भक्ति में व्यतीत करते थे।

नामदेव ८० वर्ष तक जीवित रहे। उनके चार पुत्र तथा चार पुत्रियाँ थीं।

नामदेव की विठ्ठल पर अपार भक्ति थी। सन्तों से प्रेम था और पाखण्ड से घृणा। पण्ढरपुर में विठ्ठल और रुक्मिणी का एक भक्त था परिसा भागवत। परिसा भागवत कुछ गर्वीला था। उसने नामदेव से कहा—तुम्हारे पूर्वज हम लोगों के चरण छूने आये हैं, तुम भी चरण स्पर्श करो। निरभिमान नामदेव ने परिसा के चरण छुए। परिसा इस विनम्रता के कारण नामदेव का भक्त बन गया।

नामदेव ने ज्ञानेश्वर के साथ तीर्थाटन किया। इस यात्रा में ये लोग उत्तरापथ के काशी, प्रयाग आदि तीर्थों पर गये। तीर्थ-यात्रा में नामदेव निरंतर कीर्तन किया करते थे।

नामदेव के सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है। गोरा कुम्हार सन्तों में सब से अधिक वृद्ध थे। सब लोग इन्हें 'गोरा काका' कहते थे। गोरा थे तो कुम्हार लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान में बहुत बढ़े-चढ़े हुए थे। इनकी दो पत्नियाँ

थीं—सन्ती और रामी। गोरा ने पत्नियों का त्याग कर दिया था। गोरा ने नामदेव के सिर पर थप्पड़ मार कर कहा था कि अभी यह घड़ा कच्चा है।

सन्त-मण्डली में नामदेव ही ऐसे थे जिन्होंने गुरु से दीक्षा नहीं ली थी। दीक्षा की आवश्यकता भी उन्हें प्रतीत नहीं हुई थी। निगुरु होने के कारण ही गोरा ने उन्हें कच्चा बताया था।

नामदेव बिसोबा खेचर से दीक्षा लेने गये। बिसोबा शिवलिंग पर पाँव रख कर सो रहे थे। नामदेव को यह स्थिति सह्य नहीं हुई। बिसोबा ने नामदेव के मन की बात समझ कर कहा—मैं वृद्ध हूँ। उठने में असमर्थ हूँ। तुम्हीं मेरे पाँव पकड़ कर वहा रख दो जहा शिव नहीं है। नामदेव ने दसों दिशाएँ देख डालीं किन्तु शिवरहित स्थान नहीं मिला।

नामदेव का पूर्वकाल महाराष्ट्र में बीता किन्तु उनके जीवन का उत्तरार्द्ध उत्तर भारत में व्यतीत हुआ। ज्ञानदेव, उनके भाइयों और बहन ने जब प्राण त्यागे तो नामदेव कुछ भक्तों के साथ मथुरा-वृन्दावन चले आये। ज्ञानदेव का वियोग उन्हें असह्य था। पण्ढरपुर तथा अन्य स्थानों पर नामदेव का मन कैसे लगता जहाँ प्रत्येक स्थान ज्ञानदेव की स्मृतियों से ओतप्रोत था।

मथुरा-वृन्दावन से नामदेव पंजाब गये। ज्वालापुर में इनका एक मठ है। पञ्जाब के गुरुदासपुर में घोमन नामक ग्राम में नामदेव द्वारा पूजित मूर्ति का मन्दिर है, जहा नामदेव की खड़ाऊ भी सुरक्षित है। इस मन्दिर में 'नामदेव की मुख बानी' नामक हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त हुई है। गुरुमुखी लिपि में लिखी हुई 'नामदेव की जन्म साखी' नामक पुस्तक भी प्राप्त हुई है। इस क्षेत्र में नामदेव का सम्प्रदाय 'बाबा नामदेवाई' के नाम से प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र में यह प्रचलित है कि जब नामदेव पंजाब से आये तो उनके पंजाबी शिष्य बहोरदास, जालोन और लद्धा भी साथ थे।

नामदेव ने पञ्जाब में १८ वर्ष व्यतीत किये थे।

सिखो के 'गुरु ग्रन्थ साहब' में नामदेव के पचास पद संगृहीत हैं।

नामदेव का अखिल भारतीय महत्व है। मध्य युग में जिन लोगों ने सन्त परम्परा को बढ़ाने में योग दिया है, उनमें नामदेव का बहुत ऊँचा स्थान

है। कबीरदास, नरसी मेहता तथा अन्य अमराठी भाषी सन्तों ने इनका नाम बहुत ही आदर से लिया है। नामदेव ने पञ्जाब में भी कीर्त्ति अर्जित की थी। गुरु ग्रन्थ साहब में संकलित इनके पद इस कथन को प्रमाणित करते हैं।

कुछ लोगों ने यह मत व्यक्त किया है कि पञ्जाब में नामदेव नामक एक दूसरे सन्त हुए हैं। विलियम क्रुक ने यह प्रमाणित किया है कि नामदेव १४४३ में मारवाड़ में उत्पन्न हुए थे और सिंकन्दर लोदी के समकालीन थे।

आचार्य क्षितिमोहनसेन ने लिखा है—नामदेव की भेंट फिरोजशाह तुग़लक से हुई थी। शाहआलम ने इन्हें १४४६ में घोमन ग्राम में मठ बनाने के लिए भूमि दी थी। आचार्य क्षितिमोहन ने जिन नामदेव का उल्लेख किया है वे निस्सन्देह ज्ञानेश्वर कालीन नामदेव से भिन्न होंगे।

इन सब मतभेदों के रहते हुए भी अधिकांश विद्वान् यह विचार रखते हैं कि पञ्जाब में जिस नामदेव ने प्रचार किया, जिस नामदेव के पद गुरु ग्रन्थ साहब में संकलित हैं वे उस नामदेव से भिन्न नहीं थे, जो ज्ञानेश्वर के समकालीन थे।

नामदेव ने अपनी रचनाओं में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि वे छीपी हैं। छीपी जाति दरजी तथा बजाज का काम करती रही है। नामदेव को तथा उनके साथी सन्तों को हीन-जाति में जन्म लेने के कारण कभी हीनता का अनुभव नहीं हुआ। इन सन्तों ने गृहस्थ रहते हुए भी ईश्वर की आराधना में समय बिताया।

गोंदा

गोंदा नामदेव के पुत्र थे। नामदेव की पत्नी अपने पति की भक्ति के कारण उद्विग्न रहती थी किन्तु नामदेव के पुत्र अपने भक्त पिता का बहुत आदर करते थे। गोंदा अपने पिता को बहुत मानते थे।

यह अनुश्रुति चली आई है कि नामदेव ने अपने पुत्र तथा पुत्रियों के साथ एक ही समय में समाधि ली। इनकी निधन तिथि आश्विन कृष्ण १३ सं. १४०७ (१३५१ ई.) मानी जाती है। नामदेव ने पण्ढरपुर में ही प्राण त्यागे थे। इस तिथि के ज्ञात होने पर यह निश्चित हो जाता है कि गोंदा का कार्यकाल सन् १३०० से १३५१ तक रहा होगा।

इस संकलन मे गोंदा का एक पद दिया गया है, जिसमें गोंदा ने अपने पिता के एक चमत्कार का उल्लेख किया है। बीदर का नवाब नामदेव से चमत्कार देखना चाहता है। नामदेव ने उसकी इच्छा पूरी की।

भ्रमवश कुछ लोग बीदर के इस नवाब को बहमनी या बरीदशाही वंश का नवाब मान लेते हैं। वास्तव में वह दिल्ली के शासकों की ओर से भेजा गया एक सरदार रहा होगा।

शाह मीराँजी शम्सुल उश्शाक़

शाह मीराँजी शम्सुल उश्शाक़ अरबी के विद्वान् थे। आपका जन्म मक्का में हुआ था। बहुत काल तक आप अपने जन्म स्थान पर ही रहे। आपकी इच्छा भारत में धर्म-प्रचार करने की हुई। आप भारत आये। उस समय उत्तर भारत से बहुत से सन्त दक्षिण में, विशेष कर कर्णाटक में आ कर बस रहे थे। मीराँजी भी दक्षिण में आये और बीजापुर में बस गये। आप लोगों को उपदेश दिया करते थे। अरबी और फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता होते हुए भी आपने दक्खिनी में कविताएँ लिखीं और दक्खिनी में ही लोगों को उपदेश देना शुरू किया।

बीजापुर में ही आपका देहान्त सन् १४९७ में हुआ।

शाह बुरहानुद्दीन जानम

शाह बुरहानुद्दीन जानम शाह मीराँजी शम्सुल उश्शाक के पुत्र और

उत्तराधिकारी थे। आपका जन्म बीजापुर में सन् १५४४ में हुआ। आप अरबी और फ़ारसी के पण्डित थे। पिता से ही पढ़ा और पिता से ही दीक्षा ली। पिता की मृत्यु के बाद आपने पिता का पद प्राप्त किया। सूफ़ी साधना को अपना कर भगवद्-भक्ति करते थे। चिन्तन तथा मनन के अतिरिक्त विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। आपकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। दूर-दूर से लोग आते थे। आप उन्हें उपदेश देते तथा उनके सन्देहों का निवारण करते थे। सन् १५८३ में बीजापुर में आपका देहान्त हुआ।

एकनाथ

श्री एकनाथ की जन्म-तिथि निश्चित नहीं है। कुछ लोग इनका जन्म-काल सन् १५३० से १५३५ के बीच मानते हैं और कुछ लोग इनका जन्म सन् १५४८ में मानते हैं। आपका जन्म पैठण (औरंगाबाद) में हुआ। आपके दादा भानुदास मराठी के प्रसिद्ध कवि थे।

सात वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत हुआ। तेरह वर्ष की आयु में इन्होंने देवगिरि के जनार्दन स्वामी से दीक्षा ली। आरंभ में आप अपने गुरुजी के उपदेशानुसार दत्तात्रेय के भक्त थे। बारह वर्ष तक आप गुरु के निकट रहे। पहले छः वर्षों में आपने गुरुजी से शिक्षा ग्रहण की और शिक्षा लेने के बाद गुरु के निकट रहते हुए आपने उस शिक्षा को क्रियात्मक रूप दिया।

एक दिन जनार्दनस्वामी ध्यान में लीन थे। शत्रुओं ने देवगिरि पर आक्रमण किया। एकनाथ ने गुरु को जगाया नहीं। शत्रुओं का सामना किया। शत्रु भाग गए।

एक दिन एक दमड़ी का हिसाब नहीं मिला। रात भर हिसाब लगाते रहे। उस समय एक दमड़ी का पता चला जब दीपक का तेल समाप्त हो चुका था और दिन निकलने ही वाला था। हिसाब मिलते ही एकनाथ ने प्रसन्नता से ताली बजाई। गुरु ने ताली की आवाज़ सुन कर कहा शिष्य तुम्हें दमड़ी के

हिसाब में इतनी प्रसन्नता हुई, किन्तु दुनिया में तुझसे जो बड़ी भूल हुई है, उसके निराकरण का कोई उपाय है ?

बारह वर्ष बाद गुरु की आज्ञा से देवगिरि के निकट एक पहाड़ पर भगवान् कृष्ण की उपासना छः वर्ष तक की। गुरु के आदेश से आपने गोदावरी के निकट चन्द्रगिरि में चतुःश्लोकी भागवत की रचना की।

गुरु के आदेश से आपने विवाह किया। आपकी पत्नी गिरिजाबाई बहुत दयाशील और पति की अनुगामिनी थी। पत्नी के कारण आपकी साधना में कभी बाधा उपस्थित नहीं हुई।

एकनाथ भक्त होते हुए भी आदर्श गृहस्थ थे। महाराष्ट्र में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि शंकराचार्य जिस तरह सन्यासाश्रम के आभूषण थे उसी तरह गृहस्थाश्रम के आभूषण एकनाथ थे।

एकनाथ ने भागवत की पञ्चाध्यायी लिखी। आपका एक शिष्य काशी के मणिकर्णिका घाट पर इस पञ्चाध्यायी को पढ़ रहा था। काशी के पण्डित उसे सुन कर बहुत रुष्ट हुए। एकनाथजी स्वयं काशी गये। काशी के पण्डितों ने इनकी विद्वत्ता और गम्भीर अध्ययन के आगे मस्तक झुका दिया। विद्वानों ने भागवत को पूरा करने का आग्रह किया। एकनाथ ने काशी में रहते हुए ही अपनी भागवत पूरी की। इस भागवत को सुन कर पण्डित इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने एकनाथ को पालकी में बैठा कर घुमाया।

भागवत के अतिरिक्त भावार्थ रामायण, चतुःश्लोकी भागवत, शुकाष्टक, हस्तामलक, स्वात्मसुख, आनन्द लहरी, रुक्मिणी स्वयंवर, गीतासार और आनन्दानुभव आपकी प्रमुख रचनाएं हैं।

एकनाथ ने बहुत से लोकगीत भी लिखे हैं। एकनाथ के भारुड्या मदारियों के गीतों के अनुसरण पर लिखे गये हैं। इन भारुड्यो में आपने आध्यात्मिकता को बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया है।

सं. १६५६ (१५६६ ई.) के फाल्गुन मास के आरम्भ होते ही एकनाथ ने इस संसार को छोड़ने का संकल्प किया। आसपास के हज़ारों लोग एकत्रित हो गये। उन लोगों ने एकनाथ की पूजा की।

एकनाथ और तुलसीदास में बहुत-सी साम्यताएँ हैं। जिस वर्ष एकनाथ ने काशी में भागवत पूरी की उसी वर्ष तुलसीदास ने अपनी रामायण शुरू की। दोनों ही अभक्त मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए और दोनों ही शैशव में माता-पिता के स्नेह से वञ्चित रहे।

शाह अली मुहम्मद 'माशूक अल्ला' गाँवधनी

शाह अली मुहम्मद के पिता का नाम शाह इब्राहिम जानुल्ला था। इनका जन्म गुजरात में हुआ। उन दिनों अहमदाबाद सूफी सन्तों और औलियों का केन्द्र था। शाह अली मुहम्मद का पालन-पोषण अहमदाबाद में ही हुआ। यहीं आपने शिक्षा पाई। आप सूफी विचार-धारा का प्रचार किया करते थे।

अहमदाबाद से आप दक्षिण में आये। यहा अध्ययन-अध्यापन में आपका समय बीतता था। आपको एक गाँव भी मिला था। इस गाँव के स्वामित्व के कारण आप 'गाँवधनी' नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

इस संकलन में 'जवाहर उल-इसरारे अल्ला' नामक पुस्तक का कुछ अंश दिया गया है। 'जवाहर उल-इसरारे अल्ला' में आपके उपदेशों और वचनों को संकलित किया गया है। सूफी विचारों को कविता में व्यक्त किया गया है। यह संकलन आपके शिष्य शाह अबुल हसन ने संकलित किया। गाँवधनी की मृत्यु के बाद इनके पौत्र इब्राहिम बिन शाह मुस्तफ़ा ने इसे दूसरी बार सम्पादित किया। पुस्तक का सम्पादन दो व्यक्तियों ने अलग अलग समय में किया, फिर भी यह अधिकृत रूप से कहा जाता है कि सम्पादकों ने मूल कृति को ज्यों की त्यों रखने की कोशिश की है।

शाह अली मुहम्मद का काव्य-नाम 'माशूक़ अल्ला' था। आपका निधन १५६६ में हुआ।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह

मुहम्मद कुली का जन्म गोलकुण्डा के शासक इब्राहिम के यहाँ हुआ।

आप कुतुबशाही वंश के चौथे शासक थे। इनका कार्य काल १५८१ से १६११ ई. था। गोलकुण्डा में शासन स्थापित करने के बाद कुली कुतुबशाह के वंशजों का ध्यान साहित्य और स्थापत्य की ओर गया। इब्राहिम के समय गोलकुण्डा में अच्छा साहित्यिक वातावरण बन चुका था। उस समय दूर-दूर से विद्वान् लोग यहां आने लगे। ये लोग अरबी और फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता थे। गुजरात से अनेक फ़क़ीर और साधक भी यहा आये। इस तरह इस्लाम-धर्म के ज्ञाताओं के अतिरिक्त बहुत से सूफी साधकों ने भी गोलकुण्डा में आश्रय प्राप्त किया। इब्राहिम स्वयं साहित्य में रुचि रखते थे।

इब्राहिम के समय तक गोलकुण्डा में 'दक्खिनी' का रूप परिमार्जित हो चुका था। 'दक्खिनी' में अनेक धार्मिक पुस्तकों का अनुवाद हुआ। बहुत से कवियों ने इस भाषा में अपने गद्य-पद्य के ग्रन्थ रचे।

मुहम्मद कुली को साहित्यिक अभिरुचि एक प्रकार से पिता से प्राप्त हुई। मुहम्मद कुली जहा साहित्यिकों का आश्रयदाता था वहां स्वयं कवि भी था। वह अरबी-फ़ारसी का ज्ञाता था किन्तु उसे तेलुगु और दक्खिनी से विशेष रुचि थी। उसने तेलुगु में कविताएँ कीं और दक्खिनी में गीत लिखे। विभिन्न अवसरों के लिए उसने 'दक्खिनी' में गीत तथा अन्य छन्द लिखे। निस्सन्देह ये गीत तथा छन्द 'स्वान्तः सुखाय' नहीं थे। इन गीतों को सार्वजनिक रूप से गाया जाता था। बहुत से गीत जनता द्वारा अपना लिये गए। मुहम्मद कुली की बहुत सी रचनाओं ने लोक-गीतों का रूप धारण कर लिया और आज भी उन्हें वही स्थान प्राप्त है।

कुली कुतुबशाह की रचनाओं का संकलन पहले राजकीय पुस्तकालय में विद्यमान था। एक हस्तलिखित प्रति सालारजंग लाइब्रेरी में सुरक्षित है। किन्तु राजकीय पुस्तकालय वाली प्रति मुहम्मद कुली के समय में ही तैयार की गई थी। राजकीय पुस्तकालय की प्रति गुम हो गई अतः मुहम्मद कुली की रचनाओं को अधिकृत रूप से देने का कोई साधन शेष नहीं रह गया। सालारजंग पुस्तकालय मे जो हस्तलिखित प्रति है, उसी के आधार पर डाक्टर मोइउद्दीन क़ादरी ज़ोर ने एक संकलन तैयार करके प्रकाशित किया

हैं। इस संकलन के आधार पर ही प्रस्तुत संग्रह में मुहम्मद कुली की रचनाएँ दी गई हैं।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह कवि होने के साथ साथ रसिक, विद्या-प्रेमी और गुणज्ञ भी था। इसी ने हैदराबाद नगर की नींव डाली। मुहम्मद कुली ने हैदराबाद में अनेक इमारतें बनवाईं। इन इमारतों में 'चारमीनार' बहुत प्रसिद्ध है। इमारत के चारों ओर ऊँची-ऊँची चारमीनारें हैं, इसीलिए इस इमारत का नाम चारमीनार पड़ गया।

मुहम्मद ने रोगियों के इलाज के लिए हैदराबाद में 'दारुशफ़ा' नामक चिकित्सालय बनवाया। इस चिकित्सालय की विशाल इमारत इस समय भी विद्यमान है। इसी तरह की बहुत-सी इमारतें मुहम्मद कुली का स्मरण कराती हैं।

कुतुबशाही वंश में सात नरेश हुए। इन सातों नरेशों का शासन-काल शान्तिपूर्ण रहा। गोलकुण्डा में इब्राहिम कुतुबशाह के समय जो साहित्यिक वातावरण बना उसी का यह परिणाम था।

मुहम्मद कुली के समय जनता प्रसन्न थी और वह अपने शासक को हृदय से चाहती थी। मुहम्मद कुली ने भी अपनी कविता का भाव राजमहलों की अपेक्षा साधारण जनता से अधिक ग्रहण किया।

गवासी

गवासी को कुतुबशाही वंश का आदर प्राप्त था। मुहम्मद कुतुब (१६११-१६२६) के शासन-काल में कवि गोलकुण्डा आया। शीघ्र ही उसे राज्याश्रय प्राप्त हो गया। अपने गुणों के कारण उसकी कीर्त्ति फैली। जब अब्दुल्ला (१६२६-१६७२) गोलकुण्डा की गद्दी पर बैठा तो गवासी का सम्मान और भी बढ़ा। वह शाही कवि बनाया गया।

गवासी केवल कवि ही नहीं था। राजनीतिक समस्याओं में भी उसकी रुचि थी। गवासी शासक और उसके दरबार को कविता सुना कर प्रसन्न करता

था तो समय पड़ने पर जटिल से जटिल प्रश्न के बारे में अपनी सम्मति भी प्रदान करता था। गवासी गोलकुण्डा के राजदूत के रूप में बीजापुर गया था। उसने इस पद को बहुत समय तक योग्यता से निभाया।

गवासी ने दो कथात्मक काव्य लिखे हैं। पहला है सइफुलमुल्क व बदरुलजमाल और दूसरा है तूतीनामा। क़िस्सा मैना सतवन्ती भी संभवतः गवासी की लिखी हुई है। इस किस्से का अन्त इस प्रकार किया गया है:—

ग़वासी यो करना करम की नज़र
दुआ हक़' सो मँगना मेरे हक़ उपर

सैफुलमुल्क व बदरुलजमाल, तूतीनामा और किस्सा मैना सतवन्ती के कुछ अंश इस संग्रह में संकलित हैं। सइफुलमुल्क व बदरुलजमाल की रचना १६२६ ई. में हुई। तूतीनामा १६४० ई. में समाप्त हुआ।

'तूतीनामा' फ़ारसी की पुस्तक 'तूतीनामा' का अनुवाद है। इस पुस्तक का मूल लेखक जियाउद्दीन बख़्शी है। अनुवाद से यह प्रतीत होता है कि ग़वासी फारसी का बहुत विद्वान था। अनुवाद होते हुए भी तूतीनामा ग़वासी की क्षमता का निदर्शक है।

ग़वासी ने उपर्युक्त तीन पुस्तकों के अतिरिक्त ग़ज़ल और मर्सिये भी लिखे। ग़वासी को जनता का आदर तथा सम्मान प्रचुर मात्रा में प्राप्त था। इसी लिए कई स्थानों पर वह अपने लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जिससे ज्ञात होता है कवि अपने आपको बहुत बड़ा समझता था। कुछ स्थानों पर उसने समकालीन कवियों और लेखकों के बारे में जो विचार व्यक्त किए हैं, उन से ज्ञात होता है वह उनके प्रति उपेक्षा के भाव रखता था। लगभग १६५० ई. में कवि की मृत्यु हुई।

तुकाराम

तुकाराम का जन्म शक १५३० (१६०८ ई.) में देहू नामक ग्राम में

हुआ। यह ग्राम पूना के निकट इन्द्रायन नदी के किनारे बसा हुआ है। इनका बहुत-सा समय लोहगांव में बीता। यह संयोग की बात थी कि इसी वर्ष समर्थ रामदास का भी जन्म हुआ। इन दो महापुरुषों के जन्म के कारण यह वर्ष महाराष्ट्र के इतिहास में विशेष रूप से उल्लेखनीय बन गया।

तुकाराम ने अपने सम्बन्ध में लिखा है 'मेरी जाति नीच है। मैंने वैश्यों का व्यवसाय किया।' आपका बचपन खेलकूद में बीता। माँ इन पर बहुत स्नेह रखती थी। बहुत कम अवस्था में माता का देहान्त हो गया। माता की मृत्यु के बाद इन्हें कभी वैसा स्नेह प्राप्त नहीं हो सका। तुकाराम के दो भाई थे—सावजी और कान्होबा। तुकाराम का विवाह बचपन में ही हो गया। इनकी पत्नी का नाम रखुमाई था। विवाह के कुछ काल पश्चात ही रखुमाई दमा से पीड़ित रहने लगी। इसी लिए तुकाराम ने पूना के अप्पाजी गुळवे नामक व्यापारी की कन्या जिजाई से विवाह किया।

तुकाराम के अग्रज सावजी संसार से विरक्त हो तीर्थाटन के लिए चले गये। तुकाराम घर की देखभाल करने लगे। चार वर्ष तक आपने कुशलता से परिवार का भरण-पोषण किया।

जब तुकाराम की उम्र सत्रह-वर्ष की थी, तभी इन्हें व्यापार में हानि उठानी पड़ी। इस हानि के कारण इन्हें अपमानित होना पड़ा। उसी समय महाराष्ट्र में भयानक अकाल पड़ा। अकाल में तुकाराम की पहली पत्नी अन्न के अभाव में चल बसी। दुर्भिक्ष के कारण बड़े पुत्र संताजी बाळे का भी निधन हुआ। एक-एक करके भावज, पुत्र तथा परिवार के अन्य लोग अकाल के ग्रास बन गये। जीजाई जीवित रही। तुकाराम उदास रहने लगे। जीजाई का स्वभाव कठोर था। इस कठोरता ? के कारण तुकाराम विशेष दुःखी रहने लगे। तुकाराम की उदासी तथा शोक से दूसरे लोगों ने लाभ उठाया। लोगों ने इनके पैसे नहीं चुकाये। जिन लोगों का ऋण तुकाराम पर था वे इनसे तकरार करने लगे। घर में पत्नी हमेशा कुड़कड़ाती।

तुकाराम के चार जानवर बचे थे। किसी रोग के कारण एक दिन तीन जानवर मर गये।

तुकाराम को दिवाला निकालना पड़ा।

एक बार ये मिरच का व्यापार करने कोंकण में गये। वहाँ डाकुओं ने इनका माल लूट लिया। एक बार ये अपने आसामी से पैसा उघा कर ला रहे थे। किसी ठग ने पीतल के कड़े पर सोने का मुलम्मा कर के इनके पैसे ठग लिये। जीजाई ने इन्हें व्यापार के लिए दो सौ रुपये दिये। इन रुपयों से इन्होंने नमक का व्यापार किया। दो सौ के ढ़ाई सौ हो गये, किन्तु मार्ग में एक दरिद्र ने इनसे याचना की। तुकाराम ने पूरे रुपये उसे दे दिये।

इसी समय दूसरी बार अकाल पड़ा। इस अकाल में तुकाराम इतने दुःखी हुए कि ये संसार से पूर्णतया विरक्त हो गये। तुकाराम अभंगों की रचना करते और भक्तों को सुनाते। धीरे धीरे इनके कीर्त्तन की ख्याति महाराष्ट्र भर में फैल गई। यह कथा प्रचलित है कि शिवाजी भी इनका उपदेश सुनने आए थे। उपदेश का इतना प्रभाव पड़ा कि शिवाजी ने वैराग्य लेने का निश्चय किया। तुकाराम के कहने पर शिवाजी ने पुनः राज-काज में मन लगाया।

तुकाराम के समय महाराष्ट्र विशेष कर पूना प्रदेश में बहुत से परिवर्तन हो रहे थे। जनता में एक नई चेतना उत्पन्न हुई, जिसने कुछ दिनों में महाराष्ट्र की कायापलट कर दी। इस चेतना को उत्पन्न करने में समर्थ रामदास और तुकाराम का विशेष योग रहा। सन्त ज्ञानेश्वर ने जिस भावना का प्रचार किया तुकाराम ने उसे आगे बढ़ाया।

तुकाराम ने मराठी के साथ साथ हिन्दी में भी दोहे तथा गीत रचे।

सन् १६४६ में तुकाराम का देहान्त हुआ।

सैयद मीराँ हुसेनी

मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८१-१६११) के शासन काल में सैयद मीराँ हुसेनी गोलकुण्डा आए। गोलकुण्डा क़िले के बाहर एक मस्जिद में रहने लगे। आपके साथ सौ फ़क़ीर भी थे। अपने अनुयायियों के साथ

सैयद साहब ईश्वर-भक्ति में लीन रहते थे। अपने सौ साथियों के भरण-पोषण का दायित्व मीराँ हुसेनी पर ही था।

एक बार ऐसा संयोग हुआ कि तीन दिन तक सैयद मीराँ हुसेनी और उनके सौ साथियों को एक दाना भी नसीब नहीं हुआ। किन्तु ये लोग भी अपनी धुन के पक्के थे। कहीं माँगने नहीं गये। जब तीन दिन हो गये तो इनकी भूख का समाचार मुहम्मद कुली के पास पहुंचा। उसके आदेश से भोजन के पचास थाल सैयद की सेवा में भेजे गये।

आपका विवाह भी गोलकुण्डा की एक कन्या के साथ हुआ। पाँच पुत्र हुए।

आपकी क़ब्र गोलकुण्डा के निकट लंगरहौज़ के पास है। आपका अधिक समय मलकापुर के पास एक ग्राम में बीता।

हुसेनी

हुसेनी की मृत्यु १६४१ ई. के लगभग हुई। आप बीजापुर के रहनेवाले थे। इनका सम्बन्ध शाह अमीनुद्दीन आला से बताया जाता है। अपनी गज़लों के कारण ये बीजापुर में प्रसिद्ध थे।

मुहम्मद अमीन 'अयागी'

मुहम्मद अमीन ने काव्य-नाम अयाग़ी से लिखा है। इन पर दक्खिनी के प्रसिद्ध कवि नुसरती का बहुत प्रभाव पड़ा। ये नक्शबन्दिया शाखा के अनुयायी थे। धार्मिक रूढियों पर आपने विशेष जोर दिया है। नाच-गाना तथा अन्य ललित कलाओं को आपने त्याज्य बताया है। अपनी रचनाओं में इन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि ईश्वर-भक्तों को ललित-कलाओं से सम्पर्क नहीं रखना चाहिए।

इन्होंने 'नजात नामा' १६४१ ई. से पहले ही पूरा कर दिया था।

कवि की जन्म तथा मृत्यु-तिथि अज्ञात हैं।

केशव स्वामी

मराठी साहित्य और महाराष्ट्र के इतिहास में 'रामदासी पञ्चायतन' का विशेष स्थान है। इस पञ्चायतन में पांच सन्तों की गिनती होती है—समर्थ रामदास, जयराम स्वामी, रंगनाथ स्वामी, केशव स्वामी और आनन्द स्वामी।

केशव स्वामी का जन्म हैदराबाद राज्य के बीदर ज़िले में कल्याणी नामक ग्राम में हुआ। पिता का नाम आत्माराम और मां का नाम गंगाबाई था। आत्माराम गाँव के पटवारी थे।

केशव स्वामी संस्कृत, मराठी और फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता थे, अक्षर बहुत सुन्दर लिखते थे। पिता की मृत्यु के बाद इन्हें गाँव की पटवारगरी मिली। किन्तु केशव की आकाँक्षा पटवारी के काम से ही तृप्त होनेवाली नहीं थी। ये गोलकुण्डा चले आए। उन दिनों गोलकुण्डा में कुतुबशाही वंश के अन्तिम शासक अबुल हसन (तानाशाह) का शासन था।

केशव ने शीघ्र ही दरबार में अपनी जगह बना ली। पद में वृद्धि होती गई। आपकी गिनती राज्य के प्रमुख अधिकारियों में होने लगी।

केशव स्वामी कवि थे और गायक भी। आपको संगीत शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। गोलकुण्डा के दरबारियों को आपने अपने संगीत के कारण बहुत आकर्षित किया।

केशव की रुचि आरम्भ से ही धार्मिक मामलों में थी। आपने दर्शन तथा धर्म शास्त्रों का अध्ययन किया था। मराठी में आपने 'एकादशी-चरित्र' लिखा।

केशव स्वामी धीरे-धीरे विरक्त होते गए। अन्त में उन्होंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और दिन-रात ईश्वर भक्ति में लीन रहने लगे।

जब गोलकुण्डा पर औरंगज़ेब ने अधिकार किया, आप हैदराबाद में थे। राजनीतिक उथल-पुथल में भी आप ईश्वर-चिन्तन में लगे रहे। १६५१ ई. में आपका देहान्त हुआ। आपकी समाधि हैदराबाद नगर से बाहर एक बाग़ में बनी हुई है।

केशव स्वामी ने मराठी के अतिरिक्त हिन्दी में भी बहुत से गीत लिखे हैं। केशव स्वामी अपने समय के बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति थे। रामदास पंचायतन में आपकी गिनती होती है, इसीसे इनकी महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है।

नुसरती

'दक्खिनी' के कवियों में नुसरती का विशेष स्थान है। इनका नाम मुहम्मद नुसरत था। 'नुसरती' इनका काव्य नाम है। नुसरती के पिता बीजापुर के राजकीय अस्तबल के अधिकारी थे। बीजापुर में ही नुसरती का जन्म तथा पालन-पोषण हुआ।

मुहम्मद आदिल (१६२६-१६५६) अली आदिल द्वितीय (१६५६-१६७२) और सिकन्दर (१६७२-१६८६) के समय में नुसरती को बहुत सम्मान मिला। उस समय बीजापुर के कवियों में नुसरती का सर्वोपरि स्थान था। नुसरती का पालन-पोषण राजमहल में अली आदिलशाह (द्वितीय) के साथ हुआ। युवराज अली को जो सुविधाएं प्राप्त थीं वे सब नुसरती को भी प्राप्त हुई। जब अली गद्दी पर बैठा तो नुसरती केवल राजकवि ही नहीं रहा, बल्कि उसकी गिनती राज्य के प्रमुख सरदारों में होने लगी। जीवन भर नुसरती अली का साथी रहा। अली हर समय इसे साथ रखता था। नुसरती राज-काज में भी सहायता देता था। उसकी मन्त्रणा का बहुत आदर था। बीजापुर के समकालीन तथा दक्खिनी के परिवर्त्ती कवियों ने नुसरती की बहुत प्रशंसा की है।

जब औरंगज़ेब ने बीजापुर को अपने अधीन ले लिया तब भी नुसरती की कीर्त्ति कम नहीं हुई। औरंगज़ेब भी नुसरती का प्रशंसक बन गया और उसने इसे मलिक उश शोरा (कवि सम्राट्) की उपाधि से अलंकृत किया।

नुसरती ने तीन पुस्तकें लिखी हैं। 'गुलशने इश्क़' नामक पुस्तक १६५८ ई. में समाप्त हुई। इस पुस्तक में कुँअर मनोहर और मधुमालती

की कहानी को कविताबद्ध किया गया है। नुसरती की दूसरी किताब 'अलीनामा' है। अलीनामा १६६६ में समाप्त हुई। 'अलीनामा' में अली आदिल शाह द्वितीय की जीवनी है। कवि ने 'तारीखे सिकन्दरी' १७७० में समाप्त की।

इन तीन पुस्तकों के अतिरिक्त राजकुमारों और राजवंश के सम्बन्धियों की प्रशंसा में आपने बहुत से कसीदे भी लिखे।

मीराँ हाशमी बीजापुरी

मीराँ हाशमी का जन्म बीजापुर में हुआ। आपके परिवार में कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक हुए हैं, जिनमें वजीदुद्दीन गुजराती का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वजीदुद्दीन गुजराती मीराँ हाशमी के चाचा थे। मीराँ हाशमी बीजापुर के अन्तिम आदिलशाह सिकन्दर (१६७२-१६८६) का समकालीन था। सिकन्दर मीराँ हाशमी का प्रशंसक था।

१६७८ ई. में मीराँ हाशमी ने यूसुफ़ जुलेखा समाप्त की। १७०५ में इनका देहान्त हुआ।

मोमिन दकनी

मोमिन दकनी मद्रास के निवासी थे। आपकी दो हस्तलिखित पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। एक का नाम है 'मसनवी इसरारे इश्क़' और दूसरी का नाम है 'मेराजनामा'। आपकी कुछ फुटकर रचनाएँ भी उपलब्ध हुई हैं।

'मसनवी इसरारे इश्क़' में सैयद मुहम्मद जौनपुरी का चरित्र लिखा गया है। यह पुस्तक १६८३ में लिखी गई। मेराजनामा १६८० ई. में लिखा गया।

फ़ायज

फ़ायज गोलकुण्डा के निवासी थे। इन्होंने १६८४ ई. में क़िस्सा रूह

अफ़ज़ा और रिज़वानशाह लिखा। यह एक कथात्मक काव्य है। इनके पिता का नाम शाह हबीबुल्ला क़ादरी था। फ़ायज इनका काव्य-नाम है। पूरा नाम शाह वलीउल्ला क़ादरी है। इनके बचपन में ही कुतुबशाही शासन समाप्त हो गया था और आसफ़जाही वंश अपना आधिपत्य जमा रहा था। दो शासनों के सन्धिकाल का पता इनकी रचनाओं से चल सकता है। अपने पिता के आदेश से इन्होंने 'मारिफ़त उल सलूक' नामक पुस्तक का फ़ारसी से दक्खनी में अनुवाद किया। अनुवादित पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। १७४५ ई. में इनका देहान्त हुआ।

करीमुद्दीन सरमस्त

करीमुद्दीन सरमस्त के सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं है। १६८६ ई. में इनका देहान्त हुआ।

क़ाजी महमूद 'बहरी'

क़ाजी महमूद 'बहरी' काव्य-नाम से लिखते थे। पिता बदरुद्दीन गोगी (गुलबर्गा ज़िला हैदराबाद) के क़ाज़ी थे। उन दिनों गोगी बीजापुर राज्य में था। १६८५ ई. में बहरी बीजापुर गए। किन्तु बीजापुर पहुँचते ही इन पर विपत्तियों का पहाड़ टूटा। बीजापुर पर औरंगज़ेब का आक्रमण हुआ। बीजापुर वीरान हो गया। बीजापुर से हैदराबाद आए किन्तु यहां भी इन्हें सुख नहीं मिला। अतः औरंगाबाद चले गए।

बहरी शाह मुहम्मद बाक़िर के शिष्य थे। ईश्वर-चिन्तन तथा काव्य-रचना में ही अपना समय बिताते थे। इन्होंने अनेक संकट सहे, किन्तु एक कष्ट को ये भुला नहीं सके। बहरी ने बीजापुर में रहते हुए बहुत-सी कविताएँ लिखी थीं। सुनते हैं ये अपने पचास हज़ार पदों के साथ बीजापुर से हैदराबाद आ रहे थे। मार्ग में चोर मिले। चोरों ने इनकी कविता पर ही हाथ साफ़ किया। जिस डब्बे में इनकी हस्तलिखित रचनाएँ बन्द थीं वह

डब्बा ही चला गया। बहरी के पास कुछ भी नहीं बचा। उस समय बहरी की जो हालत हुई होगी उसका अनुमान लगाया जा सकता है। बहरी जीवन से निराश हो गए। वे इधर-उधर घूमने में ही अपना समय बिताते थे।

इसी समय उनकी भेंट हैदराबाद के एक अमीर से हुई। इस अमीर ने बहरी को बहुत प्रोत्साहित किया। उसने समझाया कि रचनाओं के नष्ट होने से क्या होता है। आपका कवि हृदय तो नष्ट नहीं हुआ है। आप नई-नई रचनाएं लिख कर भी नाम कमा सकते हैं। बहरी को इस अमीर की बात भा गई। उन्होंने फिर लिखना शुरू किया और 'मन लगन' नामक कथात्मक काव्य लिखा और दूसरे ग्रन्थों की रचना की। 'मन लगन' के कारण बहरी ने अपने सामयिक कवियों में विशेष स्थान प्राप्त किया। 'मन-लगन' की रचना १७०० ई. में समाप्त हुई।

वजदी

वजदी का पूरा नाम शेख़ वजहीउद्दीन 'वजदी' है। 'वजदी' इनका काव्य नाम था। ये आन्ध्र राज्य की वर्तमान राजधानी कर्नूल के निवासी थे। कर्नूल में बहुत दिनों तक नवाबी रही है। यहाँ दक्खिनी के बहुत से कवि हुए। कर्नूल ने भी दक्खिनी के विकास तथा उसके साहित्य की वृद्धि में योग दिया है।

वजदी की तीन पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। तीनों कथात्मक काव्य हैं। इन्होंने 'तोहफ़े आशिक़ाँ' १७०४ ई. में, 'पंछी नामा' १७१६ में और 'बाग़े ज़ाँफ़िज़ा' १७३३ में लिखा। पंछीनामा स्वतन्त्र रचना न हो कर शेख़ अत्तार के फ़ारसी काव्य का अनुवाद है।

नवाजिदाअलीखाँ 'शैदा'

नवाजिदाअलीखां 'शैदा' हैदराबाद के निवासी थे। इन्होंने १७१४ ई. में अपनी पुस्तक 'रोज़ोतुल इतहार' समाप्त की।

इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं है।

वली दकनी

वली मुहम्मद औरंगाबाद के निवासी थे। 'वली' आपका काव्य-नाम है। इन्हें बचपन से ही आध्यात्मिक ज्ञान की प्यास थी। बहुत समय तक आप औरंगाबाद तथा उसके आसपास गुरू की खोज में रहे, अन्त में दक्षिण से गुजरात गए। गुजरात का अहमदाबाद नगर उस समय भी सूफ़ी सन्तों के लिए विख्यात था। वजीहउद्दीन गुजराती से आपने शिक्षा ग्रहण की और उनके पथ प्रदर्शन में साधना करने लगे। वली औरंगाबादी को शीघ्र ही सफलता मिली उनकी गिनती प्रमुख साधकों में होने लगी। सफलता पाने के बाद ये औरंगाबाद चले आए। यहा रह कर आप आत्म-साधना भी करते और कविता भी लिखते थे।

औरंगज़ेब के शासन काल में ये दिल्ली गए। उन दिनों दिल्ली में फ़ारसी का उतना प्रचलन नही रह गया था। घरेलू बातचीत में हिन्दी का व्यवहार होता था और बहुत से लोग हिन्दी में लिखने भी लगे थे। दिल्ली के विद्वानों और चिन्तकों पर वली का बहुत प्रभाव पड़ा और वली ने भी बहुत-सी नई बातें सीखीं। यह कहा जाता है कि वली के कारण ही दक्खिनी ने नई दिशा की ओर पग बढ़ाया। उन्ही की प्रेरणा और साधना से हिन्दी अथवा दक्खिनी में अरबी फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग तथा देशज और संस्कृत के तत्सम्-तद्भव शब्दों का बहिष्कार हुआ। धीरे धीरे हिन्दी के दो रूप हो गए। उसका एक रूप उर्दू कहलाने लगा। इसीलिए वली औरंगाबादी को उर्दू के बहुत से विद्वान उर्दू का प्रथम कवि मानते हैं। वली ने चाहे कितना ही काम किया हो किन्तु वह अपनी कविता से संस्कृत के तत्सम्-तद्भव शब्दों का परित्याग नहीं कर सका। जहां तक फ़ारसी-अरबी शब्दों के प्रयोग की बात है, वली से पहले भी मुस्लिम लेखक उनका बहुतायत से प्रयोग करते थे। वली की मृत्यु के बाद भी दक्खिनी का प्रचलन बिल्कुल

बन्द नहीं हुआ और यह बोली आज भी केवल बातचीत में ही नहीं साहित्य में भी प्रयुक्त होती है।

वली दिल्ली से दक्षिण में लौट आए किन्तु मुहम्मदशाह के शासन काल में दुबारा दिल्ली गए। वली की इन दो यात्राओं ने उसकी भाषा पर क्या प्रभाव डाला, इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता। दिल्ली यात्रा से पहले और दिल्ली यात्रा के बाद की वली की रचनाएँ इस बारे में सब से अधिक प्रामाणिक मानी जा सकती हैं किन्तु इस बारे में उनसे विशेष जानकारी नहीं मिलती। दिल्ली-यात्रा का यह प्रभाव अवश्य हुआ होगा कि वली ने अपनी आँखों से मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारणों को देखा और उन कारणों से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। दिल्ली के सामन्त वंशों ने जिस नीति का अवलम्बन कर साम्राज्य के विनाश को निमन्त्रित किया था, वली उसी नीति को दक्षिण में प्रयुक्त नहीं होने देना चाहते थे। उस समय बहुत से विद्वान औरंगाबाद और दिल्ली की यात्रा करते होंगे किन्तु वली के भावुक हृदय ने परिस्थिति का जो रूप देखा और उसको जिस तरह व्यक्त किया वह किसी अन्य दर्शक के लिए उसी रूप में ग्रहण कर सकना सम्भव नहीं था।

वली की रचनाओं का संकलन प्रकाशित हो चुका है।

वली के मृत्यु-संवत में सन्देह है। कुछ लोग इनका देहान्त १७४३ ई. में मानते हैं जब कि कुछ लोग १७३१ में। कुछ लोग इस पक्ष में हैं कि इनका निधन १७०८ ई. में हुआ। १७०७ में औरंगज़ेब का देहान्त हुआ। यह निश्चित है कि औरंगज़ेब की मृत्यु के कुछ दिन पश्चात् मुहम्मदशाह के समय में वली दिल्ली गए। अतः उनका १७०८ में मरना युक्तिसंगत नहीं है। ऊपर के दोनों संवतों में से कोई एक वली का मृत्यु संवत है।

शहाबुद्दीन

शहाबुद्दीन ने 'मसनवी फ़ैज़े आम' नामक कथात्मक काव्य १७४७ ई.

में समाप्त किया। हज़रत बन्दा मियां सैयद यूसुफ़ की फ़ारसी में 'मतला-उल विलायत' नामक पुस्तक है। इसी पुस्तक का फ़ारसी से दक्खिनी में 'मसनवी फ़ैज़े आम' के नाम से शहाबुद्दीन ने अनुवाद किया। इतिहास की दृष्टि से यह पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण और प्रामाणिक है।

इस कवि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं है।

आजिज़

आरिफुद्दीन ने आजिज़ नाम से कविता लिखी है। आरिफुद्दीन के पिता औरंगज़ेब के समय में बलख से भारत आए और औरंगाबाद में बस गए। आजिज़ का जन्म यहीं हुआ। अध्ययन के बाद आरिफुद्दीन ने आसफ़जाह (प्रथम) के यहाँ नौकरी कर ली। फ़ौज़ के बख़्शी का काम करते रहे। आगे चल कर इन्हें मन्सब भी मिली। आजिज़ फ़ारसी और दक्खिनी दोनों में कविता लिखते थे। दक्खिनी में आपने 'मसनवी लाल-गोहर' लिखा। आपकी कविताओं का एक संकलन भी है।

इतिहास में इनकी विशेष रुचि थी। उस समय की उपलब्ध ऐतिहासिक पुस्तकों का आपने अध्ययन किया था। इनकी रचनाओं में इस अध्ययन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। इनके समकालीन तथा परिवर्त्ती लेखकों ने इनका उल्लेख आदर से किया है।

१७६५ ई. में आरिफुद्दीन 'आजिज़' का देहान्त हुआ।

इसहाक़ बीजापुरी

इसहाक़ बीजापुर के निवासी थे, किन्तु जब बीजापुर में निर्वाह नहीं होने लगा तो ये सपरिवार अर्काट चले गए। बहुत दिन तक मैसूर में रहे। कुछ दिनों तक त्रिचनापल्ली में भी रहे। इनके तीन भाई थे। इनके मित्र याक़ूब ने इन्हें 'रियाजुल आरफ़ीन' लिखने के लिए प्रेरित किया। जब ये २२ वर्ष के थे तभी इन्होंने यह पुस्तक लिखी। १७७१ ई. में इनका देहान्त हुआ।

फ़ज़ल बिन मुहम्मद अमीन

फ़ज़ल बिन मुहम्मद अमीन ने १७८१ में 'जेकूमनामा' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक का कुछ अंश इस संकलन में दिया गया है।

इस कवि के सम्बन्ध में अधिक जानकारी उपलब्ध नही है।

शाह मुहम्मद

मुबारक शाह मुहम्मद शाह मदनी अथवा सैयद मदीना के नाम से भी स्मरण किये जाते हैं। इनके पिता का नाम शाह मीरा साहब बिन शाह दरवेश मोहिउद्दीन क़ादरी था। पिता ने ही इन्हें साधना की दीक्षा दी। जब ये १८ वर्ष के थे तभी इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो गया था। बचपन में ही कविता करने लगे थे। कविता करने में कठिनता नहीं होती थी। सूफ़ी विचार-धारा का प्रचार किया करते थे। आपने १७७६ में 'रिसाला तसव्वुफ़' लिखा। १८२५ ई. के लगभग आपकी मृत्यु हुई।

क़द्रे आलम

'फ़िक़्हा महफ़ूज़ खानी' के अन्त में यह लिखा हुआ है कि इसे क़द्रे आलम ने १७८४ ई. में समाप्त किया। इससे अधिक जानकारी इस कवि के सम्बन्ध में प्राप्त नहीं हो सकी।

गुलाम नबी हैदराबादी

गुलाम नबी हैदराबाद के निवासी थे। इनकी लिखी हुई एक ही पुस्तक प्राप्त हुई है 'मसनवी दर फ़वायद बिस्मिल्ला'। इस पुस्तक का लेखन १७६१ वि. में समाप्त हुआ।

इस पुस्तक में हज़रत मुहम्मद के प्रत्येक अक्षर की व्याख्या करने के बाद उनके वंश का विवरण दिया गया है। पुस्तक के अन्त में उन लोगों की

कथा दी गई है जो फ़ातिहा पढ़ कर लाभान्वित हुए।

मुहम्मद बाक़र आगाह

मुहम्मद बाक़र आगाह ने दक्खिनी साहित्य को विपुल सामग्री दी है। यदि परिमाण की दृष्टि से देखा जाए तो सम्भवतः दक्खिनी का दूसरा कवि इनकी तुलना नहीं कर सकता। कहा जाता है इन्होंने एक लाख से अधिक शेर लिखे।

मुहम्मद बाक़र आगाह के पिता मौलवी मुर्त्तजा के पूर्वज बीजापुर के निवासी थे। मौलवी मुर्त्तजा बीजापुर से वेलूर चले गए। वेलूर में ही १७४५ में मुहम्मद बाक़र आगाह का जन्म हुआ। यहा इन्होंने अरबी और फ़ारसी का अध्ययन किया। बहुत शीघ्र इन दोनों भाषाओं पर इन्होंने अधिकार प्राप्त कर लिया और इनकी गिनती दक्षिण के प्रमुख मुस्लिम विद्वानों में होने लगी। विद्याध्ययन करते समय ही आपका रुझान सूफ़ी विचार-धारा की तरफ़ हुआ। आपने शाह अबुल हसन करवी से दीक्षा ली। आप अरबी, फ़ारसी और दक्खिनी में कविता करने लगे। तीनों भाषाओं पर आपका समान अधिकार था।

मुहम्मद बाक़र आगाह ने दक्खिनी में बीस पुस्तकें लिखीं हैं। आपको अर्काट के नवाब मुहम्मदअली वालाजाह का आश्रय प्राप्त था। राजकवि के नाते इन्हें अलपुर गाव जागीर में मिला। मुहम्मद बाक़र आगाह यद्यपि राज्याश्रित थे किन्तु उन्होंने राजा या राज्यवंश के किसी भी सदस्य की प्रशंसा में एक भी शेर नहीं लिखा।

इन्होंने अपनी सारी रचनाएं पद्य में लिखी हैं, किन्तु प्रत्येक पुस्तक के आरम्भ में जो विस्तृत भूमिका लिखी गई है वह गद्य में है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस समय तक उर्दू गद्य तथा पद्य का पर्याप्त प्रचलन हो चुका था। दक्खिनी को लोग गंवारों की भाषा समझने लगे थे, किन्तु मुहम्मद बाक़र आगाह ने ऐसे समय में भी दक्खिनी में इतना साहित्य

लिखा। इनका पद्य दक्खिनी में है किन्तु गद्य पर खड़ी बोली का अधिक प्रभाव है। राज्याश्रय और जागीर मिलने पर इनकी साहित्य-सेवा रुकी नहीं अपि तु आपने अधिक मनोयोग से इस सेवा को जारी रखा।

सन् १८०६ ई. में इनका देहान्त मद्रास नगर में हुआ।

सैयद मुहम्मद आशिक बारह आल

लेखक की 'इशारतुल गाफ़लीन' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है— लेखक सूफ़ी सम्प्रदाय की चिश्ती शाखा का अनुयायी था और उसने यह पुस्तक १८१० ई. में समाप्त की।

वली वेलूरी

दक्खिनी के विकास में सुदूर आन्ध्र के कर्नूल तथा वेलूर आदि नगरों का बहुत योग रहा है। वेलूर में मीर वली फैयाज़ ने उस समय दक्खिनी की सेवा की जब कि इस ज़बान को लोगों ने ग्राम्य समझ कर छोड़ना शुरू किया था। इन्होंने काव्य-नाम वली से दक्खिनी में बहुत-सी पुस्तकें लिखीं। मीर वली फैयाज़ वेलूर गाँव में जन्म लेकर भी अपने जन्म स्थान पर अधिक दिन तक नहीं रह सके। बहुत दिनों तक सातगढ़ के सूबेदार के यहाँ नौकर रहे। वहाँ से सदोंठ चले आए और क़िले में नौकरी करते रहे।

वली वेलूरी ने तीन मसनवियाँ या प्रेमाख्यानक काव्य लिखे हैं। 'रोजतुल शोहदा', 'मसनवी रतन व पदम' और 'दुवा ए फ़ातिमा'। इन तीनों मसनवियों में 'मसनवी रतन व पदम' विशेष महत्व रखती है। इस मसनवी में जायसी की 'पद्मावत' की तरह चित्तौड़ की रानी पद्मावती और राणा रतनसेन की जीवनी कविताबद्ध की गई है। मसनवी में ४ हज़ार शेर हैं। इस पुस्तक की एक हस्तलिखित प्रति हैदराबाद के सालारजंग-पुस्तकालय में है। पद्मावत की कथा राजस्थान से अवध और अवध से दक्षिण में किस प्रकार पहुँची और दक्खिनी के अन्तिम काल के कवि ने उस कथा को अपनी विशेष शैली

के साथ किस प्रकार व्यक्त किया यह सब अध्ययन करने योग्य है ।

'रोजतुल शोहदा' फ़ारसी के एक काव्य का अनुवाद है ।

वली वेल्लूरी का देहान्त अर्काट में हुआ । अर्काट में इनकी कब्र इस समय भी विद्यमान है । १७५७ से पहले इनकी मृत्यु हुई ।

उमर

लेखक ने 'मसनवी मुख्तसरन इश्क़' की रचना १८१४ ई. में समाप्त की । इस से अधिक लेखक के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है ।

स्वामी प्रसाद 'स्वामी'

स्वामी प्रसाद का काव्य-नाम स्वामी था । जिन दिनों हैदराबाद में स्वर्गीय चन्दूलाल प्रधान मन्त्री थे उन दिनों स्वामी प्रसाद राजकीय सेवा में नियुक्त हुए थे । इन्हें हिन्दी-कविता से बहुत रुचि थी । हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों की उत्कृष्ट रचनाओं का आपने एक संकलन किया था । यह संकलन राजकीय पुस्तकालय में है । स्वामी प्रसाद जहाँ दूसरे हिन्दी-कवियों के प्रेमी थे वहाँ वे स्वयं भी हिन्दी के बहुत अच्छे कवि थे । इन्होंने हिन्दी में बहुत से कवित्त और दोहे लिखे हैं । हिन्दी के अतिरिक्त आपने उर्दू और दक्खिनी में भी कविता लिखी है ।

'मजमूए अशाअर' में आपकी रचनाओं का संकलन है । यह संकलन सन १८२४ में पूर्ण हुआ ।

शाह मियाँ तुराब दखनी

शाह मियाँ तुराब की दो पुस्तकें राजकीय पुस्तकालय में हैं—'मसनवी तुराब दखनी' और 'रिसाला बारा बहार' । रिसाला बारा बहार पर यह अंकित है कि उसे लेखक ने १८४० ई. में समाप्त किया । मसनवी तुराब दखनी में

एक कहानी को काव्य का रूप दिया गया है और रिसाला बारा बहार में तुराब के बारह गीतों तथा कुछ पत्रों का संकलन है। तुराब के ये बारहों गीत बहुत लोकप्रिय हुए। इन गीतों को इस समय भी हैदराबाद राज्य के फ़क़ीरों से सुना जा सकता है। मैंने ऐसे बहुत से भिक्षुकों को देखा है जो तुराब के गीतों को गा गा कर भिक्षा प्राप्त करते हैं। इनके गीत दक्खिनी के लोक-गीतों से मिलते-जुलते हैं। १८४० में भी लेखक दक्खिनी की परम्परा को आगे बढ़ाने की कोशिश करता है।

शेख़ अब्दुल क़ादरी

रिसाले वजूदिया के अन्त में लिखा हुआ है कि इसकी रचना शेख़ अब्दुल करीम क़ादरी ने १८७० में की। इससे अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

क़ादिर बीजापुरी

क़ादिर बीजापुरी ने 'क़िस्सा ए शम ऊन' १८९२ के लगभग लिखा। लेखक के सम्बन्ध में इससे अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

सनती

मुहम्मद इब्राहिम ने 'सनती' नाम से दक्खिनी की महत्वपूर्ण सेवा की है। ये बीजापुर के निवासी थे और इन्हें बीजापुर के शासक महमूद आदिल शाह (१६२६-१६५६) का आश्रय प्राप्त था। राजकवि होने के कारण इन्हें बहुत सम्मान मिला। इनके दो ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं। मसनवी क़िस्सा हज़रत तमीमे अन्सारी की हस्तलिखित प्रति उस्मानिया विश्वविद्यालय में है। दूसरी पुस्तक गुलदस्ता मसनवी सनती है। सनती का देहान्त १६५० के लगभग हुआ।

इब्न निशाती

दक्खिनी के कथात्मक काव्यों में 'फूलबन' का विशेष स्थान है। इस काव्य के लेखक इब्न निशाती की जन्म तथा मृत्यु-तिथि का पता नहीं चल सका। कवि का जन्म कहाँ हुआ और वह कब गोलकुण्डा में आकर बसा इसकी जानकारी भी प्राप्त नहीं हो सकी। गोलकुण्डा के शासक अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२६-१६७२) के समय इब्न निशाती एक महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त हुआ था। वह केवल कवि ही नहीं राजनीतिज्ञ और व्याव-वहारिक व्यक्ति भी था। उसने अपने कवि कर्म के साथ राज्य के महत्वपूर्ण पद को भी सँभाला और उसे कार्य में भी प्रशंसा मिली। अब्दुल्ला कुतुबशाह इब्न निशाती को बहुत चाहता था।

अन्य लेखकों की रचनाओं से ज्ञात होता है कि इब्न निशाती गद्य भी अच्छा लिखता था किन्तु इनके गद्य की कोई पुस्तक आज तक उपलब्ध नहीं हुई।

इब्न निशाती के स्वभाव की यह कमज़ोरी थी कि वह अपने सम-कालीन कवियों के प्रति उपेक्षा के भाव रखता था। अपने से पूर्ववर्त्ती कवियों का यह बहुत प्रशंसक है। कई स्थानो पर यह व्यक्त करता है कि प्राचीन कवियों ने कविता के क्षेत्र में जो कुशलता प्रदर्शित की है वह आजकल के कवियों में नाममात्र के लिए भी नहीं है।

'फूलबन' मौलिक रचना नहीं है। फ़ारसी के 'क़िस्सा बुसातीन' का अनुवाद 'फूलबन' के नाम से किया गया है। १६५६ ई. में यह पुस्तक पूर्ण हुई। लेखक ने इस पुस्तक को तीन मास में समाप्त किया। पुस्तक में १७०० शेर हैं। अनुवाद होने पर भी लेखक के कौशल का परिचय मिलता है।

इब्न निशाती के परवर्त्ती कवियों ने 'फूलबन' की प्रशंसा की है।

तबई

इब्न निशाती की तरह तबई भी अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२६-१६७२)

का दरबारी कवि था। अब्दुल्ला कुतुबशाह ने इस कवि को अपने जीवन के अन्तिम काल में आश्रय प्रदान किया था। शाह राजू हुसेनी का तबई पर बहुत प्रभाव पड़ा और यह शाह साहब का भक्त बन गया।

जब गोलकुण्डा की गद्दी पर अबुलहसन (तानाशाह) (१६७२-१६८७) बैठा तो उसने तबई को अपना प्रमुख राजकवि बनाया। तबई ने अबुल हसन की प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा है। अन्य लेखकों की रचनाओं से पता चलता है कि इसने गद्य भी लिखा परन्तु आज तक इसका गद्य उपलब्ध नहीं हुआ।

तबई का लिखा हुआ 'क़िस्से बहराम व गुलन्दाम' मिला है। इस पुस्तक में ईरान के शासक बहराम गोर की कहानी है। यह निश्चित रूप से नहीं मालूम हो सका कि पुस्तक अनुवादित है या पूर्ण रूप से मौलिक है। लेखक ने इस पुस्तक को १७६८ ई. में समाप्त किया।

शाह मुहम्मद हैदराबादी

शाह मुहम्मद हैदराबाद के निवासी थे। इनका जन्म हैदराबाद में हुआ। इनके पिता का नाम सैयद मीराँ हसन सानी था। १७८७ ई. में लेखक की मृत्यु हुई।

सुलेमान खतीब

दक्खिनी के वर्तमान कवियों में सुलेमान खतीब का बहुत ऊँचा स्थान है। इनका पालन-पोषण तथा अध्ययन मेदक और बीदर ज़िले में हुआ। इस समय आप गुलबर्गा में जल-कल विभाग में काम करते हैं। इनका अधिकांश समय साहित्य की सेवा में ही जाता है। जिस कवि सम्मेलन में खतीब पहुंच जाते हैं, जनता बार बार उन्हीं से सुनना चाहती है।

खतीब ने साहित्य के कई क्षेत्रों में काम किया है। इन्होंने सर्वप्रथम दक्खिनी में ग्राम-गीत लिखे। मेदक और बीदर के ग्रामों में इनके लोक-गीत

बड़े ही चाव से गाए जाते हैं। इस संकलन के लोक-गीतों में इनके दो गीत 'मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी' और 'न्योकाळा आया' दिये गए हैं।

खतीब में वर्तमान परिस्थितियों का मूल्यांकन करके उन्हें सीधे-सादे शब्दों में रखने की क्षमता है। इन दिनों दक्खिनी का प्रयोग हँसी-मज़ाक के लिए होने लगा है, किन्तु खतीब की रचनाएँ इस बात की परिचायक हैं कि इस समय भी दक्खिनी साहित्यिक भाषा का काम भी दे सकती है।

खतीब गद्य लिखने में भी सफल हुए हैं। कवि तथा लेखक होने के साथ साथ इन्होंने दक्खिनी के व्याकरण तथा विकास के बारे में भी अध्ययन किया है। इनके पास दक्खिनी लोक-गीतों का अच्छा संग्रह है।

पता है फिल्टर बेड्स, गुलबर्गा, हैदराबाद।

बन्दानवाज़

मक़दूम अबी उल हसन जुनैदी बिन सैयद हुसेन खुरासान दिल्ली विजय के लिए चले किन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। दिल्ली पहुचने के कुछ दिन बाद इनका देहान्त हो गया। इनका परिवार दिल्ली में बस गया। इसी परिवार में १३२२ ई. मे बन्दा नवाज़ का जन्म हुआ। बन्दा नवाज़ का पूरा नाम था सैयद मुहम्मद बिन सैयद यूनुफुल अरूफ़। आगे चल कर ये बन्दा नवाज़ के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके बाल बहुत बड़े बड़े थे अतः लोग इन्हें गेसू दराज (गेसू=बाल, दराज=बडा) भी कहते थे। इस समय ये ख्वाजा बन्दे नवाज़ गेसूदराज के नाम से स्मरण किए जाते हैं।

दक्षिण में जितने भी मुस्लिम सन्त आए उनमें बन्दा नवाज़ का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। जो सम्मान इन्हें अपने समय में मिला वह किसी दूसरे सन्त को प्राप्त नहीं हो सका। इनकी मृत्यु के बाद भी आज तक कोई मुस्लिम सन्त इनकी कीर्त्ति को अतिक्रमण नहीं कर सका। इसी से इन बन्दा नवाज़ के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

यह प्रमाणित किया जाता है कि बन्दा नवाज़ इमाम-हुसेन की २२ वीं

पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे। इस तरह वंश परम्परा के आधार पर भी इनके महत्व का प्रतिपादन किया जाता है।

जब बन्दानवाज़ की आयु ४ या ५ वर्ष की थी तब इनके पिता दौलताबाद आए थे। बन्दानवाज़ भी उनके साथ थे। यहां इनके पिता का देहान्त हुआ। पिता की मृत्यु के बाद बन्दानवाज़ दिल्ली लौट आए। यहाँ इन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। ताजुद्दीन बहादुर और मौलाना शर्फुद्दीन से शिक्षा ग्रहण करने के बाद इन्होंने सोलह वर्ष की आयु में नसीरुद्दीन महमूद की शिष्यता स्वीकार की।

ये चालीस वर्ष तक कुँवारे रहे, किन्तु माँ मकदूमा के आग्रह पर इन्होंने आयु के ४१ वें वर्ष में मौलाना मुहम्मद जमालुद्दीन हुसेनी मग़रबी की पुत्री रज़ा खातून से विवाह किया। जिससे इन्हें दो लड़के और तीन लड़कियाँ हुईं। इनके पुत्रों ने भी ईश्वराराधन और अध्ययन में मन लगाया।

जब बन्दानवाज़ १० वर्ष के थे, दिल्ली पर तैमूर लंग का आक्रमण हुआ। दिल्ली के नागरिक बहुत भयभीत थे। बहुत से नागरिक दिल्ली छोड़ कर चले गए। बन्दानवाज़ भी अपने परिवार के साथ चल दिए। कुछ दिन गुजरात में रहे। गुजरात के सूफ़ी सन्तों का प्रभाव इन पर पड़ा। गुजरात से इन्होंने दौलताबाद आना चाहा। उन दिनों दक्खिन में बहमनी वंश का शासन दूर दूर तक फैल चुका था। इस वंश में फ़िरोज़शाह बहमनी अपनी अनेक विशेषताओं के कारण स्मरणीय रहेंगे। जब फ़िरोज़शाह को बन्दानवाज़ के आगमन का समाचार मिला तो उन्होंने दौलताबाद के दुर्गपाल को बन्दानवाज़ के स्वागत के लिए लिखा। जब बन्दानवाज़ दौलताबाद पहुँचे तो उनका स्वागत किया गया।

बन्दानवाज़ दौलताबाद से गुलबर्गा गए। गुलबर्गा में फ़िरोज़शाह ने इनका अभिनन्दन किया। फ़िरोज़शाह की प्रार्थना पर इन्होंने गुलबर्गा में रहने का निश्चय किया।

कुछ घटनाएँ ऐसी घटित हुईं कि फ़िरोज़शाह बन्दानवाज़ से अप्रसन्न हो गया। फ़िरोज़शाह का भाई अहमदशाह बन्दानवाज़ का भक्त बन गया।

फ़िरोज़शाह ने एक दिन बन्दानवाज़ से पूछा कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा उत्तराधिकारी मेरा पुत्र हसनखाँ होगा या भाई अहमदशाह। बन्दानवाज़ ने भविष्यवाणी की कि अहमदशाह ही गद्दी पर बैठेगा। इसी तरह फ़िरोज़शाह बीजापुर पर आक्रमण करना चाहता था। जब वह बन्दानवाज़ से अनुमति लेने गया तो उन्होंने आक्रमण करने से रोका। इस युद्ध में फ़िरोज़शाह की पराजय हुई।

इन बातों से फ़िरोज़शाह बन्दानवाज़ के विरुद्ध होता गया। बन्दानवाज़ क़िले के पास ही ठहरे थे। उनके निवास स्थान पर बहुत से लोग दर्शनों के लिए आते थे। उपासना के समय सैकड़ों लोग प्रार्थना करते थे। फ़िरोज़शाह ने बन्दानवाज़ से कहा कि उनके क़िले के पास रहने से राजकीय कामों में बाधा पहुँचती है। वे कहीं दूर चले जाएँ। बन्दानवाज़ क़िले से कुछ दूर रहने लगे।

बन्दानवाज़ की भविष्यवाणी के अनुसार फ़िरोज़ की मृत्यु के बाद अहमदशाह गद्दी पर बैठा। अहमदशाह अपनी इस सफलता का एकमात्र कारण बन्दानवाज़ के आशीर्वाद को मानता था। उसकी भक्ति और भी बढ़ गई। बन्दानवाज़ को जागीर दी गई, जो उनके वंशजों के पास अब तक है।

१०५ वर्ष की आयु में बन्दानवाज़ का देहान्त १४२२ ई. में गुलबर्गा में हुआ। जिस स्थान पर ये दफ़नाए गए वहाँ बहमनी वंश की ओर से बहुत शानदार गुम्बज बनवाई गई। इस गुम्बज के पास ही इनकी पत्नी, इनके पुत्र तथा अन्य सम्बन्धी दफ़नाए गए। यह स्थान बहुत पवित्र माना जाता है। बन्दानवाज़ की मृत्यु-तिथि पर लगभग एक लाख व्यक्ति वहाँ श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने जाते हैं।

बन्दानवाज़ साधक होने के साथ साथ विद्वान पुरुष थे। इन्होंने धार्मिक विषयों पर फ़ारसी में कई ग्रन्थ लिखे हैं। इस्लामी धर्म ग्रन्थों का इन्होंने गम्भीर अध्ययन किया था। ये स्वयं सूफ़ी सम्प्रदाय के साधक थे। सूफ़ी सम्प्रदाय की चिश्ती शाखा की मान्यताओं पर आचरण करते थे।

कन्नड़ भाषी प्रदेश पर इनके व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव पड़ा। सहित हिन्दी ही नहीं बहुत से हिन्दू भी इन्हें मनोवाञ्छित फल प्रदान करेंद नहीं कि मानते हैं। ग की

कुछ लोग बन्दानवाज़ की लिखी हुई मीराजुल आशक़ीन और तर्जुमा वजुदुल आरफ़ीन को दक्खिनी की सर्वप्रथम रचना बताते हैं। किन्तु अधिकृत रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि इन पुस्तकों की रचना बन्दा-नवाज़ ने ही की। यदि इन दोनों पुस्तकों की रचना बन्दानवाज़ ने की है, तब भी बन्दानवाज़ दक्खिनी के प्रथम लेखक नही कहला सकते। उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने से पूर्ववर्त्ती सन्त हज़रत शाह बुरहान की उक्तियाँ उद्धृत की हैं।

बन्दानवाज़ के लिए यह प्रसिद्ध है कि वे जब धर्मोपदेश करते थे तो अन्य धर्मोपदेशकों की तरह अरबी या फ़ारसी में उपदेश देने के बजाय हिन्दी में ही उपदेश देते थे। बन्दानवाज़ के जीवन का ध्येय एकान्त साधना के अतिरिक्त इस्लाम का प्रचार करना भी था। इसी लिए उन्होंने परम्परा को तोड़ कर वाज़ के समय हिन्दी को अपनाया। बन्दानवाज़ वाज़ या धर्मोपदेश के समय जो कुछ कहते थे उसी को उनके शिष्य लिखते जाते थे। उपर्युक्त दोनों पुस्तकें संभवतः इसी प्रकार के उपदेश संकलन हैं। यद्यपि दोनों पुस्तकें मूल रूप से बन्दानवाज़ की लिखी हुई नहीं तब भी उनमें मूल स्वरूप की बहुत हद तक रक्षा हुई है। बन्दानवाज़ के गद्य को हम लोग हिन्दी का प्राचीनतम लिखित गद्य मान सकते हैं।

मौला अब्दुल्ला

मौला अब्दुल्ला ने अहकामुल सलवात नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक के अन्त में रचना-काल १६२३ ई. दिया गया है। पुस्तक से यह ज्ञात होता है कि ये गोलकुण्डा के निवासी थे और कुतुबशाही वंश के शासन में इन्होंने जीवन-यापन किया।

फ़िरोज़शाह ने

उत्तराधिकृ,

भवि

ये तथा जन्म-स्थान ज्ञात नहीं है। पता नहीं वे
या कहीं बाहर से आये। इब्राहीम कुतुबशाह
य से इनका लेखन काल शुरू होता है। ज्ञात होता
स्थान प्राप्त कर लिया था। राज-वंश के लोग इनका

बहुत आदर करते थे। वजही की विशेषता यह है कि उसे इब्राहीम के समय जो आदर प्राप्त हुआ, वह अन्य नरेशों के समय भी अक्षुण्ण रहा। उसने इब्राहीम के अतिरिक्त मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८१-१६११) मुहम्मद कुतुब (१६११-१६२६) और अब्दुल्ला (१६२७-१६७२) का कुछ समय भी देखा। इन चारों नरेशों ने वजही को आश्रय प्रदान किया। अब्दुल्ला जिस समय गद्दी पर बैठा वजही वृद्ध हो चुका था किन्तु उस वृद्धावस्था में भी वजही युवक राजा को आकर्षित करता रहा। मुहम्मद कुली कुतुबशाह स्वयं कवि और विद्वान था। इस विद्वान शासक के समय वजही अपनी ख्याति की चरम सीमा पर था। वजही अपनी कविता के कारण ही आदर-पात्र नहीं था बल्कि उसकी विद्वत्ता तथा अनुभव भी उसके आदर के कारण थे।

वजही जहाँ कवि था वहाँ गद्य-लेखक भी था। उसकी कविता की पुस्तक 'मसनवी कुतुब मुश्तरी' और गद्य की पुस्तक 'सबरस' उपलब्ध है। मसनवी कुतुबे मुश्तरी में वजही ने मुहम्मद कुली कुतुबशाह को नायक बना कर कविता लिखी है। इस पुस्तक से कुतुबशाही शासन की बहुत-सी बातों और रीति-रिवाज़ों का पता चलता है। जिस काव्य का नायक मुहम्मद कुली जैसा रसज्ञ हो उसकी विशेषता और लोक-प्रियता का क्या कहना। जिस समय मुहम्मद कुली युवराज था उसी समय इस पुस्तक की रचना की गई। यह पुस्तक १६१० में लिखी गई। पुस्तक की हस्तलिखित प्रति इण्डिया आफिस में है।

वजही की कीर्त्ति का वास्तविक कारण 'सबरस' है। सबरस गद्य में

लिखा गया है। वजही से पहले भी खड़ी बोली तथा दक्खिनी सहित हिन्दी की सभी बोलियों में गद्य के उदाहरण मिलने हैं किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि 'सबरस' उस समय तक लिखी गई गद्य की पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ है। भाषा की दृष्टि से सबरस दक्खिनी के पूर्ण विकास की परिचायक है। 'सबरस' केवल विवरणात्मक या कथात्मक पुस्तक नहीं है। उसमें मन, वासना, आत्मा, बुद्धि आदि को पात्र बना कर उनकी वृत्तियों का चित्रण किया गया है। जिस समय हिन्दी पूर्ण रूप से विकसित भी नहीं हो पाई थी उस समय सूक्ष्म भावनाओं को इस तरह व्यक्त करना सरल काम नहीं था। 'सबरस' शैली की दृष्टि से भी अपना महत्व रखती है। इस पुस्तक में लेखक ने अपने प्रतीकों और रूपकों को पूरी तरह निभाया है। हैदराबाद के राजकीय पुस्तकालय में इस पुस्तक की दो हस्तलिखित प्रतियाँ सुरक्षित हैं जिनके आधार पर इस संकलन का अंश तैयार किया गया। अंजुमन तरक्की ए उर्दू (हिन्द) की ओर से इस पुस्तक का प्रकाशन फ़ारसी लिपि में हुआ। सबरस १६३६ ई. में समाप्त हुई। यह पुस्तक अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय उसी के आदेश से लिखी गई।

वजही को जीवन भर राजवंश का आश्रय प्राप्त रहा। इस आश्रय के अतिरिक्त उसे सामन्तों से भी पर्याप्त प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलता रहा। वजही का अध्ययन भी गम्भीर था और उसका भाषा पर असाधारण अधिकार था। इन्हीं सब कारणों से वह अपने आपको समकालीन लेखकों में श्रेष्ठ मानता है और दूसरों की उपेक्षा भी करता है। कुछ स्थानों पर वह अपनी प्रशंसा करने लगता है।

अब्दुस्समद

अब्दुस्समद ने 'तफ़सीर वहाबी' नामक पुस्तक लिखी। ये धर्मोपदेशक थे। इनकी मृत्यु १६५१ में हुई।

इनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

वजही

वजही की जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान ज्ञात नहीं है। पता नहीं वे गोलकुण्डा के निवासी थे या कहीं बाहर से आये। इब्राहीम कुतुबशाह (१५५०-१५८१) के समय से इनका लेखन काल शुरू होता है। ज्ञात होता है इन्होंने दरबार में अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया था। राज-वंश के लोग इनका बहुत आदर करते थे। वजही की विशेषता यह है कि उसे इब्राहीम के समय जो आदर प्राप्त हुआ, वह अन्य नरेशों के समय भी अक्षुण्ण रहा। उसने इब्राहीम के अतिरिक्त मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८१-१६११) मुहम्मद कुतुब (१६११-१६२६) और अब्दुल्ला (१६२७-१६७२) का कुछ समय भी देखा। इन चारों नरेशों ने वजही को आश्रय प्रदान किया। अब्दुल्ला जिस समय गद्दी पर बैठा वजही वृद्ध हो चुका था किन्तु उस वृद्धावस्था में भी वजही युवक राजा को आकर्षित करता रहा। मुहम्मद कुली कुतुबशाह स्वयं कवि और विद्वान था। इस विद्वान शासक के समय वजही अपनी ख्याति की चरम सीमा पर था। वजही अपनी कविता के कारण ही आदर-पात्र नहीं था बल्कि उसकी विद्वत्ता तथा अनुभव भी उसके आदर के कारण थे।

वजही जहाँ कवि था वहाँ गद्य-लेखक भी था। उसकी कविता की पुस्तक 'मसनवी कुतुब मुश्तरी' और गद्य की पुस्तक 'सबरस' उपलब्ध है। मसनवी कुतुबे मुश्तरी में वजही ने मुहम्मद कुली कुतुबशाह को नायक बना कर कविता लिखी है। इस पुस्तक से कुतुबशाही शासन की बहुत-सी बातों और रीति-रिवाज़ों का पता चलता है। जिस काव्य का नायक मुहम्मद कुली जैसा रसज्ञ हो उसकी विशेषता और लोक-प्रियता का क्या कहना। जिस समय मुहम्मद कुली युवराज था उसी समय इस पुस्तक की रचना की गई। यह पुस्तक १६१० में लिखी गई। पुस्तक की हस्तलिखित प्रति इण्डिया आफिस में है।

वजही की कीर्त्ति का वास्तविक कारण 'सबरस' है। सबरस गद्य में

लिखा गया है। वजही से पहले भी खड़ी बोली तथा दक्खिनी सहित हिन्दी की सभी बोलियों में गद्य के उदाहरण मिलते हैं किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि 'सबरस' उस समय तक लिखी गई गद्य की पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ है। भाषा की दृष्टि से सबरस दक्खिनी के पूर्ण विकास की परिचायक है। 'सबरस' केवल विवरणात्मक या कथात्मक पुस्तक नहीं है। उसमें मन, वासना, आत्मा, बुद्धि आदि को पात्र बना कर उनकी वृत्तियों का चित्रण किया गया है। जिस समय हिन्दी पूर्ण रूप से विकसित भी नहीं हो पाई थी उस समय सूक्ष्म भावनाओं को इस तरह व्यक्त करना सरल काम नहीं था। 'सबरस' शैली की दृष्टि से भी अपना महत्व रखती है। इस पुस्तक में लेखक ने अपने प्रतीकों और रूपकों को पूरी तरह निभाया है। हैदराबाद के राजकीय पुस्तकालय में इस पुस्तक की दो हस्तलिखित प्रतियाँ सुरक्षित हैं जिनके आधार पर इस संकलन का अंश तैयार किया गया। अंजुमन तरक्की ए उर्दू (हिन्द) की ओर से इस पुस्तक का प्रकाशन फ़ारसी लिपि में हुआ। सबरस १६३६ ई. में समाप्त हुई। यह पुस्तक अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय उसी के आदेश से लिखी गई।

वजही को जीवन भर राजवंश का आश्रय प्राप्त रहा। इस आश्रय के अतिरिक्त उसे सामन्तों से भी पर्याप्त प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलता रहा। वजही का अध्ययन भी गम्भीर था और उसका भाषा पर असाधारण अधिकार था। इन्हीं सब कारणों से वह अपने आपको समकालीन लेखकों में श्रेष्ठ मानता है और दूसरों की उपेक्षा भी करता है। कुछ स्थानों पर वह अपनी प्रशंसा करने लगता है।

अब्दुस्समद

अब्दुस्समद ने 'तफ़सीर वहाबी' नामक पुस्तक लिखी। ये धर्मोपदेशक थे। इनकी मृत्यु १६५१ में हुई।

इनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

मीराँ याकूब

मीराँ याकूब के पिता मीराँ हुसेनी 'खुदानुमा' था। ये गोलकुण्डा के निवासी थे। कुतुबशाही काल के लेखकों में इनकी गिनती होती है। मीराँ याकूब के पिता खुदानुमा का देहान्त १६६४ ई. में हुआ। इसी समय इन्होंने 'शुमाअल अतक़िया' का अनुवाद किया।

आबिदशाह अल हसन उल हुसेनी

आबिदशाह अल हसन उल हुसेनी की गणना कुतुबशाही काल के लेखकों में होती है। ये अपने समय के बहुत बड़े विद्वान और विचारक थे। सूफ़ी सिद्धान्तों और मुसलमानों के धार्मिक आचरण के बारे में आप प्रामाणिक माने जाते थे। इनका निधन १६७० के लगभग हुआ। कुंज उल मोमनीन के अतिरिक्त आपने 'गुलज़ार उल सालिकीर' नामक पुस्तक भी लिखी है। इस पुस्तक में सूफ़ी सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है।

शाह बुरहानुद्दीन क़ादरी

शाह बुरहानुद्दीन क़ादरी औरंगज़ेब के समकालीन थे। लोग इन्हें 'राजे इलाही' नाम से भी सम्बोधित करते थे। इन्हें दिल-नरेश की ओर से मासिक वृत्ति भी मिलती थी। राजे इलाही ने औरंगज़ेब से आग्रह किया था कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी सन्तान को किसी प्रकार की राजकीय वृत्ति न दी जाए।

१६७३ में इनका देहान्त हुआ।

मुहम्मद शरीफ़

'गंज मखफ़ी' नामक पुस्तक के अन्त में केवल इतना लिखा हुआ है कि इसे मुहम्मद शरीफ़ ने १७०० में समाप्त किया। इससे अधिक लेखक के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है।

मुहम्मद वली उल्ला क़ादरी

मुहम्मद वली उल्ला क़ादरी ने 'मार्फ़त उल सलूक' का अनुवाद किया। पुस्तक में कुरान की आयतों का दक्खिनी अनुवाद और बीच-बीच में हदीस की कथाएँ हैं। १७८२ में हैदराबाद के किसी व्यक्ति ने पुस्तक की प्रतिलिपि तैयार की। पुस्तक निस्सन्देह १७८२ से पहले लिखी गई।

मकदूम शाह हुसेनी

मकदूमशाह हुसेनी ने 'तलाबतुल वजूद' की रचना १८१६ ई. में की। किसी कर्नूल निवासी ने १८६६ में पुस्तक की प्रतिलिपि तैयार की जो इस समय हैदराबाद के राजकीय पुस्तकालय में है। लेखक के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

नूर दरिया क़ादरी

सैयद शाह मुहम्मद ने 'नूर दरिया' के नाम से रचना की है। ये शाह अमीनुद्दीन बीजापुरी के शिष्य और उत्तराधिकारी थे। आप बीजापुर से रायचूर चले आए। यहीं इनका देहान्त हुआ। रायचूर में इनकी क़ब्र है। ये अपने समय के विद्वान, उपदेशक और शिक्षक थे।

इनकी जन्म तथा मृत्यु तिथि अज्ञात है। इनके लिखे हुए रिसाले वजूदिया की हस्तलिखित प्रति से इतना ज्ञात होता है कि १८६८ में प्रति-लिपिकार ने इस पुस्तक की प्रतिलिपि की।

मीर असगरअली क़ाज़ी

मीर असगरअली क़ाज़ी ने 'गुलदस्त-ए-हिन्द' नामक पुस्तक में मुसलमानों के भारत-प्रवेश से ले कर आधुनिक काल तक का इतिहास लिखा है। लेखक गंगावती (रायचूर) का निवासी था। लेखक के काल के बारे में

विशेष जानकारी नहीं है। गुलदस्त-ए-हिन्द की प्रतिलिपि १८६६ ई. में की गई जो हैदराबाद के राजकीय पुस्तकालय में है।

सैयद बुलाकी

मजमुआ मसनवियात में सैयद बुलाकी, इस्माइल दकनी आदि की मसनवियाँ संकलित हैं। इस संकलन की प्रतिलिपि १८७७ में की गई। लेखक के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है।

ई. वी. पद्मनाभन्

श्री ई. वी. पद्मनाभन् हैदराबाद के निवासी हैं। दक्खिनी में कहानियां कहने का अच्छा अभ्यास है। राजनीतिक तथा सामाजिक घटनाओं को तत्काल कहानियों के रूप में उपस्थित करने का अच्छा अभ्यास है। ये अपनी कहानियों में ऐसी दक्खिनी का प्रयोग करते हैं जो रोज़मर्रा बोली जाती है। मल्लेननवाज-जंग कहानी में इन्होंने हैदराबाद की एक ऐतिहासिक घटना को कहानी का रूप दिया है। इनका पता है—द्वारा:-श्री ई. वीरराघवन् जी, सुपरिण्टेण्डेण्ट इंजीनियर, कौशिक निवास, हार्डीकरबाग़, हिमायतनगर, हैदराबाद दक्षिण।

टिप्पणी

१८ पृ. **पण्ढरी :** विष्णु, कृष्ण। पण्ढरपुर में पण्ढरी का मन्दिर है। पण्ढरी को विट्ठल भी कहते हैं। पण्ढरी के सम्बन्ध में विशेष जानकारी विट्ठल की टिप्पणी में।

,, **खेचर :** नामदेव के गुरु विसोबा खेचर।

१९ **सुलतान :** नामदेव के समय तक बीदर में बहमनी वंश की राजधानी नहीं आई थी। अतः सुलतान वास्तव में शासक न होकर कोई उच्चाधिकारी होगा। बीदर के तत्कालीन सामन्त, दुर्ग-पाल या जिलाधीश को सुलतान के नाम से स्मरण किया गया है। यह उच्चाधिकारी दिल्ली से सम्बन्धित रहा होगा।

३४ **स्यभ :** नामदेव ने स्यभ शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए किया है, किन्तु यह ज्ञात नहीं हो सका है कि इस विशेष शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए क्यों किया गया है।

४५ **बिठू :** पण्ढरपुर, जिला सोलापुर (बम्बई राज्य) में चन्द्र-भागा नदी के किनारे विट्ठल का बड़ा मन्दिर है। यहाँ किसी समय पुण्डलीक नामक युवा माता पिता का बहुत भक्त था। पुण्डलीक अपने जीवन का प्रत्येक क्षण माता-पिता की सेवा में व्यतीत करता। एक दिन भगवान् कृष्ण ने उसे दर्शन दिये। पुण्डलीक ने कृष्ण से कहा मैं माता-पिता की सेवा से निवृत्त हो आऊं तब तुम से बात करूँगा। कृष्ण वहीं ईंट पर बैठ गए और पुण्डलीक से बोले जब तक तुम नहीं लौटोगे मैं यहीं रहूँगा। पुण्डलीक मां-बाप की सेवा में इतना तल्लीन हुआ कि कृष्ण के

पास फिर नहीं लौटा। कृष्ण तब से वहीं बैठे हैं। वीट का अर्थ है ईंट। वीट पर बैठने के कारण कृष्ण विट्ठल कहलाए। विट्ठल के मन्दिर के कारण पण्ढरपुर महाराष्ट्र की काशी बन गया। वैष्णवों के लिए पण्ढरपुर का विशेष महत्व है।

४६ **बेदरशाही :** पृ. १६ के सुलतान की टिप्पणी देखिये।

५२ **ज़ियारत :** भेंट करना। किसी मृत व्यक्ति की मज़ार पर विशेष भावना से जाना।

,, **बिसमिल्ला उल रहमान उल रहीम :** शुद्ध रूप—बिस्मिल्ला अर् रहमाने अर् रहीम। अर्थात् दयालू ईश्वर का स्मरण करके आरम्भ करता हूँ।

५४ **मुहम्मद :** इस्लाम धर्म के प्रवर्त्तक। ईश्वर के विशेष कृपा-पात्र तथा ईश्वर के निकट मुसलमानों के प्रतिनिधि।

,, **सालिक :** सूफ़ी अपने चिन्तन को सुलूक कहते हैं। सुलूक बताने के कारण सूफी लोग अपने गुरु को सालिक कहते हैं। ईश्वर का नाम भी सालिक है। ईश्वर भी प्रथप्रदर्शन करता है।

,, **शरिअत :** मुस्लिम धर्मशास्त्र शरा कहलाता है। मुहम्मद ने मुसलमानों के लिए कर्त्तव्य तथा नियम निश्चित किए हैं। शरा में दैनिक व्यवहारों के बारे में भी उल्लेख है।

सूफी लोग ईश्वर को प्राप्त करने के लिए चार साधन मानते हैं—शरिअत, तरीक़त, हक़ीक़त और मारिफ़त। इन चारों प्रमाणों के बारे में सूफी विद्वानों में बहुत मतभेद रहा है। सूफ़ियों के अतिरिक्त इस्लाम की अन्य परम्पराएँ भी इन चारों के बारे में एक से विचार नहीं रखतीं। शरिअत का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

तरीक़त का अर्थ है हज़रत मुहम्मद तथा उनके मान्य साथियों और अनुयायियों ने जो आचरण किया वह भी आचरणीय है। यदि किसी आचरण या समस्या में शरिअत और तरीक़त से सहायता न मिले तो वास्तविकता को प्रमाण माना जाए, किन्तु इस स्थिति में हक़ीक़त और शरिअत-तरीक़त में विरोध न हो। मारिफ़त इरफ़ान शब्द से बनता है। इरफ़ान का अर्थ है अन्तः प्रेरणा। सूफ़ी जब बाह्य जगत से सम्बन्ध समाप्त करके चिन्तन में बैठता है और उस समय उसे जो अन्तःज्ञान मिलता है, वह मारिफ़त कहलाता है। सूफ़ी लोग मारिफ़त को बहुत महत्व देते हैं। हक़ीक़त को ज्ञानमार्ग, तरीक़त को भक्ति मार्ग, शरीअत को कर्ममार्ग और मारिफ़त को अध्यात्म मार्ग भी कहा जा सकता है।

५५ **नासूत :** सूफ़ियों ने शरीर में चार स्थानों का निरूपण किया है, जिन्हें साधक क्रमशः प्राप्त करता है। आलमे नासूत भौतिक जगत, आलमे मलकूत चित्त जगत, आलमे जबरूत आनन्दमय जगत और आलमे लाहूत सत्य जगत को कहते हैं। किसी किसी ने आलमे हाहूत अर्थात् रहस्यपूर्ण जगत का उल्लेख भी किया है।

५६ **जनार्दन :** जनार्दन स्वामी देवगिरि के निवासी थे। एकनाथ ने इन से ज्ञान प्राप्त किया था।

६० **हाँडीबाग :** हाँडीबाग का प्रयोग तीन-चार अर्थों में होता है। जादूगर का पिटारा हाँडीबाग कहलाता है। मुहर्रम या अन्य अवसरों पर हैदराबाद राज्य के कुछ स्थानों पर लोग शरीर रंग कर तरह तरह की शक्लें बना लेते हैं और सड़क पर नाचते-गाते घूमते हैं। इन लोगों को हाँडीबाग कहते हैं। जो व्यक्ति दिन भर घर में ही बैठा रहता है और घूमने-फिरने के लिए बाहर नहीं

निकलता उसे भी हौंडीबाग कहते हैं।

६३ **मलंग :** आत्मानन्द में डूबा हुआ वह भक्त जो सांसारिकता से बिल्कुल परे हो चुका है। जिसे अपने शरीर की सुधि भी नहीं रह गई है।

६९ **मजनू-लैला :** अरब की लोक-कथाओं में से एक कथा मजनू-लैला से सम्बन्धित है। मजनू और लैला में इतना प्रेम था कि वे दोनों अभिन्न हो गए थे। लैला का विवाह किसी अन्य व्यक्ति से हो गया। मजनू उसके लिए अनेक संकट सहता है। वह प्रत्येक श्वास में लैला का नाम जपता है। लैला भी मजनू के स्मरण में ही दिन बिताती है।

" **फ़रहाद, शीरीं, ख़ुसरो :** फ़रहाद ईरान का संगतराश था। वह राजकुमारी शीरीं से बहुत प्यार करता था। उससे कहा गया कि वह कोहे बेसितून से नहर खोद कर शीरीं के महल तक पानी की नहर लाये तो शीरीं का विवाह उसके साथ होगा। फ़रहाद कड़े परिश्रम के बाद नहर लाता है, किन्तु उसे ज्ञात होता है शीरीं का विवाह शाह ख़ुसरो से हो गया। इस समाचार के सुनने के बाद फ़रहाद की मृत्यु हो जाती है।

" **अली :** मुहम्मद के चचेरे भाई तथा दामाद। चौथे ख़लीफ़ा।

७२ **पंजतन :** मुहम्मद, अली, फ़ातिमा हसन और हुसेन।

" **शबरात :** शबेबरात, शाबान महीने की १५ वीं रात। मुसलमानों का विश्वास है इस रात आयु का हिसाब और रोजी बाँटने का काम होता है।

७३ **कौसर :** स्वर्ग का एक झरना।

८६ **मुजावर :** किसी क़ब्र या मज़ार की देखरेख करनेवाला।

११० **फ़ना :** अपनी पृथक सत्ता की प्रतीति से पूर्णतः रहित हो जाना।

११२ **मुर्शद :** धर्मोपदेश, पथ प्रदर्शक। जिसके निर्देशानुसार साधक साधना करता है।

,, **कामिल :** पूर्ण ज्ञाता। जिसके लिए कोई बात अविदित नहीं।

,, **आमिल :** आचरण करनेवाला।

११४ **कुफ्र :** जो ईश्वर को एक तथा अद्वितीय नहीं मानता। जो मुहम्मद और कुरान पर विश्वास नहीं रखता। जो मुसलमान नहीं है।

,, **मारफ़त :** मारिफ़त पृ. ५४ की शरिअतवाली टिप्पणी।

१२१ **भीमा :** चन्द्रभागा नदी जिसके तट पर विट्ठल का मन्दिर है। चन्द्रभागा को अधिकांश लोग भीमा ही कहते हैं।

१२४ **शकरगंज :** कुछ सूफ़ी फ़क़ीरों के गुण, आकृति तथा अन्य कारणों से कुछ उपनाम प्रचलित हो गए। ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) के सब से प्रसिद्ध शिष्य ख़्वाजा कुतुबुद्दीन 'काकी' के शिष्य फ़रीदुद्दीन 'शकरगंज' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका समय ईस्वी सन् १२८७ से १३८० माना जाता है। शकरगंज ने मांटगुमरी (पंजाब) के अजुधन गाँव में साधना की। फरीदुद्दीन अपने मधुर स्वभाव के कारण शकरगंज कहलाये। पंजाब में इनके कारण सूफ़ी सम्प्रदाय का प्रचार हुआ। दक्षिण भारत के

साधक भी उनसे तथा उनकी साधना प्रणाली से परिचित थे।

१२४ **चेटकी :** जादूगरनी। माया।

१२६ **अपस्कों :** अपस् कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। कुछ स्थानों पर उसका अर्थ है अहंकार, ममत्व और कुछ स्थानों पर उसका प्रयोग आत्मा के अर्थ में हुआ है।

१३२ **निजध्यास :** निदिध्यास का बिगड़ा हुआ रूप। लगातार चिन्तन करना, बार बार याद करना।

१३३ **त्रिगुण :** सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण।

१४५ **हुमाँ :** एक अपार्थिव पक्षी। प्रसिद्ध है कि जिस व्यक्ति पर हुमाँ की छाया पड़ती है वह राजा बन जाता है।

,, **दरवेश :** वीतराग सन्यासी।

१५० **जिब्रेल :** एक देवदूत। जिब्रेल ईश्वर का आदेश उसके पात्रों तक ज्यों का त्यों पहुँचाता है। ईश्वर ने जिब्रेल के द्वारा ही मुहम्मद को समय समय पर सन्देश भेजे।

१५४ **हदीसाँ :** हदीस का बहुवचन। जिन ग्रन्थों में मुहम्मद के उपदेश संकलित किए गए।

१५९ **राबियाँ :** कथा कहनेवाला राबी कहलाता है। दक्खिनी में राबी का बहुवचन राबियाँ बनता है।

१६३ **अमीना :** मुहम्मद की माता का नाम।

१६५ **अर्श :** सात आसमानों के ऊपर एक स्थान जहाँ खुदा का निवास है। तख़्त।

१६५ **मलायक :** मलक-देवदूत। मलक का बहुवचन मलायक।

१६८ **बिस्मिल्ला :** ईश्वर के नाम से।

१७२ **फ़िरोन :** मूसा का समकालीन एक आततायी राजा।

१७३ **फ़ग़फ़ूर :** चीन देश का एक राजा। फ़ग़फ़ुर अर्थात् बुत का लड़का।

१७४ **दाऊदी :** दाऊद एक पैगंबर थे। इनका स्वर बहुत मीठा था।

१७६ **सेमुर्ग़ :** सीमुर्ग़-एक अपार्थिव पक्षी। इसके अंग में एक हड्डी उत्पन्न होती है। उसी हड्डी का भक्षण करता है और काफ़ के पहाड़ में रहता है।

१८१ **अर्श :** अर्श, पृ. १६५ की टिप्पणी।

,, **कुर्सी :** सात आसमानों के ऊपर एक कुर्सी है जिस पर खुदा बैठता है।

,, **मलक :** फ़रिश्ता, देवदूत।

१८६ **फ़रीदूँ :** ईरान का एक शानदार शासक (फ़र-दबदबा)

१८९ **हुसनेन :** अरब के दो कुल हज़रत मुहम्मद के पश्चात सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे। ये दोनों कुल बनी उमैया और बनी हाशिम कहलाते थे। बनी हाशिम में मुहम्मद का जन्म हुआ। बनी उमैया के वंशज चाहते थे कि पैगम्बर बनी हाशिम कुल में हुए इसलिए खलीफ़ा उनके कुल का व्यक्ति ही उनकी इस माँग को स्वीकार कर के अबूबकर को खलीफ़ा बनाया गया। अबूबकर वृद्ध थे और जल्दी ही मर गये। उनके बाद इसी कुल का व्यक्ति

उमर खलीफ़ा बना। उमर की मृत्यु पर खलीफ़ा के बारे में दोनों कुलों में संघर्ष हुआ। बनी उमैया के वंशजों ने कहा एक बार उन्हें खिलाफ़त दी जाए। इसके बाद सदा के लिए बनी हाशिम के वंशज खलीफ़ा बनेंगे। इसीलिए उस्मान खलीफ़ा बना और उसकी मृत्यु के बाद अली खलीफ़ा बने।

अली मुहम्मद के चचेरे भाई दामाद थे। अली का समाज पर प्रभाव पड़ने लगा। कुछ ही दिन बीते थे कि अली के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा गया और एक दिन नमाज़ के समय मस्जिद में उन्हें क़त्ल कर दिया गया।

अली के दो पुत्र थे—हसन और हुसेन। फ़ातिमा की सन्तान होने के कारण दोनों भाई मुहम्मद के नवासे थे। विरोधियो ने इन दोनो भाइयो के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। हसन को (यजीद) उसकी जातिवाले ने ही ज़हर दिया और उसकी मृत्यु हो गई।

अब हुसेन बचे। दूसरे कुल के अमीर मज़ीद ने हुसेन को सन्देशा भेजा कि वह उसका आधिपत्य स्वीकार कर ले। हुसेन ने यह आदेश स्वीकार नही किया। हुसेन और उसके ७२ साथियों की मज़ीद के साथियों के साथ कर्बला के मैदान में लड़ाई होती है। हुसेन अपने साथियों के साथ मारा जाता है। इस वंश में केवल हुसेन की पत्नी जीवित बचती है।

१८६ **मर्सिया :** किसी की मृत्यु शोक का वर्णन करनेवाला काव्य, गीत या लेख। मर्सिया पद्य या गद्य में लिखा जा सकता है।

१९० **आल :** पुत्री की सन्तान।

१९३ **ख़ालिक़ :** जगन्नियन्ता ईश्वर।

,, **राज़िक :** अन्नदाता, पालन कर्त्ता, ईश्वर।

१६३ **उम्मत :** जाति। पैगम्बर मुहम्मद के धर्म के अनुयायी।

१६४ **मुस्तफ़ा :** चुना हुआ। श्रेष्ठ। मुहम्मद की उपाधि।

१६६ **हातिम :** हातिमताई। अरब निवासी। अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध। अब्दुल्ला बिन साद का पुत्र।

,, **रुस्तम :** ईरान का प्रसिद्ध व्यक्ति।

२०६ **रकन :** नमाज़ पढ़ने की प्रक्रिया, सीधे उठ कर बैठना।

,, **इक़्तदा :** नमाज पढ़नेवाला इमाम कहलाता है। इमाम का अनुकरण करते हुए जो लोग नमाज पढ़ते हैं वे इक़्तदा। इक़्तदा का अर्थ है पैरवी करना।

इमाम : नमाज पढ़ानेवाला। अगुआ।

२१० **नबी :** जिसे नबूवत प्राप्त हुई। ईश्वर का सन्देशवाहक। ईश्वर का प्रिय।

२१९ **आयशा :** मुहम्मद की एक पत्नी का नाम।

२२० **काबा :** इब्राहीम और इस्माइल ने अरब में प्रार्थना-गृह बनाया। यह प्रार्थना-गृह काबा कहलाता है। मुसलमान काबा की तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ते हैं।

२२२ **शेख़ :** वयोवृद्ध। प्रथम ख़लीफ़ा अबूबकर की सन्तान भी शेख़ कहलाती है। मीर, मुर्शद, गुरु। जिस व्यक्ति की आयु पचास वर्ष से अधिक हो।

२३१ **कुंज मख़फी :** एकान्त स्थान।

२३३ **मोमिन :** ईमान युक्त । धर्माचरण करनेवाला व्यक्ति ।

२३४ **ग़ौसुल आज़म :** महात्मा तथा सिद्धों में श्रेष्ठ ।

२३५ **मुराक़िब :** ईश्वर के ध्यान में बैठने का विशेष आसन । दोनों घुटने टेक कर आँखें बन्द करके ध्यान मग्न होना ।

,, **ग़ौस अमजद :** सिद्धों में पूज्य ।

,, **दुलदुल :** अली के घोड़े का नाम ।

२३६ **कुतुब :** सिद्धों का एक स्तर । समूह का सरदार ।

२३८ **हुसेन इब्न अली :** अली का पुत्र हुसेन ।

२४२ **इसराफ़ील :** एक फ़रिश्ता । भगवान् ने इसे वायु चलाने का काम सौंप रखा है ।

२४६ **चार :** ईश्वर को प्राप्त करने के चार साधन-शरिअत, तरीक़त, हक़ीक़त और मारिफ़त ।

२५१ **मुआ तलपट :** बेवकूफ़ । जिस में किसी प्रकार की अक्ल नहीं । दक्खिनी की गाली ।

,, **मोंडीकाटे :** दक्खिनी की एक गाली ।

२५७ **क़लन्दर :** फ़क़ीरों का एक सम्प्रदाय, भौंहें और मूँछ दाढ़ी मुडा कर साधना करनेवाले । सूफ़ियों की एक प्रणाली ।

२७६ **यूनिस :** एक पैगंबर । इन्हें मछली निगल गई थी ।

२८७ **कोहतूर :** तूर शाम देश का एक पर्वत । नूर पर्वत पर ही

मूसा को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ।

२६३ **किब्ला :** काबा।

,, **सुन्नत :** मुहम्मद के आचरण को सुन्नत कहते हैं। रुढ़ि, सदाचार।

फ़र्ज़=ईश्वर का आदेश।

वाजिब=जिस बात में तर्क की गुंजाइश नहीं। ईश्वर द्वारा निर्धारित।

३०४ **अनसार :** मक्का से जब मुहम्मद ने हिज़रत की और वे मदीना आये तो मक्का के कुछ लोगों ने उनकी बहुत सहायता की। मक्का के ये सहायक अनसार कहलाए।

३०७ **कल्मा :** ला इलाहा इल्लिल्लाह। मुहम्मदुर रसूलिल्लाह। कल्मा पढ़ कर ही कोई व्यक्ति मुसलमान बनता है। इसे कल्मा तैयब कहते हैं।

३१२ **हादी :** हिदायत देनेवाला। ईश्वर।

३१३ **वज़ू :** नमाज़ पढ़ने से पहले विशेष प्रणाली से हाथ-पाँव धोना।

३१८ **फ़िराउन :** फ़िरौन, मूसा का समकालीन एक आततायी राजा।

३४३ **मरिअम :** ईसा की माता का नाम।

३४४ **बधावा :** पुत्र-जन्म आदि शुभ-अवसरों पर गाए जानेवाले मंगल-गीत।

३४५ **सलामलेक :** अभिवादन, कुशल प्रश्न।

,, **मेकइल :** मेकाइल, एक देवदूत।

३४७ दज्जाल : प्रलय से पहले दजला नदी से उत्पन्न होनेवाला एक शक्तिमान काफ़िर, जो सारे जगत् पर प्रभाव स्थापित करेगा।

३४८ अबू जहल : मुहम्मद का चाचा और उनका प्रतिस्पर्द्धी।

,, बारे : उद्गारवाचक शब्द।

३५० बैतुल मुक़द्दस : श्याम देश की एक मस्जिद। इस मस्जिद को सुलेमान ने बनवाया था।

३५४ करीम : दया करनेवाला। ईश्वर।

३५५ ग़फ़्फ़ार : बहुत बड़ा दयालू।

३६९ सादात : सैयद का बहुवचन। नेता। अली और फ़ातिमा की सन्तान सैयद कहलाती है।

३७४ आलिमुल ग़ैब : परोक्ष का जाननेवाला।

३८४ कल्मा तैयब : ला इलाहा......रसूलिल्लाह। जिसे पढ़ कर कोई व्यक्ति मुसलमान बन सकता है।

३९५ जकात : मुसलमानों के लिए आय का जो अंश दातव्य है।

३९६ बैत : दो चरणवाला पद।

४०३ अफ़लातून : यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक।

,, दारा : ईरान का प्रसिद्ध शासक।

,, क़लीम : मूसा की उपाधि। ईश्वर से बात करनेवाला।

४०६ फातिहा : कुरान का प्रथम अध्याय। किसी की भलाई के लिए प्रार्थना करना।

४०६ इलहाम : अच्छाई के लिए ईश्वर की ओर से अपने आप सन्देश आना।

,, सीस्तान : एक प्रसिद्ध देश, ईरान की पूर्वी सीमा पर, अफगानिस्तान के निकट।

४०७ हाफ़िज़ : फ़ारसी का प्रमुख कवि।

४१० मन्सूर : वास्तविक नाम हुसेन। पिता का नाम मन्सूर। प्रसिद्ध सूफ़ी सन्त। अनहल (सोऽहम्) मन्त्र का उपदेष्टा। ३०६ हिज़री में अनहलक (मैं ईश्वर हूँ) के उपदेश देने के कारण इन्हें सूली दी गई।

४११ क़माहक़ हू : बिल्कुल वही (ईश्वर) है।

,, फ़नाफ़िल्ला बक़ा बिल्ला : ईश्वर के अस्तित्व में लीन होना।

४१६ अमाक कमा काना ज़ात : जो शेष है वह भगवान ही है।

,, बेचूँ बेचुगूँ : अनुपम।

,, मेराज : नबूवत के १२ वें वर्ष मुहम्मद को ईश्वर का सामीप्य प्राप्त हुआ। मेराज-उन्नति, महत्व।

४२१ बिशरे हाफ़ी : बहुत बड़े साधक। नंगे पाँव रहा करते थे।

४२२ रुकूअ : नमाज पढ़ते समय एक मुद्रा-कमर झुका कर घुटनों पर हाथ टेक कर आयत पढ़ना।

४२७ रसूलिल्ला : ईश्वर के प्रिय, मुहम्मद।

४३७ ख़ातूने जन्नत : फ़ातिमा।

वत्सरावली

हिजरी	विक्रमीय	ईस्वी
७००	१३५८	१३०१
७१०	१३६८	१३११
७२०	१३७७	१३२१
७३०	१३८७	१३३०
७४०	१३९७	१३४०
७५०	१४०६	१३५०
७६०	१४१६	१३५९
७७०	१४२६	१३६९
७८०	१४३६	१३७९
७९०	१४४५	१३८९
८००	१४५५	१३९८
८१०	१४६५	१४०८
८२०	१४७४	१४१८
८३०	१४८४	१४२७
८४०	१४९४	१४३७
८५०	१५०३	१४४७
८६०	१५१३	१४५६
८७०	१५२३	१४६६
८८०	१५३३	१४७६
८९०	१५४२	१४८६
९००	१५५२	१४९५

हिजरी	विक्रमीय	ईस्वी
६१०	१५६२	१५०५
६२०	१५७१	१५१५
६३०	१५८१	१५२४
६४०	१५६१	१५३४
६५०	१६००	१५४४
६६०	१६१०	१५५३
६७०	१६२०	१५६३
६८०	१६३०	१५७३
६६०	१६३६	१५८३
१०००	१६४६	१५६२
१०१०	१६५६	१६०२
१०२०	१६६८	१६१२
१०३०	१६७८	१६२१
१०४०	१६८८	१६३१
१०५०	१६६८	१६४१
१०६०	१७०७	१६५०
१०७०	१७१७	१६६०
१०८०	१७२७	१६७०
१०६०	१७३६	१६८०
११००	१७४६	१६८६
१११०	१७५६	१६६६
११२०	१७६५	१७०६
११३०	१७७५	१७१८
११४०	१७८५	१७२८
११५०	१७६५	१७३८

हिजरी	विक्रमीय	ईस्वी
११६०	१८०४	१७४७
११७०	१८१४	१७५७
११८०	१८२४	१७६७
११९०	१८३३	१७७७
१२००	१८४३	१७८६
१२१०	१८५३	१७९६
१२२०	१८६२	१८०६
१२३०	१८७२	१८१५
१२४०	१८८२	१८२५
१२५०	१८९२	१८३५
१२६०	१९०१	१८४५
१२७०	१९११	१८५४
१२८०	१९२१	१८६४
१२९०	१९३०	१८७४
१३००	१९४०	१८८३
१३१०	१९५०	१८९३
१३२०	१९५९	१९०३
१३३०	१९६९	१९१२
१३४०	१९७९	१९२२
१३५०	१९८९	१९३२
१३६०	१९९९	१९४२
१३७०	२००८	१९५१